पं. किसनलाल शर्मा

संपूर्ण राशि-नक्षत्र और मुहूर्त विज्ञान

3-3

संपूर्ण राशि-नक्षत्र और मुहूर्त विज्ञान

लेखक
पं. किसनलाल शर्मा (ज्योतिष वाचस्पति)

संपादन एवं परिवर्द्धन
राजीव तिवारी

मनोज पॉकेट बुक्स

अपनी बात

ज्योतिष क्षेत्र में लेखन के दीर्घ अनुभव के दौरान मेरे सुधि पाठकों की यह मांग निरंतर बनी रही कि मैं एक ऐसी पुस्तक की रचना करूं, जिसमें 12 राशियों और 27 नक्षत्रों की संपूर्ण जानकारी हो। साथ ही, दैनंदिन के जीवन में काम आनेवाले आवश्यक शुभ मुहूर्तों का भी समावेश हो। मेरे विस्तृत अनुभव और दीर्घ अनुसंधान तथा पाठकों की शुभकामनाओं का ही प्रतिफल है कि '12 राशियां 27 नक्षत्र' पुस्तकाकार रूप में आपके हाथों में है।

इस पुस्तक में राशियों, नक्षत्रों के बारे में सटीक जानकारी देने के साथ-साथ हर राशि के व्यक्ति के लिए आवश्यक उपासना, संबंधित नक्षत्र के व्यक्तियों के लक्षण, उन्हें होनेवाले कष्ट एवं कष्ट निवारण के लिए अनुभव सिद्ध उपासना के साथ हर राशि के व्यक्ति का जन्म से लेकर अंत तक का भविष्य भी लिखा है। **जातकाभरण** में उल्लिखित सटीक भविष्य का ज्ञान भी इस पुस्तक में संजोया गया है।

यह पुस्तक ज्योतिष प्रेमियों तथा ज्योतिषी बंधुओं के लिए काफी हद तक सहायक होगी, इसी विश्वास के साथ **मनोज पॉकेट बुक्स, दिल्ली** को धन्यवाद देते हुए आपके हाथों में सौंप रहा हूं। इसकी उपयोगिता मेरे अथक परिश्रम की सार्थकता होगी।

—पंडित किसनलाल शर्मा

अनुक्रमणिका

12 राशियां तथा 27 नक्षत्र

क्रांतिवृत्त के बारह तारों के समूह को राशिचक्र कहा जाता है। यह राशिचक्र आकाश का एक मार्ग है। विभिन्न ग्रह अपने-अपने रास्तों से इस स्थान से भ्रमण करते हैं। हर राशि की अपनी एक विशेषता है। हरेक का अपना महत्त्व है, स्वरूप है और गुण-दोष भी हैं।

नक्षत्र समूह परस्पर नभोमंडल पर जो आकृति तैयार करते हैं उसके अनुसार ही राशियों का नामकरण किया गया है, जो निम्नलिखित है:

राशि का अंक	राशि का नाम	चिह्न	पाश्चात्य नाम
1	मेष	मेढ़ा	Aries
2	वृषभ	बैल	Taurus
3	मिथुन	युग्म	Gemini
4	कर्क	केकड़ा	Cancer
5	सिंह	शेर	Leo
6	कन्या	कुमारी	Virgo
7	तुला	तराजू	Libra
8	वृश्चिक	बिच्छू	Scorpio
9	धनु	धनुर्धारी	Sagittarius
10	मकर	बकरा या मृग	Capricorn
11	कुंभ	घड़ा	Aquaries
12	मीन	मछलियां	Pisces

नक्षत्रों का राशि विभाजन

राशि	नक्षत्र
मेष	अश्विनी, भरणी, कृतिका
वृषभ	कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा
मिथुन	मृगशिरा, आर्द्रा, पुर्नवसु
कर्क	पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा

राशि	नक्षत्र
सिंह	मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी
कन्या	उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा
तुला	चित्रा, स्वाति, विशाखा
वृश्चिक	विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा
धनु	मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़
मकर	उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा
कुंभ	धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद
मीन	पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती

राशि-परिचय

भारतीय ज्योतिष में 12 राशियां मानी गई हैं। राशि का शाब्दिक अर्थ है— समूह। ज्योतिष में राशियों और ग्रहों का चोली-दामन का साथ है। हर राशि का स्वामी कोई-न-कोई ग्रह माना गया है। वैसे भी फलित ज्योतिष में ग्रहों की अपेक्षा राशियों को ही अधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है। आइए, लगे हाथ आपको इन राशियों के विषय में जानकारी दे दें।

□□

मेष (1)

यह बारह राशियों में पहली राशि है। इसका अंक 1 है। जन्मकुंडली में राशियों के नाम न लिखकर उनके निर्देशांक लिखने की ही परिपाटी है।

अश्विनी नक्षत्र के चार, भरणी नक्षत्र के चार तथा कृतिका नक्षत्र का पहला चरण मिलकर मेष राशि बनती है।

निम्न तालिका में चंद्र के अंश, नक्षत्र, चरण, नामाक्षर, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, योनि, नाड़ी, गण की जानकारी दी गई है।

चंद्र के अंश अंश कला से अंश कला	नक्षत्र	चरण	नामाक्षर	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	योनि	नाड़ी	गण
0 से 13.20	अश्विनी	1 से 4	चू चे चो ला	मंगल	केतु	अश्व	आद्य	देव
13.20 से 26.40	भरणी	1 से 4	ली, लू, ले, लो	मंगल	शुक्र	गज	मध्य	मनुष्य
26.40 से 30.00	कृतिका	1	आ	मंगल	सूर्य	मेष	अन्त्य	राक्षस

मेष राशि की आकृति मेढ़े जैसी है। पृथ्वी पर पड़नेवाले क्रांति अंशों पर आधारित विषुवत रेखा से 12 अंश उत्तर तक इस राशि का प्रभाव माना जाता है।

विशेषताएं

इसे अंग्रेजी में Aries (एरिज) कहते हैं। प्रवासी, धातु संज्ञक यह राशि जहां धातु या रत्न उत्पन्न होते हैं, उस जगह पूर्व दिशा में निवास करती है। यह क्रूर एवं चंचल स्वभावी, चर, युवा, रक्तवर्णी, अग्नितत्त्व युक्त, रात्रिबली, क्षत्रिय जाति की, पृष्ठोदयी, विषम राशि है। यह चतुष्पाद, पर्वताचारी, रजोगुणी, पित्त प्रकृति की है। राशि का निवास पाटल देश है। राशि स्वामी मंगल एवं अंक 1 है।

शरीर की हड्डियां, चेहरा, मस्तिष्क एवं स्नायु पर इस राशि का प्रभाव रहता है। मुख्य रूप से वस्त्र एवं अनाज मेष राशि की चीजें हैं। इसके अलावा मेढ़ी, मेढ़ी के ऊन से बने कपड़े या अन्य वस्तु, लाल रंग के धान्य—राई, मसूर दाल, रक्तचंदन, लाल गेहूं एवं भूनिर्मित औषधियां, तांबा, सोना, लोहा एवं मशीनरी ये भी मेष राशि की वस्तुएं हैं।

वन, पर्वत, जंगल, बांध आदि से जुड़ी योजनाओं का आधिपत्य इस राशि के अधीन है।

मेदिनीय ज्योतिषशास्त्र में इंग्लैंड, डेनमार्क, जर्मनी, स्विटजरलैंड, सीरिया, फ्रांस, पेरु आदि देशों की यह प्रतिनिधि राशि है।

जातकों का भविष्य

मेष राशि के जातकों के जीवन में धन का अभाव बना रहता है। ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ व्यक्तियों से इन्हें सहयोग प्राप्त नहीं होता। पुत्रसुख एवं स्त्री समाज के ऊपर रहे इनके प्रभाव के कारण इनकी प्रसिद्धि बढ़ती है।

मेष व्यक्ति की आंखें गोल एवं घुटने कमजोर रहते हैं। पानी से हमेशा डर बना रहता है। स्वभाव चंचल एवं प्रवास का शौक रहता है। शरीर के किसी-न-किसी अंग पर, विशेष रूप से आंख पर व्रण पाया जाता है। अल्पाहारी होने पर भी कामपिपासु होते हैं। सच-झूठ बोलने के बारे में बेफिक्री रहती है। कुशल वक्ता एवं अपना काम निकालने में माहिर होते हैं। लाभ-हानि का विचार न करते हुए शीघ्र दूसरों का अनुकरण करने की प्रवृत्ति इनमें रहती है।

जातकाभरण के अनुसार

मेष राशि का चंद्र जन्मकुंडली में होने पर जातक धनवान, पुत्रवान, कठोर एवं परोपकारी रहते हैं। हर बात कुशलता से संपन्न करने की वृत्ति रहती है। सुशील स्वभावी, श्रेष्ठीजन एवं शासनाधिकारियों से स्नेह भाव रखनेवाले, सद्‌गुणी, देवी-देवताओं में श्रद्धा रखनेवाले एवं ब्राह्मणों के भक्त रहते हैं। ताम्रवर्णी एवं आंखें बड़ी रहती हैं। कामवासना तीव्र रहती है। घुटने एवं उसके नीचे का हिस्सा दुर्बल रहता है। सिर पर व्रण पाया जाता है। दान-पुण्य में रुचि रहती है। नौकर-चाकर एवं इन पर अवलंबित व्यक्तियों के प्रति सुहृदय रहता है। दो स्त्रियों का सुख या दो विवाह करनेवाले होते हैं। वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़ा, मुकदमेबाजी से डरनेवाले होते हैं।

जन्म से आयु के 1, 7, 13वें वर्षों में ज्वरादि का कष्ट रहता है। आयु के 16वें या 17वें वर्ष में प्लीहा या हैजे की बीमारी होती है, आयु के तीसरे या 12वें वर्ष में पानी से डर रहता है। 25वें वर्ष में संतान का जन्म होता है किंतु नेत्रविकार या रतौंधी का भय रहता है। आयु के 32वें वर्ष में शस्त्र-अस्त्र या किसी दुर्घटना के कारण जख्म होने का भय रहता है।

अपने कामों की स्वयं प्रशंसा करने की आदत रहती है। देश-विदेश में घूमने की इच्छा होती है। तेजी से चलने की आदत होती है।

मेष राशि के चंद्र पर बुध, शुक्र या बृहस्पति की दृष्टि होने पर 90 वर्ष तक की आयु इन्हें प्राप्त होती है।

अनुभवसिद्ध फलित

लोककल्याण की भावना मेष राशि के व्यक्तियों में निहित रहती है। निम्न श्रेणी के मकानों में निवास होता है। उष्ण प्रकृति, ज्वर एवं रक्तपित्त विकारों से

पीड़ित, तामसी आहार लेनेवाले, दुर्बल काया, मध्यम ऊंचाई, सिर पर अल्प बाल, उग्र दृष्टि, विद्याध्ययन में श्रेष्ठ, एकांतप्रिय, कामकला प्रवीण, सेवासुश्रुषा करने में चतुर, संतान का अल्प सुख, हर काम को गोपनीय रखने की आदत, कमजोर घुटने, सिर या चेहरे पर व्रण, देव, धर्म उपासना में सामान्य रुचि, अल्पाहारी एवं शाकाहारप्रिय, पिता एवं बंधुओं से पृथक तथा जन्मभूमि से दूर रहनेवाले—इस तरह के फलित मेष राशि के व्यक्तियों के बारे में मिलते हैं।

विशेष परिश्रम करके सुखद जीवन जीने की अभिलाषा मेष राशि के व्यक्तियों में पाई जाती है। मेष राशि के व्यक्तियों के विषय में एक खास बात है कि भविष्य संकेत इन्हें अपने आप मिल जाते हैं। जिससे वे शुभ-अशुभ घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करके सावधान रहते हैं। मेष राशि के व्यक्तियों को यह परमात्मा से मिली भेंट है। दूरदर्शिता, ढाढस एवं समर्थता राशि स्वामी मंगल के कारण इन्हें प्राप्त रहती है। मंगल में गजब की ताकत एवं अद्‌भुत जादू है। इसके संकेत मात्र से मेष राशि के व्यक्ति मरणावस्था में भी जीने की तमन्ना रखते हैं।

पारिवारिक सुख में न्यूनता, व्यर्थ अभिमान, बुलंद आवाज में भाषण देने की कला में प्रवीण, जीवन में कई बार आर्थिक चढ़ाव-उतार एवं धनहानि देखनी पड़ती है। व्यापार-व्यवसाय में असफल होने पर बार-बार व्यवसाय बदलने की प्रवृत्ति भी मेष राशि के व्यक्तियों में पाई जाती है। इन्हें वाहनसुख अच्छा प्राप्त होता है। मेष राशि के व्यक्तियों की कल्पनाशक्ति गजब की रहती है। किंतु किसी-न-किसी चिंता के कारण उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। मेष व्यक्ति के चेहरे, पैरों या बगल में बड़ा तिल या जख्म का चिह्न रहता है।

जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं

जीवन के 1, 7, 13, 21, 30, 38, 46, 52, 55, 59, 63, 67, 69 वर्षों में कोई-न-कोई विचित्र घटना घटती है।

जन्म से 5 वर्षों तक का समय पूरे परिवार के लिए कष्टकारक, 14 से 21 या 23 से 29 वर्ष में विवाह संपन्न होता है। 6 से 13, 17 से 40, 56 से 61 वर्ष प्रगतिकारक रहते हैं। इस कालावधि में व्यवसाय में उन्नति, अच्छा धनलाभ, नौकरी में पदोन्नति, पारस्परिक सद्‌भावना, पत्नी के साथ सुखी वैवाहिक जीवन, हर प्रकार का वैभवसुख, संपत्ति, स्ववास्तु, वाहन, विदेश प्रवास आदि का सुख प्राप्त होता है।

14 से 22, 42 से 55 एवं 62 से 66 वर्ष अत्यंत दुखदायी एवं कष्टकारक रहते हैं। इस समयावधि में परिवार के महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की मृत्यु, कोर्ट-कचहरी के झगड़े, झूठे लांछन, व्यर्थ खर्च, संपत्तिनाश एवं सिर, पेट, पैर, कान से संबंधित बीमारियां तथा ऑपरेशन जैसी कष्टकारक घटनाओं का क्रम रहता है।

23 से 26 एवं 67 से 69 वर्ष का समय भाग्यवर्धक तथा मन की मुरादें पूरी करनेवाला होता है। परिवार में आनंद, विवाह, भाइयों से मेलमिलाप, मकान की

खरीद या मकान बनवाना, व्यापार नौकरी में धनलाभ, स्त्री-पुत्र सुख मिलता है। अनेक स्त्रियों से संबंध, दान पुण्य भी होता है। स्त्री की मृत्यु पति से पहले हो जाती है।

प्रतिकूलता

- हर महीने का शुक्रवार।
- हर महीने की 1, 6, 11, 21 तारीखें।
- हर साल का अक्तूबर मास।
- कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशि के स्त्री-पुरुष।
- काले, नीले रंग के वस्त्र एवं अन्य वस्तुएं।

विशेष उपासना

संकट एवं कष्ट के निवारण के लिए मंगल स्वरूप श्री हनुमानजी एवं मंगला गौरी की उपासना श्रेयस्कर रहेगी। अनुष्ठान विधि से 'मंगलागौरी मूलाधार कवच' तैयार करके धारण करें। मंगलरत्न मध्यमा उंगली में धारण करें। प्रतिदिन निम्न मंत्र का कम-से-कम 108 बार जाप करें:

ॐ शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणी नमोस्तुते ॐ।।

मेष राशि या मेष लग्न के व्यक्तियों को पितृदोष के कारण विषमज्वर, अन्य ज्वर, सिरदर्द जैसी शारीरिक पीड़ाएं हों एवं साथ ही भौतिक कष्ट भी हों तो इस करुणाजनक स्थिति से मुक्ति पाने के लिए पितृजनों का श्राद्ध या त्रिपिंडी गया (बिहार) या पुष्कर (अजमेर, राजस्थान) में करें। तीर्थादिक एवं काले तिलों से तर्पण करें। अश्वत्थ (पीपल) के वृक्ष को प्रदक्षिणा दें। घृतचूर्ण-घट का दान करें। ब्राह्मण पूजन करके उन्हें भोजन कराएं। भगवान श्रीनृसिंह की आराधना करें। गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करें। श्राद्ध एवं त्रिपिंडी के विषय में **कालसर्प योग** पुस्तक से मार्गदर्शन प्राप्त करें। (*गजेन्द्र मोक्ष* तथा *कालसर्प योग* पर **मनोज पॉकेट बुक्स** द्वारा अलग-अलग पुस्तकें प्रकाशित हैं।)

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः ऐसे पुरुष सुंदर, मनोहर स्वभाव के, किसी भी कार्य में दक्ष, पराक्रम एवं बहादुरी का प्रदर्शन करने में चतुर, सामान्य रूप से स्थूल कायाधारी एवं धनधान्य से संपन्न, अनेकों के चहेते, स्नेही, बुद्धिमान किंतु गूढ़विद्याओं में आस्था रखनेवाले, प्रगतिशील, नम्र स्वभावी, सत्यभाषी, पत्नी-पुत्रों का सुख भोगनेवाले, उत्तम व्यक्तित्व के होते हैं।

अश्विनी नक्षत्र गंडमूल नक्षत्र होने के कारण इस नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मे बालक के कारण पिता को भय रहता है। दूसरे चरण में जन्म हो तो सुख-समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति एवं वृद्धि होती है। तृतीय चरण में जन्म होने पर मंत्रीपद प्राप्त

होता है। चतुर्थ चरण में जन्म होने पर राजसम्मान प्राप्त होता है।

स्त्री: अश्विनी नक्षत्र में जन्मी महिलाएं सुंदर एवं धनवान होती हैं। प्रियजनों से संपर्क रखने को उत्सुक, मधुरभाषिणी रहती हैं। अपने जीवन में उतार-चढ़ाव हमेशा देखने पड़ते हैं। अपने व्यवहार से दूसरों को जीतने की कला में माहिर, सुबुद्धि संपन्न, ईश्वर, गुरुजन एवं बड़े-बुजुर्गों के प्रति श्रद्धा एवं आदर रखनेवाली, गृहकार्य में दक्ष, सौभाग्यशालिनी, पतिव्रतपरायणा, अपने परिवार में आदर प्राप्त करनेवाली, स्थूल शरीर से युक्त, पति की चहेती होती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुषों को आमतौर पर ज्वर, स्वेद, मंदज्वर, कंपन, अरुचि, अंगशोथ एवं योगिनी दोषों से उत्पन्न व्याधियों का डर रहता है।

इन व्याधियों से मुक्ति पाने के लिए किसी भी नदी या तालाब के दोनों किनारे से मिट्टी लाकर उस मिट्टी से एक योगिनी की काल्पनिक मूर्ति तैयार कर लें। श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, पांच रंग के ध्वज, पांच दीपक, आटे से 7 स्वास्तिक बनाकर उसकी पूजा करें। कपूर एवं लोबान उसके सम्मुख जलाएं। अश्विनीकुमार की स्तुति बोलकर गुड़ एवं तिलों की आहुति दें। यवघृत, अपामार्ग की जड़ों का उपयोग समिधा के रूप में करके इस मंत्र से हवन करें—**ॐ अश्विनी तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्ययम्। वाचेन्द्री बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः।** इस मंत्र का पांच हजार जाप भी करें। मंत्र जाप के समय अपामार्ग की जड़ हाथ में धारण करना जरूरी है।

वातज्वर, शारीरिक पीड़ा, निद्रानाश, बुद्धिभ्रम की पीड़ा हो तो स्वर्णदान, दूध, मोदक एवं घृतपूर्ण कुंभ दान करें।

चरण प्रभाव

प्रथम चरण: पीछे से चोट मारना, पीठ पीछे आलोचना या निंदा करना, चुगली करना, अस्थिर बुद्धि, डांवाडोल व नीच मनोवृत्ति, अप्रत्यक्ष रूप से हानि पहुंचाना, दूसरों का नुकसान देखकर खुश होना, स्वार्थी, ईर्ष्यालु।

द्वितीय चरण: प्राचीन धर्म, संस्कृति, इतिहास, पुराण, पुरातत्व, वेद, स्मृति, आदि में रुचि, स्वबुद्धि का उपयोग न कर दूसरों की बुद्धि या राय पर चलनेवाला, पराश्रित, दूसरों के बहकावे में आनेवाला।

तृतीय चरण: ज्योतिष के फलित पक्ष का जानकार, अच्छा सलाहकार, निष्पक्ष राय देनेवाला, बवासीर की पीड़ा से युक्त, रोग-निदान पर खर्च करनेवाला।

चतुर्थ चरण: फलित ज्योतिषी, नित्य निरंतर ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन करनेवाला, बुद्धिमान, तीव्र निर्णायक बुद्धि से युक्त, परिवार-समाज एवं धर्म क्षेत्र में सम्मानित एवं कामातुर रहता है।

भरणी नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः ऐसे पुरुष शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, सत्यवादी, स्वभाव से चंचल एवं अस्थिर, पुरुषार्थ एवं परिश्रम में व्यस्त रहते हैं। धनवान होने से अच्छा जीवन जीते हैं।

ऐसे जातक हंसमुख, सदा मनोरंजनप्रिय होते हैं। खेल के मैदान में आगे रहते हैं। मान-अपमान के संबंध में हमेशा शक्की एवं भयभीत रहते हैं। पानी से बहुत घबराते हैं। यहां तक कि नहाने में भी टालमटोल करते हैं। कुछ ज्योतिष विद्वानों के अनुसार जातक गृहकलह एवं बवासीर से पीड़ित रहते हैं। फोटोग्राफी, सिनेमा, भ्रमण करना इनके खास शौक होते हैं। धार्मिक कर्मकांड में विश्वास एवं श्रद्धा रखते हैं। खुद विश्वासघाती नहीं होते किंतु दूसरों से विश्वासघात होता है।

स्त्रीः ऐसी महिलाएं आमतौर पर नारी समाज में अपना प्रभाव एवं दबदबा रखती हैं। निडर स्वभाव की, कलह, वाद-विवाद, प्रतिद्वंद्विता में, दूसरों की मध्यस्थता करने में अगुआ रहती हैं। चेहरे पर तेज एवं खूबसूरती का अभाव रहता है। गृहस्थ सुख में न्यूनता रहती है। मूल्यवान वस्त्राभूषण एवं अलंकार पास में होते हुए भी उनका उपभोग नहीं करतीं और अस्त-व्यस्त वेषभूषा धारण करती हैं। शारीरिक दृष्टि से नीरोगी, धन एवं पुत्रसुख अच्छा रहता है, सत्य बोलनेवाली होती हैं। कुछ महिलाएं सुंदर, शरीर से आकर्षक एवं खूबसूरत चेहरे की भी पाई जाती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

भरणी नक्षत्र में जन्मे जातकों को ज्वर एवं आलस्य की शिकायत बनी रहती है। इससे मुक्त होने के लिए कनेर पुष्प, घी का दीपक, गुग्गुल आदि से शंकरजी का भरणी नक्षत्र के दिन पूजन करें और उन्हें गुड़ का भोग चढ़ाएं। पूजनोपरांत गाय या भैंस का घी, शक्कर एवं छायापात्र का दान करें। यमराज के लिए सप्तधान्यों की बलि दें। अगस्त की जड़ से इस मंत्रोच्चार के साथ हवन करें—**ॐ यमायत्वागिं सरस्वते, पितृमते स्वाहाः स्वाहाः धर्माय धर्मः पित्रे स्वाहा ॐ यमाय नमः।** इस मंत्र का दस हजार जाप भी करना चाहिए। बारबार जाप करने से हर कार्य में सफलता मिलती है।

चरणों का प्रभाव

प्रथम चरणः में जन्मे व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से बलवान, सुगठित शरीर से युक्त, शत्रुहंता, निडर, विवेकी, किसी भी कार्य का प्रारंभ करने से पूर्व ही उस कार्य के यश-अपयश, हानि-लाभ, सुख-दुख का विचार करनेवाले होते हैं।

द्वितीय चरणः में जन्मे व्यक्ति सम्मानीय, उच्च पदासीन, बड़े व्यापारी, भोगविलासी, श्रृंगार एवं मनोरंजनप्रिय, स्वकार्य में चतुर एवं दक्ष, धार्मिक कार्यों में श्रद्धा रखनेवाले एवं धार्मिक कार्य संपन्न करनेवाले होते हैं।

तृतीय चरणः मंदबुद्धि, दीर्घ योजना बनानेवाला, किसी भी काम में विलंब

करनेवाला, दुष्ट एवं चरित्रहीन, अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर सकनेवाला, बदनाम होनेवाला होता है।

चतुर्थ चरण: सामान्य जीवन बितानेवाला, दीन-हीन, रोग पीड़ित, धन और शरीर के सुख से वंचित, अपने परिवार में भी कलह करनेवाला, व्यर्थ वाद-विवाद एवं लड़ाई-झगड़ा करनेवाला होता है।

कृतिका नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुष: ऐसे पुरुष कंजूसी से जीवनयापन करके आवश्यक वस्तुओं का संग्रह करनेवाले होते हैं। नकारात्मक कामों में रुचि रहती है, खाने-पीने के शौकीन रहते हैं। दैनंदिन के जीवन में कोई-न-कोई कष्ट रहता ही है। असामाजिक कृत्यों में तल्लीन रहते हैं। आक्रमक वृत्ति के होते हैं। झूठ बोलने की आदत रहती है, कटु वाणी बोलनेवाला रहता है। अनावश्यक भ्रमण में समय बिताने की वृत्ति रहती है। सौंपे गए काम तत्परता से पूर्ण करते हैं। कोई भी कार्य अकेला करना उनके बस की बात नहीं रहती। कुछ जातक भावुक एवं धर्म-श्रद्धालु भी पाए जाते हैं। अति विद्याव्यसनी एवं संशोधन करने की वृत्ति से स्वभाव में चिड़चिड़ापन आता है और वे कलहप्रिय बन जाते हैं। अकेलापन जीवनभर महसूस करते हैं। इनकी न्यायबुद्धि निष्पक्ष रहती है। उच्च श्रेणी की कला में पारंगत होते हैं। सबका भला न चाहकर अपने संपर्क में आनेवालों का ही भला चाहते हैं।

स्त्री: ऐसी महिलाएं क्रोधी रहती हैं। इसी कारण हर जगह, हर वक्त लड़ाई-झगड़ा करती हैं। ईर्ष्यालु स्वभाव रहता है। कफ प्रकृति की अधिकता के कारण कोई-न-कोई रोग लगा ही रहता है। खान-पान की शौकीन, हमेशा उदर-पोषण के लिए प्रयत्नशील रहती हैं। कंजूस वृत्ति की होती है। पुरुषों के प्रति इनमें जबरदस्त आकर्षण पाया जाता है।

व्याधियां एवं उपाय

आमतौर पर कृतिका नक्षत्र में जन्मे जातकों को शूल-दाह, नेत्रपीड़ा, कटिपीड़ा, अनिद्रा, बेचैनी आदि की शिकायतें रहती हैं। इन व्याधियों के शमनार्थ श्वेत चंदन, जूही के पुष्प, गंध, शुद्ध घी का दीपक, घी एवं गुग्गुल तथा तिल मिश्रित अन्न से अग्निदेवता का पूजन-हवन करना चाहिए। खीर, घी एवं उड़द की आहुति दें। तिल, जौ एवं घी से हवन करें। हवन के समय यह मंत्र बोलें—**ॐ अग्निर्मूर्धादिव ककुत्पत्तिः पृथिव्या अयम् अपांगू रेता गूं सिजिन्वति ॐ अग्नये नमः॥**

इस मंत्र का जाप दस हजार बार करना चाहिए।

❑❑

वृषभ (2)

राशिचक्र में यह दूसरी राशि है और इसका निर्देशांक 2 है।

नक्षत्र : कृतिका नक्षत्र के अंतिम 3 चरण रोहिणी नक्षत्र के चारों चरण एवं मृगशिरा नक्षत्र के 1, 2 चरणों से मिलकर वृषभ राशि बनती है।

नीचे दी गई तालिका में चंद्र के अंश, नक्षत्र चरण, नामाक्षर, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, योनि, नाड़ी, गण की जानकारी दी गई है।

चंद्र के अंश अंश कला से अंश कला	नक्षत्र	चरण	नामाक्षर	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	योनि	नाड़ी	गण
0.00 से 10.00	कृतिका	2, 3, 4	ई, ऊ, ए	शुक्र	रवि	मेष	अन्त्य	राक्षस
10.00 से 23.20	रोहिणी	1 से 4	ओ, वा, वी, वू	शुक्र	चंद्र	सर्प	अन्त्य	मनुष्य
23.20 से 30.00	मृगशिरा	1, 2	वे, वो	शुक्र	मंगल	सर्प	मध्य	देव

वृषभ राशि की आकृति बैल जैसी है। पृथ्वी के क्रांति अंश पर आधारित विषुवत रेखा से 20 अंशों तक इस राशि का प्रभाव माना जाता है।

विशेषताएं

इसे अंग्रेजी में Taurus कहते हैं। यह राशि लघुकाय, स्त्रीलिंगी, दक्षिण दिशा में पर्वत पर, खेती की जमीन, गोशाला या मन में निवास करती है। यह कोमल, शांत, स्थिर स्वभावी, युवा, गौरवर्णी, पृथ्वी तत्त्व की, रात्रि बली, लंबे शरीर की, ब्राह्मण जाति की पृष्ठोदय समराशि है। पशुपालक, काश्तकार, चतुष्पाद, ग्रामचारी एवं रजोगुणी वात प्रकृति की इस राशि का निवास स्थान कर्नाटक प्रदेश है। इसका स्वामी शुक्र, दिन शुक्रवार एवं अंक 6 है।

शरीर में चेहरे, जीभ, कपोल, कंठ पर इसका प्रभाव रहता है। काव्य, खेती, खरीद-फरोख्त एवं संपत्ति का आधिपत्य वृषभ राशि के अधीन ह। वन-जंगलों में उत्पन्न होनेवाले फल, पुष्प, श्वेत गेहूं, चावल, शक्कर, दूध-घी, बैल, सफेद वस्त्र, सूत, जूट, कपास एवं मुद्रा इत्यादि इस राशि के द्रव्य हैं।

मेदिनीय ज्योतिषशास्त्र में आयरलैंड, हिरोशिमा, हॉलैंड, रूस; जार्जिया देशों की प्रतिनिधि वृषभ राशि मानी गई है।

नोट: कृतिका नक्षत्र के पुरुषों तथा महिलाओं के लक्षण, व्याधियां एवं उनसे मुक्ति के उपाय की जानकारी मेष राशि के अंतर्गत कृतिका नक्षत्र में पढ़ें।

जातकों का भविष्य

वृषभ राशि के पुरुषों की चाल स्थिर रहती है। बुद्धि श्रेष्ठ, आकर्षक व्यक्तित्व, भौतिक भोग-उपभोग संपन्न, हमेशा सत्कार्यों में रुचि रखनेवाले होते हैं। ये खेती विषयक कार्य अच्छी तरह से संपन्न कर सकते हैं। इनका चेहरा एवं जांघें कुछ बड़ी होती हैं। जीवन का पूर्वार्ध दुख में किंतु उत्तरार्ध सुख में बिताते हैं। गोधन का सुख प्राप्त होता है। इनकी पीठ या चेहरे पर 'मस्सा' या 'लहसुन' का दाग रहता है। जान-बूझकर किसी को धोखा देने की भावना नहीं रहती। बेपरवाह एवं आलसी होते हैं। बोलचाल में अल्हड़ता व कामशक्ति प्रबल रहती है। खाने-पीने के शौकीन होते हैं। दुख में आनंद मनाने का स्थायी भाव इनमें रहता है।

वृषभ राशि की महिला की नाक एवं होंठ कुछ बड़े रहते हैं। स्वधर्म की अपेक्षा अन्य धर्मों पर आस्था अधिक रहती है। संतान सुख अल्प रहता है। सभी काम करने की क्षमता एवं समर्थता रहने पर भी स्वजनों के ऊपर आए संकटों के समय ये धीरज खो बैठती हैं। जलभय एवं शूलरोग से कष्ट रहता है।

जातककाभरण के अनुसार

जन्मकुंडली में वृषभ राशि में चंद्र हो तो जातक अल्प तेजस्वी रहता है। उसमें विश्वसनीयता भी कम होती है। ऐसा जातक सत्यभाषी, धनवान, कामासक्त, पत्नी पर शासन करनेवाला होता है। दीर्घजीवी, शरीर पर कम बाल, माता-पिता एवं गुरुजनों का भक्त, राज्याधिकारी, धनी एवं विद्वानों का मित्र रहता है। सभा-सोसायटी में अपनी चतुरता दिखानेवाला, अल्प साधनों से सुखी होने पर भी अधिक साधन संपन्नता प्राप्त होती है।

बचपन में आयु का पहला वर्ष कष्टकारक रहता है। तीसरे वर्ष अग्नि का भय, 7वें वर्ष हैजा, प्लीहा रोग का भय, नौवें वर्ष में अनेक प्रकार के कष्ट, दसवें वर्ष में अतिसार या खून की उल्टी होने का डर रहता है, 12वें वर्ष में पेड़ से या ऊंचाई से गिरने का डर रहता है।

16वें वर्ष में सर्पभय, जहरीले जंतु से जख्म, 19वें वर्ष में अनेक प्रकार की पीड़ाएं सहनी पड़ती हैं। 25वें वर्ष में पानी से भय रहता है। 30 एवं 32वें वर्ष में शारीरिक अरिष्ट का डर रहता है। जन्मकुंडली में वृषभ राशि के चंद्र के ऊपर यदि बुध, बृहस्पति एवं चंद्र की दृष्टि हो तो 96 वर्ष की आयु प्राप्त होती है। चंद्र पर पाप ग्रहों की दृष्टि होने पर अकाल मृत्यु हो सकती है।

अनुभवसिद्ध फलित

किसी भी हालत में जय, यश, भोग एवं श्रीप्राप्ति की लालसा वृषभ राशि के व्यक्तियों में बनी रहती है। ये गोरे या गेहुएं रंग के होते हैं। तेजस्वी चेहरा, मध्यम उंचाई का कद, कांतियुक्त मनमोहक व्यक्तित्व रहता है। शत्रुहंता, माता-पिता की स्थिति साधारण, अल्प सुखी जीवन, खर्चीला स्वभाव, अत्यधिक कामुक, वसीयत

से संपत्ति का उपभोग प्राप्त होना, स्त्री प्रेम एवं विलास की वस्तुओं की चाह, कन्या संतान से साधारण सुख तो पुत्र सुख में बाधा, खेतीबाड़ी, पशु-पक्षी पालने का शौक, जन्म समय सुखदायी तो मध्य एवं अंत समय दुखदायी, प्रारब्ध एवं प्रयत्न का समन्वय साधकर आगे बढ़ने की वृत्ति ऐसे व्यक्तियों में पाई जाती है। सुख में सब कुछ भूलनेवाले तो दुख का ढिंढोरा पीटनेवाले, मधुमेह, शीतज्वर, गुप्तेंद्रियों के रोगों का कष्ट सहन करना होता है। जन्मस्थान से दूर रहकर जिंदगी बितानी पड़ती है। पति-पत्नी में आमतौर पर झगड़ा रहता है और एक-दूसरे से बोलचाल तक बंद हो जाती है।

प्रतिकूलता

- प्रतिवर्ष नवंबर महीना।
- हर महीने की 5, 15, 20 तारीखें।
- हर सप्ताह का शनिवार।
- लाल रंग के वस्त्र एवं अन्य चीजें।

जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं

आयु के 14 से 21 या 25 से 29वें वर्ष में विवाह योग। आमतौर पर दो विवाहों का योग बनता है।

आयु के 7 एवं 28 से 35वें वर्ष में पूरे परिवार में रोग, ऋण, दुखों का अतिरेक होता है। आर्थिक नुकसान, परिवार में झगड़े, माता-पिता को कष्ट, मकान से दूर या शहर से स्थानांतरण, कर्ज का बोझ बढ़ाना, शारीरिक कष्ट होते हैं।

आयु के 8 से 16 एवं 36 से 47वां वर्ष भी अनेक दृष्टियों से प्रतिकूल रहता है। बदनामी, चोरी जैसी घटनाएं घटित होती हैं। साथ ही कुछ महत्त्वपूर्ण भाग्यवर्धक घटनाएं भी होती हैं।

आयु के 46 से 51वां वर्ष अति सावधानी बरतने का रहेगा। इस समय में हर निर्णय विचारपूर्वक जांच-परखकर करना होगा। परिवार में से किसी की मृत्यु हो सकती है।

आयु का 52वां वर्ष मृत्युसम पीड़ा का रहेगा। संभल जाने पर 78 वर्ष तक का जीवन रहेगा।

पैरों पर या कमर के नीचे काला तिल या गहरे जख्म का दाग हो तो शुभ समझना चाहिए। जीवन में तीन स्त्रियों से गहरी दोस्ती रहेगी। इनमें से किसी एक स्त्री के कारण बदनामी मिल सकती है। शुक्रवार को जो कार्य करेंगे उसमें यश मिलेगा। वृषभ, मिथुन, मकर एवं कुंभ राशि के व्यक्तियों के साथ किए गए व्यवहारों में सफलता मिलेगी।

विशेष उपासना

वृषभ राशि या वृषभ लग्न के व्यक्तियों को स्त्री प्रेत से कष्ट होते हैं। आंखों एवं कानों में विकृति आती है। ज्वरादि पीड़ा से भी कष्ट पहुंचता है। इन पीड़ाओं को दूर करने के लिए दुर्गासप्तशती का पाठ करें। जप एवं हवन करें। साथ ही **ॐ गोपालाय उत्तरध्वजाय नमः** मंत्र का प्रतिदिन कम-से-कम 108 बार जाप करें।

नारायण कवच सिद्ध करके धारण करें। शुक्रवार का व्रत रखें।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशेस सर्व शक्ति समन्विते।
भयेभ्या स्याहिनो देवि दुर्गे नमोस्तुते॥

उपरोक्त मंत्र का नित्य 108 बार जाप करें। हीरा या उसके पर्यायी रत्न को धारण करें।

रोहिणी नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः ऐसे जातक बुद्धिचातुर्य से अपने काम पूर्ण करनेवाले, गुणवान, धनवान, मृदुभाषी और सुंदर चेहरे के होते हैं। शासन द्वारा सम्मान प्राप्त होता है। ये धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में रुचि रखते हैं एवं इन कार्यों पर दिल खोलकर खर्च भी करते हैं।

आकर्षक काया, अच्छी समझबूझ एवं तीव्र आकलनशक्ति, खेती करनेवाले, मंत्रोपासना एवं तांत्रिक कार्यों की अपनी रुचि को गुप्त रखनेवाले, सामाजिक कार्यों में हाथ बंटानेवाले, कभी-कभार झूठ बोलनेवाले होते हैं।

ऐसे जातक समाजप्रेमी, सबसे सहयोग पानेवाले, सफल मध्यस्थ, ग्राम पंचायत के सरपंच तथा संगीत एवं कला में यश प्राप्त करनेवाले होते हैं।

स्त्रीः रोहिणी नक्षत्र में जन्मी महिलाएं आमतौर पर सुंदर एवं आकर्षक शरीराकृति की, पवित्र आचरणशील, सावधानी से अपना जीवनयापन करनेवाली, पति की आज्ञाकारिणी, माता-पिता की सेवा करनेवाली, बाल-बच्चों के विषय में सुखी एवं ऐश्वर्यसंपन्न होती हैं। सत्यभाषी होने के कारण सर्वत्र आदर-सम्मान प्राप्त करनेवाली श्रेष्ठ बुद्धि एवं स्थिर विचारों की होती हैं। धन-संपत्ति से मुक्त जीवन जीती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

रोहिणी नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुषों को आमतौर पर भोजन के बाद ज्वराभास, सिरदर्द, कोख में दर्द, भिन्नलिंगी व्यक्ति के विषय में सहज आकर्षण की व्याधि आदि शिकायतें रहती हैं। इन शिकायतों से मुक्ति पाने के लिए श्वेतचंदन, कमलपुष्प, दशांगधूप, शुद्ध घी का दीपक एवं ब्राह्मणों का पूजन करके हर रोहिणी नक्षत्र के दिन काली गाय का दूध एवं सप्तधान्य दान में दें। पांच कुंआरी कन्याओं को भोजन कराएं। अपामार्ग की जड़ का समिधा के रूप में प्रयोग कर शुद्ध घी, तिल एवं जौ से हवन करें। हवन के समय नीचे लिखे मंत्र का उच्चारण करें।

ॐ ब्रह्मज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचोव्वेनयावः
स बुध्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमयतश्चाव्विः ॐ ब्रह्मणे नमः।।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए शहद, घी, शक्कर, चावल और दूध से बनी खीर की आहुति दें। इसी अवसर पर अपामार्ग की जड़ को तावीज में भरकर धारण कर लें। मंत्र का जाप पांच हजार बार करें।

चरण प्रभाव

प्रथम चरणः में जन्म होने पर जातक सुगठित काया युक्त, नाकनक्श सुंदर होने पर भी सामान्य, रोगी, व्यर्थ चिंतातुर, मानसिक रूप से पीड़ित, भावुक, सदा सोच में रहनेवाला, यात्रा भ्रमण एवं सैर-सपाटे में विशेष रुचि रखनेवाला, अस्थिर मनोवृत्ति का होता है।

द्वितीय चरणः में जन्मा जातक धार्मिक-दैविक कार्यों में आस्था रखनेवाला, धार्मिक कार्यकर्ता, कोमल कायाधारी, सत्यान्वेषी, सत्यभाषी, वाक्पटु, व्याख्याता होता है।

तृतीय चरणः में जन्मा जातक गणितज्ञ, नाना प्रकार के वाद्य बजाने में कुशल, जादूगर, हाथ की सफाई में माहिर होता है।

चतुर्थ चरणः में जन्मा जातक विषयभोगी, बनाव-शृंगार में लिप्त रहनेवाला, खाने-पीने, व्यर्थ घूमने-फिरने का शौकीन, मित्रमंडली में व्यस्त तथा कृतज्ञ होता है।

मृगशिरा नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः मृगशिरा नक्षत्र में जन्मे पुरुष गंभीर, वाक्पटु, चंचल एवं स्वाभिमानी होते हैं। ये अपमान सहन नहीं कर सकते। अपने जीवन में नाम कमाकर उच्च पद पर पहुंचते हैं।

ऐसे जातक शस्त्रकला में निपुण, स्वभाव से नम्र एवं आदरणीय व्यक्तियों के लिए इनके मन में आदर की भावना रहती है। राज्यपक्ष से अनुकूलता प्राप्त होती है। मंत्रियों से मैत्री रखते हैं। धार्मिक एवं सन्मार्गी होने पर भी भोगविलास में विशेष रुचि रखते हैं। स्वभाव से भावुक होने से तुरंत प्रभावित होते हैं। बचत करने की कला में निपुण होते हैं। फिर भी आवश्यक खर्च करने में पीछे नहीं हटते। अनेक विचारधाराओं के अनुयायी रहते हैं। अपने विचार प्रकट करते समय अभिनय करने की आदत होती है। अपनी प्रगति के लिए निरंतर परिश्रम करते हैं। आंतरिक प्रेरणा के कारण सामान्यतया भाग्यवान होते हैं। मनोवैज्ञानिक के रूप में प्रख्यात होते हैं।

स्त्रीः आमतौर पर मृगशिरा नक्षत्र में जन्मी महिलाएं डरपोक किंतु चतुर, पति परायणा, चंचल, हंसमुख, रसिक, विद्वान, पुत्रवती, सुखसंपन्न, माता-पिता की आज्ञाकारिणी रहती हैं। बड़े-बुजुर्गों के लिए आदर की भावना इनमें निहित रहती है। खर्चीली होने पर भी उचित बचत करनेवाली एवं दूसरों पर आसक्त रहती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

मृगशिरा नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों में आमतौर पर त्रिदोष (वायु-पित्त-कफ) उत्पन्न होकर कष्ट होते हैं। लकवा, रक्तचाप एवं ऐसे ही अन्य रोगों से भी कष्ट संभव होता है। इन व्याधियों से मुक्ति पाने के लिए श्वेत चंदन, गंध, नीरजपुष्प, दशांगधूप, घी के दीपक से चंद्र का पूजन-अर्चन करें। खीर एवं मालपुओं का भोग लगाएं। एक बार सवत्सश्वेत का दान दें। मृगशिरा नक्षत्र के दिन दही चावल का दान दें। जयन्ती वृक्ष की जड़ तावीज में डालकर धारण करें। निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए हवन करें।

ॐ इममदेवा असफल गूं गुबध्वं महतेक्षंत्राय महते जैष्ठवाय महते जान राज्यायेन्द्रस्योन्द्रियाय।

इमममुष्य पुत्रमुष्ये पुत्रमस्यै विषएववो भी राजासोमो स्मांक ब्राह्मणाना गुं राजा ॐ चंद्रमसे नमः॥

हवन में दही-दूध, शक्कर, दही चावल की आहुतियां दें। इस मंत्र का पांच हजार बार जाप करना आवश्यक है।

□□

मिथुन (3)

12 राशियों में यह तीसरी राशि है। इसका निर्देशांक 3 है।

मृगशिरा नक्षत्र का तीसरा, चौथा चरण, आर्द्रा नक्षत्र के चार चरण एवं पुनर्वसु नक्षत्र के प्रथम तीन चरण मिलकर मिथुन राशि बनती है।

नीचे दी गई सारिणी में चंद्र के अंश, नक्षत्र, चरण, नामाक्षर, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, योनि, नाड़ी, गण के बारे में जानकारी दी गई है।

चंद्र के अंश अंश कला से अंश कला	नक्षत्र	चरण	नामाक्षर	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	योनि	नाड़ी	गण
0.00 से 6.40	मृगशिरा	3, 4	का, की	बुध	मंगल	सर्प	मध्य	देव
6.40 से 20.00	आर्द्रा	1 से 4	क, घ, ड. छ	बुध	राहु	श्वान	आद्य	मनुष्य
20.00 से 30.00	पुनर्वसु	1 से 3	के, को, हा	बुध	बृहस्पति	मार्जार	आद्य	देव

मिथुन राशि की आकृति नवजात जुड़वां बच्चों जैसी या स्त्री-पुरुष जोड़े के आकार जैसी है। पृथ्वी के क्रांति अंशों पर आधारित विषुवत रेखा से 24 अंशों तक इस राशि का प्रभाव माना गया है।

विशेषताएं

इसे अंग्रेजी में जेमिनी (Gemini) कहते हैं। यह राशि सम शरीरयुक्त, भोगी, क्रूर, चंचल, शांत, द्विस्वभावी, बाल्यावस्था की, हरितवर्णी, सत्वगुणी, वायुतत्त्व की, रात्रिबली, ग्रामचारी, वातप्रधान, त्रिधातु प्रवृत्ति की, वैश्य जाति की, शीर्षोदयी, विषम, बुद्धिप्रदायिनी राशि मानी जाती है। इस राशि का निवास पश्चिम दिशा, रात्रि एवं रति विहार, द्यूतक्रीड़ा स्थानों में है। इस राशि का स्वामी बुध एवं अंक 5 है।

शरीर के वक्षस्थल, स्तन, कंधा, भुजा, हाथ, फेफड़े एवं सांस पर इस राशि का प्रभाव रहता है।

नृत्य-गायन, वाद्य, शिल्प, हवाई जहाज की यात्रा, नपुंसक व्यक्ति आदि का स्वामित्व इस राशि के अधीन है। ज्वार, बाजरा, मूंग, मूंगफली, कपास, बिनौले, जूट, बारदाना, केसर-कस्तूरी, हल्दी-कुंकुम, कागज, संपादन-प्रकाशन, शिल्पकला का स्वामित्व भी मिथुन राशि के अधीन है।

मेदिनीय ज्योतिषशास्त्र में अमरीका, उत्तर अफ्रीका एवं वेल्स देशों का प्रतिनिधित्व मिथुन राशि करती है।

नोटः मृगशिरा नक्षत्र के जातकों के लक्षण, व्याधियां एवं उनसे मुक्ति पाने के उपाय वृषभ राशि शीर्षक के अंतर्गत पढ़ें।

जातकों का भविष्य

मिथुन राशि के व्यक्तियों की हथेलियों पर 'मत्स्य चिह्न' पाया जाता है। ऐसे जातक कामकला में प्रवीण, लंबी तीखी नाकवाले, बोलने में लड़खड़ानेवाले, सुंदर मुखाकृति के, बुद्धिमान, विचारशील, नृत्य-संगीत में रुचि रखनेवाले होते हैं। स्त्रियां इन पर मुग्ध रहती हैं। अकेलापन इन्हें बहुत भाता है। भोगविलास में अधिक खर्च करनेवाले, दूसरों के मन की थाह लेनेवाले पर धन संग्रह का विशेष योग न रखनेवाले रहते हैं। मिथुन राशि पुरुषों को द्विभार्या योग रहता है। संतान कम रहती है।

मिथुन राशि की महिलाओं की शरीर रचना मध्यम की रहती है। बुद्धि भी कम ही रहती है। मधुर वाणी तथा चंचल आंखों से दूसरों को मोहित करने की कला इन्हें आती है। मीठी चीजें इन्हें पसंद होती हैं।

जातकाभरण के अनुसार

मिथुन राशि के व्यक्ति अपने गांव, समाज और कुटुंब में अधिक शिक्षित पाए जाते हैं। सुशील स्वभाव, चंचल नेत्र, प्रायः कम बोलनेवाले, भोग-विलास में मग्न, मिठाइयों के शौकीन रहते हैं।

5वें वर्ष में पेड़ से गिरने का डर रहता है। 16वें वर्ष में शत्रुपीड़ा का कष्ट तो 18वें वर्ष में कर्णपीड़ा से कष्ट होता है। 20वें वर्ष में विशेष कष्टों का सामना करना पड़ता है। रोगबाधा, शत्रुबाधा से तंग आते हैं। 38वें वर्ष में मृत्युसम पीड़ा सहनी पड़ती है। विलासी एवं भोगी होते हुए भी दान-पुण्य करने में आस्था रहती है। शास्त्र में पारंगत एवं कलानिपुण होते हैं। आयु लगभग 80 वर्ष की रहती है।

अनुभवसिद्ध फलित

मिथुन राशि के स्त्री-पुरुष वाचाल, मेहनती एवं सादा जीवन जीनेवाले होते हैं। जीवन में काफी चढ़ाव-उतार देखने पड़ते हैं। मिजाज तेज एवं रसिक होता है। चेहरे या मस्तक पर जख्म का चिह्न अथवा तिल पाया जाता है। कर्ज देने-लेने में चतुर होते हैं। कागज, कपड़ा, लेखन-साहित्य, सौंदर्य प्रसाधन, खाद्य पदार्थ के व्यापार में इन्हें लाभ प्राप्त होता है। नेता, कवि, लेखक, संपादक, डॉक्टर, ज्योतिषी, प्रोफेसर का व्यवसाय या नौकरी इनके लिए लाभप्रद रहती है। नौकरी में झूठे लांछन लगते हैं। किसी भी बात को ये गुप्त नहीं रख सकते। पत्नी-सुख अच्छा लेकिन संतान-सुख में कमी रहती है। हरा रंग इन्हें भाता है। स्त्री से धोखा खाते हैं।

प्रतिकूलता

- हर साल का दिसंबर मास।
- शनिवार।
- पीला रंग, पीले रंग के वस्त्र।
- हर महीने की 11, 16, 26, 28 तारीखें।
- वृषभ, कन्या एवं मकर राशि के व्यक्ति।

जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं

आयु के 19 से 26वें वर्ष में विवाहयोग आता है। जन्म से 6 वर्षों तक एवं 21 से 32वें वर्ष तक भाग्योदय में विघ्न उपस्थित होते हैं। यह कालखंड कष्ट एवं परेशानियों भरा रहता है। 7 से 20वां वर्ष प्रगतिवर्धक रहता है। 21वां वर्ष मुश्किलों भरा होने पर भी भाग्योदय का प्रारंभ होता है। 33 से 46 वर्ष में अनेक प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। सट्टा, लॉटरी द्वारा भी धन प्राप्त होता है।

47 से 56वें वर्ष में राजभय, पत्नी एवं संतान से कष्ट होते हैं। व्यवसाय, नौकरी में भी विघ्न उत्पन्न होते हैं। संग्रहणी रोग से कष्ट सहना पड़ता है।

आयु के 57, 58, 61, 68वें वर्ष क्लेशकारक रहते हैं। आये लगभग 76 वर्षों की होती है।

विशेष उपासना

मिथुन राशि या लग्न के व्यक्तियों को दैवीकोप विशेष रूप से महसूस होता है। कमरदर्द, मतिभ्रम, मूर्च्छा, दुर्घटना, दुस्वप्न आदि के कारण परेशानी रहती है। ऐसे जातक अपने घर में नित्य गुग्गुल धूप जलाएं। मारुति मंत्र या हनुमान चालीसा का पाठ करें। **ॐ क्लीं कृष्णाय नमः।** इस मंत्र का रोज 108 बार जाप करें।

नीचे दिए गए **शिवपंचाक्षर स्तोत्र** का रोज 12 बार पाठ करें। अपनी सुविधानुसार प्रातः या सायं का समय निश्चित कर प्रतिदिन निश्चित समय पर पाठ करें।

शिवपंचाक्षर स्तोत्र

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्यास शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥
मन्दाकिनी सलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दारपुष्प बहुपुष्प सुपिजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्यायदक्षाध्वर नाशकाय।
श्रीनीलकण्ठायवृषभंध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥
वसिष्ठ कुम्भोद्भवगौनमार्य मुनिन्द्रदेविर्चित शेखराया।
चन्द्रार्क वैश्वान्तर लोभनाय तस्मै 'वा' काराय नमः शिवाय॥
यज्ञस्वरूपाय जलाधराय पिताहस्ताय सनातनाय।
द्विव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिक्तांसिधो।
शिवलोकप व्याप्नेति शिवेत् सह मोदते॥
करांगुली में चांदी की अंगूठी में जड़वाकर फिरोजा धारण करें।

आर्द्रा नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः आर्द्रा नक्षत्र में जन्मे जातक कृतघ्न होते हैं। ये अपने ऊपर दूसरों द्वारा किए गए उपकारों को भूल जाते हैं। जातक जिद्दी एवं मूर्ख होता है, आर्थिक स्थिति सामान्य होते हुए भी मानसिक स्थिति दृढ़ रहती है। अपने व्यावहारिक ज्ञान से अड़चनों को पार करते हुए ये अपना रास्ता निष्कंटक बना लेते हैं।

दिखने में अच्छे-खासे होने पर शारीरिक भोग की कमी ही रहती है। स्वजनों का स्नेह तो इन्हें प्राप्त हो जाता है किंतु अपने चिड़चिड़े स्वभाव के कारण उनका ममत्व प्राप्त नहीं होता। कर्त्तव्यपरायणता की कमी इनमें रहती है। कोई भी कार्य करने में इनकी हड़बड़ी ही रुकावट बनती है। भाग्योन्नति में आनेवाली बाधाओं को परिश्रम से दूर करते हैं। नए-नए उद्योग एवं धन कमाने के साधन इन्हें अपने आप प्राप्त होते हैं। अपना निवास एवं परिवार की चिंता इन्हें बनी रहती है। ये दोगले स्वभाव के होते हैं। दूसरों की नकल उतारने में माहिर, प्रखर वक्ता एवं बारंबार व्यवसाय बदलने की वृत्ति इनमें भरपूर पाई जाती है।

स्त्रीः विपरीत आचरण, चेहरे पर सुंदरता का अभाव, वाद-विवाद एवं कलह करने में आगे, बदला लेने की भावना रहती है। अति कठोर हृदयी, दूसरों की न सुननेवाली, अहंकारी, कृतघ्न महिलाएं आर्द्रा नक्षत्र में ही जन्म लेती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

आर्द्रा नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुषों को त्रिदोष (वायु-पित्त-कफ) से उत्पन्न रोगों के कारण शारीरिक यातनाएं सहन करनी पड़ती हैं। ज्वर, अनिद्रा, सर्वांगपीड़ा कष्टकारक होती है। इन कष्टों से मुक्ति पाने के लिए श्वेत चंदन, सुगंधित पुष्प, दशांगधूप, शुद्ध घी का दीपक इत्यादि सामग्री से शंकरजी का पूजन करें। दूध-चावल से बनी खीर का भोग लगाएं। पीपल की जड़ धारण करें। नीचे दिए मंत्र से हवन करें:

ॐ. नमस्ते रुद्रमष्यव उतो न दूषवे नमः।
बाहुभ्यामुनते नमः ॐ रुद्रायनमः शिवाय नमः॥

शंकरजी की कृपा प्राप्ति एवं नित्य कल्याण के लिए इस मंत्र से हवन करके शहद और घी की आहुतियां दें। मंत्र का दस हजार जाप करें।

आर्द्रा नक्षत्र के जातकों के स्वास्थ्य के विषय में अवहेलना न करें। उनका साधारण रोग भी भयंकर कष्टप्रद साबित हो सकता है।

चरण प्रभाव

प्रथम चरणः निर्मल हृदय, छलकपट, दुष्टता, झूठापन, ईर्ष्या रहित आचरण। करनी-कथनी में कोई फर्क नहीं होता।

द्वितीय चरणः चतुर, धूर्त, चालाक किंतु न्यायप्रिय।

तृतीय चरणः दुर्बल, शक्ति एवं सामर्थ्य रहित, अनेक रोगों से ग्रसित, चिड़चिड़ा स्वभाव, ईर्ष्या से दूसरों को नुकसान पहुंचानेवाला।

चतुर्थ चरणः परिवार, सगे-संबंधियों, मित्रों का विरोध, नीच, दुष्ट, मलीन मन, कपटपूर्ण आचरण, धोखेबाज।

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मे पुरुष हंसमुख, सुखी, भोगविलासी, मृदुस्वभाव के होते हैं। स्वजनों से प्रेम एवं आत्मीयता प्राप्त होती है। मनोरंजन में मस्त रहते हैं। भावुकता एवं कल्पनाशक्ति का विकास सराहनीय रहता है। मित्रों में ऊंचा स्थान प्राप्त होता है। अस्त्र-शस्त्र के प्रयोग के लिए उत्सुक रहते हैं। इस विषय में अभ्यास भी करते हैं। रत्न आभूषण, सोना-चांदी का संग्रह इनके पास होता है। दान देने में भी रुचि रखते हैं। अपना मकान होता है। पुराने रिवाज एवं परंपरा के विरोधी एवं उन्हें तोड़ने के लिए सतत प्रयत्नशील रहते हैं। अलौकिक विद्याओं के अध्ययन में रुचि रहती है। अपने वंश, परिवार, जाति, स्वराष्ट्र और दुष्ट मित्रों के लिए तन-मन-धन अर्पण करने में आगा-पीछा नहीं देखते। देश के लिए बलिदान देने के लिए सबसे आगे रहते हैं।

स्त्रीः पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मी महिलाएं सुशील, धैर्यशील, सत्वशील, मिलनसार, अपने भाई एवं प्रियकर से प्यार करनेवाली, सुस्वभावी, सुंदर, सभी भौतिक सुख साधनों से संपन्न, उच्चाकांक्षी एवं जिज्ञासु होती हैं, किंतु शरीर रोगग्रस्त रहता है।

व्याधियां एवं उपाय

आमतौर पर पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुषों एवं बालकों को कमरदर्द, ज्वर, सिरदर्द एवं कब्ज की शिकायतें बनी रहती हैं। इन व्याधियों से मुक्ति पाने के लिए पुनर्वसु नक्षत्र के स्वामी श्री सूर्य भगवान को प्रसन्न करना चाहिए। सूर्योपासना तथा अन्य अनिष्ट ग्रहों की पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए **मनोज पॉकेट बुक्स** द्वारा प्रकाशित लेखक की अन्य रचना **अनिष्ट ग्रह पीड़ा निवारक साधना** पढ़ें। हल्दी, कुंकुम, अष्टगंध, धूप, शुद्ध घी का दीपक, पीले रंग के सुगंधित पुष्पों से सूर्य भगवान का पूजन करें एवं पीले रंग की वस्तुओं का भोग लगाएं। पुनवर्सु नक्षत्र के दिन अर्क की जड़ लाकर तावीज में रखकर धारण करें। पांच कन्याओं को भोजन खिलाकर उन्हें पीलें रंग का वस्त्र, पुष्प एवं दक्षिणा दें।

पीले चावल एवं घी की आहुति देते हुए नीचे लिखे मंत्र से हवन करें:

ॐ अदिति धौरदितिरस्तरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः विश्वदेवाः।
अदितिः पंचजना अदितिर्जातमदिति जीतित्वम् ॐ आदित्यै नमः।।

इस मंत्र का दस हजार जाप करें।

चरण प्रभाव

प्रथम चरणः इस चरण में जन्मे जातक सुदृढ़ कायावाले, सदैव विषय वासनाओं में मगन एवं बहरे होते हैं।

द्वितीय चरणः इस चरण में जन्मे जातक आलसी, नास्तिक, बात-बात पर विवाद खड़े करनेवाले एवं आरामतलब होते हैं।

तृतीय चरणः इस चरण में जन्मे जातक अस्थिर मनोवृत्ति के, भ्रमणशील, समय पर उपयुक्त निर्णय न लेनेवाले, दाद-खुजली जैसे चर्मरोगों से पीड़ित होते हैं।

चतुर्थ चरणः इस चरण में जन्मे जातक ठिगने, शुभ एवं पवित्र कार्यों में रुचिशील, सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में अग्रणी होते हैं।

□□

कर्क (4)

12 राशियों में यह चौथी राशि है। इसका निर्देशांक 4 है।

पुनर्वसु नक्षत्र का अंतिम चौथा चरण, पुष्य नक्षत्र के चार चरण एवं आश्लेषा नक्षत्र के चार चरण मिलकर कर्क राशि बनती है।

नीचे दी गई सारिणी में चंद्र के अंश, लक्षण, चरण, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, योनि, नाड़ी, गण एवं नामाक्षर के बारे में जानकारी दी है।

चंद्र के अंश अंश कला से अंश कला	नक्षत्र	चरण	नामाक्षर	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	योनि	नाड़ी	गण
0.00 से 3.20	पुनर्वसु	4	ही	चंद्र	बृहस्पति	मार्जार	आद्य	देव
3.20 से 16.40	पुष्य	1,2,3,4	हू, हे, हो, हा	चंद्र	शनि	मेष	मध्य	देव
16.40 से 30	आश्लेषा	1,2,3,4	डी, डू, डे, डो	चंद्र	बुध	मार्जार	अन्त्य	राक्षस

कर्क राशि की आकृति केकड़े जैसी है। पृथ्वी के क्रांति अंश पर आधारित विषुवत रेखा से 24 से 20 अंशों तक इस राशि का प्रभाव माना जाता है।

विशेषताएं

इसे अंग्रेजी में कैन्सर (Cancer) कहते हैं। केकड़े के आकारवाली यह सम राशि, प्रवासी, स्त्री राशि धातु संज्ञक होती है। इसका निवास उत्तर दिशा का उपवन, जलाशय, नदी, तालाब या सागर के किनारे सुरम्य स्थानों पर होता है। चंचल, कोमल, सौम्य, चर बाल्यावस्था, रक्त श्वेतवर्णी, रजोगुणी, जलतत्त्व से युक्त, रात्रि बली, कफ प्रकृति की शुद्ध जाति की, पृष्ठोदयी, सम राशि है। इसका निवास स्थान चौल देश है। स्वामी चंद्र, दिन सोमवार एवं अंक 2 है।

शरीर में हृदय, पेट, फेफड़ों पर इसका प्रभाव रहता है। उत्तम श्रेणी के अनाज, फल, किराना, चाय, चांदी एवं पारा का आधिपत्य कर्क राशि के अधीन है।

मेदिनीय ज्योतिषशास्त्र में चीन, स्कॉटलैंड, न्यूजीलैंड, कनाडा, अल्जीरिया न्यूयार्क, सिंध, काठियावाड़, कच्छ, गुजरात आदि देश व प्रांतों का प्रतिनिधित्व कर्क राशि करती है।

नोट: पुनर्वसु नक्षत्र के जातक के लक्षण, व्याधियां एवं उनसे मुक्ति के उपाय पुनर्वसु नक्षत्र के चरणों का फल संबंधी जानकारी के मिथुन (3) जातकों परिच्छेद में पढ़ें।

जातकों का भविष्य

कर्क राशि के व्यक्ति कला एवं शास्त्रों में प्रवीण रहते हैं। अच्छे सफल व्यापारी भी होते हैं। पुष्प एवं सुगंधित द्रव्यों की चाह होती है, धन-संपत्ति का भरपूर सुख इन्हें प्राप्त होता है। स्त्रियों में विशेष रुचि दिखानेवाले होते हैं। सामान्य कद, स्वभाव पातालयंत्री, पुत्र सुख में न्यूनता रहती है। अपने घर का सुख इन्हें प्राप्त होता है। वैवाहिक जीवन भी सुखी रहता है। किंतु विलासी वृत्ति के कारण आर्थिक तंगी महसूस होती है। जलक्रीड़ा का भी आनंद ये उठाते हैं।

जातकाभरण के अनुसार

परोपकारी, स्त्री प्रेमी, बाल्यावस्था में आर्थिक दृष्टि से कमजोर किंतु प्रौढ़ावस्था में आर्थिक स्थिति में सुधार आता है। सिरदर्द एवं मस्तक रोग से पीड़ित रहते हैं। शरीर के बाएं हिस्से को अग्नि से भय रहता है। मित्र परिवार विशाल रहता है। ज्योतिष कार्य में सफलता मिलती है। माता-पिता के लिए इनके मन में आदर की भावना निहित रहती है।

जन्म के पहले एवं तीसरे वर्ष में गुप्तेंद्रिय एवं जननेन्द्रियों संबंधी कष्ट सहन करने पड़ते हैं। 31वें वर्ष में विषैले जंतु से परेशानी होती है। 32वें वर्ष में अनेक प्रकार की शारीरिक मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं। आयु 85 से 96 वर्षों की रहती है। शास्त्रानुसार माघ महीना, शुक्ल पक्ष की नवमी एवं शुक्रवार घातक रहता है।

कर्क राशि की महिलाएं कफ, वात प्रकृति की और स्थूल या छरहरे बदन की होती हैं। सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन सफल रहता है। दूसरों द्वारा छींटाकशी इन्हें पसंद नहीं आती। इनके प्रति इनके पतियों का व्यवहार अच्छा नहीं रहता। कन्या संतान ही अधिक रहती है।

अनुभवसिद्ध फलित

कर्क राशिवाले व्यक्तियों का चेहरा एवं शारीरिक ढांचा आकर्षक एवं दूसरों को लुभानेवाला होता है। आलस्य, सर्दी-जुकाम, जलभय एवं गृहस्थ जीवन में काफी संघर्ष करना पड़ता है। हर काम में जल्दबाजी रहती है। सफेद या आसमानी रंग के प्रति इनका आकर्षण रहता है। लेखन एवं भाषण कला में प्रवीण होते हैं। मृदुभाषी, क्रोधी, मदिरा-मांस भक्षण करनेवाले होते हैं। स्त्रियों से इन्हें हमेशा बड़ा लाभ होता है। वैवाहिक संबंधों के अतिरिक्त अनेक स्त्रियों से संबंध रहता है। कर्क राशि की महिलाएं व्यभिचारी एवं गुप्त रूप से वेश्यावृत्ति करती हुई पाई जाती हैं।

डॉक्टर, इतिहासकार, राजकीय नेता, मंत्री, प्राध्यापक, नौसेना के कप्तान, राज्यकर्मचारी, भाषाविशारद एवं अद्‌भुत वस्तु संग्राहक तथा वकील के रूप में प्रसिद्ध होते हैं। आमतौर पर जातक दो तरीकों से धन कमानेवाले होते हैं। मुंह आना, मधुमेह, छाती के रोग, फोड़े-फुन्सियां आदि से कष्ट सहन करना पड़ता है।

प्रतिकूलता

- प्रतिवर्ष जनवरी मास।
- हर महीने की 6, 9, 18, 27 तारीखें।
- बुधवार।
- काले रंग के वस्त्र।
- मिथुन, तुला एवं कुंभ राशि के व्यक्ति।

जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं

कर्क राशि के व्यक्तियों की बग़ल में या पैरों पर जख्म का निशान या काला तिल होता है।

किसी भी वर्ष का फरवरी महीना, हर मास की 7, 19, 28, 30 तारीखें एवं हर सोमवार को शुभ या महत्त्वपूर्ण कार्य करने पर उनमें सफलता मिलती है।

18 से 23 एवं 27 से 35 वर्ष के मध्य विवाह योग बनता है।

जन्म का 19वां वर्ष कड़ी मेहनत का रहता है। शिक्षा पूर्ण होती है। 20वें वर्ष में नौकरी या व्यवसाय का प्रारंभ होता है।

आयु के 21 से 36वें वर्ष में व्यापार, नौकरी, कृषि या कला व्यवसाय में प्रगति होकर भाग्योन्नति होती है।

37 से 52वें वर्ष में आर्थिक तंगी, कोर्ट-कचहरी विशेष रूप से फौजदारी मुकदमों में जकड़े जाते हैं। व्यापार में धोखा, नुकसान जैसी अड़चनें पैदा होती हैं। अंतिम समय सुखपूर्ण रहता है।

विशेष उपासना

कर्क राशि या लग्न के व्यक्तियों को शाकिनीजन्य उपद्रवों का कष्ट, मंदाग्नि, हृदयरोग, मधुमेह, सिरदर्द आदि का कष्ट सहन करना पड़ता है। इन कष्टों और व्याधियों से मुक्ति पाने के लिए एवं सभी प्रकार की सुख प्राप्ति के लिए स्वर्णदान, पात्रदान, वस्त्रदान एवं तंत्रोक्त पद्धति से शाकिनी का पूजन करना चाहिए। नीचे दिए मंत्र का रोज 108 बार जाप करें।

ॐ हिरण्यगर्भाय अव्यक्तरूपिणे नमः।

साथ ही गणेशजी की उपासना भी करें।

चरण प्रभाव

प्रथम चरण: इस चरण में जन्मा जातक धन-धान्य से संपन्न होता है। देह एवं मुखाकृति स्त्रीवत होती है। सदा प्रसन्न एवं खुश, हंसी-मजाक करनेवाला, नाना कलाओं में रुचि रखनेवाला एवं कलाप्रेमी होता है।

द्वितीय चरण: इस चरण में जन्मा जातक धार्मिक, तीर्थयात्रा में रुचि रखनेवाला, यज्ञ अनुष्ठान एवं सामाजिक कार्यों में हिस्सा बंटानेवाला परंतु कुछ दुष्ट प्रवृत्ति का रहता है।

तृतीय चरण: ऐसा जातक आलसी, किसी भी बात को गंभीरता से न लेनेवाला, लड़ाई-झगड़े एवं मुकदमेबाजी से दूर रहनेवाला होता है।

चतुर्थ चरण: इस चरण में जन्मा जातक बुरी संगत के कारण बदनाम होनेवाला, पतिता या विधवा स्त्री से प्रेमरत, धन का अपव्यय करनेवाला होता है।

पुष्य नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुष: पुष्य नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति धनसंपत्ति से युक्त रहते हैं। उनमें धार्मिक प्रवृत्ति पाई जाती है। दिखने में मोहक होते हैं और स्वभाव से शांत और गंभीर तथा चंचल होते हैं। माता-पिता की विशेष कृपा इन पर रहती है। वाहनसुख के धनी होते हैं। प्रवास पर्यटन में रुचि होती है। किंतु कई बार विवश होकर लंबी यात्रा करनी पड़ती है। शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं।

लोगों की कृपा पर निर्भर न रहते हुए अपने पुरुषार्थ से आगे बढ़ते हैं। सरकारी नौकरी में नाम कमाते हैं। कंपनी कामकाज, शेयर की खरीदफरोख्त में अच्छा धन कमाते हैं। काम में तेजी एवं वेग रहता है।

स्त्री: पुष्य नक्षत्र में जन्मी महिलाएं सर्वगुण संपन्न, विद्वान, उदार, धनसंपन्न, अपने पुत्र से सुख प्राप्त करनेवाली एवं गृहकार्य में दक्ष होती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

क्षय, अस्थिशूल, जोड़ों में दर्द, ज्वर, जैसी पीड़ाएं पुष्य नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों को सताती हैं। साथ ही भाग्योदय में अनेक व्यधान खड़े होते हैं। इस परेशानी से छुटकारा पाने के लिए कुंकुंम, गंध, कमलपुष्प, घृतपायस, गुग्गुल, शुद्ध घी का दीपक एवं शक्कर इत्यादि से विष्णु स्वरूप देवगुरु बृहस्पति का विधिपूर्वक पूजन करें। बृहस्पतिवार के दिन पीले वस्त्र का दान दें। आटे के मोदक (लड्डू) बनाकर नीचे दिए मंत्र उच्चारण के साथ मोदक की आहुतियां दें।

ॐ बृहस्पते अतियदर्योअहदि द्युमद्विभति कृतमज्जतेषु।
य दुरीयच्दन सत्रृतुप्रजाज दस्मासु द्रविणधेही चित्रम ॐ बृहस्पतये नमः॥

अलग से इस मंत्र का दस हजार जाप करके घी एवं पायस की आहुतियां देकर हवन करें।

चरण प्रभाव

प्रथम चरण: में जन्मा जातक चिड़चिड़े स्वभाव का, बुद्धिमान, दया, ममता, स्नेह से युक्त, परोपकारी, लोगों के कामों से रुचि रखनेवाला, वायुरोग, आंतों में सूजन आदि रोगों से पीड़ित रहता है।

द्वितीय चरण: में जन्मा जातक आमतौर पर व्यापार में असफल रहता है। लड़ाई-झगड़े, वाद-विवाद एवं मुकदमेबाजी से डरनेवाला किंतु लोगों को सलाह, उपदेश, शिक्षा देनेवाला रहता है।

तृतीय चरण: में जन्मा जातक सदा हंसमुख, प्रसन्नचित्त, बुद्धिमान एवं

संबंधितों का अनुसरण करनेवाला होता है।

चतुर्थ चरण: में जन्मा जातक झगड़ालू, चिड़चिड़ा, स्त्रियों पर मुग्ध होनेवाला एवं कलहकारक होता है।

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुष: आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे पुरुष बुद्धिहीन, दूसरों की न सुननेवाले एवं जिद्दी होते हैं। सामान्य रूप से बुरे कामों में रुचि रहती है। कोई-न-कोई व्यसन रहता है। व्यर्थ भ्रमण, अकारण लोगों को कष्ट पहुंचाने की वृत्ति इनमें पाई जाती है। कामशक्ति प्रबल होती है। स्वतंत्र व्यवसाय में धन कमाते हैं। मातृसुख में न्यूनता रहती है। जीवनयापन के लिए अनेक षड्यंत्र करने पड़ते हैं। वकील, इंजीनियर, डॉक्टर, सुनार, लुहार के रूप में सफल होते हैं। किसी भी कार्य का आरंभ तो ये कर देते हैं पर बीच में ही वह कार्य छोड़ देते हैं। एक से अधिक विवाह करना, कानून का उल्लंघन करना, दुर्भाग्यशाली बच्चे का बाप बनना, चुनाव में जीतना, ये खासियतें आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे पुरुषों में अधिक पाई जाती हैं।

स्त्री: आश्लेषा नक्षत्र में जन्मी महिलाएं उग्र स्वभाव की, झगड़ालू एवं बदसूरत होती हैं। कलह करने की आदत होती हैं परंतु प्रेम निभाती हैं। इन्हें भाग्यशाली नहीं कहा जा सकता। खाने-पीने में कोई परहेज नहीं रखतीं। स्वभाव से चंचल एवं कंजूस रहती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष एवं बालकों को सर्वांग पीड़ा, पैरों की तकलीफ, संतान न होना, वैवाहिक सुख प्राप्त न होना, विवाह में विलंब होना अथवा अड़चनें उत्पन्न होकर असफल होना आदि कष्ट सहने पड़ते हैं। आश्लेषा नक्षत्र का स्वामी सर्प होने के कारण ही यह सब भुगतना पड़ता है। जिस दिन आश्लेषा नक्षत्र हो उस दिन सोने की नाग प्रतिमा बनवाकर विधिवत उसकी प्राण प्रतिष्ठा करें। सोने की नाग प्रतिमा कम-से-कम एक ग्राम सोने में बनवाएं। कुंकुम, अश्वगंध, अगस्तपुष्प, घी, गुग्गुल धूप एवं घी के दीपक से पूजन-अर्चन करें। दूध चावल से बनी खीर का भोग चढ़ाएं। यथाशक्ति दान दें। गेहूं, मूंग, सत्तू, तिल, समुद्री नमक, गाय का दूध, दही, नारियल, जीरा, सौंठ, शक्कर, ईख, लवंग, इलायची इत्यादि में से जो भी उपलब्ध हो उन हविष्यों के पदार्थों से आहुतियां देकर हवन करें। हर मास आश्लेषा के दिन सुवर्णलता का पूजन करें या फिर पूर्ण अनुष्ठान से सर्प शांति-कालसर्प शांति एक ही बार करवा लें।

नीचे दिए मंत्र का दस हजार जाप करें:

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के चु पृथिनी मनुः ये।
अन्तरिक्षेदिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॐ नमो केशवराय नमः॥

□□

सिंह (5)

यह पांचवीं राशि है। इस का निर्देशांक 5 है।

मघा नक्षत्र के चार चरण, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के चार चरण एवं उत्तराफाल्गुनी का प्रथम चरण मिलकर सिंह राशि बनती है।

नीचे दी गई सारिणी में चंद्र के अंश, नक्षत्र, चरण, नामाक्षर राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, योनि, नाड़ी, गण की जानकारी दी गई है।

चंद्र के अंश अंश कला से अंश कला	नक्षत्र	चरण	नामाक्षर	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	योनि	नाड़ी	गण
0.00 से 13.20	मघा	1से 4	म,मी,मू,मे	सूर्य	केतु	मूषक	अन्त्य	राक्षस
13.20 से 26.40	पूर्वा-फाल्गुनी	2 से 4	मो,टा,टी,टू टे	सूर्य	शुक्र	मूषक	मध्य	मनुष्य
26.40 से 30.00	उत्तरा-फाल्गुनी	1		सूर्य	शुक्र/ सूर्य	गौ	आद्य	मनुष्य

सिंह राशि की आकृति शेर जैसी है। पृथ्वी के क्रांति अंशों पर आधारित विषुवत रेखा से 20 से 12 अंशों तक इस राशि का प्रभाव माना गया है।

विशेषताएं

इसे अंग्रेजी में लिओ (Leo) कहते हैं। यह बृहत शरीरधारी, पूर्वसंज्ञक, पूरब दिशा के घनघोर जंगल, पर्वत-गुफाओं पर राज्य करनेवाली, क्रूरधर्मी, शांतलक्षणी, स्थिरस्वभावी, वृद्ध या जीर्ण आचरणवाली, गौरवर्णी, तमोगुणी, अग्नितत्त्व की, दिनबली, वनचारी, पित्त प्रकृति की, क्षत्रिय जाति की शीर्षोदय विषम राशि है। इस राशि का स्वामी सूर्य, निवास स्थान पांडु देश, वार रविवार, अंक 1 और 4 है।

शरीर के पेट, पीठ, रक्त, हृदय पर इस राशि का प्रभुत्व है। विद्वता एवं संरक्षण के साथ भी यह राशि जुड़ी हुई है। पौष्टिक अन्न, रस, हृष्टपुष्ट त्वचा, व्याघ्राम्बर, मृगचर्म, गुड़, खांडसारी, चना पीतल, सोना सिंह राशि के द्रव्य हैं।

मेदिनीय ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इटली, फ्रांस, बोहेमिया, रूमानिया, सिसिली, शिकागो, दमिश्क, ब्रिस्टल, अफगानिस्तान, हिमाचल प्रदेश एवं मुंबई का प्रतिनिधित्व यह राशि करती है।

जातकों का भविष्य

दिखने में अच्छे होने पर भी अंदर से खोखले होते हैं। सिंह राशि के व्यक्ति की आंखें पीली, ठोड़ी तथा चेहरा बड़ा होता है। जंगल में भटकने का शौक रहता है। क्रोधी स्वभाव और एक जगह टिके न रहने की प्रवृत्ति के कारण इन्हें जीवन में बहुत कुछ भुगतना पड़ता है। खाने-पीने में सतर्क होते हैं। परिवार से स्नेह रखते हैं किंतु मतभिन्नता के कारण परिवार से अलग रहना पड़ता है। जातक कमर की पीड़ा से परेशान रहते हैं।

सिंह राशि की महिलाएं शरीर से स्थूल होती हैं। सभी प्रकार की खानपान की चीजों का शौक रहता है। स्वपरिश्रम से धन कमाती हैं। इन्हें संतान सुख कम मिलता है। पति के हर काम की नुक्ताचीनी करने की इनमें आदत रहती है। पित्त प्रकोप की शिकायत रहती है।

जातकाभरण के अनुसार

सिंह राशि के अधिकांश व्यक्ति धनवान, शिक्षित, भ्रमणशील, समाज में सम्मानित होते हैं। लड़ाई में अग्रसर होकर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं। शीघ्र क्रोधी, कठोर स्वभावी होते हैं। इनकी आंखों में गजब की कशिश रहती है।

जन्म के प्रथम वर्ष में प्रेत बाधा की पीड़ा होती है। पांचवें वर्ष में अग्निभय एवं सातवें वर्ष में ज्वरपीड़ा सहनी पड़ती है।

20वें वर्ष में सर्पभय रहता है। 21वें वर्ष में काफी परेशानियों से गुजरना पड़ता है। पेट के दाईं तरफ के हिस्से में वातरोग से पीड़ा रहती है।

स्वभाव से सुशील, किंतु कंजूस एवं स्पष्टवक्ता होते हैं। आयु 71 से 100 वर्ष तक होती है।

अनुभवसिद्ध फलित

सिंह राशि के व्यक्ति प्रयत्नवादी होते हैं। बुद्धि विलक्षण व तीव्र होने पर भी शिक्षा मध्यम रहती है। उच्च शिक्षा का उपयोग इनके जीवन में नहीं होता। शीघ्र क्रोधी, बुलंद आवाज, धैर्यशील, शृंगार एवं साफ-सफाई के चहेते, सत्ताधारी बनने में चतुर होते हैं। शरीर पर कोई-न-कोई ऑपरेशन का चिह्न होता है।

प्रतिकूलता

- हर साल का फरवरी मास।
- हर मास की 3, 18, 23, 29 तारीखें।
- शनिवार।
- काला रंग, काले वस्त्र इत्यादि।
- कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशि के स्त्री-पुरुष।

जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं

18 से 25वें वर्षों में विवाह योग बनता है। वैवाहिक जीवन सुखी एवं समृद्ध

रहता है। संतान सुख भी उत्तम प्राप्त होता है।

19 से 26वें वर्ष में भाग्योदयकारी घटनाएं घटती हैं। जमीन, घर मकान, वाहन एवं भरपूर संपत्ति का लाभ प्राप्त होता है। साथ ही मान-सम्मान में बढ़ोतरी होती है।

37 से 45वें वर्ष में अड़चनों एवं परेशानियों की भरमार रहती है। नौकरी-व्यवसाय में कई मुसीबतें खड़ी होती हैं। कीमती चीजों की चोरी हो सकती है।

46 से 62 वर्षों में सुख प्राप्त होता है। 66वें वर्ष में किसी वाहन से दुर्घटना होकर मृत्युसम पीड़ा महसूस होती है।

विशेष उपासना

सिंह राशि के व्यक्ति हमेशा सूर्योपासना करें। रविवार का व्रत रखें। श्री आदित्य कवच धारण करें। माणिक रत्न धारण करें। नीचे दिए मंत्र का जाप नित्यप्रति 108 बार करें:

ॐ क्लीं ब्राह्मणे जगदाधाराय नमः।

मघा नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः हृष्ट-पुष्ट शरीर, चौड़ी छाती, प्रभावशाली, आकर्षक एवं प्रेरणादायक व्यक्तित्व रहता है। ऐसे जातक सत्ता एवं स्वतंत्रताप्रिय, खर्चीले, ज्ञानपिपासु, विश्वासपात्र, दार्शनिक, उदार, दयालु, स्पष्टवक्ता, गुस्सा आने पर भयंकर रूप दिखानेवाले, सामाजिक एवं राजकीय कामों में अगुआ रहनेवाले, अल्पाहारी, दो विवाह करनेवाला या एक ही कन्या संतान से युक्त, लेखक, क्लर्क, भाषाशास्त्री, अभिनेता, नाटककार, सैनिक, वकील, वास्तुशिल्पी, यशस्वी डॉक्टर होते हैं।

स्त्रीः मघा नक्षत्र में जन्मी महिलाएं खाने-पीने के मामले में बड़ी सतर्क रहती हैं। सुव्यवस्थित वेशभूषा रखनेवाली, माता-पिता एवं परमात्मा की भक्ति करनेवाली, पति को श्रेष्ठ माननेवाली, धन-संपत्ति का सुख भोगनेवाली होती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

मघा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति आमतौर पर सिरदर्द, अर्धांग वायु से पीड़ित रहते हैं। पितृदोष के कारण जीवन में अनेक दुख एवं कष्ट भोगने पड़ते हैं, जो अंततः भाग्योदय में रोड़े अटकाते हैं। इस दुख को दूर करने के लिए जिस दिन मघा नक्षत्र हो, उस दिन पितृस्वरूप, कुलपूज्य ब्राह्मण को आमंत्रित कर श्वेतचंदन, चंपकपुष्प (चंपा के फूल), गुग्गुल, शुद्ध घी का दीपक आदि से उनका पूजन करें। मिष्ठान्न का भोग लगाएं और मिष्ठान्न ही ब्राह्मण को भोजन में परोसें। वस्त्र, तिल एवं चावल दान में दें। 'त्रिपिंडी श्राद्ध' करें।

नीचे दिए मंत्र का दस हजार जाप स्वयं करें या ब्राह्मण द्वारा करवा लें।

'ॐ पितृभ्या स्वधामिभ्या स्वधानमः पितामहेभ्या स्वधाभिम्यः स्वधानमनमृ।

प्रपितामहेभ्यः स्वधामिभ्यः स्वधानमः अक्षन्नपितरो मीपदन्तपितरो ती तृपन्न पिदतः पितः शुद्धम ॐ पितृभ्यो नमः।।

इस मंत्र से घी, तिल, चावल की आहुतियां देकर हवन करने से स्नायु रोग सिरदर्द, चर्मरोग, हृदयरोग, यकृतजन्य व्याधियों से जातक को मुक्ति मिलती है एवं अनेक मुसीबतों को पार करते हुए वह सफलता की राह पर चलता है।

चरण प्रभाव

प्रथम चरणः इस चरण में जन्मा जातक पराश्रित एवं दूसरों के आश्वासनों पर जीता है। उसकी आंखें बड़ी एवं लाल रहती हैं।

द्वितीय चरणः इस चरण में जन्मा जातक मुक्तहस्त से धन खर्च करनेवाला, धनवान, कर्णरोग से ग्रसित, बुद्धि से मंद एवं दुर्बल रहता है।

तृतीय चरणः इस चरण में जन्मा जातक पुष्ट, बलवान, गठीले शरीरवाला, नम्र किंतु दुराचारी रहता है। अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर सकता है।

चतुर्थ चरणः इस चरण में जन्मा जातक पत्नी भक्त रहता है। उसकी कथनी-करनी उसकी स्त्री पर निर्भर रहती है। स्त्रियों की चापलूसी करनेवाला, आलसी एवं चर्मरोग से ग्रसित रहता है।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मे जातक विद्वान, प्रतिभासंपन्न, गंभीर एवं आर्थिक दृष्टि से सुसंपन्न होते हैं। स्त्रियों पर इनका अधिक प्रभाव होता है। बड़े परिश्रम से राज्यकृपा प्राप्त होती है। सैनिक के गुण इनमें रहते हैं। ढाढस, चतुरता, स्वार्थ एवं कामातुरता इनमें कूट-कूटकर भरी रहती है। प्रयत्न से किसी भी सिद्धि के धनी बन सकते हैं। आमतौर पर इस नक्षत्र में जन्मे जातक नौकरी पसंद करते हैं। व्यापार में साझेदारी के कारण नुकसान उठाते हैं। स्वभाव में अकड़ एवं घमंड रहता है।

स्त्रीः पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मी महिलाएं मृदुभाषी, अपने वाक्‌चातुर्य से दूसरों पर प्रभाव डालनेवाली, आकर्षक चेहरे की, चंचल, विनोदी, धर्म में आस्थावान, हमेशा आगे बढ़ने के गुणों से युक्त होती है।

व्याधियां एवं उपाय

ज्वरपीड़ा, सिरपीड़ा, उष्णता, मानसिक रोग इत्यादि शारीरिक कष्टों से पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष ग्रस्त रहते हैं। इस व्याधि से मुक्ति के लिए निम्नलिखित मंत्र का दस हजार जाप करना आवश्यक है।

ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यरागोमंगेमाधियमूदवादन्नः ।
भृग प्रणोजनय गोभिरश्वैप्रतिभतृर्वतस्याम ॐ भगाय नमः।

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के दिन ढाक की पूजा कर, ढाक का एक पत्ता हमेशा अपने पास रखें।

चरण प्रभाव

प्रथम चरण: में जन्मे जातक आस्तिक, दैविक एवं धार्मिक कार्य में उत्साह से भाग लेनेवाले, साहसी एवं सफल व्यापारी होते हैं।

द्वितीय चरण: में जन्मे जातक दुर्भाग्यशाली, नाना विपत्तियों में घिरा, कृषिकार्य करनेवाला, नित्य परेशान होता है।

तृतीय चरण: सज्जन, तंत्रमंत्र साधक, मानसम्मान प्राप्त करनेवाला होता है।

चतुर्थ चरण: जातक जीवनभर दुखी रहता है एवं उसके शरीर में घाव के चिह्न होते हैं।

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुष: उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति स्वभाव से क्रूर होते हैं। आत्मस्तुति प्रिय, धैर्यवान, अभिमानी, प्रसिद्धि प्राप्त करनेवाले, हंसमुख, सुधारवादी, कार्यकुशल, वादविवाद एवं झगड़े में अगुवा, दान पुण्यकारी, धनवान होते हैं। खगोलज्ञ, ज्योतिषी, हस्तरेखा के जानकार, लेखक, प्रकाशक, इंजीनियर, डॉक्टर, राजदूत, प्राध्यापक की हैसियत से मान्यता प्राप्त होती है।

स्त्री: उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मी महिलाएं आस्तिक, धनसंचय में अग्रसर, निंदा करने एवं दूसरों के अवगुण देखने की प्रवृत्ति के कारण यदाकदा इन्हें बदनामी प्राप्त होती है। सर्वगुण संपन्न, विद्यावान, पुत्र सुख से परिपूर्ण रहती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

शारीरिक एवं सांसारिक मुसीबतों से उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के जातक घिरे रहते हैं। वैवाहिक जीवन में बाधाएं आती हैं। इन बाधाओं के निवारणार्थ नीचे दिए मंत्र का दस हजार जाप करें।

ॐ दैव्यावध्वर्यु आगत गूं रथेन सूर्यलचा।
मध्वायज्ञगूं समंजावे तं प्रयत्नयावेनाशिचं देवानाम् ॐ अर्यमणे नमः

प्रथम चरण: में जन्मे जातक मधुरभाषी, शुभवचनी, वाक्‌चतुर, वीर, शक्तिसंपन्न एवं मित्रता के योग्य रहते हैं।

द्वितीय चरण: में जन्मे जातक दुर्भाग्यशाली, कृषि कार्यरत, परेशान, नाना प्रकार की विपत्तियों से घिरे रहते हैं।

तृतीय चरण: में जन्मे जातक सज्जन, साधुमना एवं सर्वत्र मानसम्मान पानेवाले होते हैं।

चतुर्थ चरण: में जन्मे जातक जीवनभर दुखी एवं विषादपूर्ण जीवन बितानेवाले होते हैं। इनके शरीर पर घावों के चिह्न पाए जाते हैं।

❑❑

कन्या (6)

यह छठी राशि है। इसका निर्देशांक 6 है।

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के अंतिम तीन चरण, हस्त नक्षत्र के चार चरण एवं चित्रा नक्षत्र के प्रथम दो चरण मिलकर कन्या राशि बनती है।

नीचे दी गई सारिणी में चंद्र के अंश, नक्षत्र, चरण, नामाक्षर, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, योनि, नाड़ी, गण की जानकारी दी जा रही है।

चंद्र के अंश अंश कला से अंश कला	नक्षत्र	चरण	नामाक्षर	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	योनि	नाड़ी	गण
00.00 से 10.00	उ.फा.	2,3,4	टो,प,पी	बुध	सूर्य	गो	आद्य	मनुष्य
10.00 से 23.20	हस्त	1,2,3,4	पू,ष,ग,ठ	बुध	चंद्र	महिष	आद्य	देव
23.20 से 30.00	चित्रा	1,2	पे,पो	बुध	मंगल	व्याघ्र	मध्य	राक्षस

कन्या राशि की आकृति कुमारी कन्या जैसी है। पृथ्वी के क्रांति अंश पर आधारित विषुवत रेखा से 12 से 0 अंशों तक इस राशि का प्रभाव रहता है।

विशेषताएं

इसे अंग्रेजी में विरगो (Virgo) कहते हैं। जीवनसंज्ञक यह राशि स्नेह व विवेक की प्रतीक है। दीर्घकाय, स्त्री राशि, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, शस्यश्यामलाभूमि, खेती, बाग-बगीचे, स्त्री-पुरुषों के क्रीड़ास्थान, हस्तकला केंद्र आदि जगहों पर विचरण करनेवाली है। यह द्विस्वभावी, बाल्यावस्था की, सत्वगुणी, पृथ्वी तत्त्व की, दिन में बली, वात प्रकृति की, शूद्र जाति की, शीर्षोदयी समराशि है ।

इस राशि का स्वामी बुध, दिन बुधवार एवं अंक 5 है। केरल प्रांत इसका निवास स्थान है।

शरीर में कटिप्रदेश, कमर, पेट, आंतों इत्यादि पर इसका प्रभाव रहता है। जनसेवा एवं स्वास्थ्य विषयक कामों से यह जुड़ी हुई रहती है। इसे 'मातुलराशि' कहा जाता है। दादा-पिता के कारकत्व इस राशि के पास हैं।

मूंग, मटकी, अलसी, पीली सरसों, मटर, ज्वार, जवस, कपास एवं वस्त्र कन्या राशि के द्रव्य हैं।

मेदिनीय ज्योतिषशास्त्र में तुर्की, यूनान, ब्राजील, भारत, पेरिस इत्यादि का

प्रतिनिधित्व यह राशि करती है।

नोट: उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के जातक के लक्षण, व्याधियां एवं उनसे मुक्ति के उपाय सिंह राशि के परिच्छेद में पढ़िए।

जातकों का भविष्य

कन्या राशि के जातक स्त्रियोचित गुण-स्वभाव से युक्त, आचरण से शुद्ध, हंसी-मजाक करनेवाले, अधिक कन्या संतान के पिता, शत्रुओं का नाश बुद्धिचातुर्य से करनेवाले, उपकार माननेवाले होते हैं। इन्हें आकस्मिक धनप्राप्ति होती है। ये परंपरा और मर्यादा का पालन विशेष रूप से करते हैं। शिक्षा में काफी तरक्की करते हैं। क्रोधित होने पर भी शीघ्र ही शांत हो जाते हैं। जीवनभर दूसरों के लिए परिश्रम करनेवाले होते हैं।

कन्या राशि की महिलाएं सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, माता-पिता एवं पति से प्रेम करनेवाली, साधन संपन्न, अन्न, वस्त्र एवं संपत्ति का सुख भोगनेवाली, नृत्यकला प्रवीण एवं चरित्र से कुछ शिथिल रहती हैं।

जातकाभरण के अनुसार

कन्या राशि के जातक परिवार से वाहवाही प्राप्त करते हैं। देश-विदेश की काफी जानकारी रखते हैं। गुप्तेंद्रिय, जननेद्रिंय या गले पर कोई चिह्न होता है।

जन्म से तीसरे वर्ष में अग्निभय रहता है। पांचवें वर्ष में नेत्र पीड़ा से कष्ट होता है। नौवें एवं तेरहवें साल में गुप्तेंद्रिय पीड़ा होती है। 15वें वर्ष में जहरीले जंतु से भय होता है। 21वें वर्ष में पेड़ या दीवार से नीचे गिरकर जख्मी होने की संभावना रहती है। 30वें वर्ष जंगल में शस्त्राघात से जख्मी होना पड़ता है। आयु 80 वर्ष की रहती है।

अनुभवसिद्ध फलित

सरल एवं सीधा स्वभाव, स्वाभिमानी एवं उदार स्वभावी होने से धनसंग्रह नहीं होता। साझेदार धोखा देते हैं। उपकार के बदले अपकार मिलता है। भाई-बहन एवं माता-पिता के साथ मतभिन्नता रहती है। मित्र इनका ही खाकर इन्हें डुबोते हैं।

लेखनकला में प्रवीण, प्रभावी वक्ता, गायन-वादनादि कला में रुचि रखनेवाले जातक कन्या राशि के ही होते हैं। चाल-ढाल में सीधे होते हैं। भ्रमित की तरह इनकी चाल होती है। कामकला में प्रवीण, मधुरवाणी से सबको लुभाने की कला भी कन्या राशि के जातक में होती है।

कन्या राशि के व्यक्ति बैंक में अकाउंटेंट, कानूनी सलाहकार, राजकर्मी, पुस्तक विक्रेंता, आयुर्वेदिक या एलोपैथिक डॉक्टर, होटल का व्यवसाय करनेवाले, वकील, इनकमटैक्स-सेल्सटैक्स के सलाहकार आदि व्यवसायों में बहुतायत से पाए जाते हैं।

प्रतिकूलता

- किसी भी वर्ष का मार्च महीना।
- हर महीने की 8, 11, 23, 30 तारीखें।
- शनिवार।
- लाल रंग एवं लाल रंग के वस्त्र एवं अन्य चीजें।
- मेष, सिंह, धनु राशि के व्यक्ति।

जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं

जन्म से 14 वर्ष की आयु तक विविध प्रकार के शारीरिक कष्ट भोगने पड़ते हैं। 18 से 26 वर्ष की आयु में विवाह योग बनता है। वैवाहिक जीवन सुखी रहता है। भोग-विलास में काफी समय व्यतीत होता है। माता-पिता एवं मित्रों से सुख कम प्राप्त होता है। बारंबार अलग-अलग सपने दिखाई देते हैं। उद्योग, व्यवसाय में या नौकरी में सफलता प्राप्त होती है। खुद का मकान होता है। 25वें एवं 31वें साल में कोर्ट-कचहरी एवं सरकारी विवादों में फंसना पड़ता है। 36 से 48 वर्ष की अवधि खराब रहती है। अनेक दुखदायी प्रसंग देखने पड़ते हैं। हर काम में असफलता ही हाथ लगती है। खाने के लाले पड़ते हैं। धंधे का दिवाला पीट जाता है। मित्र शत्रु बन जाते हैं। 49 से 62वां वर्ष पुन: नए जीवन की प्राप्ति करानेवाला होता है। गंवाया हुआ सुख-वैभव पुन: प्राप्त होता है। दुखों का अंत होकर भाग्योदय होता है तथा सभी स्तरों पर सहयोग मिलता है।

63 से 77 वर्ष की कालावधि सुख में बीतती है। 70 साल की आयु में क्षय रोगग्रस्त होकर जीवन का अंत होने की संभावना रहती है।

विशेष उपासना

जीवन सुखमय करने के लिए निम्नलिखित 'श्री राम वंदना' नित्य 11 बार करें।

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय मानसे।
रघुनाथाय नाथाय सीताया: पतये नम:॥
नीलाम्बुजश्यामल कोमलांगं सीता समारोपितवाम भागम्।
पाणौ महासायकचारु चापं नमामि रामं रघुवंशनाथम्॥

साथ ही संकष्टी चतुर्थी का व्रत रखें। बटुक भैरव स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

हस्त नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुष: हस्त नक्षत्र में जन्मे पुरुष कठोर, छलप्रपंची, किसी की न सुननेवाले, स्वयं को बड़ा एवं सयाना समझनेवाले, व्यसनाधीन होकर झूठ बोलनेवाले, सहोदरों के सुख में न्यूनतायुक्त, परस्त्री की ओर अधिक आकृष्ट होनेवाले, प्रामाणिक,

साझेदारों से अनबन रखनेवाले, कदम-कदम पर मुसीबतों से जूझनेवाले होते हैं।

ऐसे व्यक्ति वेदों के ज्ञाता, व्यापारी, कुशल कार्यकर्ता, तरल पदार्थों के शौकीन, कपड़े के व्यवसायी, इंजीनियर, पेंटर, राजदूत, सरकारी नौकर, कथाकार, सर्जन, नर्स, पंडित, कवि, छापाखाने में काम करनेवाले तथा वकील होते हैं।

स्त्रीः हस्त नक्षत्र में जन्मी महिलाएं घमंडी, महत्त्वाकांक्षी, दूसरों से धन कमानेवाली, अपने कामों में दक्ष, गृहस्थ जीवन में सुव्यवस्थित रहनेवाली, उत्साही, खूबसूरत किंतु निर्लज्ज, दूसरों की चीजें अपनी ही समझकर भक्षण करनेवाली होती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

सूर्य की अनिष्टता के कारण हस्त नक्षत्र में जन्मे जातकों को काफी कुछ सहना पड़ता है। इस अनिष्टता के निवारण के लिए नीचे दिए मंत्र का जाप पांच हजार बार स्वयं करें या योग्य ब्राह्मण से करवा लें। दशांश हवन दूध-घी की आहुतियों से करें।

ॐ बिभ्राडवृहलिबनु सौम्यंमध्वासुर्दधज्ञ पत्तावविहुतृ।

वातजुतो यो अभिक्षतित्मता प्रजाः पुवोषापुरुषा विराजति ॐ सवित्रे नमः।

सोमवार को हस्त नक्षत्र के दिन जाति वृक्ष की जड़ तावीज में रखकर गले में या बाहु पर धारण करें। पन्ना या फिरोजा चांदी की अंगूठी में जड़वाकर करांगुली में धारण करें।

चरण प्रभाव

प्रथम चरणः में जन्मे जातक अभिमानी, घमंडी, झूठे, दुराभिमानी, अवगुणों से युक्त किंतु पशु, जीव, जंतुओं पर मुग्ध रहते हैं।

द्वितीय चरणः में जन्मे जातक संगीत, वाद्य-नृत्य प्रेमी, कलाकार होते हैं।

तृतीय चरणः में जन्मे जातक सफल व्यापारी, कुशल कार्यकर्ता, चतुर एवं सामान्य रोगी होते हैं।

चतुर्थ चरणः में जन्मे जातक हंसमुख, प्रसन्नचित्त, मातृभक्त, सुदृढ़, लंबे कद के, बलिष्ठ शरीरधारी होते हैं।

चित्रा नक्षत्र में जन्मे जातक

चित्रा नक्षत्र में जन्मे जातक हंसमुख, नाक, कान एवं सुंदर आंखों से युक्त, विनोदी, आज्ञाकारी, महत्त्वाकांक्षी, सफेद परिधानों के शौकीन, आकर्षक व्यक्तित्ववाले किंतु शीघ्र क्रोधी होते हैं।

व्याधियां एवं उपाय

चित्रा नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष बहुमूत्र रोगी, अर्धांगवायु, उन्माद, कामवासना के कारण गुप्तेंद्रिय रोगों से ग्रसित होते हैं। व्यापार में असफलता के शिकार होते हैं।

गृहस्थ जीवन में भी कई मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं। इन समस्त अनिष्टताओं के निवारणार्थ मंगलवार के दिन जब चित्रा नक्षत्र हो तब 'विश्वकर्मादेव' का पूजन करके नीचे दिए मंत्र का दस हजार जाप करें।

ॐ त्वष्टा तुरीयो अद्भुत इन्द्राग्निपुष्टि वर्धनपू।
द्विपदादन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्रवयोदथः ॐ विश्वकर्मेण नमः।

जाप के बाद दशांश हवन स्वयं करें या योग्य ब्राह्मण से करवा लें। इसके फलस्वरूप वाहन, मकान के विषय में आनेवाले कष्ट दूर होकर समृद्धि आपके घर आएगी।

□□

तुला (7)

बारह राशियों में यह सातवीं राशि है। इसका निर्देशांक 7 है।

चित्रा नक्षत्र के अंतिम दो चरण, स्वाति नक्षत्र के चार चरण एवं विशाखा नक्षत्र के पहले तीन चरण मिलकर तुला राशि बनती है।

नीचे दी गई सारिणी में चंद्र के अंश, नक्षत्र, चरण, नामाक्षर, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, योनि, नाड़ी, गण के बारे में जानकारी दी गई है।

चंद्र के अंश अंश कला से अंश कला	नक्षत्र	चरण	नामाक्षर	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	योनि	नाड़ी	गण
00.00 से 6.40	चित्रा	3, 4	रा,री	शुक्र	मंगल	व्याघ्र	मध्य	राक्षस
06.40 से 20.00	स्वाति	1 से 4	रू,रे,रो,ता	शुक्र	राहु	महिष	अन्त्य	देव
20.00 से 30.00	विशाखा	1 से 3	तू ती ते	शुक्र	बृहस्पति	व्याघ्र	अन्त्य	राक्षस

इस राशि की आकृति तराजू जैसी है। पृथ्वी के क्रांति अंशों पर आधारित विषुवत रेखा से 12 अंशों तक इस राशि का प्रभाव माना जाता है।

विशेषताएं

इसे अंग्रेजी में लिब्रा (Libra) कहते हैं। कन्या राशि के दक्षिण पूर्व में तुला राशि है। सूर्य जब इस राशि में रहता है तब दिन-रात एक सरीखे रहते हैं। समानता, अनुरूपता एवं न्याय की प्रतीक है यह राशि।

यह बृहत काया, व्यापारकुशल, धातुसंज्ञक, वायु तत्त्व की, पुरुष स्वभावी, शूद्र वर्ण की, मृदुज्वर, रजोगुणी राशि है। विपुल धन वैभव से परिपूर्ण महानगर में, बाजार हाट या व्यापारी केंद्र, सर्वोच्च न्यायालय एवं मनोरंजन के स्थानों में इसका निवास माना गया है। वायु तत्त्व की नीलवर्ण प्रिय, वैश्य जाति की, दिवाबली, शीर्षोदयी तुला राशि का निवास स्थान कोल्ला (पश्चिम भारत) है।

इस राशि का स्वामी शुक्र, दिन शुक्रवार एवं अंक 6 है। शरीर में नाभि के नीचे के अवयव, मूत्राशय, पेट पर इस राशि का प्रभाव रहता है।

नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, न्याय एवं स्मृति से इस राशि का संबंध है। रेशम, वस्त्र, तिल, गेहूं, चने, चावल, कपास, अरहर, अरंडी का प्रतिनिधित्व इसके पास है।

मेदिनीय ज्योतिषशास्त्र में आस्ट्रेलिया, पुर्तगाल, जापान, तिब्बत, बर्मा, अर्जेंटीना, इत्यादि देशों का प्रतिनिधित्व यह राशि करती है।

नोट: चित्रा नक्षत्र के जातकों के लक्षण, व्याधियां एवं उनसे मुक्ति पाने के उपायों की जानकारी कन्या राशि के परिच्छेद में पढ़ें।

जातकों का भविष्य

वाहनों के शौकीन, पराक्रमी, दानपुण्यशील, धार्मिक कार्यों में रुचि रखनेवाले, पुरुषार्थ से धन कमानेवाले, स्वतंत्र बुद्धि के, नेतृत्व शक्ति के धनी, न्यायप्रिय, सत्यभाषी, खरीद-फरोख्त में माहिर होते हैं। इनके भाग्योदय में विलंब होता है। एक से अधिक स्त्रियों से संबंध रहते हैं। संतान सुख में कमी रहती है। व्यवहार में दो नामों से जाने जाते हैं।

इस राशि की महिलाएं काफी चंचल रहती हैं। सुराहीदार गरदन होती है। समाज में नाम प्राप्त होता है। अनुशासनप्रिय होती हैं। यश, धन इन्हें काफी मात्रा में प्राप्त होता है।

जातकाभरण के अनुसार

तुला राशि के व्यक्ति प्रतिष्ठित, ऐशोआरामी, विलासी, सरकार में उच्च पद, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, विभिन्न कलाओं के ज्ञाता, कलात्मक वस्तुओं के संग्रहकर्ता होते हैं। सुरुचिपूर्ण भोजन का शौक रखते हैं। दो विवाहों की संभावना रहती है। संतान अल्प रहती है। खरीद-फरोख्त में काफी धन कमाते हैं।

आयु के आठवें वर्ष में ज्वर के कारण कष्ट होता है तो 20वें वर्ष में दुर्घटना का भय रहता है। 21वें वर्ष में अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ता है।

इस राशि के व्यक्ति कलाकार एवं कलाप्रेमी होते हैं। पत्नी हमेशा बीमार रहती है और स्वयं शीघ्रकोधी होते हैं। आयु के 55, 60, 63, 70, 74, 77वें वर्ष अरिष्टसूचक होते हैं। आयु 85 वर्ष की रहती है।

अनुभवसिद्ध फलित

ऊंचा कद, लम्बी नाक, आकर्षक मुखड़ा तुला राशि के व्यक्ति की विशेषताएं है। इनकी संतान रोगी रहती है। व्यवसाय बार-बार बदलने की प्रवृत्ति के कारण जीवन में स्थिरता देर से आती है। उच्छृंखल प्रवृत्ति होती है। गुप्तेंद्रियों का कष्ट रहता है। पुरुषार्थी किंतु आलसी होते हैं।

सौंदर्य प्रसाधन, वस्त्रोद्योग, कागज, स्टेशनरी, कटलरी, किराना सामान, फर्नीचर, होटल, लॉजिंग-बोर्डिंग, सर्राफे के व्यवसायों में तुला राशि के व्यक्ति सफल होते हैं। न्यायाधीश, वकील, बैंक मैनेजर, टैक्स प्रैक्टिशनर की हैसियत से भी आगे आते हैं।

प्रतिकूलता

- किसी भी वर्ष का अप्रैल महीना।
- किसी भी महीने की 4, 14, 19, 24 तारीखें।
- बृहस्पतिवार।
- लाल रंग के वस्त्र एवं लाल रंग की अन्य चीजें।
- कर्क एवं सिंह राशि के व्यक्ति।

जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं

आयु के 18 से 30वें वर्ष में विवाह योग बनता है। कुछ व्यक्ति अविवाहित रहना अधिक पसंद करते हैं। आयु के 28 से 32वें वर्ष के दौरान भाग्योदय होता है। आर्थिक स्थिति में सुधार आता है। आयु के 43 से 68 वर्ष तक शारीरिक कष्ट होंगे तथा आमदनी एवं खर्च में तालमेल नहीं रहेगा। किसी के द्वारा धोखाधड़ी हो सकती है।

विशेष उपासना

नित्य भैरव पूजन करें और 'भैरव स्तोत्र' का पाठ करें। निम्नलिखित मंत्र का प्रतिदिन 108 बार जाप करें:

ॐ तत्त्वनिरंजनायतारक रामाय नमः।

अनामिका में हीरा, अमेरिकन डायमंड या सफेद पुखराज धारण करें।

स्वाति नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुष: स्वाति नक्षत्र में जन्मे जातक चालाक, धर्मप्रिय एवं स्वभाव से कंजूस किंतु उदारमना होते हैं। मदिरा, मदिराक्षी में रमनेवाले, चित्ताकर्षक व्यक्तित्ववाले, सम-विषम दोनों परिस्थितियों में प्रसन्न एवं अविचल रहनेवाले, राजनीति एवं अन्य दो व्यवसायों से धन कमानेवाले, कुछ क्रोधित से स्वभाव के, सगे-संबंधियों के प्रेमी, व्यापार कुशल, पर्यटन प्रेमी होते हैं।

प्लास्टिक उद्योग, कपड़ा उद्योग, बार, रेस्टोरेंट, फैन्सी स्टोर, ऑटोमोबाइल उद्योग, ट्रांसपोर्ट, पेंटिंग, फोटोग्राफी, ब्यूटीपार्लर, तंत्र मंत्र एवं ज्योतिष, बेकरी, स्टूडियो, दूध डेयरी, रसोइया, अकाउंट्स, बैंकिंग, संगीत कला, नाट्यकला, फिल्म इंडस्ट्री, जज, वकील, इनकमटैक्स-सेल्सटैक्स अधिकारी एवं सलाहकार आदि की हैसियत से स्वाति नक्षत्र के जातक सफल होते हैं।

स्त्री: स्वाति नक्षत्र में जन्मी महिलाएं खूबसूरत, कर्मठ, मनोरथ पूर्ण करनेवाली, असंगत वार्तालाप में रुचि लेनेवाली, मधुरभाषी, धार्मिक स्वभाव की, खरीद फरोख्त में होशियार तथा व्यवसाय में सफल होती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

स्वाति नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष मूत्राशय के विकार, गर्भाशय के अल्सर, त्वचा विकार, कुष्ठरोग, क्षयरोग आदि से पीड़ित रहते हैं। जीवन में कई चढ़ाव-उतार आते हैं। प्रगति के मार्ग में अनेक बाधाएं आती हैं। इन सभी अनिष्टताओं के परिहारार्थ नीचे दिए मंत्र का दस हजार जाप करें:

ॐ वायुये ते सहस्त्रिणे रथा सस्तेचिरागहि निकुत्वाम् सोम पितये
ॐ वायवे नमः।

हनुमानजी या श्री शंकरजी की नित्य पूजा-उपासना करें।

चरण प्रभाव

प्रथम चरण: में जन्मे जातक शूरवीर, गंभीर, हमेशा स्वप्न देखनेवाले, हवाई

किले बनानेवाले, वाक्पटु, सतत प्रगति की ओर अग्रसर होते हैं।

द्वितीय चरणः में जन्मे जातक सुदृढ़, कामातुर, सत्यभाषी एवं सत्य आचरणशील होते हैं।

तृतीय चरणः में जन्मे जातक कठोर हृदयी, दया-क्षमारहित होते हैं।

चतुर्थ चरणः में जन्मे जातक श्रेष्ठ वक्ता, वाक्पटु एवं कामातुर होते हैं।

विशाखा नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः विशाखा नक्षत्र में जन्मे पुरुष नम्र, आकर्षक व्यक्तित्व के, वस्त्र आवरणों के संबंध में तड़क-भड़कवाले, ईश्वरभक्त, परंपरावादी, न्यायप्रिय, प्रतिभासंपन्न, कुशल वक्ता, लोभी, ईर्ष्यालु, अभिमानी, मानसिक दृष्टि से हमेशा अशांत, खर्चीले, कुशल संपादक, कवि, लेखक, ज्योतिषी होते हैं।

राज्यमंत्री, ट्रैवलिंग एजेंसी, प्राध्यापक, बड़ी कंपनियों के डायरेक्टर, बैंक अधिकारी, डॉक्टर, प्रकाशन व्यवसायी के रूप में विशाखा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति नाम कमाते हैं।

स्त्रीः विशाखा नक्षत्र में जन्मी महिलाएं धार्मिक कार्यों में अग्रसर, स्वभाव से नम्र, सत्यभाषी, धनी, विद्वान, लेखन एवं भाषण कला में पटु, आकर्षक व्यक्तित्व की धनी रहती हैं। नीच, व्यसनी, लंपट एवं धोखेबाज मित्र की संगति से चारित्रिक पतन का भय रहता है।

व्याधियां एवं उपाय

विशाखा नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष आमतौर पर कुक्षी शूल, सिरदर्द एवं सर्वांग पीड़ा के शिकार होते हैं। जीवन में स्थिरता प्राप्त करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। इन अनिष्टताओं को दूर करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का दस हजार जाप स्वयं करें या योग्य ब्राह्मण से करवा लें। जाप के बाद दशांश हवन भी आवश्यक है।

ॐ इन्द्राग्नि आगत गूं सूतं गिभिर्नमोवदेध्यम्।
अस्य पातं घिये पिता ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः॥

चरण प्रभाव

प्रथम चरणः में जन्मे जातक सफल व्यवसायी, फलित ज्योतिष के विशेषज्ञ एवं भोले मन के होते हैं।

द्वितीय चरणः में जन्मे जातक बड़बोले, अपनी डींग हांकनेवाले, जादूगरी में माहिर, कामातुर, सत्यवादी किंतु कलहकारी होते हैं।

तृतीय चरणः में जन्मे जातक हृष्टपुष्ट, छोटे कद के, वार्तालाप में चतुर किंतु चरित्रहीन होते हैं।

चतुर्थ चरणः में जन्मे जातक ऐश्वर्यसंपन्न, बुद्धिमान, वाक्पटु एवं व्यवहारकुशल होते हैं।

□□

वृश्चिक (8)

12 राशियों में यह आठवीं राशि है। इसका निर्देशांक 8 है।

विशाखा नक्षत्र का चौथा चरण, अनुराधा नक्षत्र के चार चरण एवं ज्येष्ठा नक्षत्र के चार चरण मिलकर वृश्चिक राशि बनती है।

नीचे दी गई सारिणी में चंद्र के अंश, नक्षत्र, चरण, नामाक्षर, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, योनि, नाड़ी एवं गण की जानकारी दी गई है।

चंद्र के अंश अंश कला से अंश कला	नक्षत्र	चरण	नामाक्षर	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	योनि	नाड़ी	गण
00.00 से 20.00	विशाखा	4	तो	मंगल	बृहस्पति	व्याघ्र	अन्त्य	राक्षस
03.20 से 16.40	अनुराधा	1 से 4	नानीनूने	मंगल	शनि	मृग	मध्य	देव
16.40 से 30.00	ज्येष्ठा	1 से 4	नैयायीयू	मंगल	बुध	मृग	आद्य	राक्षस

इस राशि की आकृति बिच्छू जैसी है। यह राशि प्रेम और आसक्ति की प्रतीक है। विषुवत रेखा से 12 से 20 अंशों तक इस राशि का प्रभाव माना गया है।

विशेषताएं

इसे अंग्रेजी में स्कॉर्पियो (Scorpio) कहते हैं। बृहत्काय, स्त्री राशि, तीक्ष्ण डंक के बिच्छू के आकार की, डंक मारनेवाली, गुप्त जहर से युक्त, जड़संज्ञक, उत्तर दिशा में रहनेवाली, पाषाण, जहर, कृमि के छिद्रों में निवास करनेवाली सौम्यधर्मी, शांत लक्षणी, सुनहरे रंग की, तमोगुणी, जलतत्त्व की, दिवाबली, ब्राह्मण जाति की, शीर्षोदयी, सम राशि है।

प्राकृतिक गुण दंभ, दृढ़ता, स्पष्टवादिता एवं स्वच्छता है। इस राशि का निवास स्थान मलय प्रदेश, स्वामी मंगल, दिन मंगलवार एवं अंक 9 है। शरीर में मूत्राशय, गुप्तांग, गुप्तेंद्रिय के नजदीक की हड्डी पर इस राशि का प्रभुत्व रहता है।

लोहा, गन्ना, शक्कर, अल्कोहल, शराब, दवा, तेल, सुपारी, रूई, सरसों, विषैले एवं नशीले पदार्थ इस राशि के प्रभाव में रहते हैं।

मेदिनीय ज्योतिषशास्त्र में नार्वे, मोरक्को, वाशिंगटन, ट्रॉन्सवाल, लिवरपूल, सिंधु एवं गंगा के उष्णकटीय प्रदेश का प्रतिनिधित्व यह राशि करती है।

नोट: विशाखा नक्षत्र के जातकों के लक्षण, व्याधियां एवं उनसे मुक्ति पाने के उपाय की जानकारी तुला राशि के परिच्छेद में पढ़ें।

जातकों का भविष्य

वृश्चिक राशि के स्त्री-पुरुषों को सरकारी यंत्रणा से कष्ट प्राप्त होते हैं और कोर्ट-कचहरी एवं मुकदमे में फंस जाते हैं। जुआ-सट्टा, लॉटरी में लाभ न होकर हानि होती है। नानाविध व्यवसाय करने पड़ते हैं। सच्चे एवं अच्छे मित्र नहीं मिलते। कलह-उपद्रव वृश्चिक राशि जातकों के स्थायी भाव हैं। ये बचपन में हमेशा बीमार रहते हैं। छाती एवं आंखें बड़ी रहती हैं। पिता एवं गुरु से पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होता। हथेली पर पद्मरेखा रहती है। वाद-विवाद में अग्रणी रहते हैं।

आयु के 5, 8, 18, 22, 23, 42, 51, 56 वर्षों में ऊंचाई से गिरने से कष्ट होता है। शारीरिक अवस्था भी ठीक नहीं रहती। जलभय भी रहता है। समाज प्रिय, गीत-नृत्यादि एवं संगीत में रुचि रखते हैं। मित्रों एवं परिचितों की संख्या काफी रहती है।

छलकपट या षडयंत्र रचकर पैसा कमाने की वृत्ति ऐसे जातकों में पाई जाती है। संगति दोष के कारण भी अनेक दुर्गुणों का प्रादुर्भाव इनमें होता है। विचारों में अस्थिरता तथा निर्णय शक्ति के अभाव के कारण जीवन में काफी संघर्ष करना पड़ता है।

वृश्चिक राशि की महिलाएं सुनयना एवं आकर्षक मुखड़े की तथा लंबी होती हैं। खर्चीले स्वभाव की, अर्द्ध-शिक्षित रहती हैं। धर्म में बहुत ही कम श्रद्धा रखती हैं। पति सुख मध्यम रहता है। सामाजिक कार्यों में रुचि रखती हैं।

जातकाभरण के अनुसार

अधिकांश वृश्चिक स्त्री-पुरुष क्रोधी, दूसरों को कष्ट पहुंचानेवाले, द्वेषभावना रखनेवाले, अविश्वसनीय, लड़ाई-झगड़े में आगे रहते हैं। मित्रद्रोही भी होते हैं। स्वभाव से उदार हृदय के किंतु असंतुष्ट एवं असावधान होते हैं। दो पत्नियों का सुख पाते हैं।

जन्म से तीसरे एवं आठवें वर्ष में ज्वर ताप, अग्निभय रहता है। पांचवें वर्ष में ऊंचाई से गिरने के कारण दिमाग में हलकापन आता है। 15वें वर्ष में मियादी बुखार का कष्ट एवं 25वें वर्ष अन्य कष्ट सहन करने पड़ते हैं। आयु के 4, 6, 14, 16, 24, 26वें वर्ष भी शारीरिक कष्टदायक होते हैं। बौद्धिक विकास में भी रुकावटें आती हैं।

वृश्चिक राशि के स्त्री-पुरुषों के मन की थाह पाना कठिन होता है। अग्निभय, जननेन्द्रिय संबंधी रोग, वाणी दोष, रक्तचाप, मधुमेह, हृदय विकार जैसी व्याधियों से पीड़ा रहती है। जीवनीशक्ति कम होती है। ससुराल पक्ष से नहीं बनने के कारण काफी नुकसान उठाना पड़ता है।

अनुभवसिद्ध फलित

श्रद्धालु, ईश्वर भक्त, रक्त विकार के कारण त्वचा रोग से त्रस्त, परिवार में लड़ाई-झगड़े-विग्रह-पैतृक संपत्ति का भोग न मिलना, माता-पिता के सुख से

वंचित होना, माता-पिता के लिए मन में कुविचार होना आदि बातें ऐसे जातकों में देखने को मिलती हैं। शिक्षा कम होती है, फिर भी जीवन में शिक्षा का अभाव इन्हें नहीं खटकता। छोटे-बड़े प्रवास अधिक होते हैं। भोग-विलास की प्रबल शक्ति के कारण विपरीत व्यक्तियों से संबंध जुड़ते हैं। एकांतप्रिय, खर्चीलापन, अनेक स्त्रियों से संबंध आदि ऐसे जातकों में देखने को मिलता है। उन्नति के शिखर से नीचे आने के कई प्रसंग जीवन में आते हैं।

लेखक, प्रकाशक, वक्ता, ज्योतिषी, डॉक्टर, छापाखाने का संचालक, शराब की दुकान, रेडियो के दुकानदार, कीर्तनकार, हार्डवेयर एवं पेट्रोल पंप, बीमा व्यवसाय, अध्यापन आदि क्षेत्रों में वृश्चिक राशि के जातक सफल होते पाए जाते हैं।

प्रतिकूलता

- किसी भी साल का मई मास।
- किसी भी महीने की 1, 5, 15, 25 तारीखें।
- शुक्रवार।
- नीला रंग, नीले रंग के कपड़े एवं अन्य चीजें।
- मिथुन, तुला एवं कुंभ राशि के व्यक्ति।

जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं

15 वर्ष की आयु तक शारीरिक कष्ट सहने होते हैं। 16 से 22 या 26 से 32 वर्ष की आयु में विवाह योग बनता है। इस कालावधि में 2 या 3 स्त्रियों से संबंध होना संभव है।

संतान की संख्या 3 या 4 होती है। आयु के 28 से 44 वर्ष के मध्य महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटेंगी। 45 से 61 वर्ष में भली-बुरी घटनाएं घटेंगी। कार्यसिद्ध होगा। आमदनी अच्छी रहेगी। अन्य कारणों से दुखी रहेंगे। 62 से 71 वर्ष के मध्य शल्यक्रिया एवं शारीरिक कष्ट होंगे। 74 साल की आयु में एक गंडातर आएगा। यह टल जाए तो जीवनकाल 90 वर्ष होगा।

विशेष उपासना

भ्रम, ज्वर, प्रलाप एवं अन्य व्याधियों से ग्रसित होने के कारण इस राशि के व्यक्ति हमेशा अस्वस्थ एवं व्यग्र रहते हैं। जीवन निर्वाह के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। श्री गणेशजी एवं देवी उपासना के साथ निम्नलिखित मंत्र का प्रतिदिन कम-से-कम 108 बार जाप करें।

ॐ नारायणाय सुरसिंहासनाय नमः।

अनुराधा नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः अनुराधा नक्षत्र में जन्मे पुरुष को पर्यटन का शौक होता है। परोपकारी,

सतत कार्यरत, उदार एवं दयालु होते हैं। जन्म स्थान से दूर रहना पड़ता है। बदला लेने की भावना इनमें निहित होती है। मदिरापान एवं अखाद्य वस्तु का भक्षण करना इनके लिए सहज होता है। इन्हें भूख सहन नहीं होती। स्वभाव से उत्सव प्रिय होने से हर प्रकार के सामाजिक, पारिवारिक एवं धार्मिक कार्यों में आगे रहते हैं। शत्रुओं से घबराते नहीं, उनको परास्त करने की गजब की शक्ति इनमें पाई जाती है। पिता का सुख इन्हें प्राप्त नहीं होता। पिता से दूर रहकर अपने पुरुषार्थ से आगे बढ़ते हैं। पैतृक संपत्ति का हिस्सा या लाभ इन्हें नहीं मिलता। चरित्र की दृष्टि से शिथिल या विवादास्पद होते हैं। कामकला में प्रवीण एवं प्रबल कामशक्ति के कारण अनेक स्त्रियों से संबंध बनते हैं। फौजदारी वकील, सर्जन, ज्योतिषी, अभिनेता, तेल के व्यापारी, छापाखाना संचालक, फिटर, वेल्डर की हैसियत से अच्छा धन और नाम कमा लेते हैं।

स्त्री: अनुराधा नक्षत्र में जन्मी महिलाएं स्वार्थी, कपटी, लोभी एवं पेटू रहती हैं। मांसाहार प्रिय एवं दूसरों पर अवलंबित रहनेवालों को अपने प्रेमपाश में अटकाकर अपना स्वार्थ साधने में माहिर और अत्यंत कामातुर रहती हैं। अनेकों से शारीरिक संबंध रहते हैं। स्वयं की अपनी चाह होती है। प्रवास भी काफी करती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

अनुराधा नक्षत्र के स्त्री पुरुष मधुमेह, ज्वराभास, सिरदर्द, अपचन के विकार आदि से ग्रस्त रहते हैं। अतिविचार के कारण रक्तचाप का विकार भी इन्हें सताता है। इनका जीवन संघर्षपूर्ण रहता है। जीवन में अनेक प्रकार के चढ़ाव-उतार देखने पड़ते हैं। इन सभी व्याधियों से मुक्त होने के लिए निम्नलिखित मंत्र का दस हजार जाप करके दशांश हवन करें। यदि मंत्र जाप स्वयं न कर सकते हों तो योग्य ब्राह्मण के द्वारा करवाकर उसे उचित दक्षिणा दें।

ॐ नमो मित्रस्थ वरुणस्य चक्षुसे महादेवाय तदृतगूं समर्थत दूरदृशे देव जाताय केतवे दिवस पुत्राय सूर्यायशं गूं सत् ॐ मित्राय नमः।

चरण प्रभाव

प्रथम चरण: में जन्मे जातक उच्च पदासीन, अपनी महत्त्वाकांक्षा को पूर्ण करनेवाले, चरित्रवान, दृढ़तापूर्वक अपने चरित्र की रक्षा करनेवाले, धार्मिक वृत्ति से युक्त होते हैं।

द्वितीय चरण: में जन्मे जातक कला प्रिय, कामवासना से ग्रसित, कोर्ट-कचहरी एवं मुकदमे में विजय प्राप्त करनेवाले, राज्य पक्ष से सम्मानित और राज्य पक्ष में उच्च पदासीन होते हैं।

तृतीय चरण: में जन्मे जातक बुद्धिमान, सुशिक्षित, शिल्पकार, नीतिपूर्ण आचरण करनेवाले एवं सुंदर होते हैं।

चतुर्थ चरण: में जन्मे जातक धूर्त, पाखंडी, धोखेबाज, स्वार्थी एवं लंपट होते हैं।

ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुष: ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्मे पुरुष सुंदर, यशस्वी, पारमार्थिक रहते हैं। पैतृक संपत्ति इनके पास नहीं होती। गरीब परिवार में जन्म होने पर भी अपने पुरुषार्थ एवं परिश्रम से धनवान बनते हैं। प्रभावी वक्ता एवं नेतृत्व के गुणों के कारण समाज, सोसायटी, यूनियन के नेता बनते हैं। रात-दिन कार्यमग्न रहते हैं। दो नंबर के व्यवसायी भी इसी नक्षत्र में जन्मे होते हैं।

केमिकल इंजीनियर, मुद्रक, प्रकाशक, पत्रकार, टाइपिंग-शॉर्टहैंड का व्यवसाय करनेवाले, बीमा एजेंट, रेडियो मैकेनिक, संगीत कला के साधन बनानेवाले या बेचनेवाले, गणितज्ञ ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्मे होते हैं।

स्त्री: ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्मी महिलाएं झगड़ालू, गुस्सैल, मारामारी करने में तत्पर रहती हैं। पति के बड़े भाई यानी जेठ के लिए अनिष्टकारक होती हैं। धार्मिक व्रतों में रुचि रहती है। कामातुर व शिक्षित रहती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुषों को पित्तरोग, कंपन, व्याकुलता एवं मानसिक रोगों से परेशानी, आर्थिक तंगी रहती है। इन अनिष्टताओं के निवारण के लिए इन्द्र की स्वर्ण प्रतिमा तैयार करवा लें। सफेद चंदन, चंपा के पुष्प, कपूर, धूप, शुद्ध घी का दीपक आदि सामग्री से इंद्र प्रतिमा का पूजन करें। यह पूजन ज्येष्ठा नक्षत्र के दिन करना चाहिए। पूजन के बाद युवा ब्राह्मणों को तिल, नीले वस्त्र एवं यथाशक्ति दक्षिणा दें।

निम्नलिखित मंत्र का पांच हजार जाप स्वयं करें या किसी योग्य ब्राह्मण से करवा लें। दशांश हवन करें। हवन के लिए अपामार्ग की लकड़ियों का समिधा के रूप में उपयोग करें।

ॐ त्रातारमिन्द्र वितारमिन्द्र गूं हवे हवे सुहव गूं शूरमिन्द्रम्।
हवयामि शुक्रंपुरहूतमिन्द्र गूं स्वास्तिनो मर्घवाद्यात्मिदः ॐ शुक्राय नमः।।

□□

धनु (9)

12 राशियों में यह नौवीं राशि है। इसका निर्देशांक 9 है।

मूल नक्षत्र के चार चरण, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के चार चरण एवं उत्तराषाढ़ नक्षत्र का पहला चरण मिलकर यह राशि बनती है।

नीचे दी गई सारिणी में चंद्र के अंश, नक्षत्र, चरण, नामाक्षर, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, योनि, नाड़ी, गण की जानकारी दी गई है।

चंद्र के अंश अंश कला से अंश कला	नक्षत्र	चरण	नामाक्षर	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	योनि	नाड़ी	गण
00.00 से 13.20	मूल	1 से 4	ये यो भा भी	बृहस्पति	केतु	श्वान	आद्य	राक्षस
13.20 से 26.40	पूर्वाषाढ़	1 से 4	भू थ फा ढ	बृहस्पति	शुक्र	वानर	मध्य	मनुष्य
26.40 से 30.00	उत्तराषाढ़	1	भे	बृहस्पति	सूर्य	नकुल	अन्त्य	मनुष्य

इस राशि की आकृति धनुर्धारी की है। पृथ्वी के क्रांति अंशों पर आधारित विषुवत रेखा से 20 से 25 अंशों तक इस राशि का प्रभाव माना जाता है।

विशेषताएं

इसे अंग्रेजी में सेजिटेरिअस (Sagittarius) कहते हैं।

यह समदेह की, करुणामय, पुरुष स्वभाव की, सौम्य, क्रूर, चंचल एवं शांत लक्षणों की द्विस्वभावी, सत्वगुणी, अग्नितत्त्व की, पीले रंग की दिवसबली, अल्प संतानयुक्त, क्षत्रिय जाति की, पृष्ठोदयी, विषम राशि है। इस राशि का निवास स्थान सैंधव देश है। स्वामी बृहस्पति एवं अंक 3 है।

शरीर की दोनों जांघों, छाती एवं कूल्हों पर इस राशि का प्रभाव माना गया है।

शस्त्र-अस्त्र, घोड़े, वाहन, नमक, कंदमूल, आलू, अन्न, वस्त्र, रबर, चरबी, कागज, बीमा व्यवसाय एवं समुद्र से उत्पन्न होनेवाली चीजें तथा औषधि विज्ञान पर इस राशि का प्रभाव रहता है।

मेदिनीय ज्योतिषशास्त्र में स्पेन, अरब, ऑस्ट्रेलिया, हंगरी का प्रतिनिधित्व धनु राशि करती है।

जातकों का भविष्य

धनु राशि के व्यक्ति अनेक कलाओं में प्रवीण होते हैं। उनकी शारीरिक,

बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति उत्तम श्रेणी की होती है। स्पष्ट बोलनेवाले, एकांतप्रिय, संन्यासी जैसा जीवन जीनेवाले, अज्ञातवास, मिथ्यापवाद, कारावास, विषप्रयोग इत्यादि का इन्हें भय रहता है। हॉस्पिटल, अनाथाश्रम, काराग्रह जैसी समाजसेवी संस्थाओं में ये अच्छा काम कर सकते हैं। दीर्घयोग, महत्त्वाकांक्षा, दूरंदेशी एवं प्रामाणिकता के कारण 36 या 40वें वर्ष में श्रेष्ठपद पर आसीन होते हैं।

इनकी नाक, कान, गरदन, साधारण रूप में बड़ी होती है। नीतियों का विशेष ध्यान रखनेवाले, गुप्त शत्रुओं से पीड़ित, अधिक जनसंपर्क से जुड़े व्यवसाय से धन कमानेवाले होते हैं।

धनु राशि की महिलाएं स्थूलकाय होती हैं। इनके होंठ बड़े होते हैं और ये श्रेष्ठ ज्ञानी होती हैं। बाहू एवं कमर के नीचे का हिस्सा मजबूत रहता है। पति के हर कार्य में इनके द्वारा हस्तक्षेप होता है। अपकीर्ति या बदनामी का डर रहता है।

जातकाभरण के अनुसार

धनु राशि के स्त्री-पुरुष धर्मप्रिय, बुद्धिमान, प्रतापी एवं विद्वान होते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष प्रगति करते हैं। राजकीय नेताओं एवं मान्यवरों से उचित सम्मान इन्हें प्राप्त होते हैं। परिवार में भी इनका सक्रिय सहयोग होता है। परमात्मा में विश्वास करते हैं। पुत्रसुख उत्तम मिलता है।

इन्हें गुस्सा बहुत जल्द आता है किंतु शीघ्र ही शांत भी हो जाते हैं। जन्म से पहला वर्ष शारीरिक कष्टों में गुजरता है। रोगबाधा, जीवनबाधा योग रहता है। 13वें साल में अरिष्ट योग बनता है। आयु 68 से 75 तक रहती है।

अनुभवसिद्ध फलित

धनु राशि के व्यक्ति धर्म में आस्थावान, धैर्यशाली, उत्साही एवं दृढ़ निश्चय से स्वयं की भाग्यवृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। अध्ययनप्रिय, कलासक्त, एकांतप्रिय, साफ-सफाई प्रिय, व्यवहारकुशल, गंभीर, परिश्रमी, श्रेष्ठजनों के प्रिय, लेखन-भाषण कला में प्रवीण, स्वाभिमानी, बुरे काम बेहिचक करनेवाले, अपने मकान एवं वाहन का सुख लेनेवाले, विदेश यात्री, स्वभाव से हंसमुख एवं नटखट होते हैं। शिकार का शौक रखते हैं। इनका निशाना कभी खाली नहीं जाता।

राजकीय क्षेत्र में मंत्री से मुख्यमंत्री तक बन सकते हैं। लेखक, हाईकोर्ट के जज, अध्यापक, प्राध्यापक, गणितज्ञ, एकाउंटेंट, टेक्नीशियन, ज्योतिषी, कीर्तनकार, इनकमटैक्स, सेल्सटैक्स सलाहकार इत्यादि क्षेत्रों में सफल व्यवसायी होते हैं।

प्रतिकूलता

- किसी भी वर्ष का जून मास।
- हर महीने की 3, 9, 18, 24 तारीखें।
- शुक्रवार।
- नीला रंग, नीले रंग के वस्त्र, नीले रंग की चीजें।
- कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशि के व्यक्ति।

जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं

आयु के 17 से 26 या 30 से 35 वर्ष में विवाह योग बनता है। 18 से 37 वर्ष तक धन प्राप्ति, ख्याति, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी, निजी मकान बनता है। सभी क्षेत्रों में प्रगति के हकदार बनते हैं। 38 से 47 वर्ष में कई कठिन प्रसंगों से गुजरना होगा। 48 से 60 वर्ष में आर्थिक तंगी रहेगी। मानसिक अस्वस्थता बढ़ेगी। 61 से 69 वर्ष में आर्थिक तंगी दूर होकर विविध मार्गों से धनागम होगा। सट्टा, लॉटरी से भी धनलाभ संभव है। आयु 75 वर्ष की रहेगी।

विशेष उपासना

धनु राशि के स्त्री-पुरुष ग्रामदेवता, कुलदेवता, स्थान देवता के कोप के कारण दुखी रहते हैं। श्वास, उदरशूल, नाभिशूल, हृदयशूल, कटिशूल आदि व्याधियों से परेशान रहते हैं। कुशाग्र बुद्धि होने पर भी समय-समय पर उन्हें अपयश प्राप्त होता है। इन सभी परेशानियों से मुक्ति पाने के लिए नित्य महामृत्युंजय का जाप करें। साथ ही निम्न मंत्र का रोज 108 बार जाप करें:

ॐ श्रीं देवकृष्णाय उध्वान्तकाय नमः।

धनु राशि के जातकों को शनि ग्रह अनिष्ट फलदायी होता है, अतएव वे हर शनिवार को दाएं हाथ में एक लोहे की कील लेकर निम्न मंत्र बारह बार बोलकर उस कील को दक्षिण दिशा में फेंक दें।

ॐ लोह दंड समं दानं यम प्रीतिकरं शुभम।
हे लोहलांगल दिनित्वतः शान्ति प्रगच्छमे।

मूल नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः मूल नक्षत्र में जन्मे पुरुषों को पढ़ने-लिखने का शौक रहता है। वे कार्य तत्पर, निष्कपट, हास्यप्रिय, सरल मन के लेकिन कुछ हद तक क्रोधी, स्पष्टवक्ता, वाक्‌युद्ध में प्रवीण, हाजिरजवाब, कटुभाषी, अंधविश्वासी, धार्मिक कार्यों में खूब खर्च करनेवाले, घमंडी, दृढ़ निश्चयी, ज्योतिष प्रेमी, सुखी, संपत्तिवान होते हैं। बलिष्ठ शरीर, हिंसक प्रवृत्तियों से अपनी युक्ति-शक्ति के बल पर शत्रुओं को परास्त करनेवाले धनु व्यक्ति मूल नक्षत्र में जन्मे होते हैं।

जन्म समय में परिवार की हालत कुछ हद तक प्रतिकूल रहती है। परिवार पर आई अनेक प्रकार बाधाएं इन्हें देखने को मिलती हैं। तीव्र बुद्धि होने से अच्छे सलाहकार साबित होते हैं। कुछ मूल नक्षत्रियों की शिक्षा अधूरी रहती है, प्रवास से मुनाफा मिलता है।

शरीर से हृष्ट-पुष्ट व ऊंचे कद के होते हैं। जांघें बलिष्ठ होती हैं। सीना फुलाकर चलने की आदत होती है। पैतृक संपत्ति एवं मिल्कियत का लाभ इन्हें दीर्घकाल तक प्राप्त होता है।

वकील, न्यायाधीश, शिक्षक, लेखक, ज्योतिषी, धार्मिक, व्यवसाय आदि क्षेत्रों में इनकी कुशलता प्रकट होती है।

स्त्री: मूल नक्षत्र में जन्मी महिलाएं लंबी और हृष्ट-पुष्ट होती हैं। जांघें, छाती एवं नितंब गठीले होते हैं। परिवार के व्यक्तियों से इनकी अनबन रहती है। क्रोधी स्वभाव एवं अपना कहा सच माननेवाली होती हैं। सदाचारी, धैर्यशील, ढाढसी परंतु भोगविलास में मग्न रहती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

मूल नक्षत्र का पहला चरण जातक के पिता के लिए, दूसरा चरण जातक की माता के लिए तथा तीसरा चरण स्वयं जातक के लिए आर्थिक दृष्टि से प्रतिकूल रहता है। चौथा चरण अनिष्ट नहीं करता। मूल के प्रथम तीन चरणों में जन्मे जातकों के लिए मूल शांति अपरिहार्य है।

रक्त विकार, फेफड़ों की शिराओं में सूजन होना, पीठ की रीढ़ तथा स्नायु में दर्द, सिर फिरना, मूर्च्छा आना, हिस्टीरिया जैसी बीमारियों के शिकार मूल नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष बनते हैं। योगक्षेम ठीक से चले एवं इन व्याधियों से मुक्ति मिले इसलिए नीचे लिखे मंत्र का कम-से-कम पांच हजार जाप एवं एक दशांश हवन स्वयं या योग्य ब्राह्मण द्वारा संपन्न करवा लें।

ॐ मातेव पुत्रं पृथिवी पुरुषमग्निगूं स्वेयोनाव भारूषा।
तां विश्वदेवेर्त्रनुभिः संवदानः प्रजापतिः।
विश्वकर्मा विमंचतु ऊं निऋतये नमः।।

मन्दार की जड़ धारण करें। वैदूर्य रत्न का प्रयोग करें।

चरण प्रभाव

प्रथम चरण: में जन्मे जातक स्वभाव से चिड़चिड़े, व्याकुल चित्त, उदासीन, पित्त प्रकोप से पीड़ित, बने-बनाए काम बिगाड़नेवाले होते हैं।

द्वितीय चरण: में जन्मे जातक वायुविकार, कब्ज, उदर व्याधि से ग्रसित, कपटपूर्ण आचरण करनेवाले, मिथ्याभाषी, अविश्वसनीय फिर भी सभी को प्रिय होते हैं।

तृतीय चरण: में जन्मा जातक कामकाज में आलसी, सुंदर, मृदुभाषी, जादूगरी करनेवाले तथा कामातुर रहते हैं।

चतुर्थ चरण: में जन्मे जातक हृष्ट-पुष्ट, शत्रुओं पर विजय पानेवाले, विरोधियों को मुंहतोड़ जवाब देनेवाले तथा गले के रोग से ग्रसित होते हैं।

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुष: पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में जन्मे पुरुष दिखने में सुंदर, परोपकारी, प्रतिभासंपन्न, धनवान, विद्वान होते हैं, उदात्त, आप्त-मित्र, स्वकीय धोखा देते हैं। बार-बार पानी या तरल पदार्थ पीने की आदत होती है। अपने मृदुल व्यवहार से सबको अपना बना लेते हैं किंतु पिता से अनबन रहती है। जन्म स्थान से दूसरे स्थान पर भाग्योदय होता है। पत्नी कम बोलनेवाली, हमेशा उदास, दुखी एवं निराश रहती है। इसी कारण से

एक से अधिक विवाह होने की संभावना रहती है।

स्त्री: पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में जन्मी महिलाएं चरित्रवान, सत्यप्रिय, मृदुभाषी, व्यवहारकुशल, धार्मिक वृत्ति की होती हैं। इनका विवाह जल्द होता है किंतु पति छोटी आयु का होता है। पति सुख अच्छा रहता है। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहती है एवं पुत्र सुख भी प्राप्त होता है। कोर्ट-कचहरी के कामों में इनके हाथ अपयश लगता है।

व्याधियां एवं उपाय

मूत्राशय से संबंधित रोग, विक्षिप्तता, संधिवात, कामासक्ति, कैंसर आदि व्याधियों से पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के जातक ग्रसित रहते हैं। इन व्याधियों से मुक्त होने के लिए निम्नलिखित मंत्र का पांच हजार जाप एवं एक दशांश हवन स्वयं करें या योग्य ब्राह्मण द्वारा संपन्न करा लें।

ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यायमोरपः।
अपामार्गत्वम स्मरणः दुःष्वण्य गूं सुव ॐ अद्भ्यो नमः॥

इस मंत्र जाप के साथ ही पानी से भरा घड़ा दान में दें।

चरण प्रभाव

प्रथम चरणः में जन्मे जातक निष्फल एवं विफल रहते हैं। जीवन का मध्यकाल चैतन्यपूर्ण रहता है। उचित सम्मान प्राप्त होता है।

द्वितीय चरणः में जन्मे जातक चरित्रहीन, विपरीत संगति में रुचि रखनेवाले, साधारण बुद्धि के होते हैं।

तृतीय चरणः में जन्मे जातक धन-धान्य एवं ऐश्वर्यसंपन्न, मातुलपक्ष से असहयोग पानेवाले, कुष्ठरोग से ग्रसित, चरित्र संपन्न होते हैं।

चतुर्थ चरणः में जन्मे जातक साहसी, वीर, पराक्रमी एवं शत्रुहंता होते हैं।

उत्तराषाढ़ नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः उत्तराषाढ़ नक्षत्र में जन्मे पुरुष बोलने में लड़खड़ाते हैं। अनेक भाषाओं के जानकार, वाक्कला में प्रवीण, सार्वजनिक कामों में रुचि रखनेवाले, अल्पायु, बुद्धिश्रेष्ठ, तीव्र स्मरणशक्ति से युक्त, स्वाभिमानी, कपड़ों के बारे में विशेष सतर्क, सर्वजनप्रिय, दयालु होते हैं। नौकरी-व्यवसाय में हमेशा घाटा सहन करना पड़ता है। वकील, जज, अध्यापक, प्राध्यापक, कलेक्टर, कमिश्नर, कीर्तनकार, ज्योतिषी, लेखक एवं प्रकाशक की हैसियत से सफल रहते हैं।

स्त्रीः उत्तराषाढ़ नक्षत्र में जन्मी महिलाएं मधुरभाषिणी, आवभगत में तत्पर, पति की आज्ञा में रहनेवाली, बुद्धि चातुर्य से जीवन में यश पानेवाली, पुत्रसुख भोगनेवाली होती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

उत्तराषाढ़ नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष अधिकतर नेत्ररोग, कमर दर्द, जलन एवं

मानसिक रोगों से त्रस्त रहते हैं। इन व्याधियों के शमनार्थ नित्य विश्वदेव पूजन करें। निम्न मंत्र का दस हजार जाप करें एवं एक दशांश हवन भी करें।

ॐ विश्वेदेवा श्रृणुतेन गूं हवं मे ये अन्तरिक्षेय य उपद्यविष्ठाय।
अग्निजिव्हा तवायजत्रा आद्यास्मिन्वाहर्षि मादयधम॥
ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः॥

चरण प्रभाव

प्रथम चरण: में जन्मे जातक उदारमना, गोरे, सुंदर, सुदृढ़ कायावाले, अच्छी सूझबूझ के धनी, दानकर्ता, कला एवं कारीगरी में कुशल एवं सफल होते हैं।

द्वितीय चरण: में जन्मे जातक कुशल वक्ता, सुंदर, गठीले, स्वभाव से कठोर, कंजूस, अनायास शत्रुओं से घिरे रहते हैं।

तृतीय चरण: में जन्मे जातक असफल, अभिमानी, जिद्दी, गंभीर वाणीयुक्त एवं मोटे होते हैं।

चतुर्थ चरण: में जन्मे जातक जीवनीशक्ति से भरपूर, सदैव अद्भुत कार्य करने में लगे रहनेवाले, व्यापार में सफलता प्राप्त करनेवाले होते हैं

□□

मकर (10)

12 राशियों में यह दसवीं राशि है। इसका निर्देशांक 10 है।

उत्तराषाढ़ नक्षत्र के अंतिम 3 चरण, अभिजित नक्षत्र का चौथा चरण, श्रवण नक्षत्र के चारों चरण एवं धनिष्ठा नक्षत्र के पहले दो चरण मिलकर मकर राशि बनती है। नक्षत्रों के कुल 13 चरण मकर राशि में समाविष्ट होते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में चंद्र के अंश, नक्षत्र, चरण, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, योनि, नाड़ी, गण एवं नामाक्षर विषयक जानकारी दी है।

चंद्र के अंश अंश कला से अंश कला	नक्षत्र	चरण	नामाक्षर	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	योनि	नाड़ी	गण
00.00 से 10.00	उत्तराषाढ़	2, 3, 4	भो,जा,जी	शनि	सूर्य	नकुल	अन्त्य	मनुष्य
10.00 से 23.20	श्रवण	1,2,3,4	खो,खू,खे,खो	शनि	चंद्र	वानर	अन्त्य	देव
23.00 से 30.00	धनिष्ठा	1,2	गा, गी	शनि	मंगल	सिंह	मध्य	राक्षस

इस राशि की आकृति मगर जैसी होती है। पृथ्वी के क्रांति अंशों पर आधारित विषुवत रेखा से 24 से 20 अंशों तक इस राशि का प्रभाव माना गया है।

विशेषताएं

इसे अंग्रेजी में कैप्रीकॉर्न (Capricorn) कहते हैं। यह समदेही, स्त्री स्वभावी, हिरन के चेहरे जैसी, धातुसंज्ञक, दक्षिण एवं पश्चिम भूभाग पर नदी या समुद्र के पानी में 15 अंश तक एवं उसके बाद के अंशों में वन प्रदेशों में निवास करनेवाली, सौम्य किंतु चंचल, चर, वृद्ध, भूरे वर्ण की, रजोगुणी, भूतत्वप्रधान, रात्रिबली, जलचर, वात प्रकृति की, शूद्र जाति की, पृष्ठोदय सम राशि है। सफेद, साफ एवं सुंदर वस्त्रों से विभूषित, मधुर एवं कटु व्यवहार में पारंगत, ठिगनी, भ्रमणशील राशि है। इस राशि में सूर्य आने पर रात्रि की अपेक्षा दिन बड़ा रहता है। इस राशि का निवास स्थान पांचाल देश, स्वामी शनि एवं अंक 8 है।

शरीर के घुटने एवं हड्डियों के जोड़ों पर इस राशि का प्रभाव रहता है। सोना, चांदी लोहा, जस्ता, कांसा, तांबा, कोयला एवं गन्ना इस राशि के प्रभाव में आते हैं।

मेदिनीय ज्योतिषशास्त्र में अबिसिनीया, भारत, मैक्सिको, बुल्गारिया, बंगाल, पंजाब इत्यादि प्रांत-देशों का प्रतिनिधित्व मकर राशि करती है।

नोट: उत्तराषाढ़ नक्षत्र में जन्मे जातकों के लक्षण, व्याधियां एवं व्याधिमुक्ति के उपायों की जानकारी धनु राशि के अध्याय में पढ़ें।

जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं

आयु के 15 से 21 या 26 से 32 वर्ष की कालावधि में विवाह योग बनता है। संतान विलंब से होती है। जन्म से 16 वर्ष की आयु तक का समय अच्छा गुजरता है। 33 से 49 वर्ष की कालावधि में सभी प्रकार के लाभ, यश, आनंद, सुख वैभव मिलता है। इसी अवधि में मां या पिता की मृत्यु होती है। 50 से 51वें वर्ष में असाध्य रोगों से शारीरिक कष्ट झेलने पड़ते हैं। 52 से 57 वर्ष में एक बार फिर श्रीवृद्धि, सुख प्राप्ति, हर्षोल्लास का समय रहता है। 67वें वर्ष में गंडातर योग बनता है। यह टल जाए तो आयु 85 से 90 वर्षों तक रहती है।

विशेष उपासना

मकर राशि के व्यक्तियों का जीवन शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक दृष्टि से संघर्षों से भरा रहता है। मकर राशि का स्वामी शनि है। शनि के प्रतिकूल प्रभाव या अनिष्टता के कारण ही प्रभु राम को वनवास जाना पड़ा, रावण को सीता हरण की कुबुद्धि हुई, वशिष्ठ के सौ पुत्रों का नाश हुआ, पांडवों का वनवास एवं कौरवों का नाश, सत्याभिमानी राजा विक्रमादित्य की परेशानियां एवं दुख भोगना भी प्रतिकूल शनि के कारण ही हुआ। शनि की अनिष्टता निवारण के लिए हनुमानजी की उपासना अनिवार्य है। वट वृक्ष का नियमित पूजन एवं हनुमान कवच पढ़ने से भी अनिष्टता दूर होती है।

ॐ श्री वत्सलाय वत्सराजाय नमः। इस मंत्र का 108 बार नित्य जाप करें।

अभिजित नक्षत्र में जन्मे जातक

स्त्री-पुरुष: अभिजित नक्षत्र की महिमा अवर्णनीय है। सभी नक्षत्रों में यह नक्षत्र सर्वाधिक प्रभावी है, दोपहर में तपते सूरज की तरह। इस नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष आकर्षक व्यक्तित्व तथा कांतियुक्त शरीर के, हमेशा सज्जनों की संगति में रहनेवाले, प्रभावी वक्ता, सुखी, पुत्र सुख से युक्त, अद्‌भुत लेखन एवं वाक् शक्ति के धनी, दांपत्य जीवन में सामंजस्यता रखने पर वैवाहिक दृष्टि से भी सुखी, अध्ययन, अध्यापन, ज्योतिष, तंत्रमंत्र, पत्रकारिता आदि इस नक्षत्र के विशेष विषय हैं। ये बहरूपिये होते हैं। सरकारी क्षेत्र में नाम कमाते हैं। इस नक्षत्र में जन्मे डॉक्टर की डॉक्टरी ठीक से नहीं चलती।

व्याधियां एवं उपाय

अभिजित नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुषों की शारीरिक अवहेलना होने की वजह से कब, कौन-सा रोग या विपत्ति इन पर हमला बोलेगी, इसकी पूर्व कल्पना नहीं की जा सकती। परेशानियों, व्याधियों से मुक्ति पाने एवं योगक्षेत्र सुखपूर्वक चलाने के लिए निम्न प्रार्थना रोज करें। तांबे के बर्तन में शुद्ध जल लेकर सूर्य को अर्घ्य दें और यह मंत्र बोलें:

ॐ आदिदेव नमस्तुभ्यं सप्तसप्ते दिवाकर।
त्वं रवे तारयस्वास्मानस्मात्संसार सागशत्॥
वीरं जिषतु मे माता आरोग्यं चाहतु मे पितृः।
भ्राता भवतु दीर्घायुर्धनंधान्य सदागृहे।
रक्ष मां पुत्रपौत्रांश्च रक्षमां पशुबन्धनात।
रक्ष पत्नी पति चैव पितरं मातरं धनम्॥
नक्षत्र ग्रहताराणमधिसी विहवभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमो स्तुते॥

श्रवण नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः श्रवण नक्षत्र में जन्मे पुरुष गोल चेहरे एवं गोरे रंग के होते हैं। इनकी आयु का अंदाज नहीं किया जा सकता। आयु बढ़ने पर भी वे युवा लगते हैं। आंखें आकर्षक, मध्यम कद, गंभीर, सेवाभावी, सर्वगुणसंपन्न, कुछ हद तक स्वार्थी होते हैं। विवाह से पूर्व प्रेम संबंध जुड़ जाते हैं। वैवाहिक जीवन सुखी रहता है। पुत्र सुख का भी लाभ होता है। आर्थिक स्थिति अच्छी रहती है। बुरी आदतों के शिकार शीघ्र बनते हैं। व्यसनी होते हैं। घर-परिवार के विषय में उदासीन रहते हैं।

स्त्रीः श्रवण नक्षत्र में जन्मी महिलाएं प्रतिभासंपन्न, सद्गुणी, कुल परंपरा की मर्यादा संभालनेवाली होती हैं। ललित कलाओं में प्रवीण, लोकप्रिय, पतिव्रता एवं पतिप्रिय रहती हैं। सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में प्रसिद्धि पाती हैं। आचरण शुद्ध एवं सदाचारी रहता है।

व्याधियां एवं उपाय

श्रवण नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष चर्मरोग, कुष्ठ, पित्त, जोड़ों के दर्द से परेशान, विक्षिप्तता, क्षय, प्लूरिसी, वायु गुल्म आदि रोगों से पीड़ित होते हैं। दैनंदिन के जीवन में काफी संघर्ष सहना पड़ता है। नौकरी-व्यवसाय में परेशानियां होती हैं। इस अनिष्टता के निवारण के लिए **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** इस मंत्र का स्फटिक की माला से प्रतिदिन 108 बार जाप करें।

चरण प्रभाव

प्रथम चरणः में जन्मे जातक लंबे, स्वाभिमानी, अपनी बात पर अड़े रहनेवाले, उदास, हर कार्य सोच-समझ कर करने के बावजूद अपयश पानेवाले होते हैं।

द्वितीय चरणः में जन्मे जातक कंजूस, किसी के काम न आनेवाले, स्वार्थी, विशेष कामातुर रहते हैं।

तृतीय चरणः में जन्मे जातक नाना प्रकार के रोगों से ग्रसित, धनसंपन्न किंतु अधिक खर्चीले, वैद्य, हकीम, डॉक्टर होते हैं। कामातुर भी रहते हैं।

चतुर्थ चरणः में जन्मे जातक चरित्रहीन, किंतु धर्मात्मा, कृषिकार्य में दक्ष होते हैं।

धनिष्ठा नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः धनिष्ठा नक्षत्र में जन्मे पुरुष आशावादी, अभिमानी, दानी, साहसी,

आर्थिक तंगी में रहनेवाले होते हैं। आततायीपन, उतावलेपन, लोभ, क्रोध के कारण नुकसान सहन करनेवाले, लोहे के व्यवसाय में धन कमानेवाले होते हैं। प्रेम-प्रकरणों के झंझटों में न फंसनेवाले होते हैं। कुछ जातक नपुंसक होते हैं। जिसे चाहते हैं उस स्त्री के साथ विवाह नहीं हो पाता। संगीत एवं खेलकूद में प्रवीण रहते हैं। साधु-संन्यासी, मदिरा उद्योग, जासूस, पुलिस, धर्मशाला के व्यवस्थापक, स्पेयर पार्ट्स के व्यवसायी, आलू के व्यापारी के रूप में इन्हें यश और धन प्राप्त होता है।

स्त्रीः धनिष्ठा नक्षत्र में जन्मी महिलाएं आर्थिक दृष्टि से कमजोर होती हैं। वस्त्राभूषणों का शौक रहता है। अपने हावभाव से दूसरों को सहज आकृष्ट करती हैं। लोभी वृत्ति होने से कई बार अच्छे मौके खोने पड़ते हैं। धैर्यवान एवं गुण संपन्न, धर्म में श्रद्धा रखनेवाली होती हैं। लेखन कला में रुचि रहती है। सुगृहिणी एवं सामाजिक कार्यों में हाथ बंटानेवाली होती हैं। इनके कन्या संतान अधिक होती है।

व्याधियां एवं उपाय

धनिष्ठा नक्षत्र के स्त्री पुरुषों को पैरों में फ्रैक्चर, रक्तचाप, रक्तविकार, अचानक हृदय गति में अवरोध उत्पन्न होना, मूर्च्छा आना आदि व्याधियों से कष्ट सहन करना होता है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए विष्णु भगवान की उपासना करें। नीचे दिए मंत्र का जाप 108 बार करें। मंत्र जाप होने पर घड़ा भर पानी अपने मकान के बाहर दक्षिण दिशा में डालें।

ॐ वसूनांच कृषश्यक्षन्धिया वा यज्ञेवशरोस्यो अर्वन्तोवायेरत्रिमतरः। सातौ वनुंवाये सुश्रुणं सुश्रुतोधुः ॐ वसुभ्यो नमः॥

चरण प्रभाव

प्रथम चरणः में जन्मे जातक जीवन का अपना कोई सिद्धांत नहीं होने के कारण अच्छे मौकों से फायदा नहीं उठा पाते। व्यापार या छोटी-मोटी नौकरी ही इनके नसीब में लिखी होती है। सिनेमा के क्षेत्र में सफल होते हैं। काला या फीका रंग इन्हें बहुत भाता है। पुत्र सुख प्राप्त होता है किन्तु कन्या संतान अधिक रहती है। माता-पिता एवं सहोदरों से अनबन रहती है।

कागज, कपड़ा, लेखन, भाषण, पुस्तक प्रकाशन या पुस्तकों की बिक्री, जज, क्लर्क, रेल, फायर ब्रिगेड, पेट्रोल पंप, फैक्टरी, फिल्म उद्योग, ट्रक, रिक्शा ड्राइवर, आटे की चक्की, खेती, लांड्री, प्रवचनकार आदि क्षेत्रों में ऐसे नाम आगे दिखते हैं। राजनीति में पंच, सरपंच या विधायक बन सकते हैं।

प्रतिकूलता

- हर वर्ष का जुलाई महीना।
- हर महीने की 9, 12, 22, 30 तारीखें।
- सफेद, लाल रंग एवं इन्हीं रंगों के कपड़े तथा चीजें।
- मंगलवार।
- मेष, सिंह, धनु राशियों के स्त्री-पुरुष।

□□

कुंभ (11)

12 राशियों में यह 11वीं राशि है। इसका निर्देशांक 11 है।

धनिष्ठा नक्षत्र के अंतिम दो चरण, शतभिषा नक्षत्र के चारों चरण एवं पूर्वाभाद्रपद के प्रथम 3 चरण मिलने पर कुंभ राशि बनती है।

नीचे दी गई सारिणी में चंद्र के अंश, नक्षत्र, चरण, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, योनि, नाड़ी, गण एवं नामाक्षर की जानकारी दी गई है।

चंद्र के अंश अंश कला से अंश कला	नक्षत्र	चरण	नामाक्षर	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	योनि	नाड़ी	गण
00.00 से 6.40	धनिष्ठा	3,4	गु,गे	शनि	मंगल	सिंह	मध्य	राक्षस
6.40 से 20.00	शतभिषा	1 से 4	गो,सा,सी,सू	शनि	राहु	अश्व	आद्य	राक्षस
20.00 से 30.00	पूर्वाभाद्रपद	1 से 3	शे,सो,दा	शनि	बृहस्पति	सिंह	आद्य	मनुष्य

इस राशि की आकृति कंधों पर घड़ा लिए पुरुष के आकार की है। पृथ्वी के क्रांति अंशों पर आधारित विषुवत रेखा से दक्षिण की ओर 20 से 12 अंशों तक इस राशि का प्रभाव माना गया है।

विशेषताएं

इसे अंग्रेजी में एक्वारियस (Aquarius) कहते हैं। कुंभ राशि पश्चिम दिशा में जलकुंभ स्थानों पर निवास करनेवाली, क्रूर परंतु वृद्ध, शांत एवं स्थिर, काले रंग के या नेवले की रंग की तमोगुणी, वायु तत्त्व की, दिनबली, जलचारी, त्रिधातु प्रकृति की, पुरुष जाति की नई खोजों में विश्वास करनेवाली, धर्मप्रिय, वैश्यजाति की शीर्षोदयी विषम राशि है। लंपट,.द्यूतक्रीडा विशारद, वेश्यागामी एवं मद्यपी है।

इस राशि का निवास स्थान यवन देश है। इसका स्वामी शनि एवं अंक 8 है।

शरीर के पैर, दोनों जांघें, घुटनों के निचले हिस्से, आंखें, श्वास एवं रक्तसंचार क्रिया पर इस राशि का प्रभाव रहता है।

पानी में पैदा होनेवाले पुष्प, फल, शंख, सीप, कोयला, काले उड़द, लोहा, तेल, रेशम, विद्युत सामान इत्यादि कुंभ राशि के आधिपत्य में आते हैं।

मेदिनीय ज्योतिषशास्त्र में अबिसिनिया, स्वीडन, सूडान, जापान का कुछ हिस्सा एवं हैम्बर्ग, पश्चिमी पाकिस्तान, अरब इत्यादि देश-प्रांतों का प्रतिनिधित्व कुंभ राशि करती है।

नोट: धनिष्ठा नक्षत्र में जन्मे जातकों के लक्षण, व्याधियां एवं उनसे मुक्ति पाने के उपाय की जानकारी मकर राशि के परिच्छेद में देखें।

जातकों का भविष्य

कुंभ राशि के व्यक्ति क्रांतिकारी लेखक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, बड़े उद्योगों से संबंधित एवं अध्यापक, प्राध्यापक, इंजीनियर होते हैं। ठिगने कद के तथा असमय सिर के बाल सफेद होते हैं।

चरित्र संदेहास्पद, स्वार्थी, परस्त्रीगामी, एक से अधिक विवाहों के कारण वैवाहिक जीवन अस्तव्यस्त, सुगंधित पुष्पों के शौकीन, जीवन में हमेशा चढ़ाव-उतार देखनेवाले, ज्योतिषशास्त्र में अच्छी सूझ रखनेवाले, इनके द्वारा की गई अनिष्ट भविष्यवाणियां सच होती हैं।

कुंभ राशि की महिलाएं सुंदर किंतु उग्र स्वभावी होती हैं। दूसरों पर शासन करने की आदत इनमें रहती है। घर के लोगों की अपेक्षा दूसरों की बात माननेवाली एवं खर्चीले स्वभाव की होती हैं।

जातकाभरण के अनुसार

कुंभ राशि के व्यक्ति दान-धर्म के कार्यों में अगुआ रहते हैं। इनकी भाषा मधुर एवं कर्णप्रिय होती है। शारीरिक स्वस्थता मध्यम रहती है। जैसे-जैसे आयु बढ़ती है वैसे इनका जीवनयोग भी बढ़ता जाता है। संतान सुख के विषय में उदासीन रहते हैं। दो विवाह होते हैं। ऐसे जातक मध्यम धनवान नहीं होते। दाएं हाथ पर कोई चिह्न अवश्य पाया जाता है।

जन्म से प्रथम वर्ष में शारीरिक कष्ट एवं 5वें वर्ष में दुर्घटना योग या अग्निभय रहता है। 12वें वर्ष में सर्पभय या विषभय रहता है। 28वें वर्ष में चोरी से नुकसान होता है। आयु नब्बे वर्ष की रहती है।

अनुभवसिद्ध फलित

कुंभ राशि के लोगों को जीवन में अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है। समस्याओं का हल निकले बगैर वे और उलझ जाती हैं। ऐसे समय में कोई भी मदद के लिए नहीं आता।

भोग-विलास में काफी खर्च होता है। परिवार से अनबन रहती है। संतान विषयक चिंता से हमेशा ग्रस्त रहते हैं। नौकरी में वरिष्ठ अधिकारियों से कष्ट प्राप्त होते हैं। कोर्ट-कचहरी के कामों में पराजित होना पड़ता है। सफेद एवं नीले रंग भाते हैं। परस्त्री या परपुरुष के प्रति आकर्षण रहता है। लोहा, स्टील, अध्यात्म, तत्त्वज्ञान, ज्योतिष, अध्यापन, वकालत, राजनीति, डॉक्टरी, पॉलिसी कार्य में तथा न्याय विभाग, प्रिंटिंग प्रेस, फोटो स्टूडियो, मेडिकल स्टोर्स इत्यादि व्यवसायों में सफलता प्राप्त होती है।

प्रतिकूलता

- हर वर्ष का अगस्त मास।

- हर मास की 5, 10, 15, 30 तारीखें।
- मंगलवार।
- सफेद, पीला रंग, इन रंगों के वस्त्र एवं अन्य चीजें।
- वृषभ, कन्या, मकर राशि के स्त्री-पुरुष।

जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं

कुंभ राशि के व्यक्तियों को अपने जीवन में काफी संघर्ष करना पड़ता है। कई उतार-चढ़ावों से गुजरना होता है। कुंभ राशि का रक्षक एवं स्वामी ग्रह शनि है। इसी शनि ने अपने पिता सूर्य को भी उनके सारथी एवं घोड़ों के साथ कुछ समय के लिए अंधा बना दिया था। भगवान शंकर को भी इसके भय से कुछ देर के लिए कैलाश पर्वत में छुपना पड़ा था। कुंभ व्यक्तियों का सुख-दुख का दाता, रक्षक-भक्षक शनि ही है। शनि की पीड़ा से छुटकारा पाकर अपना जीवन सुखी बनाने के लिए शनिवार को अंधों और अपाहिजों को भोजन खिलाएं। हनुमान कवच एवं बजरंगबाण का पाठ करें।

कुंभ राशि के व्यक्ति अपने जीवन कल्याण के लिए नीचे दिए प्रार्थना मंत्र का रोज 11 बार पाठ करें:

प्रार्थना मंत्र

ॐ: शूचिः प्रयतो भूत्वा जुहूयादाज्य मन्वहम्।
सुचुक्तंपंचदशर्चच श्रीमामः सततं जपेत्।।

ॐ ये तीर्थानि प्रचरान्ति सृका हस्ता निषंगिणः।। तेषा गूं सहस्रयोजने बधन्वाति तन्मासि।। नमस्ते देव देविश नमस्ते ईप्सित प्रदे।। नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते शंकरप्रिये। नमः सर्व हितार्थाय जगदाधाद हेवते।। साष्टांगो यं प्रणमस्ते प्रयत्लेन मयाकृतः।।

ॐ दुर्गा शिवां शान्तिकारीं ब्रह्मपाणी ब्रह्मणः प्रियाम। सर्वलोक प्रपेत्रीं प्रणमासि सदाम्बिकाम्।। मंगलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाय।। विश्वेश्वरीं विश्वधात्रीं चाण्डिकां प्रणमाम्यहम्।। सर्वदेवमयीं देवीं सर्व लोक भयामहाम्।। ब्रह्मेश विष्णु नामिताम् प्रणयामि सदा माम्।। विन्कयस्थां विन्ध्यनिलमां दिव्यस्थान निवासीनीम्।। योगिनीं योगजननी चण्डिका प्रणमाम्यहम्।। ईशानमातरं देवीमीश्वरीमीश्वर प्रियाम।। प्रणतोस्मिसदा दुर्गा संसरार्णव तारिणीम्। य इदं पठति स्तोत्रं श्रृणुयाद्वापि यो नरः।। समुक्तः सर्व पापेभ्यो मोदते दुर्गया सह।।

ॐ रूपं देहि यशे देहि भगं भगतन्ति देहि मे।। पुत्रान्देहि धनंदेहि।। सर्वाकामंश्च देहि मे। ॐ महिषाधि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनी आयुरारोग्य विजयम्देहि दुर्गे देवि नमोस्तुते। भूतप्रेत पश्चिमभ्यो रक्षतेम्यः परमेश्वरि। भवेभ्या मानुष्येभ्यश्च देवेभ्यो रक्ष मां सदा। सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके आयु ब्रह्माणी कौमारि विश्व रूपे प्रसीद मे। कुम्कुकेत समालब्धे चन्यनेन विलेपते। बिल्वपत्र कृता पीडे दुर्गे त्वां शरणं गतः।। गतं पापं दुःख

गतं दारिद्रयमेवच। आगता सुख सम्पतिः पुष्याच्च तर्व दर्शनात। ॐ हर पापं हर क्लेश हर शोकं हरासुखम्। हर रोगे हर क्षोत्रं हर मारीं हरप्रिये। ॐ कायेन मनसा वाचा कर्मणामत्कृतं मया। ज्ञानाज्ञान कृतं पापं दुर्गे। त्वं हर दुर्गतिम्। पूजा फलाग्नि कार्यायेः सुकृतं यन्मायार्चितम्। सत्सर्वफलदं येस्तु भुक्तिं मुक्तिं च देहि मे। लक्ष्मी तत्प्रज्ञयनित्यं कृता पूजा तवज्ञया स्थिरा भव गृहेहयास्मित्मम सन्तानैश्वर्य कारिणी।।

ॐ विपदगणध्वान्त सहस्रभानवः। समीहितार्शन्प्रति कोमधेनवः। अपार संसार समुद्र सेतवो मां पातु चण्डिचरणा ब्जरेणवः।।

नीचे दिए मंत्र का 108 बार नित्य जाप करें।

ॐ श्रीं उपेन्द्राय अच्युताय नमः।

शतभिषा नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः शतभिषा नक्षत्र में जन्मे पुरुष बड़बोले, सेवाभावी, स्वच्छताप्रिय, स्पष्टवादी, धार्मिक, चंचल स्वभावी, बार-बार अपना कार्यक्षेत्र बदलनेवाले, यात्रा अधिक करनेवाले, विलासी, व्यसनी, जुआरी, मादक पदार्थों का सेवन करनेवाले, परस्त्रीगामी होते हैं। अपने अवगुणों के कारण ये असफल एवं नुकसान में साझेदार बनते हैं। विज्ञान एवं कलाओं में पारंगत रहते हैं। किसी भी वाद-विवाद एवं कोर्ट-कचहरी के मुकदमे में इनकी जीत होती है। परदेश गमन भी होता है। जादूगर, तांत्रिक, इंजीनियर, कंप्यूटर विशेषज्ञ, ज्योतिषी, अनुवादक, केमिस्ट, फोटोग्राफर, टेक्नीशियन, शेयरों की खरीद-फरोख्त, ड्राफ्ट्समैन, राजनीति, वकालत में से किसी एक क्षेत्र में अच्छी प्रगति करते हैं।

स्त्रीः शतभिषा नक्षत्र में जन्मी महिलाएं बड़बोली, चतुर, व्यसनी, साहसी, धर्मभीरु शत्रुहंता, किसी के अधीन न रहनेवाली, दुर्बल व्यक्तित्व की, बुलंद आवाज की, विपरीत आचरणशील, वैवाहिक जीवन में अनेक अड़चनों से गुजरनेवाली, स्वार्थी एवं कामातुर होती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

निद्रानाश, जलभय, वातविकार, ज्वर, कुष्ठ, जोड़ों का दर्द, रक्तचाप, पैरों में फ्रैक्चर होना, हृदयशूल, त्वचारोग, रक्तस्राव आदि व्याधियां इस नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुषों को भोगनी पड़ती है। इन व्याधियों से मुक्ति पाने के लिए एवं अपना योगक्षेम सुचारु रूप से चलाने के लिए सूर्योपासना करें। संतान विषयक कोई दोष हो तो संतान गोपाल मंत्र का अनुष्ठान करें। जन्म नक्षत्र शतभिषा हो एवं जन्मदिवस बृहस्पतिवार-शुक्रवार हो तो यातनाएं लंबे समय तक भोगनी पड़ती हैं। इस यातना के निवारण के लिए निम्न मंत्र का प्रतिदिन कम-से-कम 108 बार जाप करें:

ॐ इमं मे वरुण श्रृणुधिं हवमाद्याच मृड यस्यामेव स्मुराचकमे
ॐ वरुणाय नमः।

चरण प्रभाव

प्रथम चरणः में जन्मे जातक सर्वांग सुंदर, धार्मिक, पशु-पक्षियों से प्रेम

करनेवाले, पशुपालक एवं धार्मिक कार्यों में हाथ बंटानेवाले होते हैं।

द्वितीय चरणः में जन्मे जातक चिड़चिड़े स्वभाव के, अधर्मी, क्रूर एवं ठग होते हैं।

तृतीय चरणः में जन्मे जातक भी चिड़चिड़े स्वभाव के किंतु अपनी प्रगति के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं।

चतुर्थ चरणः में जन्मे जातक सच्चरित्र, यशस्वी एवं सज्जन होते हैं।

पूर्वभाद्रपद नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में जन्मे पुरुष आलसी एवं सतत निद्राग्रस्त रहते हैं। वाक्पटु किंतु निरर्थक वाचाल, सामान्य सुखी जीवन जीनेवाले, दुनिया की हर चीज से परिचित, पत्नी के कहने पर चलनेवाले रहते हैं। धन कमाने में चतुर, स्वपरिश्रम से जीवन में बड़ा नाम कमानेवाले, यात्रा में रुचि रखनेवाले होते हैं किंतु लोभी वृत्ति एवं क्रोधी स्वभाव के कारण अपने जीवन में इन्हें काफी कुछ सहना पड़ता है। पैतृक संपत्ति का लाभ इन्हें नहीं मिलता। इनकी अपेक्षा इनकी संतानें कर्त्तव्यशील होती हैं और नाम रोशन करती हैं।

ऐसे जातक कुश्ती लड़ने में माहिर, हिंसक, चोर, शेयर ब्रोकर, वैद्य, अध्यापक, प्राध्यापक, नगर सेवक, साहित्यकार, ज्योतिषी, बैंक अधिकारी, जेलर, मंत्री बनकर अच्छा धन एवं नाम कमाते हैं।

स्त्रीः पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में जन्मी महिलाएं शर्मीली, पति को मुट्ठी में रखनेवाली, लोभी एवं शंकालु होती हैं। अपने स्वभाव के कारण अपना ही नुकसान कर लेती हैं। सुगृहिणी, तार्किक, सुंदर, कंजूस, कुसंगति में रुचि रखनेवाली, मायावी, धर्म श्रद्धालु किंतु शिथिल चरित्र की होती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुषों को त्रिदोष, शारीरिक पीड़ा, संधिवात, सिरदर्द, मूर्छा, हिस्टीरिया या हृदयरोग से कष्ट रहते हैं। दैनिक भौतिक कार्यों में अड़चनें आती हैं। इन व्याधियों एवं अड़चनों के निवारण के लिए घर में मंगल यंत्र की विधिवत स्थापना कर नित्य पूजन करें। व्याधि दूर करने के लिए विष्णु सहस्र नामावली का पाठ करें।

चरण प्रभाव

प्रथम चरणः में जन्मे जातक धर्म-कर्म, पूजापाठ में प्रवीण और शरीर से पुष्ट रहते हैं। व्यापार-व्यवसाय एवं परिवार में सदा संतुष्ट रहते हैं।

द्वितीय चरणः में जन्मे जातक अध्ययनशील होते हैं। अध्यापक एवं वकील के रूप में सफल पाए जाते हैं। रात-दिन अपने कार्य में मगन एवं अथक कार्य करनेवाले होते हैं।

तृतीय चरणः में जन्मे जातक खुशमिजाज एवं प्रसन्नचित्त होते हैं। अच्छे साहित्यकार, स्वभाव चिड़चिड़ा होता है।

चतुर्थ चरणः में जन्मे जातक सुंदर होते हैं और सम्मानपूर्वक अपना जीवनयापन करते हैं।

□□

मीन (12)

12 राशियों में यह अंतिम राशि है। इसका निर्देशांक 12है।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का चौथा चरण, उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र के चारों चरण एवं रेवती नक्षत्र के चार चरण मिलने पर यह राशि बनती है।

नीचे सारिणी में चंद्र के अंश, नक्षत्र, चरण, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, योनि, नाड़ी एवं नामाक्षर की जानकारी दी गई है।

चंद्र के अंश अंश कला से अंश कला	नक्षत्र	चरण	नामाक्षर	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	योनि	नाड़ी	गण
00.00 से 3.20	पूर्वा भाद्रपद	4	दि	बृहस्पति	बृहस्पति	सिंह	आद्य	मनुष्य
3.20 से 16.40	उत्तरा भाद्रपद	1 से 4	दू,थ,झ,ट	बृहस्पति	शनि	गो	मध्य	मनुष्य
16.40 से 30.00	रेवती	1 से 4	दे,दो,चा,ची	बृहस्पति	बुध	गज	अन्त्य	देव

इस राशि की आकृति मछलियों की जोड़ जैसी है। पृथ्वी के क्रांति अंशों पर आधारित विषुवत रेखा से दक्षिण की ओर 12 से 0 अंशों तक इस राशि का प्रभाव माना गया है।

विशेषताएं

इसे अंग्रेजी में पाइसीज (Pisces) कहते हैं। मीन राशि उत्तर दिशा की स्वामिनी, नदी, समुद्र अथवा जलाशय एवं पवित्र स्थानों में विचरण करनेवाली, सौम्य, उदार, चंचल एवं शांत, कफ प्रकृति की, वृद्ध, उजले रंग की, सत्वगुणी, जल तत्त्व की, ब्राह्मण जाति की स्त्री, शुभ कार्यों का प्रतिनिधित्व करनेवाली, रात्रिबली, द्विस्वभावी, जलचर, उभयोदय, समराशि है। मछलियों का जोड़ा, एक-दूसरे के विरुद्ध दिशा में मुंह बनाए, एक का चेहरा तो दूसरे की पूंछ गोल आकृति में रहती है। यह राशि नाना एवं मोक्ष का प्रतिनिधित्व करनेवाली है। इस राशि का निवास कोहाल देश एवं स्वामी बृहस्पति तथा अंक 3 व 7 है।

शरीर में दोनों पैर, तलवे, पैरों की उंगलियों पर इस राशि का प्रभाव रहता है।

सिनेमा, मनोरंजन विषयक सभी व्यवसाय, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक कार्य, लेखन, संशोधन एवं आध्यात्मिक कार्य का प्रतिनिधित्व इस राशि के पास है।

जलयात्रा, औषधि विज्ञान, रसायन विषय भी इसी राशि के आधिपत्य में रहते हैं।

मछलियां, समुद्र से निर्मित वस्तुएं, जवाहरात, मोती, हीरा, गोरोचन, शराब, शयन गृह में अंतर्भूत उपकरण एवं वस्त्र इत्यादि का आधिपत्य मीन राशि के पास है।

मेदिनीय ज्योतिषशास्त्र में मिस्र, सहारा, गेलेशिया, लंकास्टर, जंबूद्वीप आदि प्रांत प्रदेशों का प्रतिनिधित्व भी मीन राशि ही करती है।

नोटः पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में जन्मे जातकों के लक्षण, व्याधियां एवं व्याधियों से मुक्ति पाने के उपाय की जानकारी कुंभ परिच्छेद में देखें।

जातकों का भविष्य

मीन राशि के व्यक्ति जितेन्द्रिय, जलप्रेमी, चतुर स्वभावी, दिन में कई बार नहाने की आदतवाले, कला, संगीत एवं अभिनय क्षेत्र में नाम कमानेवाले, खानपान एवं वस्त्र आवरणों के शौकीन, स्वच्छ एवं सुंदर शरीरधारी होते हैं। शिक्षा कम होती है किंतु अभ्यास से इस कमी को पूरा कर लेते हैं। हवाई जहाज की यात्रा के शौकीन होते हैं। मित्रों के साथ शत्रुओं की भी बड़ी संख्या होती है। आर्थिक स्थिति साधारण रहती है।

मीन राशि की महिलाएं सुंदर, चंचल, शत्रुओं से घिरी हुई, किसी के भी वश में न आनेवाली होती हैं।

जातकाभरण के अनुसार

अधिकांश मीन राशि व्यक्ति प्रभावी, प्रतापी एवं प्रतिष्ठित होते हैं। अर्थाभाव नहीं रहता। स्वभाव से मृदु, कुछ हद तक विलासी होते हैं। सदा हंसमुख एवं प्रसन्न रहनेवाले किंतु माता-पिता का अनादर करनेवाले, सुगंधित पदार्थ एवं सुंदर आभूषणों से लगाव रखनेवाले होते हैं।

जन्म से 5वें वर्ष तक पानी से खतरा रहता है। आठवें वर्ष में कष्ट होता है। 22वें वर्ष में अनेक कष्ट सहने होते हैं। आयु 90 वर्ष तक की रहती है।

अनुभवसिद्ध फलित

मीन राशि के व्यक्ति चतुर, मृदुभाषी, गुणवान, भोगविलासी, राजनीति के मर्मज्ञ, पैतृक संपत्ति एवं सट्टा लाटरी से धन प्राप्ति करनेवाले, स्वार्थी, लोभी रहते हैं। स्त्री कलह से दुखी एवं संतान के लिए चिंताग्रस्त रहते हैं। इनके मित्र अधिक रहते हैं।

स्कूल कॉलेज के अध्यापक, वकील, जज, लेखक, प्रकाशक, इनकमटैक्स, सेल्सटैक्स सलाहकार में से किसी महकमे में नौकरी करनेवाले, ज्योतिष, तकनीकी क्षेत्र, सर्जन, फार्मेसी संचालन आदि क्षेत्रों में अग्रणी रहते हैं।

प्रतिकूलता

- हर वर्ष का सितंबर महीना।

- हर महीने की 3, 7, 13, 18, 28 तारीखें।
- शुक्रवार।
- नीला-काला रंग, इन रंगों के कपड़े तथा अन्य चीजें।
- मिथुन, तुला एवं कुंभ राशि के स्त्री-पुरुष।

जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं

जन्म से 26वें वर्ष तक दुखी, त्रस्त एवं रोगी रहते हैं। 18 से 26 वर्ष की समयावधि में विवाह होता है। 27 से 43 वर्ष की कालावधि में सर्वत्र प्रगति होती है। अर्थलाभ के साथ मकान भी बनता है। 44 से 60 वर्ष तक का समय अनेक दृष्टियों से बुरा सिद्ध होता है। 61 से 70 वर्षों सट्टा लॉटरी से धन लाभ, व्यावसायिक प्रगति, प्रसिद्धि मिलती है।

विशेष उपासना

बीमारियां, योगक्षेम में आनेवाली कठिनाइयों से उत्पन्न अनिष्ट स्थिति को बदलने के लिए निम्नलिखित मंत्र का 108 बार जाप करें:

ॐ क्लीं उद्धृताय उद्धारिणे नमः।

निम्नलिखित मंत्र भी बारह बार बोलें:

ॐ माषदानं क्लेशहरं शरीरारोग्यवर्धनम्।
अन्तः शुद्धिकराः माया प्रियतारूपे जनार्दनः।।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुषः उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में जन्मे पुरुष मित्र, परिवार से युक्त, सात्विक वृत्ति के सुंदर, गौरवर्ण के, धर्म-कर्म में आस्थावान, शत्रु पर विजय प्राप्त करनेवाले, परिवार से प्रेम रखनेवाले, चित्त से अशांत, मृदुभाषी, वाक्पटु, धैर्यवान, सुखी, स्त्री के माध्यम से धन कमानेवाले, अस्थिर विचारों के होते हैं। व्यापार में इन्हें यश प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। नौकरी में वरिष्ठों का विश्वास अर्जित करने पर पदोन्नति प्राप्त होती है।

ऐसे जातक डॉक्टर, हृदय रोग विशेषज्ञ, आयात-निर्यात करनेवाले, धर्मार्थ चिकित्सालय के संचालक, बुद्धिमान, धैर्यवान, सदाचारी एवं गुण संपन्न तथा कर्त्तव्यशील एवं चतुर भी होते हैं। अध्यापन, लेखन भाषण एवं वकालत में सफल होते हैं।

स्त्रीः उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में जन्मी महिलाएं सुंदर, पतिव्रता, बुद्धिमान, धैर्यवान, सदाचारी, गुणसंपन्न, कार्यकुशल एवं व्यवहारकुशल होती हैं। किसी की चापलूसी इन्हें रास नहीं आती। पुत्रसुख, धन सुख उत्तम श्रेणी का प्राप्त होता है। अध्यापन, लेखन, भाषण एवं वकालत के व्यवसाय में सफल होती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुषों को पीलिया, अतिसार, वात ज्वर,

नाक, कान, आंखों में पीड़ा रहती है। मित्र धोखा देते हैं। योगक्षेम में कई विघ्न उत्पन्न होते हैं। इस शारीरिक एवं आर्थिक अनिष्टता के निवारण के लिए महामृत्युंजय का पाठ नित्य करें। **ॐ हिर्वुध्याय नमः।** इस मंत्र का रोज 108 बार जाप करें।

चरण प्रभाव

प्रथम चरण: में जन्मा जातक विशाल हृदय, उदार, चिड़चिड़ा एवं संदेहास्पद जीवन जीनेवाला होता है।

द्वितीय चरण: में जन्मा जातक अत्यंत क्रोधी स्वभाव का होता है। अपने स्वभाव के कारण स्वयं अपना ही अहित कर बैठता है। बुद्धिमान, सुशिक्षित, विद्वत समाज से सम्मानित किंतु संदेहास्पद जीवन जीता है।

तृतीय चरण: में जन्मा जातक झुके हुए मस्तकवाला होता है। अपरोक्ष में दूसरों को नुकसान पहुंचानेवाला, क्षुद्र मनोवृत्ति का किंतु ईश्वर में आस्था रखनेवाला होता है।

चतुर्थ चरण: में जन्मा जातक स्वभाव से चिड़चिड़ा, काव्यप्रेमी एवं परिवार में बड़ा होता है।

रेवती नक्षत्र में जन्मे जातक

पुरुष: रेवती नक्षत्र में जन्मे जातक सर्वगुणसंपन्न, सुंदर एवं प्रियभाषी होते हैं। उनका मन उदार एवं विवेक उत्तम रहता है। जीवन में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। हमेशा नए-नए कामों में रुचि लेने की प्रवृत्ति रहती है। मनोत्साह एवं उत्साह वृद्धि इन्हें भगवान की देन है। ये धनवान, जितेंद्रिय, तीव्र बुद्धि के एवं नित्य नई बात की शोध में रहते हैं।

रेवती नक्षत्र गंडमूलक नक्षत्र है। रेवती नक्षत्र का पहला चरण सुख एवं राज सम्मान दिलाता है। दूसरा चरण मंत्रीपद दिलाता है। तीसरा चरण धन सुख में वृद्धि करता है तो चौथा चरण विविध दृष्टि से कष्टप्रद, चिंताकारक एवं अरिष्टप्रद रहता है।

रेवती नक्षत्र में जन्मे जातकों को अपने जीवन में कड़ा संघर्ष करना पड़ता है। वैवाहिक जीवन में विलंब से यश मिलता है किंतु वैवाहिक जीवन सुखी रहता है। संतान सुख उत्तम रहता है। इनकी वजह से ससुराल पक्ष को कष्ट पहुंचता है एवं उनसे अच्छा मेल-मिलाप नहीं रहता।

प्रकाशक, संपादक, धार्मिक कार्य करनेवाले तथा वकील, शेयर विक्रेता, सलाहकार, प्राध्यापक, उद्‌घोषक, कुलपति, पंडित, व्यंग्य लेखक, बैंक अधिकारी, ज्योतिषी, हस्तरेखा विशेषज्ञ के रूप में ख्याति और यश प्राप्त करते हैं।

स्त्री: रेवती नक्षत्र में जन्मी महिलाएं सुंदर, अनेकों से मैत्री रखनेवाली, मधुर स्वभाव की, पतिव्रता, ईश्वर में निष्ठा रखनेवाली, पूर्ण विचार के बाद कार्य करनेवाली तथा लोकप्रिय होती हैं।

व्याधियां एवं उपाय

रेवती नक्षत्र में जन्मे स्त्री–पुरुषों को उदर रोग, बहरापन, पैरों पर सूजन, मादक द्रव्य या औषधियों के कारण होनेवाले रोग, आंतों का अल्सर, कान के रोग आदि व्याधियां त्रस्त करती हैं। जीवन में काफी संघर्ष करना होता है। इन सब व्याधियों, कष्टों से छुटकारा पाने एवं जीवन में यश प्राप्त करने के लिए नीचे लिखे मंत्र का जाप पांच हजार बार करके एक दशांश हवन करें।

ॐ पूषान एव व्रते भयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इदस्यासि

ॐ पूष्णे नमः।

इस स्तोत्र के साथ ही नित्य महामृत्युंजय जाप करें एवं भैरव स्तोत्र भी पढ़ें।

चरण प्रभाव

प्रथम चरणः में जन्मे जातक अध्ययनशील एवं प्रसन्नचित्त किंतु कलहकारी रहते हैं।

द्वितीय चरणः में जन्मे जातक स्वभावतः चिड़चिड़े, कृशकाय, कामातुर एवं पराक्रमी होते हैं।

तृतीय चरणः में जन्मे जातक कमजोर मस्तिष्क के होते हैं तथा बदला लेने की भावना से ग्रसित रहते हैं।

चतुर्थ चरणः में जन्मे जातक सम्मानित एवं शत्रुहंता होते हैं।

□□

राशि, नक्षत्र, चरण एवं विंशोत्तरी महादशा तालिका

मेष: (अश्विनी चारों चरण, भरणी चारों चरण, कृतिका प्रथम चरण)

राशि अंश	पर्यंत	नक्षत्र	चरण	दशा	वर्ष
00.00	03.20	अश्विनी	1	केतु	07
03.20	06.40	अश्विनी	2	केतु	07
06.40	10.00	अश्विनी	3	केतु	07
10.00	13.20	अश्विनी	4	केतु	07
13.20	16.40	भरणी	1	शुक्र	20
16.40	20.00	भरणी	2	शुक्र	20
20.00	23.20	भरणी	3	शुक्र	20
23.20	26.40	भरणी	4	शुक्र	20
26.40	01.00	कृतिका	1	सूर्य	06

वृषभ : (कृतिका अंतिम 3 चरण, रोहिणी चारों चरण, मृग प्रथम दो चरण)

राशि अंश	पर्यंत	नक्षत्र	चरण	दशा	वर्ष
00.00	03.20	कृतिका	2	सूर्य	06
03.20	06.40	कृतिका	3	सूर्य	06
06.40	10.00	कृतिका	4	सूर्य	06
10.00	13.20	रोहिणी	1	चंद्र	10
13.20	16.40.	रोहिणी	2	चंद्र	10
16.40	20.00	रोहिणी	3	चंद्र	10
20.00	23.20	रोहिणी	4	चंद्र	10
23.20	26.40	मृग	1	मंगल	07
26.40	00.00	मृग	2	मंगल	07

मिथुन : (मृग अंतिम 2 चरण, आर्द्रा चारों चरण, पुनर्वसु प्रथम 3 चरण)

राशि अंश	पर्यंत	नक्षत्र	चरण	दशा	वर्ष
00.00	03.20	मृग	3	मंगल	07
03.20	06.40	मृग	4	मंगल	07
06.40	10.00	आर्द्रा	1	राहु	18
10.00	13.20	आर्द्रा	2	राहु	18
13.20	16.40	आर्द्रा	3	राहु	18
16.40	20.00	आर्द्रा	4	राहु	18
20.00	23.20	पुनर्वसु	1	बृहस्पति	16
23.20	26.40	पुनर्वसु	2	बृहस्पति	16
26.40	00.00	पुनर्वसु	3	बृहस्पति	16

कर्क : (पुनर्वसु चौथा चरण, पुष्य चारों चरण, आश्लेषा चारों चरण)

राशि अंश	पर्यंत	नक्षत्र	चरण	दशा	वर्ष
00.00	03.20	पुनर्वसु	4	बृहस्पति	16
03.20	06.40	पुष्य	1	शनि	19
06.40	10.00	पुष्य	2	शनि	19
10.00	13.20	पुष्य	3	शनि	19
13.20	16.40	पुष्य	4	शनि	19
16.40	20.00	आश्लेषा	1	बुध	17
20.00	23.20	आश्लेषा	2	बुध	17
23.20	26.40	आश्लेषा	3	बुध	17
26.40	00.00	आश्लेषा	4	बुध	17

सिंह : (मघा चारों चरण, पूर्वा चारों चरण, उत्तरा प्रथम चरण)

राशि अंश	पर्यंत	नक्षत्र	चरण	दशा	वर्ष
00.00	03.20	मघा	1	केतु	07
03.20	06.40	मघा	2	केतु	07
06.40	10.00	मघा	3	केतु	07
10.00	13.20	मघा	4	केतु	07
13.20	16.40	पूर्वा फा.	1	शुक्र	20
16.40	20.00	पूर्वा फा.	2	शुक्र	20
20.00	23.20	पूर्वा फा.	3	शुक्र	20
23.20	26.40	पूर्वा फा.	4	शुक्र	20
26.40	00.00	उत्तरा फा.	1	सूर्य	06

कन्या : (उत्तरा अंतिम 3 चरण, हस्त चारों चरण, चित्रा प्रथम 2 चरण)

राशि अंश	पर्यंत	नक्षत्र	चरण	दशा	वर्ष
00.00	03.20	उत्तरा फा.	2	सूर्य	06
03.20	06.40	उत्तरा फा.	3	सूर्य	06
06.40	10.00	उत्तरा फा.	4	सूर्य	06
10.00	13.20	हस्त	1	चंद्र	10
13.20	16.40	हस्त	2	चंद्र	10
16.40	20.00	हस्त	3	चंद्र	10
20.00	23.20	हस्त	4	चंद्र	10
23.20	26.40	चित्रा	1	मंगल	07
26.40	00.00	चित्रा	2	मंगल	07

तुला : (चित्रा अंतिम दो चरण, स्वाति चारों चरण, विशाखा प्रथम 3 चरण)

राशि अंश	पर्यंत	नक्षत्र	चरण	दशा	वर्ष
00.00	03.20	चित्रा	3	मंगल	07
03.20	06.40	चित्रा	4	मंगल	07
06.40	10.00	स्वाति	1	राहु	18
10.00	13.20	स्वाति	2	राहु	18
13.20	16.40	स्वाति	3	राहु	18
16.40	20.00	स्वाति	4	राहु	18
20.00	23.20	विशाखा	1	बृहस्पति	16
23.20	26.40	विशाखा	2	बृहस्पति	16
26.40	00.00	विशाखा	3	बृहस्पति	16

वृश्चिक : (विशाखा अंतिम चरण, अनुराधा चारों चरण, ज्येष्ठा चारों चरण)

राशि अंश	पर्यंत	नक्षत्र	चरण	दशा	वर्ष
00.00	03.20	विशाखा	4	बृहस्पति	16
03.20	06.40	अनुराधा	1	शनि	19
06.40	10.00	अनुराधा	2	शनि	19
10.00	13.20	अनुराधा	3	शनि	19
13.20	16.40	अनुराधा	4	शनि	19
16.40	20.00	ज्येष्ठा	1	बुध	17
20.00	23.20	ज्येष्ठा	2	बुध	17
23.20	26.40	ज्येष्ठा	3	बुध	17
26.40	00.00	ज्येष्ठा	4	बुध	17

धनु : (मूल चारों चरण, पूर्वाषाढ़ चारों चरण, उत्तराषाढ़ प्रथम चरण)

राशि अंश	पर्यंत	नक्षत्र	चरण	दशा	वर्ष
00.00	03.20	मूल	1	केतु	07
03.20	06.40	मूल	2	केतु	07
06.40	10.00	मूल	3	केतु	07
10.00	13.20	मूल	4	केतु	07
13.20	16.40	पूर्वाषाढ़	1	शुक्र	20
16.40	20.00	पूर्वाषाढ़	2	शुक्र	20
20.00	23.20	पूर्वाषाढ़	3	शुक्र	20
23.20	26.40	पूर्वाषाढ़	4	शुक्र	20
26.40	00.00	उत्तराषाढ़	1	सूर्य	06

मकर : (उत्तराषाढ़ अंतिम 3 चरण, श्रवण चारों चरण, धनिष्ठा प्रथम 2 चरण)

राशि अंश	पर्यंत	नक्षत्र	चरण	दशा	वर्ष
00.00	03.20	उत्तराषाढ़	2	सूर्य	06
03.20	06.40	उत्तराषाढ़	3	सूर्य	06
06.40	10.00	उत्तराषाढ़	4	सूर्य	06
10.00	13.20	श्रवण	1	चंद्र	10
13.20	16.40	श्रवण	2	चंद्र	10
16.40	20.00	श्रवण	3	चंद्र	10
20.00	23.20	श्रवण	4	चंद्र	10
23.20	26.40	धनिष्ठा	1	मंगल	07
26.40	00.00	धनिष्ठा	2	मंगल	07

कुंभ : (धनिष्ठा अंतिम 2 चरण, शतभिषा चारों चरण, पूर्वाभाद्रपद अंतिम 3 चरण)

राशि अंश	पर्यंत	नक्षत्र	चरण	दशा	वर्ष
00.00	03.20	धनिष्ठा	3	मंगल	07
03.20	06.40	धनिष्ठा	4	मंगल	07
06.40	10.00	शतभिषा	1	राहु	18
10.00	13.20	शतभिषा	2	राहु	18
13.20	16.40	शतभिषा	3	राहु	18
16.40	20.00	शतभिषा	4	राहु	18
20.00	23.20	पूर्वाभाद्रपद	1	बृहस्पति	16
23.20	26.40	पूर्वाभाद्रपद	2	बृहस्पति	16
26.40	00.00	पूर्वाभाद्रपद	3	बृहस्पति	16

मीन : (पूर्वा.भाद्र. चौथा चरण, उ.भाद्र. चारों चरण, रेवती चारों चरण)

राशि अंश	पर्यंत	नक्षत्र	चरण	दशा	वर्ष
00.00	03.20	पूर्वाभाद्रपद	4	बृहस्पति	16
03.20	06.40	उत्तराभाद्रपद	1	शनि	19
06.40	10.00	उत्तराभाद्रपद	2	शनि	19
10.00	13.20	उत्तराभाद्रपद	3	शनि	19
13.20	16.40	उत्तराभाद्रपद	4	शनि	19
16.40	20.00	रेवती	1	बुध	17
20.00	23.20	रेवती	2	बुध	17
23.20	26.40	रेवती	3	बुध	17
26.40	00.00	रेवती	4	बुध	17

नक्षत्र एवं ग्रह गोचर

ज्योतिषशास्त्र में नक्षत्रों का बड़ा महत्त्व है। यदि गोचरवश कोई ग्रह जन्मकुंडली के शुभ स्थान से भ्रमण करता हो तो यह जरूरी नहीं कि वह शुभफल ही देगा। यदि किसी नक्षत्र से गोचर ग्रह या मूल ग्रह भ्रमण करता है तो फलित में निश्चित ही सूक्ष्मता और सत्यता आने में यह जानकारी सहायक होगी।

जन्म नक्षत्र से जन्म उत्पत्तिकर, संपत्तिकर, क्षेत्रकर, प्रत्वर, साधक, नैश्वन, मैत्र, परममैत्र इस तरह की संज्ञाओं से नक्षत्र भ्रमण करता है, तब उनके नामानुकूल फल प्रदान करता है। मान लीजिए, किसी का जन्म नक्षत्र अनुराधा है तो 5 जनवरी, 98 में गोचरवश आया बृहस्पति इस नक्षत्र के जातक को इसलिए शुभ एवं इष्ट फल नहीं देगा क्योंकि वह फिलहाल धनिष्ठा नक्षत्र में भ्रमण कर रहा है और धनिष्ठा नक्षत्र अनुराधा नक्षत्र के लिए अशुभ नक्षत्र है। 8 फरवरी, 1998 को कुम्भ बृहस्पति शतभिषा नक्षत्र में भ्रमण करेगा। यह भ्रमण अनुराधा नक्षत्र के लिए इष्ट एवं शुभ फल प्रदान करेगा।

दैनिक मुहूर्त या दिन अच्छा या बुरा है—यह देखने के लिए भी इस पद्धति का उपयोग किया जाता है। किसी दिन का चंद्र आपके लिए अनुकूल है किंतु नक्षत्र आपके नक्षत्रानुसार ठीक फलदायक नहीं है तो अकेला चंद्र पूरे दिन के लिए आवश्यक शुभता प्रदान नहीं करेगा। इसलिए हम यहां नक्षत्रों की इष्ट-अनिष्ट तालिका दे रहे हैं। पाठकों को इससे समुचित लाभ होगा।

जन्मसंपद्विपत्क्षेमः प्रत्वदः साधकस्था।
नैश्वनो मित्रवर्गश्च परमो मैत्र एव च।।

प्रथम उत्पत्तिकर, दूसरा संपत्तिकर, तीसरा विपद कर, चौथा क्षेत्रकर, पांचवां प्रत्वर, छठा साधक, सातवां नैश्वन (नाशकारक), आठवां मित्र, नौवां परममैत्र। इस तरह जन्म नक्षत्र से नौ नक्षत्रों का क्रम रहता है। फिर 10 से शुरू करें...फिर 19 से शुरू करें।

जन्म नक्षत्र से पहला, दूसरा, चौथा, छठा, आठवां, नौवां, दसवां, ग्यारहवां, तेरहवां, पंद्रहवां, सत्रहवां, अठारहवां, उन्नीसवां, बीसवां, चौबीसवां, सत्ताईसवां अर्थात कुल अठारह नक्षत्र शुभ फलदायक होते हैं। अपने जन्म नक्षत्र से विपदकर, प्रत्वर, नैश्वन अनिष्ट नक्षत्र एवं जन्म उत्पत्तिकर, संपत्तिकर, क्षेत्रकर, साधक, मैत्र, परममैत्र इष्ट नक्षत्र हैं।

जन्म नक्षत्र से तीसरा, पांचवां, सातवां, बारहवां, चौदहवां, सोलहवां, इक्कीसवां, तेईसवां एवं पच्चीसवां नक्षत्र अनिष्ट फलदायी होते हैं।

जन्मकुंडली में अपने नक्षत्र से 27 नक्षत्रों में से कौन-कौन से नक्षत्र अनुकूल और कौन-कौन से नक्षत्र प्रतिकूल हैं यह देख लीजिए। यदि कोई एक या अधिक ग्रह प्रतिकूल नक्षत्रों में हो तो वे ग्रह जन्मकुंडली में कितनी ही अच्छी स्थिति में, अच्छे भाव में हों फिर भी वे अनुकूल फल देने में असमर्थ रहेंगे। ऐसे प्रतिकूल अनिष्ट ग्रहों की अनिष्टता का निवारण करना अवश्यंभावी हो जाता है। अनिष्ट ग्रहों से हुई पीड़ा निवारणार्थ **मनोज पॉकेट बुक्स, दिल्ली** द्वारा प्रकाशित पुस्तक **अनिष्ट ग्रह पीड़ा निवारक साधना** का अवलोकन करें।

इष्ट-अनिष्ट नक्षत्र दर्शक सारिणी

अश्विनी नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. अश्विनी	10. मघा	19. मूल
संपत्तकर	2. भरणी	11. पूर्वा फा.	20. पूर्वाषाढ़
विपदकर	3. कृतिका	12. उत्तरा फा.	21. उत्तराषाढ़
क्षेत्रकर	4. रोहिणी	13. हस्त	22. श्रवण
प्रत्वर	5. मृग	14. चित्रा	23. धनिष्ठा
साधक	6. आर्द्रा	15. स्वाति	24. शतभिषा
नैश्वन	7. पुनर्वसु	16. विशाखा	25. पूर्वाभाद्रपद
मैत्र	8. पुष्य	17. अनुराधा	26. उत्तराभाद्रपद
परममैत्र	9. आश्लेषा	18. ज्येष्ठा	27. रेवती

भरणी नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. भरणी	10. पूर्वा फा.	19. पूर्वाषाढ़
संपत्तकर	2. कृतिका	11. उत्तरा फा.	20. उत्तराषाढ़
विपदकर	3. रोहिणी	12. हस्त	21. श्रवण
क्षेत्रकर	4. मृग	13. चित्रा	22. धनिष्ठा
प्रत्वर	5. आर्द्रा	14. स्वाति	23. शतभिषा
साधक	6. पुनर्वसु	15. विशाखा	24. पूर्वाभाद्रपद
नैश्वन	7. पुष्य	16. अनुराधा	25. उत्तराभाद्रपद
मैत्र	8. आश्लेषा	17. ज्येष्ठा	26. रेवती
परममैत्र	9. मघा	18. मूल	27. अश्विनी

कृतिका नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. कृतिका	10. उत्तरा फा.	19. उत्तराषाढ़
संपत्तकर	2. रोहिणी	11. हस्त	20. श्रवण
विपदकर	3. मृग	12. चित्रा	21. धनिष्ठा
क्षेत्रकर	4. आर्द्रा	13. स्वाति	22. शतभिषा
प्रत्वर	5. पुनर्वसु	14. विशाखा	23. पूर्वाभाद्रपद
साधक	6. पुष्य	15. अनुराधा	24. उत्तराभाद्रपद
नैश्वन	7. आश्लेषा	16. ज्येष्ठा	25. रेवती
मैत्र	8. मघा	17. मूल	26. अश्विनी
परममैत्र	9. पूर्वा फा.	18. पूर्वाषाढ़	27. भरणी

रोहिणी नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. रोहिणी	10. हस्त	19. श्रवण
संपत्तकर	2. मृग	11. चित्रा	20. धनिष्ठा
विपदकर	3. आर्द्रा	12. स्वाति	21. शतभिषा
क्षेत्रकर	4. पुनर्वसु	13. विशाखा	22. पूर्वाभाद्रपद
प्रत्वर	5. पुष्य	14. अनुराधा	23. उत्तराभाद्रपद
साधक	6. आश्लेषा	15. ज्येष्ठा	24. रेवती
नैश्वन	7. मघा	16. मूल	25. अश्विनी
मैत्र	8. पूर्वा फा.	17. पूर्वाषाढ़	26. भरणी
परममैत्र	9. उत्तरा फा.	18. उत्तराषाढ़	27. कृतिका

मृगशिरा नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. मृग	10. चित्रा	19. धनिष्ठा
संपत्तकर	2. आर्द्रा	11. स्वाति	20. शतभिषा
विपदकर	3. पुनर्वसु	12. विशाखा	21. पूर्वाभाद्रपद
क्षेत्रकर	4. पुष्य	13. अनुराधा	22. उत्तराभाद्रपद
प्रत्वर	5. आश्लेषा	14. ज्येष्ठा	23. रेवती
साधक	6. मघा	15. मूल	24. अश्विनी
नैश्वन	7. पूर्वा फा.	16. पूर्वाषाढ़	25. भरणी
मैत्र	8. उत्तरा फा.	17. उत्तराषाढ़	26. कृतिका
परममैत्र	9. हस्त	18. श्रवण	27. रोहिणी

आर्द्रा नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. आर्द्रा	10. स्वाति	19. शतभिषा
संपत्तकर	2. पुनर्वसु	11. विशाखा	20. पूर्वाभाद्रपद
विपदकर	3. पुष्य	12. अनुराधा	21. उत्तराभाद्रपद
क्षेमकर	4. आश्लेषा	13. ज्येष्ठा	22. रेवती
प्रत्वर	5. मघा	14. मूल	23. अश्विनी
साधक	6. पूर्वा फा.	15. पूर्वाषाढ़	24. भरणी
नैश्वन	7. उत्तरा फा.	16. उत्तराषाढ़	25. कृतिका
मैत्र	8. हस्त	17. श्रवण	26. रोहिणी
परममैत्र	9. चित्रा	18. धनिष्ठा	27. मृग

पुनर्वसु नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. पुनर्वसु	10. विशाखा	19. पूर्वाभाद्रपद
संपत्तकर	2. पुष्य	11. अनुराधा	20. उत्तराभाद्रपद
विपदकर	3. आश्लेषा	12. ज्येष्ठा	21. रेवती
क्षेमकर	4. मघा	13. मूल	22. अश्विनी
प्रत्वर	5. पूर्वा फा.	14. पूर्वाषाढ़	23. भरणी
साधक	6. उत्तरा फा.	15. उत्तराषाढ़	24. कृतिका
नैश्वन	7. हस्त	16. श्रवण	25. रोहिणी
मैत्र	8. चित्रा	17. धनिष्ठा	26. मृग
परममैत्र	9. स्वाति	18. शतभिषा	27. आर्द्रा

पुष्य नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. पुष्य	10. अनुराधा	19. उत्तराभाद्रपद
संपत्तकर	2. आश्लेषा	11. ज्येष्ठा	20. रेवती
विपदकर	3. मघा	12. मूल	21. अश्विनी
क्षेमकर	4. पूर्वा फा.	13. पूर्वाषाढ़	22. भरणी
प्रत्वर	5. उत्तरा फा.	14. उत्तराषाढ़	23. कृतिका
साधक	6. हस्त	15. श्रवण	24. रोहिणी
नैश्वन	7. चित्रा	16. धनिष्ठा	25. मृग
मैत्र	8. स्वाति	17. शतभिषा	26. आर्द्रा
परममैत्र	9. विशाखा	18. पूर्वाभाद्रपद	27. पुनर्वसु

आश्लेषा नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. आश्लेषा	10. ज्येष्ठा	19. रेवती
संपत्तकर	2. मघा	11. मूल	20. अश्विनी
विपदकर	3. पूर्वा फा.	12. पूर्वाषाढ़	21. भरणी
क्षेमकर	4. उत्तरा फा.	13. उत्तराषाढ़	22. कृतिका
प्रत्वर	5. हस्त	14. श्रवण	23. रोहिणी
साधक	6. चित्रा	15. धनिष्ठा	24. मृग
नैश्वन	7. स्वाति	16. शतभिषा	25. आर्द्रा
मैत्र	8. विशाखा	17. पूर्वाभाद्रपद	26. पुनर्वसु
परममैत्र	9. अनुराधा	18. उत्तराभाद्रपद	27. पुष्य

मघा नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. मघा	10. मूल	19. अश्विनी
संपत्तकर	2. पूर्वा फा.	11. पूर्वाषाढ़	20. भरणी
विपदकर	3. उत्तरा फा.	12. उत्तराषाढ़	21. कृतिका
क्षेमकर	4. हस्त	13. श्रवण	22. रोहिणी
प्रत्वर	5. चित्रा	14. धनिष्ठा	23. मृग
साधक	6. स्वाति	15. शतभिषा	24. आर्द्रा
नैश्वन	7. विशाखा	16. पूर्वाभाद्रपद	25. पुनर्वसु
मैत्र	8. अनुराधा	17. उत्तराभाद्रपद	26. पुष्य
परममैत्र	9. ज्येष्ठा	18. रेवती	27. आश्लेषा

पूर्वा फा. नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. पूर्वा फा.	10. पूर्वाषाढ़	19. भरणी
संपत्तकर	2. उत्तरा फा.	11. उत्तराषाढ़	20. कृतिका
विपदकर	3. हस्त	12. श्रवण	21. रोहिणी
क्षेमकर	4. चित्रा	13. धनिष्ठा	22. मृग
प्रत्वर	5. स्वाति	14. शतभिषा	23. आर्द्रा
साधक	6. विशाखा	15. पूर्वाभाद्रपद	24. पुनर्वसु
नैश्वन	7. अनुराधा	16. उत्तराभाद्रपद	25. पुष्य
मैत्र	8. ज्येष्ठा	17. रेवती	26. आश्लेषा
परममैत्र	9. मूल	18. अश्विनी	27. मघा

उत्तरा फा. नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. उत्तरा फा.	10. उत्तराषाढ़	19. कृतिका
संपत्तकर	2. हस्त	11. श्रवण	20. रोहिणी
विपदकर	3. चित्रा	12. धनिष्ठा	21. मृग
क्षेमकर	4. स्वाति	13. शतभिषा	22. आर्द्रा
प्रत्वर	5. विशाखा	14. पूर्वाभाद्रपद	23. पुनर्वसु
साधक	6. अनुराधा	15. उत्तराभाद्रपद	24. पुष्य
नैश्वन	7. ज्येष्ठा	16. रेवती	25. आश्लेषा
मैत्र	8. मूल	17. अश्विनी	26. मघा
परममैत्र	9. पूर्वाषाढ़	18. भरणी	27. पूर्वा

हस्त नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. हस्त	10. श्रवण	19. रोहिणी
संपत्तकर	2. चित्रा	11. धनिष्ठा	20. मृग
विपदकर	3. स्वाति	12. शतभिषा	21. आर्द्रा
क्षेमकर	4. विशाखा	13. पूर्वाभाद्रपद	22. पुनर्वसु
प्रत्वर	5. अनुराधा	14. उत्तराभाद्रपद	23. पुष्य
साधक	6. ज्येष्ठा	15. रेवती	24. आश्लेषा
नैश्वन	7. मूल	16. अश्विनी	25. मघा
मैत्र	8. पूर्वाषाढ़	17. भरणी	26. पूर्वा फा.
परममैत्र	9. उत्तराषाढ़	18. कृतिका	27. उत्तरा फा.

चित्रा नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. चित्रा	10. धनिष्ठा	19. मृग
संपत्तकर	2. स्वाति	11. शतभिषा	20. आर्द्रा
विपदकर	3. विशाखा	12. पूर्वाभाद्रपद	21. पुनर्वसु
क्षेमकर	4. अनुराधा	13. उत्तराभाद्रपद	22. पुष्य
प्रत्वर	5. ज्येष्ठा	14. रेवती	23. आश्लेषा
साधक	6. मूल	15. अश्विनी	24. मघा
नैश्वन	7. पूर्वाषाढ़	16. भरणी	25. पूर्वा फा.
मैत्र	8. उत्तराषाढ़	17. कृतिका	26. उत्तरा फा.
परममैत्र	9. श्रवण	18. रोहिणी	27. हस्त

स्वाति नक्षत्र

जन्म उत्पत्तिकर	1. स्वाति	10. शतभिषा	19. आर्द्रा
संपत्तकर	2. विशाखा	11. पूर्वाभाद्रपद	20. पुनर्वसु
विपदकर	3. अनुराधा	12. उत्तराभाद्रपद	21. पुष्य
क्षेमकर	4. ज्येष्ठा	13. रेवती	22. आश्लेषा
प्रत्वर	5. मूल	14. अश्विनी	23. मघा
साधक	6. पूर्वाषाढ़	15. भरणी	24. पूर्वा फा.
नैश्वन	7. उत्तराषाढ़	16. कृतिका	25. उत्तरा फा.
मैत्र	8. श्रवण	17. रोहिणी	26. हस्त
परममैत्र	9. धनिष्ठा	18. मृग	27. चित्रा

विशाखा नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. विशाखा	10. पूर्वाभाद्रपद	19. पुनर्वसु
संपत्तकर	2. अनुराधा	11. उत्तराभाद्रपद	20. पुष्य
विपदकर	3. ज्येष्ठा	12. रेवती	21. आश्लेषा
क्षेमकर	4. मूल	13. अश्विनी	22. मघा
प्रत्वर	5. पूर्वाषाढ़	14. भरणी	23. पूर्वा फा.
साधक	6. उत्तराषाढ़	15. कृतिका	24. उत्तरा फा.
नैश्वन	7. श्रवण	16. रोहिणी	25. हस्त
मैत्र	8. धनिष्ठा	17. मृग	26. चित्रा
परममैत्र	9. शतभिषा	18. आर्द्रा	27. स्वाति

अनुराधा नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. अनुराधा	10. उत्तराभाद्रपद	19. पुष्य
संपत्तकर	2. ज्येष्ठा	11. रेवती	20. आश्लेषा
विपदकर	3. मूल	12. अश्विनी	21. मघा
क्षेमकर	4. पूर्वाषाढ़	13. भरणी	22. पूर्वा फा.
प्रत्वर	5. उत्तराषाढ़	14. कृतिका	23. उत्तरा फा.
साधक	6. श्रवण	15. रोहिणी	24. हस्त
नैश्वन	7. धनिष्ठा	16. मृग	25. चित्रा
मैत्र	8. शतभिषा	17. आर्द्रा	26. स्वाति
परममैत्र	9. पूर्वाभाद्रपद	18. पुनर्वसु	27. विशाखा

ज्येष्ठा नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. ज्येष्ठा	10. रेवती	19. आश्लेषा
संपत्तकर	2. मूल	11. अश्विनी	20. मघा
विपदकर	3. पूर्वाषाढ़	12. भरणी	21. पूर्वा फा.
क्षेमकर	4. उत्तराषाढ़	13. कृतिका	22. उत्तरा फा.
प्रत्वर	5. श्रवण	14. रोहिणी	23. हस्त
साधक	6. धनिष्ठा	15. मृग	24. चित्रा
नैश्वन	7. शतभिषा	16. आर्द्रा	25. स्वाति
मैत्र	8. पूर्वाभाद्रपद	17. पुनर्वसु	26. विशाखा
परममैत्र	9. उत्तराभाद्रपद	18. पुष्य	27. अनुराधा

मूल नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. मूल	10. अश्विनी	19. मघा
संपत्तकर	2. पूर्वाषाढ़	11. भरणी	20. पूर्वा फा.
विपदकर	3. उत्तराषाढ़	12. कृतिका	21. उत्तरा फा.
क्षेमकर	4. श्रवण	13. रोहिणी	22. हस्त
प्रत्वर	5. धनिष्ठा	14. मृग	23. चित्रा
साधक	6. शतभिषा	15. आर्द्रा	24. स्वाति
नैश्वन	7. पूर्वाभाद्रपद	16. पुनर्वसु	25. विशाखा
मैत्र	8. उत्तराभाद्रपद	17. पुष्य	26. अनुराधा
परममैत्र	9. रेवती	18. आश्लेषा	27. ज्येष्ठा

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. पूर्वाषाढ़	10. भरणी	19. पूर्वा फा.
संपत्तकर	2. उत्तराषाढ़	11. कृतिका	20. उत्तरा फा.
विपदकर	3. श्रवण	12. रोहिणी	21. हस्त
क्षेमकर	4. धनिष्ठा	13. मृग	22. चित्रा
प्रत्वर	5. शतभिषा	14. आर्द्रा	23. स्वाति
साधक	6. पूर्वाभाद्रपद	15. पुनर्वसु	24. विशाखा
नैश्वन	7. उत्तराभाद्रपद	16. पुष्य	25. अनुराधा
मैत्र	8. रेवती	17. आश्लेषा	26. ज्येष्ठा
परममैत्र	9. अश्विनी	18. मघा	27. मूल

उत्तराषाढ़ नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. उत्तराषाढ़	10. कृतिका	19. उत्तरा फा.
संपत्तकर	2. श्रवण	11. रोहिणी	20. हस्त
विपदकर	3. धनिष्ठा	12. मृग	21. चित्रा
क्षेमकर	4. शतभिषा	13. आर्द्रा	22. स्वाति
प्रत्वर	5. पूर्वाभाद्रपद	14. पुनर्वसु	23. विशाखा
साधक	6. उत्तराभाद्रपदा	15. पुष्य	24. अनुराधा
नैश्वन	7. रेवती	16. आश्लेषा	25. ज्येष्ठा
मैत्र	8. अश्विनी	17. मघा	26. मूल
परममैत्र	9. भरणी	18. पूर्वा फा.	27. पूर्वाषाढ़

श्रवण नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. श्रवण	10. रोहिणी	19. हस्त
संपत्तकर	2. धनिष्ठा	11. मृग	20. चित्रा
विपदकर	3. शतभिषा	12. आर्द्रा	21. स्वाति
क्षेमकर	4. पूर्वाभाद्रपद	13. पुनर्वसु	22. विशाखा
प्रत्वर	5. उत्तराभाद्रपद	14. पुष्य	23. अनुराधा
साधक	6. रेवती	15. आश्लेषा	24. ज्येष्ठा
नैश्वन	7. अश्विनी	16. मघा	25. मूल
मैत्र	8. भरणी	17. पूर्वा फा.	26. पूर्वाषाढ़
परममैत्र	9. कृतिका	18. उत्तरा फा.	27. उत्तराषाढ़

धनिष्ठा नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. धनिष्ठा	10. मृग	19. चित्रा
संपत्तकर	2. शतभिषा	11. आर्द्रा	20. स्वाति
विपदकर	3. पूर्वाभाद्रपद	12. पुनर्वसु	21. विशाखा
क्षेमकर	4. उत्तराभाद्रपद	13. पुष्य	22. अनुराधा
प्रत्वर	5. रेवती	14. आश्लेषा	23. ज्येष्ठा
साधक	6. अश्विनी	15. मघा	24. मूल
नैश्वन	7. भरणी	16. पूर्वा फा.	25. पूर्वाषाढ़
मैत्र	8. कृतिका	17. उत्तरा फा.	26. उत्तराषाढ़
परममैत्र	9. रोहिणी	18. हस्त	27. श्रवण

शतभिषा नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. शतभिषा	10. आर्द्रा	19. स्वाति
संपत्तकर	2. पूर्वाभाद्रपद	11. पुनर्वसु	20. विशाखा
विपदकर	3. उत्तराभाद्रपद	12. पुष्य	21. अनुराधा
क्षेमकर	4. रेवती	13. आश्लेषा	22. ज्येष्ठा
प्रत्वर	5. अश्विनी	14. मघा	23. मूल
साधक	6. भरणी	15. पूर्वा फा.	24. पूर्वाषाढ़
नैश्वन	7. कृतिका	16. उत्तरा फा.	25. उत्तराषाढ़
मैत्र	8. रोहिणी	17. हस्त	26. श्रवण
परममैत्र	9. मृग	18. चित्रा	27. धनिष्ठा

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र

जन्म-उत्पत्तिकर	1. पूर्वाभाद्रपद	10. पुनर्वसु	19. विशाखा
संपत्तकर	2. उत्तराभाद्रपद	11. पुष्य	20. अनुराधा
विपदकर	3. रेवती	12. आश्लेषा	21. ज्येष्ठा
क्षेमकर	4. अश्विनी	13. मघा	22. मूल
प्रत्वर	5. भरणी	14. पूर्वा फा.	23. पूर्वाषाढ़
साधक	6. कृतिका	15. उत्तरा फा.	24. उत्तराषाढ़
नैश्वन	7. रोहिणी	16. हस्त	25. श्रवण
मैत्र	8. मृग	17. चित्रा	26. धनिष्ठा
परममैत्र	9. आर्द्रा	18. स्वाति	27. शतभिषा

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र

जन्म-उत्पतिकर	1. उत्तराभाद्रपद	10. पुष्य	19. अनुराधा
संपत्तकर	2. रेवती	11. आश्लेषा	20. ज्येष्ठा
विपदकर	3. अश्विनी	12. मघा	21. मूल
क्षेमकर	4. भरणी	13. पूर्वा फा.	22. पूर्वाषाढ़
प्रत्वर	5. कृतिका	14. उत्तरा फा.	23. उत्तराषाढ़
साधक	6. रोहिणी	15. हस्त	24. श्रवण
नैश्वन	7. मृग	16. चित्रा	25. धनिष्ठा
मैत्र	8. आर्द्रा	17. स्वाति	26. शतभिषा
परममैत्र	9. पुनर्वसु	18. विशाखा	27. पूर्वाभाद्रपद

रेवती नक्षत्र

जन्म–उत्पत्तिकर	1. रेवती	10. आश्लेषा	19. ज्येष्ठा
संपत्तकर	2. अश्विनी	11. मघा	20. मूल
विपदकर	3. भरणी	12. पूर्वा फ़ा.	21. पूर्वाषाढ़
क्षेमकर	4. कृतिका	13. उत्तरा फा.	22. उत्तराषाढ़
प्रत्वर	5. रोहिणी	14. हस्त	23. श्रवण
साधक	6. मृग	15. चित्रा	24. धनिष्ठा
नैश्वन	7. आर्द्रा	16. स्वाति	25. शतभिषा
मैत्र	8. पुनर्वसु	17. विशाखा	26. पूर्वाभाद्रपद
परममैत्र	9. पुष्य	18. अनुराधा	27. उत्तराभाद्रपद

❑❑

नक्षत्र, योग, करण

आकाशीय क्रांतिवृत्त 12 समान भागों में विभाजित है। इन बारह समान भागों को ही 'राशि' कहा जाता है। सौरमंडल का कार्य 9 ग्रहों द्वारा संचालित होता है। इसी क्रांतिवृत्त के राशि की तरह चंद्र भ्रमण के 27 समान हिस्से हैं। इन 27 हिस्सों को ही नक्षत्र कहते हैं।

पृथ्वी भी एक ग्रह है। नक्षत्र पृथ्वीमंडल से काफी दूरी पर हैं। स्कंद पुराण में आए संदर्भ के अनुसार इन नक्षत्रों की संख्या 80 समुद्र, 14 अरब, 20 करोड़ है। 1. मरीचि, 2. अरुंधती-वशिष्ठ, 3. अंगिरा, 4. अत्रि, 5. पुलस्त्य, 6. पुलह, 7. क्रतु को मिलाकर सप्तर्षि मंडल बना है। एक ध्रुवतारा भी है। चंद्र के भ्रमणानुसार 27 नक्षत्र हैं। ये नक्षत्र पश्चिम से पूरब की ओर क्रमश: स्थित हैं।

27 नक्षत्र

1. अश्विनी, 2. भरणी, 3. कृतिका, 4. रोहिणी, 5. मृगशिर, 6. आर्द्रा, 7. पुनर्वसु, 8. पुष्य, 9. आश्लेषा, 10. मघा, 11. पूर्वाफाल्गुनी, 12. उत्तराफाल्गुनी, 13. हस्त, 14. चित्रा, 15. स्वाति, 16. विशाखा, 17. अनुराधा, 18. ज्येष्ठा, 19. मूल, 20. पूर्वाषाढ़, 21. उत्तराषाढ़, 22. श्रवण, 23. धनिष्ठा, 24. शतभिषा, 25. पूर्वाभाद्रपद, 26. उत्तराभाद्रपद, 27. रेवती।

उपरोक्त 27 नक्षत्र क्रम से याद रखने चाहिए। 'अभिजित' नक्षत्र की गणना 27 नक्षत्रों में नहीं की जाती। इन सब नक्षत्रों के नाम एवं उनका आकार निश्चित किया गया है।

12 मासों की कल्पना

आमतौर पर प्रतिमास की पूर्णिमा को चंद्र क्रमश: अलग-अलग नक्षत्र में रहता है। इसी आधार पर 12 मासों के नाम भी निश्चित किए गए हैं।

चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठां, आषाढ़, श्रवण, भाद्रपद, अश्विनी, कृतिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, फाल्गुनी नक्षत्रों से मासों के नाम लिए गए हैं, जो क्रमश: इस प्रकार हैं—चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ एवं फाल्गुन।

नए संवत्सर के प्रारम्भ में चैत्र महीने में सूर्य मेष राशि में संक्रमण करता है।

क्रमश: बारह राशियों में से वैशाख में वृषभ, ज्येष्ठ में मिथुन, भाद्रपद में कन्या, अश्विन में तुला, कार्तिक में वृश्चिक, मार्गशीर्ष में धनु, पौष में मकर, माघ में कुंभ एवं फाल्गुन में मीन राशि। इस तरह सूर्य क्रम से बारह राशियों से अपना भ्रमण बारह महीनों में पूर्ण करता है।

जम्बूद्वीप-प्रज्ञाप्ति के अनुसार जब श्रावण मास की अमावस्या रहती है तब माघ मास की पूर्णिमा रहती है। जब माघ मास की पूर्णिमा रहती है तब श्रावण मास की अमावस्या होती है।

पंचांग में भी इसी पद्धति से अमावस्या का ब्योरा मिलता है। प्रौष्ठपदी भाद्रवी पूर्णिमा-फाल्गुनी अमावस्या, कार्तिकी पूर्णिमा-वैशाखी अमावस्या, मृगशीर्षी पूर्णिमा-ज्येष्ठ, मूली अमावस्या, पौष-पूर्णिमा आषाढ़ी-अमावस्या यही क्रम पूर्णिमा अमावस्या का रहता है।

नक्षत्र, चरण व आद्याक्षर

हर नक्षत्र में चार चरण होते हैं अर्थात 27 नक्षत्रों के कुल 108 चरणाक्षर या आद्याक्षर निम्नानुसार होते हैं:

नक्षत्र	आद्याक्षर	नक्षत्र	आद्याक्षर
अश्विनी	चू, चे, चो ला	स्वाति	रू, रे, रो, ता
भरणी	ली, लू, ले, लो	विशाखा	ती, तू, ते, तो
कृतिका	अ, इ, उ, ए	अनुराधा	ना, नी, नू, ने
रोहिणी	ओ, वा, वी, वू	ज्येष्ठा	नो, य, यी, यू
मृगशिरा	वे, वो, का, की	मूल	ये, यो, भा, भी
आर्द्रा	कु, घ, ड., छ	पूर्वाषाढ़	भू, धा, फा, ढा
पुनर्वसु	के, को, ह, ही	उत्तराषाढ़	भे, भो, जा, जी
पुष्य	ह, हे, हो, डा	श्रवण	खी, खू, खे, खो
आश्लेषा	डी, डू, डे, डो	धनिष्ठा	गा, गी, गू, गे
मघा	मा, मी, मू, मे	शतभिषा	गो, सा, सी, सू
पूर्वाफाल्गुनी	मो, टा, टी, टू	पूर्वाभाद्रपद	से, सो, दा दी
उत्तराफाल्गुनी	टे, टो, पा, पी	उत्तराभाद्रपद	दू, थ, झ, ण
हस्त	पू, ष, ण, ठ	रेवती	दे, दो, चा, ची
चित्रा	पे, पो, रा, री		

□□

नक्षत्र, आकार, तारासमूह, आकाश भाग, लिंग एवं देवता

नक्षत्र	आकार	तारासमूह	आकाश भाग	लिंग	देवता
अश्विनी	अश्वमुख	3	उत्तर	स्त्री	अश्विनीकुमार
भरणी	योनि	3	उत्तर	स्त्री	यम
कृतिका	क्षुर	6	मध्य	स्त्री	अग्नि
रोहिणी	गाड़ी	5	मध्य	स्त्री	ब्रह्मा
मृगशिरा	मृग	3	दक्षिण	नपुंसक	सोम
आर्द्रा	मणि	1	दक्षिण	स्त्री	रुद्र
पुनर्वसु	गृह	4	दक्षिण	पुरुष	आदित्य
पुष्य	वाण	3	मध्य	पुरुष	वृहस्पति
आश्लेषा	चक्र	5	मध्य	स्त्री	सर्प
मघा	भवन	5	उत्तर	स्त्री	पितृ
पूर्वाफाल्गुनी	मंच	2	उत्तर	स्त्री	भग
उत्तराफाल्गुनी	शय्या	2	उत्तर	स्त्री	अर्यमा
हस्त	हाथ	5	दक्षिण	पुरुष	सविता
चित्रा	मोती	1	मध्य	स्त्री	इंद्रविश्वकर्मा
स्वाति	मूंगा	1	उत्तर	स्त्री	वायु
विशाखा	तोरण	4	उत्तर	स्त्री	इंद्राग्नि
अनुराधा	तंदुल	4	दक्षिण	स्त्री	मित्र
ज्येष्ठा	कडल	3	दक्षिण	स्त्री	इन्द्र
मूल	सिंहपुच्छ	11	दक्षिण	स्त्री	नैर्ऋत
पूर्वाषाढ़	हस्तदन्त	2	दक्षिण	स्त्री	पापी
उत्तराषाढ़	मंच	2	दक्षिण	स्त्री	विश्वेदेवा
अभिजित	त्रिकोण	3	उत्तर	नपुंसक	ब्रह्म
श्रवण	वामन	3	मध्य	स्त्री	विष्णु
घनिष्ठा	मृदंग	4	मध्य	स्त्री	वसु
शतभिषा	वृत्त	100	मध्य	पुरुष	वरुण
पूर्वाभाद्रपद	मंच	2	उत्तर	पुरुष	अर्जेकपाद
उत्तराभाद्रपद	युगल	2	उत्तर	पुरुष	अहिर्बुधन्य
रेवती	माला	32	मध्य	स्त्री	पूषा

□□

नक्षत्र, तारा संख्या एवं गोत्र

नक्षत्र	तारा संख्या	गोत्र
अश्विनी	3	अश्वायन
भरणी	3	मार्गवेश
कृतिका	6	अग्निवेश
रोहिणी	5	गौतम
मृगशिरा	3	भारद्वाज
आर्द्रा	1	लौहित्य
पुनर्वसु	5	वशिष्ठ
पुष्य	3	अवमज्जायन
आश्लेषा	6	मंडव्यायन
मघा	7	पिडगायन
पूर्वाफाल्गुनी	2	गोवाल्लयन
उत्तराफाल्गुनी	2	काश्यप
हस्त	5	कौशिक
चित्रा	6	दर्थायन
स्वाति	1	चामनछायन
विशाखा	5	श्रृंगायन
अनुराधा	4	गोवत्याख्यान
ज्येष्ठा	3	तिगित्सायन
मूल	11	कात्यायन
पूर्वाषाढ़	4	वग्मियायन
उत्तराषाढ़	4	व्याघ्रपत्य
अभिजित	3	मौद्गलायन
श्रवण	3	संख्यायन
धनिष्ठा	5	अप्रभाव
शतभिषा	100	कर्णिलायन
पूर्वाभाद्रपद	2	जातुकर्ण
उत्तराभाद्रपद	2	धनंजय
रेवती	32	पुष्पायन

□□

कुल, उपकुल एवं कुलोपकुल नक्षत्र

कुलनक्षत्र: जो नक्षत्र मासों के नाम पर हों और मास की पूर्णिमा को आते हों उन्हें कुलनक्षत्र कहा जाता है। धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद, अश्विनी, कृतिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, मूल और उत्तराषाढ़ ये बारह कुलनक्षत्र माने जाते हैं।

उपकुल नक्षत्र: कुलनक्षत्र से अगला नक्षत्र जिस मास की पूर्णिमा को आता है उसे 'उपकुल नक्षत्र' कहते हैं। श्रवण, पूर्वाभाद्रपद, रेवती, भरणी, रोहिणी, पुनर्वसु, आश्लेषा, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, स्वाति, ज्येष्ठा और पूर्वाषाढ़ आदि बारह उपकुल नक्षत्र हैं।

कुलोपकुल नक्षत्र: उपकुल नक्षत्र के पीछे का नक्षत्र जिस मास की पूर्णिमा को आता है उसे कुलोपकुल नक्षत्र कहते हैं। अभिजित, शतभिषा, आर्द्रा, अनुराधा— ये चार नक्षत्र कुलोपकुल कहे जाते हैं।

नक्षत्र पुरुष

ज्योतिषशास्त्र के **बृहत् संहिता** ग्रंथ में नक्षत्र पुरुषों की कल्पना निम्नानुसार की गई है:

मूल : पैर। रोहिणी, अश्विनी : जांघें। पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़ : उरोज। उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाफाल्गुनी : गुह्य। कृतिका : कमर। उत्तराभाद्रपद, पूर्वाभाद्रपद : पार्श्व। रेवती : पेट। अनुराधा : छाती। धनिष्ठा : पीठ। विशाखा : बाहू। हस्त : हाथ। पुनर्वसु : उंगलियां। आश्लेषा : नाखून। ज्येष्ठा : गरदन। श्रवण : कान। पुष्य : मुंह। स्वाति : दांत। शतभिषा : हास्य। मघा : नाक। मृगशिरा : आंखें। चित्रा : कपोल व माथा। भरणी : सिर। आर्द्रा : बाल।

नक्षत्र विधि (कौन-सी विधि किस नक्षत्र में?)

नक्षत्रों की गति के अनुसार तीन-तीन नक्षत्रों के मध्य एक मार्ग की कल्पना है। कुछ महत्त्वपूर्ण विधियों के लिए जो नक्षत्र निश्चित किए गए हैं वे निम्नानुसार हैं:

स्वाति, भरणी, कृतिका: इन नक्षत्रों में नागविधि।

रोहिणी, मृग, आर्द्रा: इन नक्षत्रों में गजविधि।

पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा: इन नक्षत्रों में मृगविधि।

मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी: इन नक्षत्रों में बैल विधि।
अश्विनी, रेवती, पूर्वाभाद्रपद: इन नक्षत्रों में गो विधि।
श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा: इन नक्षत्रों में जरद्‌गद विधि।
अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल: इन नक्षत्रों में मृग विधि।
हस्त, विशाखा, चित्रा: इन नक्षत्रों में अजाविधि।
पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़: दहनविधि।

नक्षत्रों के चार प्रकार
(खोई वस्तु कब एवं किस दिशा में मिलेगी?)

1. अंध नेत्र, 2. मंद नेत्र, 3. मध्य नेत्र, 4. सुलोचन नेत्र—ये चार प्रकार के नक्षत्र हैं।

1. अंध नेत्र: रोहिणी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़, धनिष्ठा, रेवती—ये सात नक्षत्र 'अंधनेत्र' कहलाते हैं।

इनमें चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा में तुरंत मिलती है।

2. मंद नेत्र: मृगशिरा, आश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढ़, शतभिषा, अश्विनी—ये सात नक्षत्र 'मंद नेत्र नक्षत्र' कहलाते हैं।

इनमें चोरी हुई या गुम हुई वस्तु दक्षिण दिशा में मिलती है। नष्ट वस्तु स्वयं के मकान में ही रहती है। वह 3 दिनों में प्राप्त हो जाती है।

3. मध्य नेत्र: आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित, पूर्वाभाद्रपद, भरणी—ये सात 'नक्षत्र मध्यनेत्र नक्षत्र' कहलाते हैं।

इनमें चोरी हुई या गुम हुई वस्तु पश्चिम दिशा में मिलती है। नष्ट वस्तु घर के पास ही रहती है। 64 दिनों में प्राप्त हो जाती है।

4. सुलोचन नेत्र: पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाति, मूल, श्रवण, उत्तराभाद्रपद, कृतिका—ये सात नक्षत्र 'सुलोचन नक्षत्र' कहलाते हैं।

इनमें चोरी हुई या गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में बहुत दूर चली जाती है और वह मिलती नहीं।

इनके अतिरिक्त भी नक्षत्रों का वर्गीकरण है:

पंचक नक्षत्र: धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती—ये पांच नक्षत्र पंचक नक्षत्र कहलाते हैं।

इन नक्षत्रों में सभी शुभ कार्य वर्जित माने गए हैं। गृह प्रवेश, प्रवास, गृहारंभ, नारायण व नागबली, कालसर्प शांति आदि कार्य इन नक्षत्रों में करना त्याज्य है। इन नक्षत्रों में मृत्यु होने पर उस परिवार के लिए काफी अशुभ सिद्ध होता है। इन नक्षत्रों में मृत व्यक्तियों के अंतिम संस्कार करते समय 'पुतलविधि' करने का शास्त्रसम्मत विधान है।

मूल संज्ञक नक्षत्र: अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल एवं रेवती—ये छह नक्षत्र गंडात मूल संज्ञक नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों में जन्मे जातकों के लिए अनिष्टता रहती है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए 'मूल शांति' अपरिहार्य है। इन नक्षत्रों

में जन्मे जातक की आयु लंबी नहीं होती। यदि दीर्घायु हो तो भविष्य में भाग्यवान और धनवान बनते हैं।

ज्येष्ठा नक्षत्र की अंतिम दो घटी एवं मूल नक्षत्र की प्रारंभ की दो घटी कुछ जगहों में छह-छह घंटे अमुक्त मूल समझा जाता है। इस अमुक्त मूल में जन्मे बालक का उसकी आयु के आठवें वर्ष तक मुंह देखना भी पिता के लिए अनिष्टकारी सिद्ध होता है। इस अनिष्टता के निवारणार्थ शिवार्चन करना श्रेयस्कर रहता है।

अश्विनी नक्षत्र के पहले चरण में जन्मा जातक शुभ होता है जबकि द्वितीय चरण में जन्मा जातक पिता के लिए अनिष्टकारक रहता है। तृतीय एवं चतुर्थ चरणों में जातक का जन्म शुभ माना जाता है।

मघा नक्षत्र के पहले चरण में जन्मा जातक माता के लिए एवं द्वितीय चरण में जन्मा जातक पिता के लिए अनिष्टकारी होता है। किंतु तृतीय एवं चतुर्थ चरण का जन्म शुभ रहता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण का जन्म जातक के बड़े भाई के लिए, यदि लड़की का जन्म हो तो उसके पति के बड़े भाई (जेठ) के लिए, द्वितीय चरण में जन्म हो तो छोटे भाई के लिए एवं तृतीय चरण में जन्म में हो तो माता के लिए तथा चतुर्थ चरण में जन्म हो तो स्वयं जातक के लिए अनिष्ट रहता है।

मूल नक्षत्र के पहले चरण में जन्म हो तो पिता या श्वसुर के लिए घातक, दूसरे चरण में जन्म हो तो धनहानि होती है। किंतु मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण का जन्म शुभ फलदायी होता है।

रेवती नक्षत्र के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चरण का जन्म शुभ फलदायी होता है तथा चतुर्थ चरण का जन्म अशुभ एवं कष्टदायक रहता है।

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा नक्षत्रों में जन्म होने पर रजत पाद (चांदी का पाया) कहलाता है। चांदी का पाया शुभ व श्रेष्ठ फलदायी होता है।

ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में जन्म हो तो ताम्र पाद (तांबे का पाया) कहते हैं। तांबे का पाया भी श्रेष्ठ एवं शुभ माना जाता है।

रेवती, अश्विनी, भरणी, नक्षत्रों में जन्म हो तो स्वर्णपाद (सोने का पाया) कहते हैं। स्वर्णपाद मध्यम माना जाता है।

इनके अतिरिक्त अन्य नक्षत्रों में जन्म होने पर लोहपाद (लोहे का पाया) कहलाता है। लोहपाद अनिष्ट एवं धनहानि कारक होता है।

नक्षत्र की तरह चंद्र से भी पाया निश्चित किया जाता है:

- जन्मकुंडली में लग्न, षष्ठ या एकादश स्थान में चंद्र हो तो स्वर्णपाद।
- जन्मकुंडली में द्वितीय, पंचम या नवम स्थान में चंद्र हो तो रजतपाद।
- जन्मकुंडली में तृतीय, सप्तम या दशम में चंद्र हो तो ताम्रपाद।
- जन्मकुंडली में चतुर्थ, अष्टम या द्वादश स्थान में चंद्र हो तो लोहपाद।

❑❑

विविध उपयोगी मुहूर्त

भारतीय संस्कृति में सोलह (षोडश) संस्कार और कोई भी शुभ कार्य बिना मुहूर्त के संपन्न नहीं होते। आजकल विदेशों में भी मुहूर्तों के विषय में जिज्ञासा एवं जागृति बढ़ी है। प्राय: सभी मुहूर्त नक्षत्रों से ही संबंधित होते हैं। इसलिए भी इस जनोपयोगी पुस्तक में मुहूर्त प्रकरण का समावेश किया गया है अन्यथा यह पुस्तक अधूरी रह जाती।

सूतिका स्नान मुहूर्त

शुभ: रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, स्वाति, अश्विनी, अनुराधा—ये दस नक्षत्र एवं रविवार, मंगलवार एवं बृहस्पतिवार—ये तीन दिन सूतिका स्नान के लिए शुभ माने जाते हैं।

अशुभ: आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी, विशाखा, कृतिका, मूल और चित्रा—ये दस नक्षत्र एवं बुधवार, शनिवार—ये दो वार सूतिका स्नान के लिए अशुभ माने जाते हैं।

षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, चतुर्दशी, नवमी, चतुर्थी तिथियां भी सूतिका स्नान के लिए त्याज्य हैं।

व्यतिपात योग, वैधृति योग, भद्रा, क्षयतिथि, वृद्धि तिथि, क्षयमास, अधिक मास, कुलिक, अर्द्धयाम, महापातु, विष्कंभ, शूलयोग की पांच घटिकाएं अजु और अति अजु की छह घटियां एवं व्याघात योग की नौ घटियां सभी शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं।

स्तनपान मुहूर्त

अश्विनी, रोहिणी, पुष्य, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद, रेवती—इन तेरह नक्षत्रों में से किसी नक्षत्र के दिन सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार में से किसी भी दिन शुभ लग्न में स्तनपान कराना शुभ है।

जातक कर्म एवं नामकरण मुहूर्त

जन्मकाल में या तदोपरांत चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा, सूर्य संक्राति को छोड़कर सोमवार, बुधवार, शुक्रवार, जन्मकाल से ग्यारहवें या

बारहवें दिन मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषा नक्षत्रों में से किसी भी नक्षत्र के दिन जातक कर्म एवं नामकरण करना शुभ है। जैनधर्मी जन्म से 45 दिनों तक उपरोक्त नक्षत्र, दिनों में जातकर्म एवं नामकरण करें।

झूले में शयन का मुहूर्त

रेवती, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार में से किसी भी शुभ दिन को बालक को झूले में शयन कराना श्रेयस्कर है।

भूम्युपवेशन (शिशु को भूमि पर बैठाना) मुहूर्त

रोहिणी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ एवं उत्तराभाद्रपद—इन दस नक्षत्रों में से चतुर्थी, नवमी एवं चतुर्दशी को छोड़कर शेष किसी भी तिथि में सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार या शुक्रवार के दिन शिशु को भूमि पर बैठाना शुभ होता है।

शिशु को प्रथम बार बाहर ले जाने का मुहूर्त

अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा एवं रेवती नक्षत्रों में से किसी भी नक्षत्र को द्वितीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी एवं त्रयोदशी में से किसी एक तिथि एवं सोमवार, बुधवार, शुक्रवार, रविवार इनमें से किसी दिन को शिशु को जन्म के बाद प्रथम बार घर से बाहर ले जाना श्रेयस्कर है।

अन्नप्राशन मुहूर्त

रोहिणी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़, उत्तराफाल्गुनी, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, पुष्य, अश्विनी, अभिजित, पुनर्वसु, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा एवं मृगशिरा नक्षत्रों में से किसी नक्षत्र में सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार में से किसी भी दिन को 2, 3, 5, 7, 10, 13, 15 तिथियों में से किसी भी तिथि को और वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुंभ में से किसी भी लग्न में बालक को अन्नप्राशन करवाना श्रेयस्कर है।

कर्णछेदन मुहूर्त

श्रवण धनिष्ठा, पुनर्वसु, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित नक्षत्रों में से किसी भी नक्षत्र में, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार में से किसी भी शुभ दिन को 1, 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13, 14 तिथियों में से किसी भी तिथि को बालक का कर्णछेदन करना श्रेयस्कर रहता है। चैत्र, पौष, आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक जन्म-मास, रिक्त तिथि, समवर्ष छोड़कर जन्म से छठे, सातवें, आठवें महीने में या बारहवें, सोलहवें दिन कर्णछेदन कराना शुभ माना जाता है।

चूड़ाकर्म (मुण्डन) मुहूर्त

जन्म से तीसरे, पांचवें, सातवें एवं विषम वर्षों में अष्टमी, द्वादशी, चतुर्थी, प्रतिपदा, षष्ठी, अमावस्या, पूर्णिमा, सूर्य संक्राति को छोड़कर अन्य तिथियों में से किसी भी तिथि को तथा सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार इन वारों में से एक दिन को, लग्न अथवा जन्म राशि से आठवीं राशि छोड़कर ज्येष्ठा, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, अश्विनी एवं पुष्य नक्षत्रों में मुंडन करवाना शुभ है।

अक्षरारंभ

जन्म से पांचवें वर्ष में, एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितीया, षष्ठी, श्रवण, स्वाति, रेवती, पुनर्वसु, आर्द्रा, चित्रा एवं अनुराधा में से किसी भी नक्षत्र को सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार में से किसी भी शुभ दिन को, मेष, मकर, तुला और कर्क लग्नों को छोड़कर अन्य लग्नों में शिशु जातक का अक्षरारंभ कराना शुभ माना जाता है।

विद्यारंभ मुहूर्त

मृगशिरा, आद्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, मूल, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाषाढ़, पूर्वाफाल्गुनी, पुष्य, आश्लेषा नक्षत्रों में से किसी भी नक्षत्र में रविवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार में से किसी दिन को, षष्ठी, पंचमी, तृतीया, एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितीया में से किसी तिथि को एवं लग्न के नौवें, पांचवें, पहले, चौथे, सातवें एवं दसवें स्थान में शुभ ग्रहों के रहने पर विद्यारंभ कराना शुभ है।

कन्या का सगाई (वाग्दान) मुहूर्त

उत्तराषाढ़, स्वाति, श्रवण, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाषाढ़, पूर्वाफाल्गुनी, अनुराधा, धनिष्ठा, कृतिका, रोहिणी, रेवती, मृगशिरा, मूल, हस्त, उत्तराफाल्गुनी एवं उत्तराभाद्रपद में से किसी भी नक्षत्र में सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार में से किसी दिन को वाग्दान करना शुभ रहता है।

विवाह मुहूर्त

मूल, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, हस्त, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, स्वाति, चित्रा, रोहिणी में से किसी भी नक्षत्र में, ज्येष्ठा, फाल्गुन, वैशाख, मार्गशीर्ष, आषाढ़ में से किसी भी महीने में विवाह करना शुभ होता है।

विवाह मुहूर्त में कन्या के लिए बृहस्पति का, लड़के लिए सूर्य बल का एवं दोनों के लिए चंद्र बल का विचार अवश्य करना चाहिए। पंचांगों में विवाह के शुभ मुहूर्त छापे जाते हैं। उनमें शुभसूचक खड़ी रेखाएं एवं अशुभ सूचक आड़ी रेखाएं होती हैं। सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त दस रेखाओं का, सात-आठ रेखाओं का मध्यम तथा पांच

रेखाओं का जघन्य होता है। कम-से-कम रेखाओं के मुहूर्त को निंद्य मुहूर्त कहते हैं। विवाह के मुहूर्त में तुला, मिथुन, कन्या, वृषभ, धनु लग्न शुभ माने गए हैं।

वधू प्रवेश मुहूर्त

विवाह के दिन से 16 दिनों के भीतर पांचवें, सातवें एवं नौवें दिनों में वधू प्रवेश शुभ रहता है। किसी कारणवश 16 दिनों के भीतर वधू प्रवेश न हो सके तो विषम मास, विषम दिन और विषम वर्ष में वधू का प्रवेश करें।

उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी एवं उत्तराषाढ़, अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा और स्वाति में से किसी भी नक्षत्र के दिन एवं 4, 9, 14 तिथियों छोड़ तथा रविवार, मंगलवार, बुधवार को छोड़कर शेष वारों में वधू प्रवेश करना शुभ होता है।

गौना (द्विरागमन) मुहूर्त

1, 3, 5, 7 वर्षों में कुंभ, वृश्चिक या मेष राशि के सूर्य में, बृहस्पति, शुक्र, सोमवार में, मिथुन, मीन, कन्या, तुला, वृषभ, राशियों में और अश्विनी, पुष्य, हस्त, उत्तराषाढ़, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाति, मूल, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा आदि समूह नक्षत्रों में द्विरागमन शुभ माना जाता है।

यात्रा प्रवास मुहूर्त

यात्रा या प्रवास सुखद हो इसलिए मुहूर्त देखना आवश्यक है:

उत्तमः अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्र यात्रा के लिए उत्तम हैं।

मध्यमः रोहिणी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा नक्षत्र यात्रा के लिए मध्यम हैं।

निंद्यः भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति, विशाखा नक्षत्र यात्रा के लिए निंद्य हैं।

अधिकांश पंचांगों में गोरक्ष मत के अनुसार गमन मुहूर्त एवं उसका परिणाम, दिशा, प्रहर, आदि की जानकारी देनेवाली तालिका छापी जाती है। इस का उपयोग करने से नक्षत्रादि का विचार करना नहीं पड़ता। यह गोरक्ष-गमन मुहूर्त तालिका शत-प्रतिशत सही परिणाम दर्शाती है। अगले पृष्ठ पर वह तालिका संलग्न है।

वारशूल और नक्षत्रशूल

ज्येष्ठा नक्षत्र : सोमवार

पूर्वाभाद्रपद : बृहस्पतिवार

रोहिणी : मंगलवार

उत्तराफाल्गुनी : बुधवार

उपरोक्त नक्षत्र-वारों में प्रवास करना अहितकर रहता है।

गोरक्ष गमन मुहूर्त तालिका

पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	अग्रहायण	मासों की तिथियों का फल	1 प्रहर	2 प्रहर	3 प्रहर	4 प्रहर	पूर्व	द.	पश्चिम	उत्तर
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	बहुत सुख और अर्थ पूर्ण हो, कष्ट न हो।	अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	कष्ट	भय	द्रव्य-लाभ
2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	महाभय और जीव-नाश हो, पछतावा हो।	भय	कष्ट	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्रय	समता
3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	कामना सिद्ध हो, अर्थ पूर्ण हो।	लाभ	सुख	सुख	हानि	कष्ट	सुख	इष्टलाभ	धन-प्राप्ति
4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	कष्ट व जीव-नाश हो, कुशल से घर न आए।	कष्ट	शुभ	कष्ट	विनाश	लाभ	सुख	मंगल	वित्त-लाभ
5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	वस्तु-लाभ हो, व्याधि व संकट मिटे, मित्र मिले।	संकट	कष्ट	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धन	सुख
6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	घर की चिन्ता, मित्र-संकट हो, कदाचित घर आए।	संकट	कष्ट	भय	अर्थ	भय	लाभ	मृत्यु	अर्थागम
7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	भाग्योदय, मित्र और साधनों की प्राप्ति हो, रत्नादि सहित घर आए।	विनाश	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यलाभ	सुख
8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	बहुत बुरा हो, लेन-देन नहीं करना, जीव-नाश हो।	लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	कार्यसिद्धि	कष्ट
9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	कामना सिद्ध हो, आशा पूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो।	लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	कार्यसिद्धि	कष्ट
10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगें, किन्तु कुशल से घर आए।	लाभ	सम्पूर्ण	मरण	कुशल	कष्ट	कष्ट	अर्थ	धन-प्राप्ति
11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	कष्ट हो, किन्तु जीव-नाश नहीं, सौभाग्य पाए नहीं।	मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्रव्यलाभ	शून्य
12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	मार्ग में सिद्धि, मित्र मिले, विघ्न मिटे, धन-लाभ हो।	मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिकष्ट

चंद्रवासविकारः मेष, सिंह, धनु राशि का चंद्र-पूर्व दिशा, वृषभ, कन्या, मकर राशि का चंद्र-दक्षिण दिशा, तुला, मिथुन, कुंभ राशि का चंद्र पश्चिम दिशा, कर्क, वृश्चिक, शनि का चंद्र-उत्तर दिशा।

इस तरह चंद्र का वास दिशाओं में रहता है। चंद्रवास की दिशा में प्रवास लाभदायक रहता है।

गृहारंभ मुहूर्त

नक्षत्रः मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़, धनिष्ठा, शतभिषा, चित्रा, हस्त, स्वाति, रोहिणी, रेवती।

वारः सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार।

मासः वैशाख, श्रावण, माघ, पौष, फाल्गुन।

लग्नः वृषभ, मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, कुंभ, मीन।

शुभग्रहः गृहारंभ के समय 8 एवं 12 स्थानों में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए। लग्न से 1, 4, 5, 7, 9, 10, स्थानों में शुभ ग्रह एवं 3, 4, 11 स्थानों में पापग्रह शुभ होते हैं।

नूतन गृह प्रवेश का मुहूर्त

नक्षत्रः उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती।

वारः सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार।

तिथिः 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13

लग्नः वृषभ, सिंह, वृश्चिक, कुंभ लग्न उत्तम हैं जबकि मिथुन, कन्या, धनु, मीन लग्न मध्यम हैं।

पुराने किराए के मकान में प्रवेश का मुहूर्त

नक्षत्रः शतभिषा, पुष्य, स्वाति, धनिष्ठा, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़, उत्तराफाल्गुनी, रोहिणी।

वारः सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार।

तिथिः 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13

मासः कार्तिक मार्गशीर्ष, श्रावण, फाल्गुन, वैशाख एवं ज्येष्ठ मास।

कुआं खुदवाना या हैडपंप लगाने का मुहूर्त

नक्षत्रः हस्त, अनुराधा, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, धनिष्ठा, शतभिषा, मघा, रोहिणी, पुष्य, मृगशिरा, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र कुआं खुदवाने या हैडपंप लगाने के लिए शुभ हैं।

वारः बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार।

तिथिः 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13, 15

दुकान प्रारंभ करने का मुहूर्त

नक्षत्र: रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, हस्त, पुष्य, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, अश्विनी।

वार: सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार।

तिथि: 4, 9, 14—ये रिक्त तिथियां एवं अमावस्या छोड़कर बाकी सभी तिथियां।

थोक व्यापार हेतु मुहूर्त

नक्षत्र: हस्त, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़, चित्रा।

वार: बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार।

तिथि: 2, 3, 5, 7, 11, 13

नौकरी करने का मुहूर्त

नक्षत्र: हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य।

वार: रविवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार।

तिथि: 2, 3, 5, 7, 11, 13

मुकदमा दायर करने हेतु मुहूर्त

नक्षत्र: ज्येष्ठा, आर्द्रा, भरणी, पूर्वाषाढ़, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी, मूल, आश्लेषा, मघा।

वार:रविवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार।

तिथि: 1, 5, 8, 10, 13, 15

औषधि बनाने हेतु मुहूर्त

नक्षत्र: हस्त, अश्विनी, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मूल, पुनर्वसु, स्वाति, मृगशिरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा।

वार: रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार।

मंदिर निर्माण मुहूर्त

मास: माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष।

नक्षत्र: पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, मृगशिरा, श्रवण, अश्विनी, चित्रा, पुनर्वसु, विशाखा, आर्द्रा, हस्त, धनिष्ठा, रोहिणी।

वार: रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार।

तिथि: 2, 3, 5, 7, 11, 13

प्रतिमा निर्माण मुहूर्त

नक्षत्र: पुष्य, रोहिणी, श्रवण, चित्रा, धनिष्ठा, आर्द्रा, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, हस्त, मृगशिरा, रेवती, अनुराधा।

वार: सोमवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार।

तिथि: 2, 3, 5, 7, 11 एवं 13

प्रतिष्ठा मुहूर्त

नक्षत्रः अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, रेवती।

वारः सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार।

तिथिः शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी और पूर्णिमा एवं कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया और पंचमी तिथियां।

मंत्र सिद्धि हेतु मुहूर्त

नक्षत्रः उत्तराफाल्गुनी, हस्त, अश्विनी, श्रवण, विशाखा, मृगशिरा।

वारः रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार।

तिथिः 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13

सर्वारंभ मुहूर्त

सभी कार्यों का आरंभ करने के लिए जन्मकुंडली के लग्न से बारहवां और आठवां स्थान शुद्ध होना चाहिए। इन दो स्थानों में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए। जन्मराशि से तीसरा, छठा, दसवां, ग्यारहवां लग्न हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा शुभ ग्रह युक्त हो, चंद्रमा जन्मलग्न या जन्मराशि से तीसरे, छठे, दसवें या ग्यारहवें स्थान में होने पर कोई भी कार्य प्रारंभ किया जाना शुभ रहता है।

सर्वार्थ सिद्धि योग

नीचे दिए वारों को उनके आगे लिखे नक्षत्र होने पर सर्वार्थ सिद्धि योग बनता है। कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य करने के लिए यह योग शुभ रहता है।

वार	नक्षत्र
रविवार	हस्त, मूल, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, पुष्य, अश्विनी।
सोमवार	श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा।
मंगलवार	अश्विनी, उत्तराभाद्रपद, कृतिका, आश्लेषा।
बुधवार	रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृतिका, मृगशिरा।
बृहस्पतिवार	रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य।
शुक्रवार	रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण।
शनिवार	श्रवण, रोहिणी, स्वाति।

वस्तु विक्रय हेतु मुहूर्त

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाषाढ़, विशाखा, कृतिका, आश्लेषा, भरणी, नक्षत्रों में कुंभ लग्न को छोड़कर किसी भी लग्न के 1, 4, 5, 7, 9, 10, के स्थान में शुभ ग्रह हो, 3, 6, 11 स्थान में अशुभ ग्रह हो, ऐसे लग्न में 1, 2, 5, 10, 11 एवं कृष्ण पक्ष की 1, 2, 5 तिथियों को वस्तु विक्रम करना श्रेयस्कर है।

वस्तु क्रय हेतु मुहूर्त

चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभिजित नक्षत्रों में 4, 9, 14 तिथियों को मंगलवार एवं कुंभ लग्न को छोड़कर अन्य तिथि, दिन व लग्नों में चंद्रमा और शुक्र लग्न में हो एवं 8, 12 स्थानों से पापग्रह न हो एवं 2, 10, 11 स्थानों में शुभ ग्रह हो तो वस्तु बेचना या खरीदना दोनों शुभ है।

कालसर्प शांति हेतु मुहूर्त

अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों में से किसी भी दिन कालसर्प योग शांतिविधि के लिए शुभ मुहूर्त है।

नारायण नागबलि हेतु मुहूर्त

धनिष्ठा पंचमः धनिष्ठा नक्षत्र के अंतिम दो चरण, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद एवं रेवती मिलकर 'धनिष्ठा पंचक' बनता है। कृतिका, पुनर्वसु, उत्तरा, विशाखा, उत्तराषाढ़ एवं पूर्वाभाद्रपद त्रिपाद नक्षत्र कहलाते हैं।

नारायण नागबलि विधि के लिए धनिष्ठा पंचक एवं त्रिपाद नक्षत्र छोड़कर हस्त, पुष्य, आश्लेषा, मृग, आर्द्रा, स्वाति, मूल में से किसी नक्षत्र पर नारायण नागबली विधि करवाना प्रशस्त रहता है। संतान प्राप्ति के लिए दोनों पक्षों की पंचमी एवं एकादशी तिथियां एवं श्रवण नक्षत्र श्रेयस्कर हैं। रविवार, सोमवार, बृहस्पतिवार इस विधि के लिए शुभ हैं। केवल नागबली विधि करनी हो तो आश्लेषा नक्षत्र एवं पंचमी, नवमी, पूर्णिमा श्रेयस्कर है।

नवीन वस्त्र परिधान हेतु मुहूर्त

हस्त, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, स्वाति, अश्विनी, उत्तराषाढ़, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती नक्षत्र एवं रिक्ता तिथि छोड़कर अन्य तिथियों तथा नक्षत्रों में सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार नए वस्त्र परिधान के लिए शुभ हैं।

शल्य क्रिया (ऑपरेशन) हेतु मुहूर्त

मेष, कर्क, तुला, मकर, वृषभ, सिंह, कुंभ लग्न शल्य क्रिया के लिए शुभ हैं। शल्य क्रिया के समय सूर्य, मंगल एवं बृहस्पति केंद्र स्थान में हो, चंद्र बलवान एवं शुभ स्थान में हो। इष्टकालीन लग्नेश शुभ स्थान में होकर उसकी दृष्टि लग्न पर हो। चंद्र-मंगल में शुभ योग हो। सूर्य एवं चंद्र, सूर्य एवं लग्नेश का भी शुभ योग हो। अष्टम एवं षष्ठ स्थान में लग्नेश, सूर्य एवं चंद्र न हो। जिसका ऑपरेशन करना हो उस लग्न से ऑपरेशन का लग्न अष्टम न हो। शरीर के जिस अंग का ऑपरेशन करवाना हो उस हिस्से को जन्मकुंडली में दर्शाया जाना हो, उस हिस्से में चंद्र या पापग्रह नहीं हो। ऑपरेशन दिन में ही करवाना चाहिए।

□□

अश्विनी (1) और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर मंगल की दृष्टि हो तो ऐसा व्यक्ति क्रूर स्वभाव का होता है। उसकी आंखें बड़ी एवं लाल होती हैं। सूर्य पर बुध की दृष्टि हो तो ऐसा जातक अपना जीवन आराम से बिताता है। उसका व्यक्तित्व भी प्रशंसनीय रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो वह सत्तासुख भोगता है। शुक्र की दृष्टि हो तो वह अति भोगविलास में मग्न रहता है। यदि शनि की दृष्टि हो तो ऐसा व्यक्ति दरिद्र रहता है।

सूर्य प्रथम चरण में स्थित हो तो जातक की आयु लंबी रहती है। वह मधुरभाषी, संतान द्वारा विशेष सुख एवं आनंद प्राप्त करनेवाला होता है। उसे पित्तवातादि रोगों का कष्ट रहता है।

द्वितीय चरण में स्थित हो तो जातक की हालत अच्छी नहीं होती। अपनी आयु के आठवें साल तक उसे कई मुसीबतों से जूझना पड़ता है। वैसे देखा जाए तो अश्विनी नक्षत्र में सूर्य अच्छा फल प्रदान करता है किंतु यदि द्वितीय चरण में हो तो उसका अच्छा प्रभाव जातक के ऊपर दिखाई नहीं देता। ऐसे जातक को भूत-प्रेत बाधा का कष्ट रहता है। किसी के द्वारा प्रदत्त शाप के कारण भी कष्ट सहने पड़ते हैं। यह स्थिति उसे उच्च स्थान से नीचे खींचने में समर्थ रहती है। खाते-पीते व्यक्ति के जीवन में अचानक उतार आना शुरू होता है। भीख मांगने तक की नौबत आ जाती है। अपना घर-बार और देश का भी त्याग करना पड़ता है। सूर्य के साथ चंद्र भी हो तो दरिद्रता में जीवन बिताना पड़ता है। मंगल की दृष्टि होने पर अच्छे परिणाम दिखाई देते हैं।

तृतीय चरण में स्थित होने पर जातक धनवान एवं संपन्न रहता है। किंतु उसकी आयु लंबी नहीं होती। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। कई बार हिंसक एवं नीच आचरण उससे होता है।

चतुर्थ चरण में होने पर व्यक्ति प्रख्यात, चालाक, धनवान एवं अपने समाज का अगुवा होता है। वह सेनां कमांडर या नेता होता है। राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करता है। धार्मिक वृत्ति उसमें निहित रहती है। हृदय निर्मल रहता है। अपनी जिम्मेदारियों को वह समय पर और अच्छी तरह निभाता है। प्रवास अधिक करना होता है। जीवन के उत्तरार्ध में भाग्योदय होता है। सूर्य अश्विनी नक्षत्र के दस या ग्यारह अंशों में होने पर यह अधिक फल देता है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक दयालु, किंतु कठोर स्वभावी होता है। मंगल की दृष्टि होने पर वह समाज के किसी विशिष्ट विभाग के अधीन रहता है। बुध की दृष्टि होने पर धन, यश एवं सभी प्रकार के भौतिक सुख उसे प्राप्त होते हैं। बृहस्पति की दृष्टि होने पर जातक स्वयं विद्वान और दूसरों को ज्ञान देनेवाला होता है। शुक्र की दृष्टि होने पर स्वयं धनी होकर उच्च श्रेणी की महिलाओं के संपर्क में रहता है। शनि की दृष्टि होने पर स्वास्थ्य कमजोर रहता है। गरीबों एवं अपने रिश्तेदारों के साथ उसका बुरा व्यवहार रहता है। संतान के विषय में भी वह अभागा रहता है।

प्रथम चरण में चंद्र स्थित हो तो जातक का व्यक्तित्व दूसरों को चकाचौंध करनेवाला होता है। वह उच्चाधिकार प्राप्त होता है और ऊंचे लोगों का सलाहकार बनता है। सरकारी क्षेत्र में उच्च पद पर कार्यरत रहता है। जन्मकुंडली का लग्न भी इसी नक्षत्र का हो एवं उस पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो उस व्यक्ति की आयु 82 वर्ष से अधिक रहती है। रक्त विकार एवं फोड़े-फुंसियों से वह पीड़ित रहता है।

कुशल कर्मचारी होते हुए भी वह अपने सहकारियों एवं अधीनस्थ कर्मचारियों द्वारा सराहा नहीं जाता। बृहस्पति की दृष्टि होने पर समाज में उच्च पद प्राप्त करता है और सैकड़ों लोग उसके अधीन कार्य करते हैं।

द्वितीय चरण में हो तो जातक लंबा, चालाक, चतुर, मदिरापान एवं मिर्च-मसालेदार चीजों का शौकीन रहता है। स्त्रियों से कष्ट भुगतने पड़ते हैं और कुछ समय गरीबी में गुजारना पड़ता है। कुछ उपाय करने पर परिस्थिति में सुधार आता है। ऐसा जातक खुदगर्ज किंतु महत्त्वाकांक्षी होता है। मंगल या राहु का चंद्र से विरोध का योग बनता हो तो 30वें वर्ष के आसपास पत्नी का असमय वियोग होता है। चंद्र पर शुक्र की दृष्टि हो तो वह व्यक्ति भाग्यवान होता है, अपने पुत्रों के साथ जीवन व्यतीत करता है। शनि की दृष्टि होने पर ईर्ष्यालु, अप्रसन्न एवं संघर्षमय स्थिति में रहता है।

तृतीय चरण में हो तो जातक वैज्ञानिक शिक्षा पाता है। धार्मिक उपदेशक या पंडित भी बन सकता है। वह स्वयं कार्यमग्न रहता है एवं अपने संपर्क में आनेवालों का भला करता है। वह अच्छा मित्र साबित होता है। मंगल की दृष्टि होने पर फोड़े-फुंसियों, दांत एवं कर्ण रोग से पीड़ित रहता है।

चतुर्थ चरण में होने पर जातक उच्च शिक्षित एवं ज्ञानी होता है। इस चंद्र के साथ सूर्य का न होना अच्छा माना जाता है। विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा की अनेक शाखाओं में वह दक्ष रहता है। अपने पुरुषार्थ एवं परिश्रम से उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। कार्य क्षेत्र में अधिक तत्पर एवं सक्रिय रहता है। यदि चंद्र अश्विनी नक्षत्र के अंतिम अंश में हो तो ज़ातक डॉक्टर, इंजीनियर बनता है अथवा प्रशासनिक सेवा में उच्च पद पर कार्यरत रहता है।

प्राचीन ज्योतिषशास्त्र की मान्यता के अनुसार अश्विनी कुमार दीन-दुखियों तथा रोगियों की सेवा-सुश्रुषा करने में सहायक बनते हैं। आधुनिक युग में इस नक्षत्र में जन्मे लोग अच्छे डॉक्टर, वैद्य या हकीम रहते हैं। जन्मकुंडली का लग्न भी अश्विनी नक्षत्र के चौथे चरण में होने पर यह बात अनुभव में आती है। रुचि या शौक के तौर पर भी ये लोग दूसरों को दवाइयां देते हैं। अश्विनी नक्षत्र में जन्मे जातक के सिर पर जख्म का चिह्न रहता है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक माता-पिता का आदर करनेवाला, विनम्र एवं विद्वान होता है। चंद्र पर मंगल की दृष्टि हो तो परस्त्री में आसक्त रहता है। दूसरों के साथ क्रूर बर्ताव करनेवाला, समाज में अनुचित कार्य करनेवाला, चोर एवं जेबकतरा होता है। बुध की दृष्टि हो तो अपनी शेखी बघारनेवाला, कृत्रिम शान दिखानेवाला एवं चरित्रहीन स्त्रियों के बीच रहनेवाला होता है। बृहस्पति की दृष्टि होने पर जातक परिवार का मुखिया होता है। धन-संपत्ति एवं अधिकार युक्त होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो उसे अच्छा भोजन एवं अन्य भौतिक सुख प्राप्त नहीं होते। अन्य स्त्रियों के पीछे लगने से वह समाज एवं परिवार से बहिष्कृत होता है। इन मुश्किलों से बच निकलने पर वह अच्छा सामाजिक कार्यकर्ता बन सकता है। मंगल पर शनि की दृष्टि होने पर उसे मात पिता के स्नेह से वंचित रहना पड़ता है और वह परिवार से निष्कासित किया जाता है।

प्रथम चरण में मंगल होने पर जातक ठिगना होता है। अपने व्यवसाय में उसे आशातीत यश प्राप्त होता है और वह ऊंचे ओहदे पर कार्यरत रहता है। समाज में उसे आदर एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से ऐसा जातक भाग्यवान होता है। लोग उसे पितातुल्य स्नेह एवं आदर देते हैं। विज्ञान एवं गणित में वह ऊंची उपाधियां प्राप्त करता है। सेना या सामूहिक कार्यों में भी अच्छी प्रगति करता है।

द्वितीय चरण में मंगल होने पर जातक दीन-हीन अवस्था में गुजारा करता है। उसके संतान नहीं होती और परिवार भी छोटा ही रहता है। संतान या कम-से-कम एक पुत्र के लिए वह लालायित रहता है। आमतौर पर ऐसे जातक को एक या दो कन्याओं का सुख प्राप्त होता है। बदला लेने की भावना उसमें निहित रहती है किंतु आग एवं पानी से वह घबराता है। उसे अकस्मात दुर्घटना या ताप ज्वर हो सकता है। उसके चेहरे या माथे पर विशेष प्रकार का चिह्न पाया जाता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो ऐसे जातक के लिए घर छोड़कर अन्यत्र व्यापार करना फायदेमंद साबित होता है। ऐसे मंगल पर सूर्य की दृष्टि होने पर जातक स्वस्थ एवं धन-संपत्ति से युक्त सुखी वैवाहिक जीवन बिताता है। सूर्य अपनी नीच राशि से मंगल को देखता है किंतु नीचत्व के कारण ग्रहों का उच्च प्रभाव प्राप्त होता है। मंगल पर बृहस्पति या अन्य शुभग्रहों की दृष्टि होने पर जातक की मां का बचपन में ही स्वर्गवास हो जाता है। वह भोग-विलास एवं खाने-पीने में धन का अत्यधिक दुरुपयोग करता है।

मंगल चतुर्थ चरण में हो तो जातक श्रेष्ठ सुख प्राप्त करता है। वह स्वयं कर्त्तव्यनिष्ठ एवं विनम्र रहता है। रक्तदोष या जलोदर जैसी बीमारियों का कष्ट रहता है। नक्षत्र के 12 या 13 अंशों में जन्म हुआ हो तो जातक अभियंता (इंजीनियर) बनता है। उसके कन्या संतान अधिक रहती है। बृहस्पति की दृष्टि होने पर काफी पैतृक संपत्ति मिलती है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि होने पर जातक अपने मित्रों और सगे-संबंधियों में प्रसिद्ध , सत्यवादी होता है और सरकार से फायदा उठाता है। यहां यह बात ध्यान में रखनी है कि सूर्य की दृष्टि एक या दो चरणों पर ही रहेगी।

बुध पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक को संगीत एवं काव्य कला में रुचि रहती है और ललित कलाओं के माध्यम से वह धन कमाता है। जातक के पास अलग-अलग तरह के वाहन, वस्त्राभूषण एवं मकानादि होते हैं। श्रेष्ठ एवं धनी महिलाओं से उसे लगाव होता है।

बुध पर मंगल की दृष्टि हो तो शासन एवं सत्ता में उसका प्रभाव रहता है। बृहस्पति की दृष्टि होने पर अच्छे परिवार का सदस्य एवं धनवान तथा संतान से युक्त रहता है। शुक्र की दृष्टि होने पर वह व्यवहारकुशल एवं लोकप्रिय बनता है। शनि की दृष्टि होने पर सामाजिक कार्य उत्तम ढंग से संपन्न करता है। शक्तिशाली होने से वह कठोर रहता है एवं झगड़े-फसाद में भी आगे रहता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक नास्तिक रहता है। अपने जीवन में उसे निम्न श्रेणी का सामाजिक जीवन बिताना पड़ता है। मदिरापान एवं परस्त्रीगमन करता है। धोखेबाज होने से सर्वत्र तिरस्कृत रहता है। सबके साथ असहयोग से पेश आता है। चंद्र की दृष्टि होने पर चरित्रहीन रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो उसका सकारात्मक प्रभाव दिखाई देता है। ऐसा जातक उच्च शिक्षा प्राप्त रहता है एवं उसकी आमदनी भी नियमित एवं अच्छी रहती है। उसका मस्तिष्क दार्शनिक रहता है। परामनोविज्ञान का कुछ अनुभव उसे रहता है। किसी वजह से वह समाज में सम्मानित होता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक को अपनी संतान से सुख मिलता है। ज्ञान की अनेक विधाओं का अध्ययन करने का उसे मौका मिलता है। 35 से 40 वर्ष की आयु के बाद वह विश्वविख्यात हो जाता है। बुध के साथ सूर्य भी अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में हो तो जातक चिकित्सा क्षेत्र की उच्च उपाधियों से विभूषित एवं प्रसिद्ध फिजिशियन, सर्जन या वैद्य बनता है। उदारता एवं पवित्रता के गुण विशेष रूप से पाए जाते हैं।

तृतीय चरण में हो तो ऐसे जातक पर भगवान की बड़ी कृपा रहती है। कई अनुकरणीय कार्य उसके द्वारा संपन्न होते हैं। अपने कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारियों को वह समय पर निभाता है। उसके पुत्र अधिक होते हैं। उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। आयु लगभग साठ वर्ष की होती है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो अच्छा फल प्राप्त नहीं होता। ऐसा जातक नीच आचरणवाला होता है। हर कार्य में उसे असफलता प्राप्त होती है। वह कमजोर रहता है। व्यापार में हानि उठानी पड़ती है। बृहस्पति की दृष्टि होने पर जातक साधारण श्रेणी का लेखक, क्लर्क या पैसों का लेनदेन करके सूद कमानेवाला होता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक गैरकानूनी काम करने से कतराता है। ऐसा जातक धर्मभीरू एवं जनता की सेवा करनेवाला होता है। बृहस्पति पर चंद्र की दृष्टि होने से यश एवं ख्याति के कारण वह सर्वत्र जाना जाता है। मंगल की दृष्टि हो तो कठोर बर्ताव करनेवाला एवं राजनैतिक व्यक्तियों से पैसा ऐंठनेवाला होता है। दूसरों का अभिमान चूर करता है। बुध की दृष्टि हो तो अच्छे बर्ताव की न्यूनता रहती है। ऐसा जातक वाद-विवाद करनेवाला, दुराग्रही एवं झगड़ालू रहता है। शुक्र की दृष्टि होने पर सुगंधित प्रसाधन एवं महिला उपयोगी वस्तुओं का व्यापार करनेवाला एवं युवाओं से हंसी-मजाक करनेवाला होता है। शनि की दृष्टि हो तो सुख से वंचित, परिवार से अलिप्त, कठोरकर्मी एवं दरिद्री रहता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति होने पर जातक उच्च शिक्षित एवं धार्मिक रहता है। शास्त्रों के अध्ययन के साथ दार्शनिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान भी उसे प्राप्त होता है। उसकी वाणी में चुंबकीय आकर्षण होता है। बड़ी-से-बड़ी सभा को भी वह अपने वाक्‌चातुर्य से स्तंभित कर देता है। आयु के पैंतीसवें वर्ष के बाद उसे प्रसिद्धि एवं धनसंपदा प्राप्त होती है। मित्रों एवं चहेतों के सहयोग से व भरपूर संपत्ति एवं जमीन-जायदाद का मालिक बन बैठता है। सामान्य पद पर रहते हुए वह लेखक एवं पत्रकार बनता है। ऐसा जातक अन्यों से प्रेम तथा मान-सम्मान प्राप्त करने में माहिर रहता है। आर्थिक दृष्टि से कमजोर रहता है। नित्य कर्ज के बोझ से दवा रहता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक बौद्धिक एवं भौतिक संपत्ति में सामंजस्य बैठाने में दक्ष रहता है। वह काफी पढ़ा-लिखा एवं ख्याति प्राप्त करनेवाला होता है। परंतु कुछ ज्योतिषीय विद्वानों की राय में युवावस्था तक की आयु ही उसे प्राप्त रहती है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति स्थित होने पर जातक भाग्यवान एवं सुखी जीवन जीनेवाला होता है। अपने प्रयत्न एवं पुरुषार्थ से वह धन कमाता है। उसके अधीन कई लोग काम करते हैं। वह एक अच्छा अधिकारी, अपने बाल-बच्चों का संरक्षक एवं जिम्मेदारियों को पूर्णत: निभानेवाला, मधुर स्वभावी रहता है। सट्टा या तात्कालिक व्यापार में अच्छा धन कमाता है।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक को शासन द्वारा कई लाभ प्राप्त होते हैं। उसकी पत्नी उसके लिए एक प्रश्नचिह्न ही रहती है। चंद्र की दृष्टि हो तो बड़ा

राजनैतिक पद हासिल होता है। किंतु निम्न श्रेणी की युवती से संबंध होने से वह बदनाम हो जाता है। मंगल की दृष्टि होने पर वह दरिद्र एवं परिवार से कुछ भी प्राप्त न करनेवाला होता है। उसका वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक बोलते समय लड़खड़ाता है। उसे झूठ बोलने की लत रहती है। आयु लंबी होती है। ऐतिहासिक विषयों में रुचि रखता है। जीवन के उत्तरार्ध में लेखन कार्य से ख्याति अर्जित करता है।

शुक्र प्रथम चरण में हो तो जातक का शरीर हृष्ट-पुष्ट रहता है। स्वभाव मिलनसार रहता है।

दूसरे चरण में शुक्र हो तो जातक परिवार से स्नेह करनेवाला, मित्रों का हितैषी, अनेक साधनों से परिपूर्ण रहता है। यह सब उसे जीवन के उत्तरार्ध में प्राप्त होता है। इसी वह साहित्यकार, चित्रकार तथा कलाप्रेमी बनता है। उसकी शिक्षा की तरफ ठीक से ध्यान दिया जाए तो वह आगे चलकर उच्च श्रेणी का अभियंता या वकील बन सकता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक चतुर एवं विद्वान रहता है। वह बड़े उत्साह से लोगों की आवभगत करता है, विशिष्ट प्रकार का चिकित्सक, राजनीतिज्ञ या मजदूर बनता है। शरीर में कोई दोष रहता है। अन्य शुभ ग्रहों का योग होने पर वह सर्वप्रिय, दान-धर्म करनेवाला होता है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक की मुद्रा आकर्षक, बोलने में चतुर एवं प्रभावी वक्ता रहता है। उच्च श्रेणी का अभिनेता, संगीतकार, वाद्ययंत्रों का शौकीन रहता है। उसकी लेखन शक्ति भी प्रभावी होती है। इस शुक्र के साथ सूर्य हो तो वैवाहिक जीवन कष्टदायक एवं कलहपूर्ण रहता है। ऐसे जातक का विवाह जल्द संपन्न होता है या नाटकीय परिस्थिति में उसका विवाह होता है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक पशु धन के माध्यम से अपनी आजीविका चलाता है। दूध, डेयरी, चमड़े का व्यवसाय या खेती से जुड़ा होता है। आमतौर पर वह अपने जीवनकाल में अच्छा काम करता है। किंतु सूर्य के अशुभ प्रभाव के कारण पिता का सुख कम प्राप्त होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक अपने जीवन में बदनाम व्यक्तियों का अनुसरण करता है। वह स्वभाव से क्रूर, आचरणहीन एवं दरिद्र जीवनयापन करनेवाला होता है। मंगल की दृष्टि होने पर अधिक बोलनेवाला, दूसरों को धोखा देनेवाला एवं किसी की सहायता न करनेवाला होता है। शनि पर बुध की दृष्टि हो तो जातक गैरकानूनी कामों से पैसा हासिल करता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो सरकार में उच्च पद प्राप्त करता है। अपने जीवनकाल में भरपूर संपत्ति, खानदानी परिवार, सुशील पत्नी एवं उत्तम संतान से युक्त जीवन बिताता है। शुक्र की दृष्टि हो तो दूर देश में प्रवास करता है। व्यक्तित्व में आकर्षण न होने पर भी लोगों पर उसकी छाप रहती है। वह स्त्रियों को प्रिय एवं भोग-विलास में अपने धन का अपव्यय करता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक का बचपन दरिद्रता में गुजरता है। कालांतर से वह प्रसन्न, मंद गति से काम करनेवाला तथा मंदबुद्धि का बनता है।

द्वितीय चरण में शनि जातक काला या श्यामवर्णी रहता है। उसके बाल खड़े एवं जुड़े रहते हैं। सिर बड़ा एवं शरीर दुबला-पतला रहता है। ऐसा जातक वन विभाग में अच्छी आमदनी करता है। पैसा कमाने में चतुर किंतु व्यवहार ज्ञान में कमजोर एवं बुद्धिहीन रहता है। व्यर्थ ही आर्थिक चिंता में डूबा रहता है। वह हिंसाचारी एवं क्रुद्ध आचरणवाला होता है। जीवन के मध्य तक उसका असामाजिक कार्यों से संबंध रहता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक व्यापार में चतुर रहता है। चारों तरफ घूमनेवाला, सबसे अच्छे स्नेहपूर्ण संबंध रखनेवाला, व्यापार में अपने अधीन काम करनेवालों का ध्यान रखनेवाला एवं उनका हित देखनेवाला होता है। उसके द्वारा संपन्न लोककल्याणकारी कार्यों के कारण लोग उसे याद रखते हैं। परंतु जातक अति महत्त्वाकांक्षी एवं क्रोधी रहता है।

चतुर्थ चरण में शनि होने पर जातक सुख से परिपूर्ण जीवन जीता है। धार्मिक विचारों से ओतप्रोत होते हुए भी सट्टे या जुए में फंसता है। सूर्य की दृष्टि शनि पर हो तो वह जमींदार बनता है एवं खेती से अच्छी-खासी आमदनी करता है।

स्त्री जातक की कुंडली में ऐसा शनि हो और उस पर सूर्य की दृष्टि हो तो उसका विवाह नहीं हो पाता। विवाह हो भी जाए तो विच्छेद होता है। चंद्र की दृष्टि ऐसे शनि पर होने से वह स्त्री बदसूरत एवं दुर्गंधयुक्त शरीर की होती है।

चतुर्थ चरण में स्थित हो तो जातक शूरवीर, धैर्यवान, शक्तिमान एवं स्पष्टवक्ता रहता है। उसे गुल्मरोग, अपचन एवं वायुविकार रहते हैं। सूर्य की दृष्टि राहु पर हो तो जातक कार्यदक्ष एवं अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण दायित्व के साथ निभानेवाला होता है। परेशानियों में उसे सहायता करनेवाला साथी मिल जाता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु स्थित हो तो जातक बुद्धिमान, शरीर से हृष्ट-पुष्ट और पितृभक्त होता है। अपने अभिभावकों से समय-समय पर यथोचित सहयोग पाता है। उसके चेहरे पर एक विशेष काले तिल का चिह्न पाया जाता है। राहु पर पाप ग्रह की दृष्टि होने पर ऐसे जातक के जीवन में अनेक बार दुर्घटनाएं घटती हैं। फिर भी वह जीवित रहता है।

द्वितीय चरण में राहु होने पर जातक धार्मिक रीति-रिवाजों को माननेवाला होता है। देश-विदेश में भ्रमण करता है। दूसरों से दान लेकर या याचना करके अपना जीवन चलाता है। इसके विचार और कार्य बार-बार बदलते रहते हैं। अंतिम अवस्था में वह मानसिक रोग का शिकार बनता है।

अश्विनी नक्षत्र के तृतीय चरण में राहु हो तो जातक की हालत अच्छी नहीं रहती। वह दरिद्र होता है। उसे अच्छे या बुरे किसी भी काम में रुचि नहीं होती और भावुक एवं दार्शनिक विचारों का रहता है। वह साधु या संन्यासी बन जाता है।

वैवाहिक जीवन कटुतापूर्ण रहता है। परायी संपत्ति हथियाता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक के पास बड़ी मात्रा में गुप्त धन होता है। वह दुराचारी, सूदखोर एवं तस्करी करनेवाला, परंतु हंसमुख रहता है। वह जलविज्ञानी या मशीनरी का इंजीनियर रहता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो ऐसा जातक उच्च शिक्षित रहता है। उसकी यशकीर्ति दूसरों के लिए एक मिसाल साबित होती है। वह लोकप्रिय एवं कर्मठ तो होता ही है किंतु साथ ही अपने ज्ञान क्षेत्र में विशेषज्ञ, निर्माण कार्य में संलग्न रहकर आजीविका प्राप्त करनेवाला, मैकेनिकल इंजीनियर या अर्धतकनीकी व्यवसाय करनेवाला रहता है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक दरिद्र जीवनयापक किंतु जनसंपर्क में निपुण एवं सार्वजनिक कार्यों से लाभान्वित रहता है।

तृतीय चरण का केतु जातक को हमेशा निम्न श्रेणी के लोगों में रखता है। वह संतानहीन रहता है। समाज में उसका आदर किया जाता है। समय-समय पर वह दूसरों की सहायता करता है।

चतुर्थ चरण में केतु होने पर जातक को अपने जन्म स्थान से दूर रहकर जीवन बिताना पड़ता है। दूसरों के हिस्से का भोजन खाता है। जीवन 30-35 साल का रहता है।

हर्षल-नेपच्यून

अश्विनी नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून स्थित हो तो जातक में चंचलता एवं अस्थिरता पैदा होती है। बार-बार योजना बदल जाती है। शांति से विचलित करनेवाले कई गुण उसमें विहित रहते हैं। जातक स्वेच्छाचारी, तत्त्वज्ञानी, शास्त्री, वेदज्ञ एवं मस्तिष्क की बीमारी से ग्रस्त होता है।

प्लूटो

अश्विनी नक्षत्र में प्लूटो स्थित होने पर जातक चंचल, घुमक्कड़, प्रवासी, बुद्धिमान, विद्याप्रवीण, तत्त्वज्ञ, लेखक, ग्रंथकार एवं नेता बनता है। उसकी लिखावट में तेजी रहती है। काम भी शीघ्र निपटाने का उत्साह उसमें रहता है। वह सार्वजनिक कार्यकर्ता या उपदेशक रहता है। शरीर से दुबला-पतला रहता है। प्रकृति उष्ण होती है। इस नक्षत्र में सूर्य, बुध, चंद्र, बृहस्पति हो एवं लग्न त्रिकोण या दशम त्रिकोण या सप्तम त्रिकोण बनता हो तो जातक प्रसिद्ध एवं भाग्यवान होता है।

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा, पुनर्वसु, विशाखा एवं पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुषों के साथ मित्रता, व्यापार, साझेदारी, लेनदेन एवं विवाह न करें।

□□

भरणी (2) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक दयालु एवं दूसरों को सहायक बनाने की वृत्ति रखता है। उसके पास नौकर-चाकर बड़ी संख्या में काम करते हैं। मंगल की दृष्टि हो तो जातक कठोर और फूट डालने की कला में माहिर होता है। उसकी आंखें लाल, बदन गठीला एवं हृष्ट-पुष्ट होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो दूसरों की सहायता करनेवाला, धनवान एवं राजनैतिक ख्याति प्राप्त रहता है। वह उच्च शिक्षित, चिकित्सक, डॉक्टर या शासनाधिकारी रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो निम्न दर्जे के लोगों में उठने-बैठनेवाला होता है। चरित्रहीन, वेश्याओं के लिए धन खर्च करनेवाला, मौकापरस्त मित्रों से युक्त रहता है। शनि की दृष्टि हो तो आलसी, अकर्मण्य, चोरी करनेवाला एवं रोगी होता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक विशेष शिक्षित, विचारों से प्रगतिशील, मनोविज्ञान एवं ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता होता है। वह सौभाग्यशाली तो रहता ही है उसके अलावा धन-संपत्ति एवं प्रतिष्ठायुक्त भी रहता है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक एवं बर्ताव सौहार्दपूर्ण रहता है। आंख या सिर में जख्म का निशान रहता है। चिकित्सा, कानून, पशु विज्ञान जैसे जीवनोपयोगी कार्यक्षेत्र में वह विशेषज्ञ बन सकता है। सूर्य के 15 या 16 अंशों में रहने पर वह सफल व्यवसायी बनता है। खाद, कृषि के साधन, कपड़ा, फल-फूल, होटल, भोजनालय जैसे कार्यक्षेत्रों से भी उसका संबंध रहता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो उसकी पारिवारिक स्थिति अनुकूल एवं सुखद रहती है। पत्नी एवं संतान का पूर्ण सुख उसे प्राप्त होता है। वसीयत से या अकस्मात धन प्राप्त होता है। लाटरी, सट्टा, शेयर मार्किट से भी उसे धन लाभ होता है। गले के विकार (टॉन्सिल्स) या गर्भाशय तथा जननेन्द्रियों से संबंधित रोग उसे त्रस्त करते हैं। यातायात, समुद्री या हवाई सेवा, तेलशोधक प्रतिष्ठान या जलोत्पन्न वस्तुओं से वह लाभान्वित होता है। यदि सूर्य 18 या 19 अंशों में हो तो उसे रतिज रोग या संसर्गजन्य रोग होते हैं। वह केमिकल इंजीनियर, टेक्सटाइल इंजीनियर बनता है और सुखभोगी होता है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो ऐसा जातक संघर्षरत रहता है। उसके पास अपार

धन होता है। किंतु खर्चे में मनमानी करने, व्यसन में फंसने से उसकी संपत्ति दूसरों के हाथों में चली जाती है। महादशा के सिद्धांत के अनुसार उसे केवल सूर्य की महादशा या अंतर्दशा लाभ पहुंचाती है। बाकी सभी महादशाएं हानिकारक बीतती हैं। मंगल की महादशा में सिर फूटने का डर रहता है। व्यावसायिक क्षेत्र में नुकसान होता है। वकील, डॉक्टर, इंजीनियर इनमें से कुछ भी बनने पर उसकी आमदनी कम रहती है। मंगल सुस्थिति में हो तो जमीन-जायदाद से लाभ मिलता है। वह आक्रामक, झगड़ालू एवं आतुर रहता है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक का बचपन बड़ा कष्टमय रहता है। पिता की असमय मृत्यु हो जाती है। अन्य ग्रहों का सहयोग न हो तो भिखारी जैसा जीवन गुजारना पड़ता है। एकाध शुभ ग्रह होने पर भीख मांगने की तो नहीं किंतु दूसरों की दया पर अवलंबित रहने की स्थिति बन जाती है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक कठोर एवं क्रूर आचरणवाला रहता है किंतु दुखियों की सहायता वह अवश्य करता है। कभी-न-कभी कानून के शिकंजे में फंसकर उसे सजा या दंड भुगतना पड़ता है। विषभय भी रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो अग्नि, शस्त्र या पक्षाघात के कारण शरीर का कोई हिस्सा क्षतिग्रस्त हो जाता है। उसकी आंखें और दांत भयंकर रोग से पीड़ित रहते हैं। पेट भरने के लिए दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं। आजीविका दूसरों की दया पर निर्भर रहती है। बुध की दृष्टि इस चंद्र पर होने से शोहरत प्राप्त होती है, जीवन के हर कार्य में दक्षता भी प्राप्त होती है। वह सम्मानित एवं धनवान बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो अपने मालिक का चहेता, अन्नदाता व भरोसेमंद रहता है। वह किसी संस्था या शासन के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है। उसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है और वह धन-वैभव से युक्त सुखी जीवन जीता है। शुक्र की दृष्टि हो तो अपने जीवनसाथी का अच्छा साथ मिलकर वैवाहिक जीवन सुखद रहता है किंतु संतान से विशेष लाभ प्राप्त नहीं होता। शनि की दृष्टि हो तो जातक को झूठ एवं अपशब्द बोलने की आदत रहती है।

प्रथम चरण में चन्द्र हो तो जातक काफी धनवान एवं अपने भाइयों के सहयोग से आगे बढ़ता है। उसके पास अनेक प्रकार के वाहन एवं नौकर-चाकर रहते हैं। हड़बड़ी में किए गए पूंजी-निवेश से धार्मिक नुकसान उठाना पड़ता है। यह जातक केवल आज का ही विचार करता है, कल की बात भूल जाता है। इस आदत के कारण धनाभाव रहता है।

द्वितीय चरण में चन्द्र हो तो जातक की अधिकांश जिंदगी सुख में बीतती है। उसे ननिहाल से लाभ मिलता है। ननिहाल में दत्तक (गोद) जाने की संभावना रहती है। नाना से लाभान्वित होता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। विद्वानों में उठता-बैठता रहता है। नौकरी में सर्वोच्च अधिकारी के साथ काम करने का मौका मिलता है।

तृतीय चरण में चंद्र होने पर जातक का विवाह दो बार होता है। उसे जनसामान्य से प्रेम व मान-सम्मान प्राप्त होता है। जरूरतमंदों की वह मदद करता है। चाय, कॉफी, तम्बाखू, पान का विशेष शौकीन रहता है। ऊंचे लोगों से, सोना, चांदी, रत्नाभूषण, कपास, रासायनिक खाद, होटल व्यवसाय से लाभान्वित होता है।

चतुर्थ चरण में होने पर जातक का चरित्र संदेहास्पद रहता है। उसका आचरण धोखेबाजी, नीचता एवं लंपटतापूर्ण रहता है। कई बार शरीर जख्मी होता है। बंदरगाह, हवाई अड्डा या रेल के गोदाम में काम करता है। ट्रांसपोर्ट या दवाखाने में अर्थ लाभ पाता है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक मेधावी बुद्धिमान एवं सज्जन होता है। माता-पिता का सेवक एवं धनिकों में सम्मान पाता है। चंद्र की दृष्टि इस मंगल पर हो तो जातक दुराचारी, व्यसनी एवं वेश्यागामी रहता है। दया भाव उसमें नहीं होता। वह रिश्वतखोर होता है तथा चुंगी या कोषागार, रेलवे या पुलिस सेवा में कार्यरत रहता है। बुध की दृष्टि होने पर परायी संपत्ति में आसक्त, दुश्चरित्र, अपनी डींग हांकनेवाला, आवारा रहता है। इस योग के जातक डाकू, तस्कर भी होते हैं। बड़े परिवार में जन्म होता है। अपने परिवार में सबसे अधिक कमानेवाला एवं बड़े ओहदे पर काम करनेवाला होता है। जीवन के मध्याह्नकाल में काफी संपत्ति प्राप्त होती है किंतु जातक का स्वभाव क्रोधी एवं कठोर रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो मिष्ठान्न एवं रुचिप्रद भोजन का शौकीन रहता है। आचरण लंपटता से पूर्ण एवं बर्ताव स्वार्थ से भरपूर रहता है, फिर भी वह अपने परिवार एवं समाज के लिए बहुत कुछ करता है। शनि की दृष्टि इस मंगल पर हो तो उसे परिवार से अलग कर दिया जाता है। मां की ममता से भी वह वंचित रहता है। उसका शरीर दुबला-पतला एवं स्वभाव बदला लेने की भावना से ओतप्रोत रहता है। अपने परिवार की हमेशा बुराई करता है और परिवार के विरुद्ध काम करने में उसे आनंद मिलता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक की आयु 50 वर्ष के आसपास ही रहती है। उसकी मृत्यु दूसरे देश में या रास्ते में दुर्घटना से होती है। छिटपुट रोगों से भी उसका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। ऐसा जातक वाहन चलाते समय सावधानी बरते और विद्युत संबंधी कार्य भी विशेष सावधानी के साथ करे। केमिकल ड्रॉप्स या दवा भी घातक सिद्ध हो सकती है। मादक पदार्थों के सेवन का परहेज रखना बहुत ही जरूरी है।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक नाजुक रहता है। कमजोर शरीर के कारण भारी काम करने में डर लगता है। अनेक विकारों से वह ग्रस्त रहता है। ऐसा होते हुए भी वह मेहनती एवं बुद्धिमान होता है। शिक्षा में वह प्रथम रहता है। विपरीत लिंग के विषय में विशेष आकर्षण रहता है। गुप्तेंद्रियों से संबंधित रोग होते हैं। खेल के सामान एवं लौह धातु के व्यापार से पैसा मिलता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक को नकारात्मक फल प्राप्त होते हैं। जीवन के 50 वर्षों तक अथक संघर्ष करना पड़ता है। रहने के लिए भी दूसरों की सहायता लेनी पड़ती है। परंतु 50 की आयु के बाद उसके जीवन में बदलाव आता है और वह सुख-समृद्धि प्राप्त करता है। 84 साल की आयु होती है। सिनेमा थिएटर, वीडियो पार्लर, स्टूडियो, होटल में से किसी व्यवसाय का मालिक बनता है।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक को उसके प्रांत या देश में सर्वोच्च सम्मान प्राप्त होता है। जातक को विदेश प्रवास में सावधानी बरतनी चाहिए, दुर्घटना की संभावना रहती है, जान को खतरा रहता है। ऐसा जातक चिकित्सा के क्षेत्र में शोहरत प्राप्त करता है या पुलिस प्रशासन, राजनीति, सार्वजनिक हित के क्षेत्रों से उसका संबंध बना रहता है। चिकित्सा या सेक्स, एड्स, कैंसर आदि रोगों पर किए जानेवाले शोधों में वह नाम एवं धन कमाता है।

बुध

बुध पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक को संगीत, अभिनय एवं अन्य लोककलाओं में रुचि होती है। ऐसा जातक संपन्न स्त्रियों में आदरणीय माना जाता है। उसे मकान, वाहन, नौकर-चाकरों का सुख प्राप्त होता है। मंगल की दृष्टि होने पर जातक उच्चाधिकारियों का चहेता बनता है। ऐसे अधिकारियों से मेलजोल रखकर वह धन कमाता है किंतु उपद्रवी एवं झगड़ालू भी होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जीवन सुखी रहता है। वह आदर्श पत्नी एवं संतान से युक्त रहता है। शुक्र की दृष्टि होने पर संभ्रांत लोगों के संपर्क में रहता है। उसका आचरण प्रशंसनीय रहता है। मित्र एवं रिश्तेदारों में उसकी चर्चा होती है। शनि की दृष्टि हो तो चरित्रहीन, झगड़ालू एवं कठोर स्वभाव का होता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक दीर्घायु नहीं होता। पापग्रहों की दशा में कष्ट पाता है। आमतौर पर ऐसे जातक लेखन, स्वाध्याय, अध्यापन, पौरोहित्य, दलाली, ठेकेदारी, मिस्त्री, सजावट या कारीगरी का व्यवसाय करके पेट पालते हैं।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक की आयु मध्यम रहती है। एकसाथ अनेक कार्यों को प्रारंभ करता है, पर सफलता एक में भी प्राप्त नहीं होती। पिता एवं अन्य रिश्तेदारों से स्नेहपूर्ण संबंध नहीं रह पाते। फिर भी वह अपने परिवार एवं मित्रों की सहायता करता है।

तृतीय चरण में बुध होने पर जातक दीर्घायु बनता है। वह उच्च शिक्षित एवं सौभाग्यशाली पत्नी से युक्त रहता है। उसकी उन्नति में पत्नी का बड़ा हाथ रहता है। छिटपुट व्यापार, ठेकेदारी या इंजीनियरिंग क्षेत्र में काम करके जीवन निर्वाह करता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक सरकारी नौकरी करता है। उसकी आयु 45 साल की ही होती है। लकवा या पांडु रोग से उसकी मृत्यु होती है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक भाग्यवान, सत्यवादी, सामाजिक कार्यकर्ता एवं प्रसिद्ध होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो वह अपने से बड़ों का आदर करता है। अपने सत्कार्यों से छोटी आयु में ही बड़ा यश प्राप्त करता है। हमेशा अपने कार्य में मग्न रहता है। संतोषी व शांत रहता है। मंगल की दृष्टि होने पर जातक कठोर, निर्दयी, अनावश्यक कामों में पैसा खर्च करनेवाला रहता है। खुद अधिकारी रहता है और दूसरों का अहंकार तोड़ने में समर्थ रहता है। मध्यम अवस्था में वह सरकारी अधिकारी या निरीक्षक बनता है। उसके अधीन कई कर्मचारी काम करते हैं। बुध की दृष्टि हो तो ऐसे जातक में सत्यता कम रहती है। वह बोलने में चतुर और दूसरों में झगड़े करवाता है। एक ही समय में अनेक स्त्रियों के संपर्क में रहता है एवं अपने दिखावटी व्यवहार से लोगों को बेवकूफ बनाता है। शुक्र की दृष्टि होने पर भी सभी प्रकार के सुख प्राप्त करता है। उसकी पत्नी सुंदर एवं प्रभावी होती है। उसे वस्त्रालंकारों का शौक रहता है। जातक स्वयं अच्छे रहन-सहन का शौकीन, मकान, वाहन एवं नौकरों से युक्त रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक को अशांत एवं कलहपूर्ण जीवन जीना पड़ता है। वह क्रूर, कपटपूर्ण एवं दूसरों को गलत सलाह देने में माहिर होता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक कुशल वक्ता, अपने पिता का प्रिय एवं परिवार का एकमात्र आधार रहता है। उसे सर्वत्र मान-सम्मान प्राप्त होता है। एक से अधिक पत्नियां रहती हैं। गणित, एकाउंटेंट, वाणिज्य विषयों में उच्च उपाधि प्राप्त करता है। वह फैक्टरी, बैंक या व्यापारी संस्था में उच्च पद पर काम करता है। मूर्च्छा, दुर्घटना, बौद्धिक तनाव के कारण रोगग्रस्त रहता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक पुत्र-पौत्रादिकों से युक्त रहता है। 55 या 60 वर्ष की आयु रहती है। आपराधिक कार्यों में संलग्न रहता है। धार्मिकता का ढोंग रचता है। जमीन के लेनदेन, सट्टा, लॉटरी के माध्यम से धन कमाता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक भ्रमण अधिक करता है। 32 वर्ष की आयु के बाद उसका जीवन संपन्न एवं सुखी बनता है। भोग-विलास में विशेष रुचि रखता है। कई बार दुर्घटनाओं से चमत्कारपूर्ण बचाव होता है। प्रतियोगिता परीक्षा, स्पर्धा में विजय प्राप्त करता है। राजस्व विभाग, कानून, आयात-निर्यात, सोना-चांदी, कपड़ों या खेल के सामानों का व्यापार कर धन कमाता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक दीर्घायु रहता है। उसे उत्पादन एवं खाद्यान्नों के व्यापार में धन प्राप्त होता है। वह तंत्र-मंत्र एवं ज्योतिषशास्त्र में पारंगत, चालाक, दूसरों का शोषण करनेवाला होता है।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक शासन से काफी पैसा प्राप्त करता है। विशेष कार्यक्षमता उसमें निहित रहती है और वैवाहिक जीवन दुखपूर्ण रहता है।

पत्नी के कारण उसे बहुत कुछ सहना पड़ता है। चंद्र की दृष्टि हो तो समाज में उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। परंतु महिलाओं के प्रति अधिक आकर्षण के कारण वह बदनाम होता है। मंगल की दृष्टि होने पर जातक धनहीन एवं कदम-कदम पर संघर्षरत रहता है। उसके जीवन में सुख-शांति का अभाव रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जीवन में आनेवाले विघ्नों के कारण कई बार उसे अपना मार्ग बदलना पड़ता है। अपनी इच्छा के अनुकूल उसका जीवन नहीं बन पाता। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक विख्यात एवं आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। वह भाग्यशाली पत्नी एवं संतान से परिपूर्ण रहता है। सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं उसे प्राप्त होती हैं। शनि की दृष्टि हो तो चोरी का सामान या गिरवी रखी हुई संपत्ति उसके पास रहती है। वह शांतचित्त एवं लोगों के लिए आदरणीय होता है। जरूरतमंदों के लिए उसके मन में दयाभाव रहता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक संगीत एवं काव्य में प्रवीण रहता है। व्याख्यान देने तथा शास्त्रीय गायन में बेजोड़ और अल्प-आहारी व लोकप्रिय रहता है। अधिक धूम्रपान करनेवाला होता है। कपाल पर या आंखों के पास जख्म का निशान होता है। क्रीड़ा विशेषज्ञ एवं कलाकार के रूप में शोहरत हासिल करता है। सुखोपभोग की लालसा तीव्र होती है। संगीत वाद्य, टी.वी., रेडियो आदि के व्यापार में धन प्राप्त होता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक का स्त्रियों के प्रति विशेष आकर्षण रहता है। उसे गुप्तरोगों से कष्ट रहता है। आंखें भी कमजोर रहती हैं। महिला उपयोगी वस्तुओं के व्यापार में या स्त्रीरोग चिकित्सक के रूप में प्रसिद्धि हासिल होती है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक ठिगना किंतु मीठा बोलनेवाला रहता है। उसे सुंदर एवं व्यवहारकुशल पत्नी प्राप्त होती है। वह स्वयं अपनी जिम्मेदारी को योग्यता से निभानेवाला एवं अपने कार्य में कुशल रहता है और प्रसार-प्रचार, विज्ञापन, मनोरंजन आदि कार्यों में धन कमाता है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक विदेश निवासी, यज्ञ-हवनादि कर्म करनेवाला पुरोहित, मंदिर का पुजारी या धार्मिक संस्था का प्रमुख रहता है। समाज में उसे अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक पशुधन, कृषिकार्य या भवन निर्माण आदि कार्यों से पैसा प्राप्त करता है। दुर्घटना के कारण शरीर का एकाध अंग बेकार होने की संभावना रहती है। चंद्र की दृष्टि हो तो बचपन से व्यसनी, अकर्मण्य, कठोर, गरीब, पैसे के लिए गुंडों एवं बदमाशों की सेवा करनेवाला रहता है। वह चरित्रहीन, कृतघ्न एवं जीवन में हर क्षण अड़चनें महसूस करता है। बार-बार चोरी करनेवाला, पॉकेटमार, गांव की सीमा से निष्कासित रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो राज्य शासन में उच्च पदस्थ अधिकारी, धन ऐश्वर्य से युक्त, वाहन, नौकर-चाकरों की सुविधा भोगनेवाला,

सुंदर पत्नी का प्रभावशाली पति होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो वह सरकारी कारण से या स्वयं के कार्य के लिए दूर देशों में भ्रमण करनेवाला, नीच आचरण का, काले रंग का, बदसूरत, बुरे कामों में फंसा रहता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक धार्मिक कार्यों में सहभागी होता है। इसी कार्य से पैसा कमाता है। बुद्धिमान, कर्मठ एवं विख्यात महापुरुषों की संगत में रहकर आदर एवं सम्मान प्राप्त करता है। उसके कपाल या सिर पर कोई चिह्न पाया जाता है। शल्यक्रिया के कारण सिरदर्द रहता है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक तीव्र बुद्धि, शासन में उच्चाधिकारी रहता है और मध्यमवर्गीय लोगों का सलाहकार बनता है। आमतौर पर सुखी जीवन जीता है। बीच-बीच में ज्वर, फोड़े-फुंसियों का कष्ट रहता है। महिलाओं को गर्भपात की शिकायत रहती है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक दूसरों के अधीन रहता है। इसके दो पिता या दो माताएं होती हैं। मां या पिता में से कोई एक बचपन में ही मर जाता है, इस कारण जातक का जीवन निराधार एवं अभावग्रस्त रहता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो उसे रोटी के लिए भी दूसरों का मुंह ताकना पड़ता है। वह स्वभाव से आलसी और अकर्मण्य रहता है। बचपन में ही माता-पिता की मृत्यु हो जाती है। युवावस्था में पुलिस विभाग में सामान्य ओहदे पर कार्यरत रहता है। यदि इस शनि पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक खूनी, लुटेरा, आतंकवादी या चोर-बदमाश बनता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक ख्याति प्राप्त रहता है। मल्लविद्या में पारंगत होता है। बड़ी धनराशि लेकर दूसरों की रक्षा करता है। जीवन के अंतिम चरण में वह लड़ाई-झगड़े में फंसा रहता है। उसकी मृत्यु भुखमरी की वजह से होती है। कुत्ते के काटने के कारण या खाज-खुजली के कारण वह त्रस्त रहता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक श्रेष्ठ सम्मान पाता है। उसके पास भरपूर अर्जित धन होता है। यातायात या वाहनों के व्यवसाय में वह धन कमाता है। कसाईखाना या जानवरों के मांस व चमड़े के व्यवसाय से भी वह लाभान्वित होता है। कोढ़ आदि रोग से ग्रस्त रहता है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक प्रसिद्ध कवि या गायक बनता है। अधिक पढ़ा-लिखा न होने पर भी वह विद्वान लोगों के संपर्क में रहकर अपने काव्यज्ञान से लोकप्रिय व आदरणीय बनता है। ऐसा जातक सेनाधिकारी या वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के रूप में भी कार्य करता है।

चतुर्थ चरण में राहु होने पर जातक दुग्ध, तेल-घी आदि के व्यवसाय से आय अर्जित करता है और दूसरों की बुरे समय में सहायता करता है। ऐसा जातक धनवान होता है और अपने कार्य में मग्न रहता है। वैवाहिक जीवन दुखमय रहता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो ऐसा जातक कमल के पत्ते पर भोजन करता है। केतु पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक तरुण अवस्था तक जिंदा रहता है। शिक्षा एवं पुण्य कार्य में उसका जीवन व्यतीत होता है।

द्वितीय चरण में केतु होने पर ऐसा जातक 60-65 वर्षों तक जीवन जीता है। पानी से संबंधित रोग का शिकार होता है। सिर या शरीर के अन्य हिस्से में जख्म होता है। गिरने या दुर्घटनाग्रस्त होने का भय रहता है। मानसिक तनाव, मूर्च्छा, बेसुधी, अर्धविक्षिप्तता की शिकायत होती है। सेना या पुलिस विभाग में रोजगार प्राप्त होता है। कुछ जातकों की आंखें कमजोर एवं जादू-टोना करने की वृत्ति रहती है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक योगशास्त्र का ज्ञाता होता है। वह वैद्य या हकीम भी बन सकता है। दूसरों का इलाज करने की उसमें रुचि रहती है। जड़ी-बूटी के अलावा तंत्र-मंत्र का भी ज्ञाता होता है। स्वयं को ईश्वर का सेवक समझकर सबकी सेवा करता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक दीर्घायु रहता है। वास्तुशिल्पी, मकान, मंदिर निर्माण करनेवाला इंजीनियर या ठेकेदार बनता है। कोढ़ जैसे रोग से पीड़ित रहता है। दुर्घटना में दांत टूटते हैं और सिर फटने का डर रहता है।

हर्षल-नेपच्यून

भरणी नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हों तो जातक चंचल, व्यर्थ समय बरबाद करनेवाला, शीघ्रकोपी, गुस्से के आवेग में चाहे कुछ भी कर गुजरनेवाला, व्यर्थ देशांतर करनेवाला होता है।

प्लूटो

भरणी नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक 'हां में हां' मिलानेवाला, खुदगर्ज, पुश्तैनी काम करनेवाला, नया कुछ करने की शक्ति से वंचित, धैर्यवान, विद्या-बुद्धि से कमजोर, परस्त्रीरत, दूसरों की बुद्धि से चलनेवाला, दूसरे को आगे कर अपना उल्लू सीधा करनेवाला व लोगों के मीठे शब्दों में फंसनेवाला होता है।

भरणी नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष रोहिणी, हस्त, श्रवण, आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा, पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुषों से मैत्री, व्यापार, लेनदेन एवं विवाह न करें।

□□

कृतिका (3) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक झगड़ा करने में माहिर होता है। जोखिम भरे एवं साहसिक कार्यों से अच्छा धन प्राप्त करता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक की संगीत एवं ललित कलाओं में रुचि रहती है। उसका व्यक्तित्व मनमोहक रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक कुलश्रेष्ठ रहता है। राजनीति में प्रविष्ट होकर विधायक एवं मंत्री बन सकता है। उसके पास यथेच्छ संपत्ति होती है। शुक्र की दृष्टि हो तो आंखें आकर्षक होती हैं। सुंदर काया के कारण वह चर्चा का विषय बन जाता है। शनि की दृष्टि हो तो स्वास्थ्य एवं आर्थिक स्थिति कमजोर रहती है। लड़ाई-झगड़ों के कारण पारिवारिक जीवन अस्तव्यस्त हो जाता है और पूर्ण जीवन अस्तित्वहीन बनता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो एवं वह किसी भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक का जीवन सामान्य रहता है। संतान अधिक होती है। जातक गरीब एवं निर्धन रहता है और वह ज्योतिषशास्त्र, रेखाशास्त्र एवं तत्सम रहस्यमयी विद्या सीखने का इच्छुक होता है किंतु इन विषयों का अल्पज्ञान उसके लिए सहायक नहीं बनता। उसकी आंखें कमजोर रहती हैं। अधिक खानेवाला होता है। आग या बिजली की दुर्घटना होने की संभावना रहती है। कुछ जातक अर्थार्जन के लिए मिलिटरी या पुलिस विभाग में कार्य करते देखे जाते हैं।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक की आयु लंबी होती है। उसे संतान सुख भरपूर मिलता है। जीवन के उत्तरार्ध में वह ऐश्वर्यवान बनता है, बुद्धि तीक्ष्ण होती है। साधु-संतों का अनुयायी बनता है। कुछ जातक संगीत, नाट्यकला के शौकीन होते हैं तो कुछ सट्टे जुए में प्रवृत्त रहते हैं। बचपन में अगर शिक्षा की ओर उचित ध्यान दिया जाए तो ये त्वचा रोग के विशेषज्ञ या औषधि विक्रेता बन सकते हैं।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक याचक बनकर अपना जीवन गुजारता है। अनैसर्गिक रोगों का वह शिकार बनता है। ऐसे अनेक बच्चे बालारिष्ट के कारण काल के गाल में चले जाते हैं। कुछ जातक केशसज्जा में, कुछ चर्मकार बनकर अपनी आजीविका चलाते हैं। स्त्रियों की जन्मकुंडलियों में ऐसा सूर्य हो तो वे अनैतिक ढंग से पैसा कमाती हैं। कालांतर से रतिज रोगों से ग्रस्त होकर स्वर्ग

सिधारती हैं। कुछ पुरुष जातक जलमार्ग से यातायात के जरिए मेहनत-मजदूरी करके तो कुछ शिकार खेलकर या पशुपालन कर अथवा कुछ मांस-मछली की खरीद-फरोख्त से धन कमाते हैं।

कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक निम्न स्तर का जीवन जीता है और दूसरों की सेवा चाकरी करता है। ऐसा जातक गैर जिम्मेदार, हत्यारा, क्रूर बुद्धिवाला, स्त्री एवं संतान को कष्ट पहुंचानेवाला होता है। मदिरापान, सट्टा, लॉटरी, जुआ आदि कुव्यसनों में पैसा बरबाद करनेवाला तथा पानी से उत्पन्न रोगों का शिकार बनता है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक जमीन-जायदाद से युक्त धनवान, कृषि कार्य में यशस्वी रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक स्त्रियों पर आसक्त व अतिकामुक रहता है। अपने मित्रों तथा परिजनों का शुभचिंतक भी होता है। बुध की दृष्टि मंगल पर हो तो जातक बुद्धिमान एवं दूसरों को सहयोग देनेवाला होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो अच्छे कपड़े, सोने-चांदी से युक्त, घर, वाहन, नौकर-चाकरों का सुख भोगता है। सफल व्यापारी एवं माता के सुख से वंचित रहता है। किंतु बृहस्पति की दृष्टि शनि पर हो तो कई वर्षों तक मां जीवित रहती है। वह अल्पायु या रोगग्रस्त भी हो सकती है। ऐसा जातक जीवन के सभी भौतिक सुख पाता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो मंत्र शक्ति, वशीकरण तंत्र या तांत्रिक विद्या (जादू-टोने) का अल्पज्ञान होते हुए भी असाधारण शोहरत पाता है। यह चंद्र स्त्री को पुरुष एवं पुरुष को स्त्री से कष्ट दिलवाता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो ऐसा जातक सत्ता का सुख प्राप्त करता है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक एवं मनोहारी रहता है। विद्वानों की ओर से उसका स्वागत होता है। पित्तरोग या रक्तविकार के कारण अस्वस्थता रहती है। रसायन, भौतिक विज्ञान, भूगोल आदि विषयों में रुचि रहती है। इस चंद्र पर शनि की दृष्टि होने पर माता-पिता के सुख में न्यूनता रहती है।

तृतीय चरण में चंद्र होने पर जातक चतुर, ऊंचे कद का एवं आर्थिक दृष्टि से कमजोर रहता है। स्त्री जातक की कुंडली में ऐसा चंद्र हो और उस पर राहु या मंगल की दृष्टि हो तो उसके पति की मृत्यु 35वें वर्ष में होती है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक सुशिक्षित, मध्यम कद का, वार्तालाप में कुशल, तर्कसंगत बोलनेवाला, सभी बातों का आनंद लूटनेवाला किंतु वैवाहिक जीवन में दुखी रहता है। अन्य स्त्रियों का प्रिय, भोग-विलास के साधनों से संपन्न, धनवान, सम्मानित, व्यवसायी या उच्चाधिकारी रहता है। धार्मिक क्रियाकर्म, अनुष्ठान, ज्योतिषशास्त्र, तंत्रशास्त्र में पारंगत रहता है। जरूरतमंदों की मदद करना उसका स्थायी गुण होता है। प्रतिष्ठा के लिए लालायित रहता है। अच्छा दोस्त एवं हितचिंतक रहता है। आंखें कमजोर रहती हैं। पिता या श्वसुर से संबंध स्नेहपूर्ण नहीं रह पाते।

मंगल

मंगल पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक अपनी मां से द्वेष रखता है। उसके एक से अधिक पत्नियां होती हैं। उसकी पत्नी लालची एवं पति के विरुद्ध बर्ताव करनेवाली होती है। इस मंगल पर चंद्र या सूर्य की दृष्टि होने पर जातक एकांत में रहना पसंद करता है। उसके शत्रु बहुत ही कम रहते हैं। वह ललित कला प्रेमी, मितभाषी, ज्ञानी, गंभीर, आकर्षक एवं यशस्वी रहता है। बृहस्पति की दृष्टि मंगल पर होने से वह परिवार का हितचिंतक एवं कलाविद् होता है। 30 साल के बाद वह धनी बनता है। शुक्र की दृष्टि होने पर वह सेना, पुलिस डिपार्टमेंट या उत्पादक संस्था का प्रमुख तथा हथियार चलाने में पारंगत रहता है। मशीनरी या विस्फोटक सामग्री का नियंत्रक भी रह सकता है। मंगल पर शनि की दृष्टि हो तो जातक धनवान, संपत्तिवान, नौकर-चाकरों से युक्त, स्वस्थ होता है। वह अपने समाज का मुखिया तथा सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त रहता है। सरपंच या नेता भी रहता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक में नेतृत्व क्षमता रहती है। तर्क देने में प्रवीण, प्रख्यात वकील, मिलिटरी या पुलिस अधिकारी बनने के योग्य रहता है। मंगल 28 से 30 अंशों में हो तो ऐसा जातक सर्वोच्च शिखर पर पहुंचता है। गोचर मंगल या सूर्य वृषभ राशि में हो और मंगल या सूर्य की दशा-महादशा चल रही हो तो अपेक्षा से अधिक यश प्राप्त होता है। शनि की दृष्टि हो तो ऐसा जातक चरित्रहीन रहता है। उसके मित्र भी वैसे ही रहते हैं। जहरीले या मादक द्रव्यों के सेवन के कारण स्वास्थ्य बिगड़ता है। बचपन में मस्तिष्क ज्वर, मलेरिया या सिर पर चोट लगने की संभावना रहती है। ऐसा जातक स्टेनलेस स्टील, गंधक, माचिस, बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू या अन्य मादक वस्तुओं की खरीद-फरोख्त में धन कमा सकता है।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो सरकार से अधिक-से-अधिक लाभ मिलता है। उसकी आंखें लाल होती हैं। बचपन में सिर में घाव होता है। मानसिक भ्रम या सन्निपात भी हो सकता है। चरित्र संदेहयुक्त रहता है। अन्य ग्रहों से युक्त मंगल होने पर संतान सुख में बाधा उत्पन्न होती है। इंजीनियरिंग या तीक्ष्ण हथियारों के निर्माण से धन प्राप्त होता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो अधिकाधिक सरकारी लाभ प्राप्त होते हैं। जातक आभूषण एवं मूल्यवान वस्तुओं का संग्रह करता है। उसका व्यवसाय आरामदेह होता है। लोगों पर उसका दबदबा रहता है। सभी धर्मों में श्रद्धावान, तर्क-वितर्क में माहिर, वाद-विवाद में प्रवीण, जन्म से ही झगड़ालू होता है। जमीन-जायदाद, सट्टा, लाटरी के माध्यम से धन प्राप्त करता है।

चतुर्थ चरण में मंगल होने पर जातक का शरीर बहुत ही नाजुक रहता है। अपने जीवन में सुखी रहता है। अपने परिवार का जिम्मेदार सदस्य एवं मित्रों का हितैषी रहता है। बुखार, टाइफाइड, चेचक या अन्य संक्रामक रोगों से कष्ट पाता है। मंगल

के साथ चंद्र हो तो व्यापार से अर्थलाभ होता है। रासायनिक या विस्फोटक द्रव्य, गंधक, दवाइयों आदि से लाभ होता है। पिता के बाद व्यवसाय में अच्छा आर्थिक मुनाफा प्राप्त होता है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक धनहीन एवं किसी-न-किसी रोग से हमेशा पीड़ित रहता है। यदि चंद्र से दृष्ट बुध हो तो कड़े परिश्रम से धनवान बन सकता है। मंगल की दृष्टि हो तो नौकरी के समय में सरकार या मालिक का कोप सहन करना पड़ता है। बुरे कामों के कारण सबकी नजरों से उतर जाता है। रोगी शरीर एवं आर्थिक तंगी के कारण परेशान होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो नगरपालिका का अध्यक्ष, नेता या सेक्रेटरी बनता है। राजनीति में ऊंचा स्थान प्राप्त करता है। जातक के गुणों के कारण ही वह विद्वान कहलाता है। शुक्र की दृष्टि हो तो मूल्यवान कपड़ों का शौकीन रहता है। भोग-विलास की तीव्र इच्छा रहती है। सबका आकर्षण केंद्र बनता है। अपने व्यवसाय में वह सफलता प्राप्त करता है। दलित एवं शोषित समाज का हिमायती बनता है। शनि की दृष्टि होने पर जीवन दुरावस्था में कटता है। उसकी पत्नी और बच्चे साथ छोड़ देते हैं।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक सरकारी नौकरी करता है या फिर व्यापार करके सरकार से लाभान्वित होता है। आयु मध्यम रहती है। लोग उनकी प्रशंसा करते हैं। व्यापार के अलावा अभिनय, संगीत या साहित्य लेखन कार्य से भी धन प्राप्त होता है। बुध शनि या मंगल से दृष्ट हो तो जातक दुबला-पतला, सुरा-सुंदरी में लिप्त, संचित धन का नाश करनेवाला होता है। बुध सूर्य युक्त हो तो जातक उच्च श्रेणी का डॉक्टर या सर्जन बनता है।

द्वितीय चरण में बुध होने पर जातक सदा हंसमुख एवं प्रसन्न रहता है। एक से अधिक विवाह होते हैं। वह ऊंचे कद का एवं दीर्घायु रहता है। अच्छे व्यवसाय के कारण धनवानों में गिनती होती है। संतान से भी पर्याप्त सुख प्राप्त होता है। 40 साल के बाद शोहरत प्राप्त होती है। बुध के साथ बृहस्पति भी इस नक्षत्र में हो तो जातक उच्च श्रेणी का ज्योतिषी या तांत्रिक बनता है।

तृतीय चरण में बुध होने पर जातक व्यवहारशील, सत्ता सुख भोगनेवाला एवं आकर्षक व्यक्तित्व का रहता है। इस बुध के साथ शनि हो तो जातक वैज्ञानिक या बौद्धिक क्षेत्र में नाम कमाता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक व्यवसाय में सर्वोच्च स्थिति प्राप्त करता है। वह अपने कर्त्तव्य के प्रति ईमानदार एवं कर्मठ रहता है। उसके लड़के अधिक एवं लड़कियां कम रहती हैं। जीवन के उत्तरार्ध में स्वास्थ्य के लिए काफी धन खर्च करना पड़ता है। 60-62 साल की आयु रहती है किंतु जीवन में अच्छा नाम कमाता है। बुध के साथ बृहस्पति हो तो अपनी जाति का मुखिया रहता है। संस्था के सलाहकार के रूप में भी कार्यरत रहता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक युद्धकला में प्रवीण रहता है। लड़ाई में शरीर जख्मी होता है। नौकर-चाकर, वाहन एवं धन-धान्य से समृद्ध रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो सत्यवादी, आदरणीय एवं दयालु रहता है। माता-पिता से अच्छा सहयोग प्राप्त होता है। मंगल की दृष्टि हो तो संतान अच्छी रहती है। कला क्षेत्र में भाग्य का सितारा चमकता है। बुध की दृष्टि हो तो मंत्र सिद्धि प्राप्त होती है। इसकी विद्वत्ता से सभी प्रभावित होते हैं। जातक आकर्षक व्यक्तित्ववाला और विभिन्न कलाओं में निपुण रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक यश, धन, अलंकारों से युक्त सुखमय जीवन बिताता है। शनि की दृष्टि हो तो अपने गांव, शहर या प्रदेश का नेता बनता है। पत्नी एवं संतान सुख अच्छा मिलता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक ज्ञानपिपासु रहता है। वह श्रेष्ठ धर्मात्मा, भक्त, उपदेशक या पुजारी बनता है। कुछ जातक पैतृक संपत्ति प्राप्त करते हैं। जुआ, सट्टा एवं योग्य संतान द्वारा भी धनलाभ होता है। जीवन धन-ऐश्वर्य से संपन्न रहता है। जातक सदैव प्रयत्नशील, सुरा-सुंदरी का शौकीन एवं ऐतिहासिक साहित्य में रुचि रखनेवाला होता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति होने पर जातक मातृभक्त, हृष्ट-पुष्ट किंतु वेश्यागामी रहता है। धार्मिक संस्थाओं के माध्यम से वह शोहरत हासिल करता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति होने पर जातक उच्चाधिकारी बनता है। आकर्षक व्यक्तित्व का धनी, समाज के स्नेह एवं सौहार्द से परिपूर्ण किंतु निर्धन रहता है। दूसरों के लिए कानून की परवाह न करते हुए काम करता है। स्वयं के लिए कानूनी दायरे में रहता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक प्रामाणिक, व्यवहारशील, उच्च शिक्षित, कमाऊ पत्नी से युक्त, ननिहाल से धन पानेवाला रहता है। 27वें वर्ष में विवाह होता है।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक भाग्यशाली एवं महिला वर्ग में लोकप्रिय होता है। उसके पास आधुनिक वाहन एवं भरपूर धन-संपदा रहती है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक भोगविलासी रहता है। इसी कारण उसे व्यवसाय में घाटा उठाना पड़ता है। मृदुभाषी एवं परिवार में प्रिय रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जीवन में सुख-शांति का अभाव रहता है। अवांछित कार्यों से भी पैसा प्राप्त होता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक व्यवहारकुशल, साहसी एवं उत्तम व्यक्तित्व का होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो अच्छी पत्नी, उत्तम संतान एवं रिश्तेदारों से सुख प्राप्त होता है। वह भरपूर संपत्ति से युक्त रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक शरीर से कमजोर, परिवार की प्रतिष्ठा को दाग लगानेवाला, दरिद्री एवं सामान्य रहता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो पुरुष स्त्री जैसा बर्ताव करता है और स्त्री पुरुष

जैसा। उसका शरीर भी पुरुषों जैसा हृष्ट-पुष्ट रहता है। उसे रतौंधी का रोग होता है और वैवाहिक जीवन में कटुता एवं दुख रहता है। ऐसा जातक नौकायन, जहाज या जलसेना में उच्च पद पर कार्यरत रहता है। सूर्य की दृष्टि हो तो विवाह कम आयु में होता है। वसीयतनामे से संपत्ति प्राप्त होती है। स्त्री जातक की कुंडली में इस शुक्र पर चंद्र की दृष्टि हो तो अधिक संतान होकर भी उसमें से एकाध ही जीवित रहती है। बुध की दृष्टि हो तो भाई-बहनों से स्नेह न रहकर द्वेषभाव रहता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक जलसेना, समुद्र या जलविभाग में नौकरी करता है। स्त्री की जन्मकुंडली में शुक्र पर चंद्र की दृष्टि हो तो उस स्त्री का शरीर स्वस्थ नहीं रहता। संतान होकर भी वह संतान सुख से वंचित ही रहती है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक उदार रहता है। एक से अधिक पत्नियां रहती हैं। जातक शिक्षित हो तो अध्यापक या बैंक अधिकारी रहता है। कम शिक्षित होने पर कपड़ा या सौंदर्य प्रसाधनों का व्यापार करता है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक अभिनय या संगीत के माध्यम से धन कमाता है। वसीयत या अन्य मार्गों से भी उसे धन लाभ होता है। पत्नी नौकरी करके धन कमाती है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक चतुर वक्ता रहता है। जीवन में संतुष्टि रहती है। चंद्र की दृष्टि हो तो शासन एवं सत्ता से लाभान्वित रहता है। संभ्रांत महिलाओं के संपर्क में रहकर उनके साथ लेन-देन का व्यवहार करता है। मंगल की दृष्टि हो तो हंसमुख किंतु वाचाल रहता है। बुध की दृष्टि हो तो स्त्री वर्ग में अधिक रमण करता है। अपने फायदे के लिए बुरे आदमियों से सांठगांठ करता है। देशद्रोही, असामाजिक एवं नपुंसकों से सूद खाता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो ऐसे जातक का काफी समय दूसरों की सहायता करने में व्यतीत होता है। राजनीति एवं चुनाव के समय उसे व्यापक समर्थन प्राप्त होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जीवन में उसकी जरूरतें अधिक रहती हैं। अधिक शराब पीनेवाले ऐसे जातक का शासन तंत्र से मेलजोल बना रहता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक आलसी एवं अपने पिता से द्वेषभाव रखता है। बचपन संघर्ष में गुजरता है, बाद में स्थिति में सुधार आता है। मध्यम कदकाठी, रंग काला और आर्थिक स्थिति मध्यम रहती है। कुछ जातकों का स्वभाव पूर्वाग्रह से ग्रसित एवं क्रोधी होता है। जातक महत्त्वाकांक्षी एवं बड़े-बड़े कार्य निपटानेवाला परंतु कठोर हृदयी होता है। उसे अजीर्ण की शिकायत रहती है तथा दांत खराब रहते हैं।

द्वितीय चरण में शनि हो तो उसे उससे अधिक आयु की पत्नी से विवाह करना पड़ता है। विवाह के बाद भी अन्य स्त्रियों से संबंध रहते हैं। वह अशांत जीवन गुजारता है। उसका वैवाहिक जीवन भी दुखमय रहता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक कृषि कार्यों से आजीविका चलाता है। स्त्री जातक हो और शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो उसका विवाह नहीं होता या दुर्भाग्यवश वैधव्य भोगना पड़ता है। शनि पर बुध की दृष्टि हो तो जातक नपुंसक या अल्प कामेच्छावाला रहता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो और उस पर चंद्र की दृष्टि हो तो स्त्री बदसूरत एवं चरित्रहीन रहती है। अनियमित आहार-विहार के कारण स्वास्थ्य बार-बार बिगड़ता है। पुरुष की जन्मकुंडली में ऐसे शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक दुर्जन एवं बदसूरत होता है। किंतु चंद्र की दृष्टि हो तो महिला वस्त्रों के व्यापार से काफी धन प्राप्त होता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक के विवाहेत्तर अन्यत्र संबंध रहते हैं। उसके चेहरे पर काला तिल होता है। अत्यधिक कामुक पर स्वास्थ्य अच्छा रहता है। जातक विद्वान, पितृभक्त एवं अपने मालिक से लाभान्वित रहता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक आध्यात्मिक किंतु संतान आर्थिक लाभ से वंचित, एक से अधिक विवाह करनेवाला एवं प्रवासी रहता है। परदेस में दयनीय स्थिति रहती है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक की वाणी में दोष रहता है। वह अच्छा या बुरा कोई भी काम करने के अयोग्य रहता है। आर्थिक दृष्टि से बहुत ही गरीब, मांस-मछली आदि बेचकर निर्वाह करता है।

चतुर्थ चरण में राहु होने पर जातक अपने परिवार से विरक्त रहता है। विवाह होकर भी वह अपनी जिम्मेदारियों को नहीं निभाता। सब कुछ भगवान के भरोसे छोड़कर तीर्थयात्रा करने निकल पड़ता है। अपने पूर्वजों की दौलत को उड़ानेवाला एवं युवावस्था में काफी धन जोड़नेवाला तथा बाद में खर्च करके खाली हाथ रहनेवाला होता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक के सामने बाधाएं उपस्थित होती हैं। हर काम में निराशा ही हाथ आती है। पेट के रोग और अनेक गुप्त रोगों से ग्रस्त रहता है। मौसम विभाग, रसायन, खदानों में तकनीकी या इंजीनियरिंग विभाग में कार्य करता है। आयु केवल 40-50 वर्ष की होती है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक को अपनों से दूर रहना पड़ता है। दरिद्री होते हुए भी सुरा-सुंदरियों के जाल में फंसता है। लोगों की प्रताड़ना को सहन करता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक सट्टेबाजी में बड़ा नुकसान उठानेवाला, शासन से संबंधित लोगों से अनुदान प्राप्त करनेवाला, निम्न श्रेणी के लोगों में उठने-बैठनेवाला होता है। उसे अनौरस (अवैध) संतान रहती है। परिवार से

तिरस्कृत रहता है। बाहर के लोगों से समय-समय पर सहयोग प्राप्त होता है।

चतुर्थ चरण में केतु होने पर जातक के उद्यम में बार-बार व्यवधान आता है। बड़े लोगों से झगड़े होते हैं। वैवाहिक जीवन में भी संघर्ष रहता है। विवाह विलंब से करने पर वैवाहिक जीवन में सुख प्राप्त हो सकता है और जीवन विलासपूर्ण बनता है।

हर्षल-नेपच्यून

कृतिका नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हों तो जातक दुर्घटना में फंसनेवाला, संकटग्रस्त, दुखी एवं तामसी रहता है।

प्लूटो

कृतिका नक्षत्र में प्लूटो होने पर जातक उष्ण प्रकृति का, दांत एवं नाक से लहू बहने के रोग से ग्रस्त, तामसी स्वभाव का, अल्पबुद्धि, कठोर, घमंडी, उपद्रवी, नीच मनोवृत्ति का, साहसी, ठंडे पदार्थों का शौकीन रहता है। उसके सिर पर व्रण होता है। बवासीर का कष्ट रहता है। शल्यक्रिया या अग्नि भय रहता है। इसी नक्षत्र-चरण में मंगल, शनि एवं राहु हो तो शरीर की दुर्गति होती है।

कृतिका नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष मृगशिरा, आर्द्रा, मूल, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रों में जन्मे व्यक्तियों के साथ लेनदेन, मैत्री, विवाह तथा साझेदारी न करें।

□□

रोहिणी (4) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक स्त्रियों की सेवा करने में तत्पर रहता है। स्त्री-सेवा से वह आर्थिक दृष्टि से भी लाभ कमाता है। यातायात का कामकाज एवं जल से संबंधित कार्यों से भी जातक धन प्राप्त करता है। इस सूर्य पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक युद्धकला में पारंगत, धन- प्रतिष्ठायुक्त रहता है। बुध की दृष्टि हो तो ललित कलाओं के माध्यम से धन कमाता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो समाज का अगुवा बनता है एवं सत्ताधारी पक्ष से लाभान्वित रहता है। लोगों से सम्मान व प्रसिद्धि पाता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक सुंदर, आकर्षक, मधुरभाषी, सुंदर आंखोंवाला, योग्य रहता है। उसके मित्र एवं शत्रु समान संख्या में रहते हैं। शनि की दृष्टि हो तो शरीर से कमजोर, आर्थिक अड़चनों में उदर निर्वाह करनेवाला, दरिद्र तथा अपनी पत्नी से द्वेषभाव रखनेवाला रहता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक चालाक एवं अक्लमंद होता है। अपने पहनावे का ध्यान रखता है। पशुधन—हाथी-घोड़े, भेड़-बकरियों आदि से लाभ प्राप्त होता है। वह समाजसेवी एवं गुप्त रोग से पीड़ित रहता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक प्रभावी एवं आनंदमयी व्यक्तित्व का रहता है। वह तरल पदार्थ, घी, तेल का व्यापार करता है। वह अपने घर से दूर किसी भी नदी में स्नान नहीं करता। मूर्च्छा आना, पित्त बढ़ना, सिरदर्द आदि रोगों का भी शिकार बन सकता है। ऐसा जातक कभी गहरे पानी, नदी, तालाब या समुद्र में तैरने का प्रयत्न न करे। मंगल इस नक्षत्र में हो तो सेना या पुलिस अधिकारी या जनसंपर्क अधिकारी बनता है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक जनहित के कार्य करते हुए उन्हीं कार्यों से लाभ अर्जित करता है। हिचकियां लगने का रोग उसे हो सकता है। स्त्रियां अनियमित मासिक धर्म की शिकायत से ग्रस्त रहती हैं। पानी से भय रहता है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक सरकारी नौकरी करता है। यात्राएं काफी करनी पड़ती हैं। जातक पत्नीभक्त होता है। पुरुष स्त्री को हाथ का खिलौना समझता है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो ऐसा जातक कृषि विषयक कार्यों, जादू-टोना एवं रहस्यपूर्ण ज्ञान के माध्यम से धन कमाता है। मंगल की दृष्टि हो तो विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण परंतु आचरण श्रेष्ठ रहता है। वह कुटुंब का प्रिय रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक कई विषयों की सामान्य जानकारी रखता है। विद्वान होता है, जीवन के मध्यकाल में आजीविका प्राप्त होती है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक धार्मिक वृत्ति का और मातृ-पितृभक्त रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो पालतू जानवरों से, अलंकार, वाहन, मकान आदि का सुख प्राप्त करता है। शनि की दृष्टि हो तो बचपन में ही वियोग होता है। पिता से विशेष लाभ प्राप्त नहीं होता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक हंसमुख, मधुरभाषी, सद्गुणी एवं मेहनती होता है। डेयरी उद्योग, गुड़-शक्कर, घी-तेल इत्यादि वस्तुओं के व्यापार से धन कमाता है। भाई-बहनों से आत्मीयता रहती है। कान, नाक एवं दांतों के विकारों से ग्रस्त रहता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक संगीत एवं ललित कलाओं में विशेष रुचि रखता है। होटल, रेस्टोरेंट, डाइनिंग हॉल, गेस्टहाउस एवं पर्यटन सेवा से पर्याप्त धन कमाता है। शिक्षा में बाधा आती है। मकान बार-बार बदलना पड़ता है। ऐसी स्त्रियां जोखिम लेने में आगे रहती हैं तथा वे सट्टा, जुआ आदि की ओर प्रवृत्त होती हैं। पुरुष जातक के अधिक पुत्र एवं स्त्री जातक को अधिक कन्याएं होती हैं।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक सुखी जीवन जीता है। उसका व्यवसाय महिलाओं से संबंधित रहता है। जल या अन्य तरल पदार्थों के व्यवसाय में पर्याप्त धन प्राप्त होता है। आकर्षक व्यक्तित्व, अद्भुत स्मरणशक्ति एवं बुद्धि स्थिर रहती है। जातक अक्सर गले व आंखों की बीमारियों से पीड़ित रहता है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक रत्नाभूषण एवं सर्राफा व्यवसाय से धन कमाता है। कुछ जातक डेयरी उद्योग, आटे की चक्की, अस्पताल, धर्मशाला इत्यादि सेवा कार्यों से भी अपनी जीविका चलाते हैं। ऐसी स्त्री के पास आभूषण एवं वस्त्रों का भंडार रहता है। कई स्त्रियां उच्च श्रेणी के वाहन एवं नौकर-चाकरों से युक्त रहती हैं। उन्हें मासिक धर्म, हाथ-पैरों का दर्द एवं सिरदर्द का कष्ट रहता है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक जंगल या पर्वतीय प्रदेश में निवास करता है। अपने परिवार एवं पत्नी को पूर्ण सुख देने में असमर्थ रहता है, चंद्र की दृष्टि हो तो मातृ विरोधी होता है। उसकी मित्रता निम्न श्रेणी की स्त्रियों से रहती है। बुध की दृष्टि होने पर जातक विद्वान एवं धार्मिक वृत्ति का होता है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक किंतु स्वभाव से क्रोधी रहता है। बृहस्पति की दृष्टि होने पर जातक अपने नजदीकी रिश्तेदारों के पास रहता है एवं उन्हें आर्थिक सहयोग देता है। शुक्र की

दृष्टि हो तो राजनीतिक पद प्राप्त होता है, चारों तरफ शोहरत होती है। शनि की दृष्टि हो तो निर्मल हृदय एवं विद्वता सराहनीय रहती है। नगरपालिका जैसी सार्वजनिक संस्थाओं का अध्यक्ष रहता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक वाद्ययंत्रों का शौकीन रहता है। समुद्री या हवाई यातायात से संबंधित रहता है। उसे टॉन्सिल्स एवं ग्रंथि विकार होते हैं।

द्वितीय चरण में मंगल हो और सूर्य का संयोग इस मंगल से बनता हो तो जातक सेना विभाग में नौकरी या ठेकेदारी का काम करता है। ऐसा जातक सनकी एवं बेवकूफ रहता है। उसे नाक एवं कान की बीमारी कष्ट पहुंचाती है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक धैर्यशील एवं विद्वानों से सम्मानित, संतान मृत्यु के दुख एवं पत्नी के कारण परेशान रहता है। शरीर की पेशियों का सुन्न होना तथा गले के विकार से पीड़ित रहता है।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक अस्थिर वृत्ति का, धनी एवं सुरा-सुंदरी के लिए पैसा खर्च करनेवाला, गैरकानूनी व्यक्तियों के संपर्क में रहनेवाला होता है। वह सरकारी नौकरी करता हो तो गैरकानूनी मार्गों से अवांछित संपत्ति इकट्ठा करता है। मादक वस्तुओं का व्यापार करनेवाला एवं तस्कर रहता है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक दुर्बल और धनहीन होता है, पर दूसरों की मदद करने में रुचि रखता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक परिश्रमी, धनी एवं राजसत्ता से लाभान्वित रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो धनवानों से धन प्राप्त करता है, पर शनि की दशा-अंतर्दशा में अशुभ फल भोगने पड़ते हैं। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक महाविद्वान, ऐश्वर्यवान एवं शहर का प्रमुख बनता है। शुक्र की दृष्टि हो तो फैशनेबल वस्त्र धारण करता है। दिखावा करने की आदत रहती है। विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण रहता है। शनि की दृष्टि हो तो मानसिक परेशानियां रहती हैं। घर एवं बाहर के लोगों से अपमानित होना पड़ता है। पत्नी भी आदर नहीं करती।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक अक्लमंद, मधुरभाषी होता है। लेखन एवं पारमार्थिक वृत्ति के माध्यम से अपार धन कमाता है। उसकी पत्नी खूबसूरत एवं मधुर व्यवहार करनेवाली होती है। आवेश में आने पर वाणी लड़खड़ा जाती है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक वेदशास्त्र का व्याख्याता, प्रसिद्ध, ख्यातिप्राप्त एवं राजनीतिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण सहभागिता रखनेवाला रहता है। भाई-बहनों से निराश होना पड़ता है। धातुरोग एवं गुदाद्वार के रोगों से ग्रस्त रहता है।

तृतीय चरण में बुध होने पर जातक इच्छाशक्ति का धनी, भोगविलास में मग्न, मध्यम श्रेणी का धनी एवं विवादपूर्ण अनैतिक आचरणवाला रहता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो दूर के रिश्तेदार से लाभ प्राप्त होता है। शत्रु द्वारा शारीरिक हानि होती है। एक बहन का दुख भोगना पड़ता है। शनि की दृष्टि बुध पर

हो तो जातक बदसूरत, रोगी एवं दंतविहीन रहता है। मानसिक अशांति एवं पागलपन का कष्ट रहता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक नौसेना या थल सेना में सेनापति जैसे पद पर कार्यरत रहता है। सरकार से उसे सम्मान प्राप्त होता है। शत्रु के आक्रमण के समय शारीरिक हानि होती है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक दूसरों की मदद करनेवाला एवं भाग्यवान रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक उत्तम संतान एवं सुंदर पत्नी से युक्त रहता है। बुध की दृष्टि हो तो राजनीति में सक्रिय हिस्सा लेता है और काफी धन कमाता है। कला एवं संस्कृति के विकास में योगदान देता है तथा आकर्षक रूप-रंग का रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो व्यापार करके धनी बनता है। गरीब जनता की सेवा करता है, भाग्यवान रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक पैदाइशी धनवान रहता है। मंत्री या राजकीय नेता तथा सामाजिक संगठनों का मुखिया बनता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक दर्शनशास्त्र एवं पौराणिक विषयों में रुचि रखता है, सत्यवादी एवं अच्छी संगति में रहनेवाला होता है। उसमें नेतृत्व के गुण विद्यमान रहते हैं। महिला वर्ग में प्रिय रहता है। रक्तसंबंधी व अस्थमा जैसे रोग भी होते हैं। धनसंपदा, संतान सुख पर्याप्त पाता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक धार्मिक वृत्ति का, पितृभक्त रहता है। सत्याचरणी होने के कारण मान प्राप्त करता है। आचरण से पवित्र परंतु एक से अधिक पत्नियां रहती हैं। गले की बीमारियां, खांसी, जुकाम का कष्ट हमेशा रहता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक धूर्त, लंपट, अनैतिक कार्य करनेवाला, बहिष्कार के योग्य रहता है। पैसे के बलबूते पर चाहे जो कर सकता है। पैसों का घमंड रहता है। उसे संसर्गजन्य रोग या कैंसर, एड्स की बीमारी रहती है। उसकी आयु 50 या 55 वर्ष की होती है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक विदशों का भ्रमण करनेवाला एवं वहीं धन कमानेवाला होता है। 32वें वर्ष तक अधिक परेशानी रहती है। उसके बाद किसी उदार हृदय व्यक्ति की सहायता से धनी बनकर जीवन की सभी खुशियां हासिल करता है। 40 वर्ष की अवस्था में कोई दुर्घटना घटती है।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक महिला के उपयोग में आनेवाली वस्तुओं के व्यापार से धन कमाता है। वह जमीन-जायदाद, वाहन, नौकरों के सुख से परिपूर्ण रहता है किंतु वैवाहिक जीवन दुखमय रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक रत्नाभूषणों के व्यापार से धन कमाता है। भोगविलास में मग्न किंतु परिवार का

उद्धारकर्ता होता है। मंगल की दृष्टि होने पर क्रूर एवं बुरे मार्गों से पैसा कमाता है। बुध की दृष्टि हो तो उसका व्यक्तित्व आकर्षक होता है। स्वभाव से वह शांत एवं व्यापार में यश कमानेवाला होता है। बृहस्पति की दृष्टि होने पर वाहन सुख प्राप्त होता है। जमीन-जायदाद भी रहती है। एक से अधिक विवाह होते हैं। संतान कार्यकुशल रहती है। जातक कुशल प्रशासक रहता है। शनि की दृष्टि हो तो गरीब लोगों से त्रस्त अपनी इज्जत-आबरू नष्ट करनेवाला होता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक धनसंपत्ति, वाहन, जायदादवाला होता है। 35वें वर्ष तक पारिवारिक जीवन दुखी रहता है। उसके बाद पत्नी से तलाक होकर मानसिक तनाव रहता है। उसके बाद जीवन में स्थिरता आती है। जातक आकर्षक परंतु गंभीर रोगी होता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक खिलाड़ी, ललित कलाओं में रुचि रखनेवाला, संगीतज्ञ, नाटककार, टी.वी., सिनेमा में काम करनेवाला होता है। गरदन एवं हाथ-पैरों पर सूजन रहती है। वैवाहिक जीवन संतुलित एवं सुखी रहता है। एक लड़का एवं एक लड़की रहती है। महिला जातक को गर्भपात की बीमारी रहती है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक भोगविलास एवं अनैतिक कार्यों में मग्न रहता है। बुरे आचरण की स्त्रियां उसे 'ब्लैकमेल' करती हैं। इससे उसे बदनामी एवं आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। 30 से 35 वर्ष के मध्य जातक आचरण पर ध्यान न रखे तो किसी भयंकर असामान्य बीमारी से ग्रस्त हो सकता है। नौकर-चाकर एवं अस्पृश्यों के साथ अनैतिक संबंध रहते हैं।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक की कद छोटा किंतु शरीर भारी होता है। उसका विवाह अतिसुंदर स्त्री से होता है। उससे जीवनभर धन प्राप्त होता है। गलगंड, गंडमाला की बीमारी रहती है। शरीर आड़ा-टेढ़ा रहता है। ऐसी महिलाओं को धनी एवं प्रभावशाली पति प्राप्त होता है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक दूसरों के पैसों से अपनी आजीविका चलाता है। चंद्र की दृष्टि हो तो स्वास्थ्य सुदृढ़ रहता है और वह सरकारी महकमे मध्यम श्रेणी के अधिकारी के रूप में नौकरी करता है। मंगल की दृष्टि हो तो व्यर्थ बकवास करनेवाला, परंतु हंसमुख रहता है। बुध की दृष्टि हो तो बुरे लोगों की संगत में रहनेवाला एवं क्रोधी रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो दयालु, रोगियों की सेवा-सुश्रुषा करनेवाला, समाजसेवक रहता है। कड़ा परिश्रमी एवं उच्च पदस्थ अधिकारी रहता है। शुक्र की दृष्टि होने पर सोना-चांदी के व्यापार से धन कमानेवाला होता है।

प्रथम चरण में हो तो जातक धार्मिक कार्यों में मग्न पर जुए सट्टे का शौकीन रहता है। तरुणावस्था में काफी धन खर्च कर लेता है। 45वें वर्ष के बाद जीवन सुखी बनता है। आहार-विहार पर नियंत्रण न रखने से क्षय या कैंसर रोग हो सकता

है। असमय दांत गिर जाते हैं।

द्वितीय चरण में हो तो जातक का व्यक्तित्व आकर्षक एवं वाणी मधुर रहती है। वह विद्वान भी रहता है। गले या रक्त से संबंधित विकारों से त्रस्त रहता है। पेट पर शल्यक्रिया होती है। सिर पर बाल नहीं रहते।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक छोटी आयु में काफी ज्ञानी होता है। भाषाशास्त्र या शास्त्रों की चर्चा के कारण धन एवं यश प्राप्त करता है। शोधकार्य में शोहरत प्राप्त होती है। मधुरभाषी और बुद्धिमान परंतु दंतरोग एवं सर्दी-जुकाम से परेशान रहता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक मशीनरी एवं पशुधन के व्यवसाय से धन कमाता है। वेशभूषा आकर्षक रहती है। अपने काम में लापरवाह रहता है। राजनीति में सत्ता तक पहुंच जाता है। अपने पैसे के बलबूते पर राजनीति में प्रवेश करता है। 50वें वर्ष के बाद विधायक या मंत्री बनता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तरार्ध में परेशान रहना पड़ता है। आंखों की बीमारियां, गले एवं वायुविकार, लकवा, बहरापन आदि होते हैं।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक दुबला-पतला, धैर्यशील, दबंग, अच्छी खुराक लेनेवाला रहता है। वायु विकार व अपचन की परेशानी रहती है, आंखें कमजोर रहती हैं। दीर्घायु रहता है। जन्मकुंडली में लग्न भी इसी चरण में हो तो कदम-कदम पर राहु उसकी सुरक्षा करता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक दृढ़ इच्छाशक्ति से युक्त, व्यापार में अच्छी कमाई करनेवाला, प्रतिष्ठा एवं यश दोनों प्राप्त करनेवाला होता है। वह धैर्यशील, दबंग, अच्छी खुराक लेनेवाला तथा वायुविकार एवं अपचन से परेशान रहता है। आंखें कमजोर रहती हैं।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक को दूसरों का आश्रित बनकर निर्वाह करना पड़ता है। वह दीन, हीन, अल्प बुद्धिमान रहता है। 65 वर्ष की आयु होती है। दुर्घटना, रक्तविकार, मधुमेह से मृत्यु होती है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक प्रवास में सावधान रहे। कविता, शायरी, लोकगीत लिखने का शौक रहता है। आजीविका बौद्धिक कार्यों के माध्यम से होती है। अल्पबुद्धि एवं कम शिक्षित होने पर भी जातक विद्वान माना जाता है। मेहनत काफी करता है, पर उसका फल विलंब से पाता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक जन्म स्थान से दूर रहकर निर्वाह करता है। कभी-कभी रोटी के लिए दूसरों पर निर्भर रहता है या दान में मिला अन्न ग्रहण करता है। कुछ जातक 65 वर्ष में ही चल बसते हैं। जातक बहरा एवं अंधा भी हो सकता है।

द्वितीय चरण में केतु होने पर जातक अल्पायु जीवन जीता है। बृहस्पति की दृष्टि मीन या चंद्र पर हो तो आयु 20-25 वर्ष ही रहती है। उसका शरीर और आंखें बचपन में कमजोर रहती हैं। जातक कोढ़ी, लंगड़ा या अपंग भी हो सकता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक प्राध्यापक, पुजारी या पंडित बनता है। उसका परिवार बड़ा रहता है। 30वें वर्ष तक उसका जीवन सुखी रहता है, बाद में संघर्ष शुरू होता है। पत्नी से कष्ट पाता है। उसे असाध्य रोगों की शिकायत रहती है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक वेदशास्त्रों का जानकार एवं तर्कशास्त्र में पारंगत रहता है। तंत्र-मंत्र में भी रुचि रखता है। आयुर्वेद या पारंपारिक चिकित्सा क्षेत्र में नाम कमाता है। वाणीदोष, बहरापन या दृष्टिहीनता जैसे दोष जातक में पाए जाते हैं।

हर्षल-नेपच्यून

रोहिणी नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हो तो जातक विलक्षण बुद्धिमान, अलग-अलग प्रकार के शोध करनेवाला गूढ़शास्त्रों का रहस्य प्रकट करनेवाला, मिलनसार, हमेशा कार्यमग्न व प्रगति करनेवाला होता है।

प्लूटो

रोहिणी नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक सुंदर, प्रेमी, बुद्धिमान, विलासी, सुदृढ़ शरीरवाला, मन का साफ एवं स्त्रियों का चहेता रहता है। अपने नाम को रोशन करनेवाला व परिवार के लोगों से स्नेह रखनेवाला रहता है। इस नक्षत्र में शुभ चंद्र हो तो स्त्रियां खूबसूरत होती हैं।

रोहिणी नक्षत्र में जन्मे जातक आर्द्रा, पुष्य, मघा, स्वाति, मूल, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मे जातकों के साथ साझेदारी, मैत्री, लेनदेन या विवाह न करें।

❑❑

मृगशिरा (5) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक जल से संबंधित वस्तुओं के व्यापार से धन कमाता है। उस पर परिवार की स्त्रियां निर्भर रहती हैं। सूर्य पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक बलवान रहता है। अपनी शारीरिक शक्ति के बल पर वह पैसा कमाता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक खूबसूरत, बुद्धिमान, लेखक या पत्रकार बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो शासन एवं सत्ता के संपर्क में रहता है और लाभान्वित होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो पत्नी नौकरी या व्यवसाय करती है। जातक स्वयं राजनीति में रहता है। शनि की दृष्टि होने पर महाकंजूस एवं स्वयं से बड़ी आयु की स्त्री के साथ विवाह होता है। संतान अल्प रहती है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक सुगंधित फूलों का शौकीन, भाग्यवान, बुद्धिमान एवं आकर्षक व्यक्तित्व से युक्त रहता है। उसके लड़के कम होते हैं। उसको गले, चेहरे या आंखों से संबंधित रोग रहते हैं।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक साफ-सुथरे कपड़े पहननेवाला, तेजस्वी चेहरे एवं आकर्षक व्यक्तित्व का होता है। संगीत में रुचि रखता है। पानी से भय रहता है। 25वें वर्ष में विवाह होता है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक का आर्थिक क्षेत्र से संबंध रहता है। अपनी बौद्धिक क्षमता के कारण सार्वजनिक क्षेत्र में ऊंचे ओहदे पर पहुंचता है। उसका एक लड़का वैज्ञानिक क्षेत्र में शोध के कार्य में नाम कमाता है। नाक एवं दंतरोग बीच-बीच में कष्ट देते रहते हैं।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक लोकहित के काम करता है। बुध एवं चंद्र भी इसी नक्षत्र में हों तो जातक महाविद्वान, ओजस्वी वक्ता एवं धुरंधर ज्योतिषी बनता है। ऐसे जातक को गले के विकार एवं टॉन्सिल्स का कष्ट रहता है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक ग्रामीण क्षेत्र में रहकर जमींदार, धनवान एवं सूदखोर बनता है। चंद्र पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक अपनी रखैल के लिए पत्नी का त्याग करता है। मां से क्रूर बर्ताव रखता है। बुध की दृष्टि हो तो अपनी

जात-बिरादरी में विवाह होता है। संतान और संपत्ति के कारण वह प्रख्यात होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो मातृपक्ष से धनप्राप्ति होती है। जीवन सुखी रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक धनहीन एवं माता के लिए घातक रहता है किंतु संतान आज्ञाकारी रहती है।

प्रथम चरण में जातक प्रसिद्ध विद्वान एवं कन्या संतान से युक्त रहता है। उसकी पत्नी सुंदर, अच्छे चरित्र की, राजनीति या सामाजिक कार्य से संबंधित रहती है। उससे आर्थिक सहयोग प्राप्त होता है। जातक की आंखें कमजोर एवं जोड़ों में दर्द रहता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो एवं लग्न भी इसी नक्षत्र-चरण में हो तो जातक अच्छे घराने में जन्मा सभ्य रहता है। उसका विवाह कम आयु में होता है। वैवाहिक जीवन सुखमय रहता है। उत्तरार्ध में अस्थमा, क्षय, फेफड़ों से संबंधित रोग एवं हृदय रोग का कष्ट रहता है।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो ऐसा जातक प्रसिद्ध एवं ख्यातिप्राप्त रहता है। आमदनी संतोषजनक रहती है। बचपन में कष्ट सहने पड़ते हैं। मां की ममता से वंचित रहता है। तम्बाकू खाने के कारण कैंसर होने की संभावना रहती है। पीठ पर कोई चिह्न होता है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो प्रसाधन या रसायन का व्यापार करता है। वैद्यकीय चिकित्सा के क्षेत्र में काफी धन कमाता है। पुरुष जातकों को प्लूरिसी एवं स्त्रियों को मासिक धर्म के विकारों की शिकायत रहती है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक धर्मशील एवं जंगल निवासी होता है। स्त्रियों से नफरत करता है। चंद्र की दृष्टि हो तो मां का आदर करता है किंतु वेश्यागामी होता है। अनेक संकटों से जूझना पड़ता है। बुध की दृष्टि हो तो गाने-बजाने का शौकीन रहता है, मित्रों का प्रेमी रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो उच्च दर्जे का राजकीय पद प्राप्त होता है। सेना या पुलिस में अधिकारी रहता है। शनि की दृष्टि हो तो गुंडा, बदमाश रहता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक कुशल वक्ता रहता है। रुपये-पैसों का हमेशा अभाव रहता है। चहेते लोगों की जिम्मेदारियां निभाता है। जातक स्वयं अल्पायु होता है। अल्प समय में अपनी पत्नी गंवा बैठता है। लग्न विशाखा नक्षत्र में हो तो जातक संतानहीन रहता है। उसे तीव्र ज्वर, टॉन्सिल्स, स्राव एवं ग्रंथिविकार होते हैं।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक अपने परिवार के लिए घातक सिद्ध होता है। उसके दुष्कर्मों के कारण परिवार बदनाम होता है। कुछ असाध्य रोगों के अलावा अल्सर, वातरोग, हड्डियां एवं कमरदर्द रहता है।

तृतीय चरण में मंगल एवं लग्न हो तो जातक का जन्म गरीब परिवार में होता है।

चेहरे पर दाग रहते हैं। व्यवसाय में चतुर रहता है लेकिन बार-बार बीमार पड़ता है।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक पैतृक दुखों से पीड़ित रहता है। पत्नी की बीमारी के कारण वैवाहिक जीवन में न्यूनता रहती है। गले संबंधी तथा अन्य विविध रोग होते हैं।

बुध

बुध पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। वह दानकर्ता, सम्मानित एवं परिवार का गुजारा आसानी से करता है। सूर्य की दृष्टि हो तो जातक उच्च शिक्षा प्राप्त, अध्ययन-अध्यापन एवं सरकारी नौकरी करनेवाला रहता है। मंगल की दृष्टि होने पर क्रोधी एवं झगड़ालू रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो दृढ़ प्रतिज्ञ, निष्ठावान और विद्वानों का अगुवा रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक सभी प्रकार के सुख प्राप्त करता है। वह व्यवसायकुशल, भाग्यवान एवं धनी रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक आर्थिक दृष्टि से दुर्बल रहता है। कदम-कदम पर उसे संकटों का सामना करना पड़ता है। इष्ट मित्रों के कारण भी अड़चनों में फंसता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक पवित्र आचरण का, विद्वान एवं धनवान रहता है। जीवन के उत्तरार्ध में मानसिक असंतुलन की बीमारी से वह भुलक्कड़ बनता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक निम्न श्रेणी के कामकाज से धन कमाता है। दूसरों का धन एवं वैभव देखकर उसे जलन होती है। जातक के कई लड़के एवं एक ही लड़की रहती है। गले के अवरोध, दांतों के रोग, सर्दी, जुकाम-खांसी से पीड़ित रहता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक बुद्धिमान, धैर्यशील एवं आशावादी रहता है। वह स्त्री प्रेमी और एक से अधिक विवाह करनेवाला होता है। वाणी में दोष रहता है। फेफड़े खराब होने से क्षयरोग की संभावना रहती है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक भाग्यवान, धार्मिक, मध्यम शिक्षित किंतु परिश्रम से यशस्वी बनता है। ऑडिटर, चार्टर्ड एकाउंटेंट या नौकर-चाकरों से युक्त उच्चाधिकारी रहता है। मानसिक असंतुलन, बोलने में हड़बड़ी तथा शारीरिक दोष के कारण बीमार रहता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक धनसंपदा, जमीन-जायदाद, पद-प्रतिष्ठा एवं नौकर-चाकरों से युक्त रहता है। वह उच्चाधिकारी एवं राजसत्ता के निकट संपर्क में रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक करोड़पति, संपत्तिवान, भोगविलासी, पैसा उड़ानेवाला होता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक भाग्यवान, धैर्यवान, विद्वान किंतु पारिवारिक दृष्टि से त्रस्त रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक उच्च शिक्षित,

आचरण से पवित्र एवं धन-संपदा से युक्त रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो वह सम्माननीय, संभ्रांत परिवार का होता है। महिला उपयोगी वस्तुओं के व्यापार से धन कमाता है। शनि की दृष्टि हो तो अनेक भाषाओं का उसे ज्ञान रहता है। स्वयं परिश्रम से प्रशंसा एवं धन कमाता है। उसकी पत्नी कठोर स्वभाव की रहती है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक अस्थिर बुद्धि का रहता है किंतु उसे सीखने का शौक रहता है। जातक पुष्ट शरीर का, धन, यश एवं शोहरत प्राप्त करनेवाला होता है। फिर भी वह असंतुष्ट रहता है। लग्न भी इसी नक्षत्र-चरण में हो तो जातक गोरा एवं सुंदर आंखोंवाला रहता है। हाथ-पैर में गांठें होना, कुबड़ा होना या अकस्मात अपंग होने की संभावना रहती है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक सत्ता एवं राजनीति के कारण उच्चाधिकारियों के संपर्क में रहता है। कुंडली का लग्न भी इसी नक्षत्र-चरण में हो एवं बृहस्पति का उससे संयोग बनता हो तो जातक उच्च शिक्षा प्राप्त, विद्वान एवं आकर्षक व्यक्तित्व का होता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक के संतान एवं पत्नी सुख में न्यूनता रहती है। 'चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए' वाली कहावत को चरितार्थ करनेवाला होता है। खुदगर्ज, परिवार के लोगों के विषय में भी शक रखनेवाला तथा रक्तदोष या हृदय विकार से पीड़ित रहता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक धनी रहता है। सरकार से पद-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। दूसरों को सहज ही में समझनेवाला चिकित्सक या महाविद्वान रहता है। वह नेत्ररोग एवं उदर विकार से त्रस्त रहता है।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक की पत्नी खूबसूरत एवं भाग्यवान होती है। पत्नी के कारण जातक को धन की प्राप्ति होती है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक की मां समाज में उच्च पद पर आसीन रहती है, फलस्वरूप जातक को भी शोहरत प्राप्त होती है। मंगल की दृष्टि हो तो विवाह में जातक के साथ धोखाधड़ी होती है। उसका पैसा निम्न आचरण की स्त्रियों पर खर्च होता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक हमेशा प्रसन्न, सुखी एवं भाग्यवान रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो संतान, स्त्री सुख एवं धन से युक्त रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक ससुराल के लोगों के कारण दुखी, पत्नी एवं परिवारजनों से त्रस्त रहता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक संगीत एवं ललित कला में निपुण रहता है। वह कलाकार या अभिनेता की हैसियत से धन कमाता है। भोग-विलास एवं इंद्रिय सुख भोगता रहता है। कला एवं संगीत में पुरस्कार प्राप्त होता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक हमेशा स्त्रियों के बीच रहता है। उसके पास जो कुछ भी होता है वह जरूरतमंदों को दे डालता है। उसका स्वास्थ्य यों तो ठीक रहता है परंतु मूत्ररोग, सूजन, क्षयरोग एवं वातरोग होने की भी संभावना रहती है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक शास्त्रों में प्रवीण, नृत्य-संगीतादि कलाओं से धन कमानेवाला रहता है। इस शुक्र पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक के दो विवाह होते हैं। शुक्र महादशा के उत्तम फल प्राप्त होते हैं। 13वें वर्ष में भाग्य का सितारा चमकता है। बाकी जीवन मिश्रित गुजरता है। यदाकदा सिरदर्द एवं गुर्दे का कष्ट होने की संभावना रहती है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक चरित्रसंपन्न, ठिगने कद का एवं मध्यम कदकाठी युक्त रहता है। वह कवि या लेखक बनता है। चेहरे पर तिल या दाग रहता है। कुंडली का लग्न पुष्य नक्षत्र में हो तो दो विवाह होते हैं या पत्नी के अलावा अन्य स्त्री से संबंध रहता है। इसे गुल्मरोग या टॉन्सिल्स का कष्ट रहता है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक वेदशास्त्रों का अध्ययनकर्ता होता है। दूसरों का आश्रित बनकर जीवन गुजारता है। चंद्र की दृष्टि हो तो उच्च पद प्राप्त होता है। राजनीतिक या सरकारी संस्था का अध्यक्ष बनता है। शनि पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक सेना या पुलिस अधिकारी बनता है। उसका परिवार एक आदर्श परिवार रहता है। बुध की दृष्टि हो तो महिला वर्ग में कार्य करता है। अपने बुरे कर्मों के कारण चर्चा का विषय बनता है। बृहस्पति की दृष्टि होने पर सुख-दुखों का एक-सा साझेदार बनता है। दूसरों की सहायता करने में आगा-पीछा नहीं देखता। शुक्र की दृष्टि हो तो जमींदार या राज्याधिकारियों का मित्र बनता है। मांस-मदिरा का शौकीन रहता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक का कद लंबा किंतु कंधे कम चौड़े रहते हैं। रंग काला, बाल घुंघराले एवं आर्थिक दृष्टि से दुर्बल रहता है। शुक्र या बृहस्पति की दृष्टि हो तो पत्नी कुलटा रहती है। दांत एवं बाल असमय गिरते हैं।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक खर्चीला एवं कुसंगति, धन का अपव्यय करनेवाला रहता है। वह अनेक व्यवसाय करता है पर सफलता हाथ नहीं लगती। जिस गति से आगे बढ़ता है, उसी गति से पिछड़ जाता है। भोग-विलास एवं मौज-मस्ती में पैसा खर्च करके कंगाल हो जाता है।

तृतीय चरण में शनि हो और कुंडली का लग्न उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में हो तो ऐसी स्त्री जातक अपने कुल को कलंक लगाती है। पुरुष जातक पुलिसवाला, जेलर या सुरक्षा अधिकारी की हैसियत से नौकरी करके अपना निर्वाह करता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक विकलांग रहता है। जन्म के समय या बाद में भी विकलांग बन सकता है। जन्म स्थान से दूर रहकर गुप्त रूप से पापकर्म करता है। वह अस्थमा या फेफड़ों के रोग से पीड़ित रहता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक की आर्थिक स्थिति अच्छी रहती है। उसके

द्वारा प्रशंसनीय कार्य होते हैं। उसे संसर्गजन्य रोग, सफेद दाग या उदर विकार होते हैं।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक बुद्धिहीन, क्रोधी, झगड़ालू, रहता है। किंतु उसके भाग्य से उसे अकस्मात धन लाभ होता है।

तृतीय चरण में राहु होने पर जातक लालची रहता है। वह निम्न श्रेणी के काम करता है। अपनी अशोभनीय करतूतों से सबको नाराज करता है। दूसरों की धन-संपदा देखकर उनसे ईर्ष्या करता है। उसे हमेशा शत्रुभय बना रहता है। स्वकर्म से अपना ही पतन करनेवाला व पोलियोग्रस्त रहता है।

चतुर्थ चरण में राहु होने पर जातक शोधकार्य में संलग्न रहता है। उसकी संतान आज्ञाकारी रहती है। चरित्र संदेहास्पद रहता है और स्वयं पत्नीभक्त रहता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक को अपने जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। संतान अधिक रहती है। स्वप्रयत्न से कम धन मिलता है किंतु संतान श्रेष्ठ होने से बुढ़ापा अच्छा गुजरता है। उसे दृष्टिदोष या आंखों के विकार रहते हैं।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक शरीर से विकलांग किंतु महाविद्वान होता है। विकलांगों के हित के कार्य करता है। गला या जीभ के विकार रहते हैं।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक हमेशा दूसरों की निंदा-ईर्ष्या करने में अपना समय बिताता है। उसे वातरोग या खाज-खुजली जैसे विकार त्रस्त करते हैं।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक झगड़ालू, पापी, नीच आचरण का एवं कई रोगों से ग्रस्त रहता है। धनहीन एवं अपने कुकृत्य से ही कंगाल बनता है।

हर्षल-नेपच्यून

मृगशिरा नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हों तो जातक कुटिल, कामातुर, मेहनती, गंवार रहता है।

प्लूटो

मृगशिरा नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक रोगी, विद्या बुद्धि में पिछड़ा हुआ, खेती करनेवाला, मध्यमवर्गीय रहता है।

मृगशिरा नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद, आश्लेषा, ज्येष्ठ, रेवती, पूर्वाषाढ़, भरणी नक्षत्रों में जन्मे स्त्री-पुरुषों से लेनदेन, साझेदारी या विवाह न करें।

□□

आर्द्रा (6) नक्षत्र और बारह ग्रह

आर्द्रा नक्षत्र में सभी प्रमुख बारह ग्रहों के लगभग एक जैसे फल प्राप्त होते हैं। सम्पूर्ण आर्द्रा नक्षत्र मिथुन राशि में आता है। गला, भुजाएं, कंधे तथा कान का प्रतिनिधित्व यह नक्षत्र करता है। रोगों में गले में खराबी, दमा, सूखी खांसी, श्वास तथा कान के रोग इसके अंतर्गत आते हैं। इस नक्षत्र में जन्मे जातक साहित्य में रुचि रखने वाले, असत्यवादी, चोर, दुष्ट, पापी, शराबी, बदमाश तथा निन्दनीय होते हैं।

व्यवसाय में पुस्तक विक्रेता, डाक-तार विभाग, यातायात, लेखन, प्रकाशन एवं विज्ञापन, अनुसंधानकर्ता, दवा विक्रेता, भविष्यवक्ता, हस्ताक्षर विशेषज्ञ, कारीगर, पुलिस या सेना में नौकरी, तांत्रिक, ओझा, जादूगर आदि विधाओं का प्रतिनिधित्व आर्द्रा नक्षत्र करता है।

विशेष : इस नक्षत्र के फल चूंकि सभी चरणों में लगभग समान होते हैं, अतः इनका अलग से विस्तृत विवरण नहीं दिया जा रहा है।

□□

पुनर्वसु (7) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक अपने रिश्तेदारों से परेशान रहता है। अपने जन्म स्थान से दूर रहकर भी वह पर्याप्त धन प्राप्त नहीं कर पाता। मंगल की दृष्टि हो तो जातक आलसी एवं शत्रुओं से डरा रहता है। बुध की दृष्टि हो तो संतान के कारण कष्ट भोगनेवाला परंतु सरकार से अर्थलाभ प्राप्त करनेवाला होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक जादू-टोना एवं ज्योतिषशास्त्र में प्रवीण रहता है। अपने परिवार, पत्नी तथा बच्चों से मतभिन्नता रहती है। शुक्र की दृष्टि हो तो देश-विदेश में घूमनेवाला, अपार धन इकट्ठा करनेवाला, सरकार से लाभान्वित किंतु अग्नि, शस्त्र का आघात सहनेवाला होता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक खर्चीला, नौकर-चाकरों के साथ क्रूर किंतु अपने कर्त्तव्य पूरा करता है।

प्रथम चरण में सूर्य होने पर जातक उच्च शिक्षित, धनी, अच्छा ज्योतिषी, पत्रकार या लेखक बनता है। 38वें साल के बाद भाग्योदय होता है। किसी साधु या संत के आशीर्वाद से ईश्वरीय गुण उसमें समा जाते हैं। सबका प्रिय रहता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक गणित एवं भाषाशास्त्र का प्रकांड पंडित, पूर्वानुमान लगाने में चतुर एवं उच्च श्रेणी का प्रशासक होता है। राजनीति या सामाजिक कार्यों में उच्च पद हासिल करता है। उसका वर्ण पीला रहता है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक शासनाधिकारी या मंत्री बनता है। राजनीतिक मित्रों से लाभान्वित रहता है। कुछ समय तक अध्यापक का कार्य करता है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक असाध्य रोगों से पीड़ित, कर्ज में डूबा व गरीबी में जीवनयापन करता है। छोटे-मोटे व्यवसाय करके उदर निर्वाह करता है। उसे अजीर्ण एवं आंखों का कष्ट रहता है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक विद्वान, सज्जन, किंतु गरीब रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो दयालु, बुद्धिमान एवं विज्ञान संबंधी शोध कार्यों से धन प्राप्त करनेवाला होता है। बुध की दृष्टि होने पर सरकार से लाभान्वित रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो प्रशंसनीय कार्य करता है। समाज में आदर-सम्मान प्राप्त होता है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक को जीवन के सभी सुख प्राप्त होते हैं। शनि की दृष्टि हो तो जातक संपत्ति, परिवार एवं पत्नी सुख से वंचित रहता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक का शरीर दोषयुक्त रहता है। मिश्रित व्यवहार करनेवाले ऐसे जातक का भरण-पोषण दो माताओं द्वारा होता है। उसके कन्याएं अधिक होती हैं। जीवन में कई बार धन लाभ होता है। पर्याप्त भाई-बहन रहते हैं। शत्रु इससे घबराते हैं। ऐसा जातक एक ही समय में अनेक काम करनेवाला एवं विद्वानों से मान-सम्मान प्राप्त करनेवाला होता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक स्त्रियों का चहेता रहता है। वह स्त्री रोग एवं गुप्त रोगों का चिकित्सक रहता है। जुआ एवं व्यसनों की ओर लगाव रहता है। उच्च स्तरीय वैज्ञानिक, राजदूत या प्रतिनिधि की हैसियत से वह कार्य करता है। एक से अधिक विवाह होते हैं या विवाहेत्तर अन्य स्त्रियों से संबंध रहते हैं।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक चालाक, जुआरी, लंपट एवं संगीत प्रेमी रहता है। चंद्र बुध के साथ हो तो जातक विनम्र, भाषणों का विश्लेषण-समीक्षा करने में माहिर एवं प्रख्यात रहता है। शनि का प्रभाव चंद्र पर हो तो पितृ सुख में न्यूनता रहती है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक कामशास्त्र में प्रवीण, लेखक या साहित्यकार के रूप में प्रसिद्धि पाता है। अधिक खानेवाला, लाल आंखोंवाला रहता है। मंगल की दृष्टि इस चंद्र पर हो तो जातक का लगाव सट्टा-लॉटरी की तरफ रहता है। इसके लिए अपनी जमीन-जायदाद भी गिरवी रखता है। बृहस्पति की दृष्टि होने पर अपने परिवार का मुखिया और धनी-मानी होता है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक महाविद्वान, धनवान एवं धैर्यवान रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो सुरक्षा संगठन या पुलिस विभाग में नौकरी करके उदर निर्वाह करता है। स्त्रियों के संग खुश रहता है। बुध की दृष्टि हो तो गणितज्ञ, काव्य-संगीत का शौकीन, झूठ बोलनेवाला रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो परदेस में परेशानियां उठानी पड़ती हैं। 40 वर्ष के बाद अच्छी स्थिति आती है और जातक सुखी रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक अपना ज्यादा समय चरित्रहीन स्त्रियों के संग गुजारता है। गैरकानूनी काम करके धन इकट्ठा करता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक धोखेबाज, आलसी, जंगल एवं लकड़ी के व्यापार से धन कमाता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक जड़ी-बूटी का व्यापार क़रके धन कमाता है। इस नक्षत्र-चरण में जन्मी स्त्रियां कपटी, कठोर, आचरणहीन एवं रोगग्रस्त एवं दूसरों का धननाश करने में माहिर होती हैं।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक युद्ध कला निपुण, दूसरों की प्रगति से जलनेवाला होता है। खरीद-फरोख्त से धन कमानेवाला एवं अनेक रोगों से ग्रस्त रहता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक जमीन-जायदाद एवं धन-दौलत संपन्न और भोगविलास में मग्न रहता है। वह मानव सेवा करनेवाला, समाज के प्रतिष्ठित लोगों के लिए पैसा खर्च करनेवाला होता है।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक लेखन-प्रकाशन एवं कागज के व्यापार से धन कमाता है। जीवन का पूर्ण आनंद लेता है। वाहनादि से दुर्घटनाग्रस्त होना संभव रहता है। पीलिया एवं रक्त संबंधित तथा गुप्त रोग होते हैं। स्त्रियों को शारीरिक कष्ट एवं गर्भपात होते हैं।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सरकार से लाभान्वित रहता है। वह उच्च पदस्थ किंतु सत्यवादी रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो मृदुभाषी, परिवार के साथ उद्दंडता से पेश आनेवाला, सरकारी नौकरी करके उदर निर्वाह करनेवाला होता है। मंगल की दृष्टि हो तो आकर्षक वेषभूषा धारण करनेवाला, अनेक कलाओं में प्रवीण रहता है। बृहस्पति व शुक्र की दृष्टि हो तो ऊंचे लोगों का प्रतिनिधि, जनसंपर्क अधिकारी एवं प्रभावशाली रहता है। झगड़े का हल निकालकर समझौता करने में माहिर, शत्रुओं को झुकानेवाला रहता है। शनि की दृष्टि हो तो अपने कार्य में तुरंत यश प्राप्त करनेवाला, सबको वश में रखनेवाला, सबका आदर करनेवाला, मध्यम श्रेणी का धनी रहता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक सरकारी नौकरी करके जीवन निर्वाह करता है। प्रारंभ में क्लर्क रहता है, पर बाद में उच्च पद प्राप्त करता है। धीरे-धीरे धन एवं यश प्राप्त करता है। कई कलात्मक एवं वैज्ञानिक विषयों का जानकार, दूसरों का सम्मान करनेवाला, सुख-शांतिपूर्वक जीवन जीने की आस लगाए बैठनेवाला एवं दो पत्नियों का पति होता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक वाणिज्य या हिसाब-किताब का जानकार एवं अनेक कामों से धन कमानेवाला और ज्योतिषी बनता है। वरिष्ठों से वाहवाही प्राप्त करता है। हर कार्य बिना किसी भेदभाव के करता है। उच्च पदस्थ रहता है। लोग इसकी बात मानते हैं।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक साधारण रूप से निर्वाह करनेवाला, सामाजिक-धार्मिक कार्यों में रुचि रखनेवाला और वैज्ञानिक रहता है। व्यवसाय में काफी धन लगाने पर भी मुनाफा कम होता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक अपनी कार्यक्षमता से धन कमाता है। लेखक, पत्रकार या शैक्षणिक संस्था का प्रमुख और शासन एवं सत्ता के करीब रहता है। यशस्वी एवं धनवान रहता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक अच्छी पत्नी, संतान से युक्त एवं

रिश्तेदारों में सम्मानित रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो अनेक गांवों एवं शहरों की देखभाल करनेवाला, संघर्ष के बाद यश प्राप्त करनेवाला, सत्वगुणी रहता है। बुध की दृष्टि होने पर वह ज्योतिषशास्त्रज्ञ, अच्छे परिवार से युक्त, मृदुभाषी रहता है। शुक्र की दृष्टि होने पर अल्प धनवान, स्त्रियों से परेशान रहनेवाला, प्रतिज्ञाहीन रहता है। शनि की दृष्टि होने पर शासन से लाभान्वित, धनी, सबसे मान-सम्मान प्राप्त करनेवाला एवं राजकीय क्षेत्र में उच्च पदस्थ रहता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक को सभी भौतिक सुख प्राप्त होते हैं और वह सम्मानपूर्वक जीवन बिताता है। जीवन के मध्यकाल तक पारिवारिक जीवन दुखी रहता है। व्यावसायिक कारणों से पत्नी के साथ मतभेद रहते हैं। अपने घर से दूर कार्यक्षेत्र में रहना पड़ता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक दूसरों की सहायता करनेवाला, पंडित या पुजारी रहता है। धन-संपत्ति से युक्त किंतु परिवारजनों से दुखी रहता है। पत्नी संकुचित विचारों की रहती है। संतान सुशिक्षित एवं सुशील रहती है। संतान के कारण ही मध्यम आयु में भाग्योदय होता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक प्राध्यापक, वकील या मंत्री बनता है। मित्रों से लाभान्वित रहता है। वह तरुणावस्था में ही धनी एवं प्रख्यात होता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति होने पर जातक जीवन में यश प्राप्त करता है किंतु धन एवं सुख-शांति का अभाव रहता है। अपने परिवार एवं मित्रों के कारण दुखी रहता है किंतु अन्य लोग उसे सम्मान देते हैं। बुध की दृष्टि हो तो जातक राजा के समान जीवन बिताता है। उसके पास अनेक मकान, जमीन-जायदाद, नौकर-चाकर रहते हैं। स्त्रियों की कुंडली में ऐसा योग हो तो उनके पति धन-दौलत कमानेवाले होते हैं।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सेना या पुलिस विभाग में काम करता है। चंद्र की दृष्टि हो तो सुरुचिपूर्ण भोजन एवं सुंदर वस्त्रों का शौकीन होता है। सांवला रंग, लंबे बालों से युक्त रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो भाग्यवान एवं जमीन की खरीद-फरोख्त का व्यवसाय करनेवाला होता है। बुध की दृष्टि हो तो अनेक उपाधियों से विभूषित, अस्थिर पारिवारिक सुख से युक्त रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो लेखन कार्य में दक्ष रहता है। शनि की दृष्टि हो तो धनवान एवं विद्वान रहता है। कई बार धोखा खाता है। अपनी बेवकूफी के कारण उपहास का पात्र बनता है एवं दुख सहन करता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक वस्त्राभूषणों से युक्त, फल-फूलों का व्यापारी, समाज का अगुवा एवं जनप्रिय रहता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक आलसी, किसी भी कार्य में सम्मिलित न होनेवाला किंतु देखने की उत्कंठा रखनेवाला एवं अनमने भाव से संघर्षरत रहता है।

तृतीय चरण में शुक्र होने पर जातक धनवान एवं विद्वान रहता है। बार-बार अपना व्यवसाय बदलनेवाला एवं सरकारी संगठन में विशेष पद पर नियुक्त रहता है। वह उच्च श्रेणी का अभियंता, प्रशासक या प्राध्यापक रहता है। उसकी पत्नी समतुल्य व्यवसाय में कार्यरत, गुणवान एवं सुशील होती है।

चतुर्थ चरण में शुक्र होने पर जातक सुखपूर्वक जीता है। वैवाहिक जीवन विशेष सुख से परिपूर्ण रहता है। पत्नी व संतान आज्ञाकारी व होनहार रहती है। जीवन के उत्तरार्ध में ज़ातक सम्माननीय एवं धनवान बनता है। शनि की दृष्टि हो तो दूसरों के कार्यों में रुचि रखता है। स्वयं के परिवार से सुख कम प्राप्त होता है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक को सुख नहीं मिलता। वह हमेशा निम्न श्रेणी के लोगों के बीच रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक आकर्षक व्यक्तित्व का, अधिकार एवं पद-प्रतिष्ठा प्राप्त, सरकार से लाभान्वित रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक भारतीय प्राचीन संस्कृति एवं विज्ञान का ज्ञाता रहता है। बुध की दृष्टि होने पर वह व्यापारकुशल, झगड़े में माहिर, धनवान एवं सामान्य ज्ञान से परिपूर्ण रहता है। बृहस्पति की दृष्टि होने पर सद्‌गुणी, धनवान, सरकार या बड़े व्यक्ति की सेवा में रत रहता है। शुक्र की दृष्टि होने पर सोने-चांदी का व्यापार करनेवाला, महिलाओं से लाभान्वित परंतु स्वयं की पत्नी से दुखी रहता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक सट्टे-जुए में धननाश करता है। मिस्त्री या मैकेनिक का काम करके अपना पेट पालता है। गैरकानूनी कामों के कारण कर्ज लेना पड़ता है एवं दयनीय स्थिति पैदा हो जाती है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक सूदखोर रहता है। छोटे-बड़े व्यवसाय करके जीवन निर्वाह करता है। ठेकेदारी या गृहनिर्माण कार्य में संलग्न रह सकता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक संतोषपूर्ण तरीके से व्यापार करता है। रसायन, मशीनरी के कामकाज में होशियार एवं उत्साही तथा मेहनती रहता है। उद्योग में उच्च पद पर उसके अधीन कई लोग काम करते हैं।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक छोटे कद का किंतु आकर्षक व्यक्तित्व का रहता है। बचपन में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। माता-पिता का प्यार नहीं मिलता। वह दूसरों को सहयोग देनेवाला किंतु स्वयं मानसिक तनाव और संकट से ग्रस्त रहता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु होने पर जातक पूर्वानुमान लगाने में चतुर, कार्यकुशल, लेखन, अध्यापन के व्यवसाय से जुड़ा हुआ रहता है। उसे हाथ-पैर एवं कानों की सूजन का रोग रहता है। कुछ जातक वातजन्य रोगों से ग्रस्त रहते हैं।

द्वितीय चरण में राहु होने पर जातक उदार, हृदय, अच्छी वेशभूषा पहननेवाला,

विज्ञान एवं संशोधन कार्य में सफलता एवं प्रसिद्धि प्राप्त करनेवाला रहता है। आयोडीन की कमी के कारण कई रोगों से ग्रस्त रहता है। वस्त्र या सोने-चांदी का व्यापारी या सूदखोर रहता है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक की स्मरणशक्ति तीव्र रहती है। वह संतोषी रहता है। परिवार से मतभिन्नता रहती है। सरकार के वित्त, कानून या लेखा विभागों में कार्यरत रहता है। उसे नाक, कान के रोग एवं न्यूमोनिया होता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक पत्रकारिता या कहानियां लिखने में सिद्धहस्त होता है। राहु के साथ बुध हो तो असामान्य ज्योतिषी बनता है। वह गणित-विज्ञान का उपाधिधारक रहता है और संदेहास्पद व्यक्तियों व महिलाओं के संपर्क में रहता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक संपत्ति-संतानयुक्त दीर्घ जीवन जीता है। वह भाई-बहनों का वैरी किंतु सज्जन रहता है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक रोगग्रस्त, विकलांग या कमजोर हृदय का होता है। धनी परिवार में जन्म लेकर गरीबों जैसा सामान्य जीवन बिताता है। केतु अन्य पाप ग्रहों के साथ हो तो जातक अनाथ रहता है या पिता द्वारा अनाथालय में भेज दिया जाता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक दो विवाह करता है। हमेशा आर्थिक तंगी में रहता है। दोनों पत्नियां उसे दुश्मन लगती हैं। संतान अधिक रहती है। हृदय रोग या आत्मघात के कारण मृत्यु होती है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक परिश्रमी होता है किंतु आमदनी कम रहती है। मेहनत-मजदूरी करके पेट पालता है। बुढ़ापे में संतान समझदार होने से सुख देती है।

हर्षल-नेपच्यून

पुनर्वसु नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हों तो जातक एकाध संस्था की स्थापना करता है। वह कानून का ज्ञाता, लेखक, बौद्धिक कार्यों में रुचि रखनेवाला होता है।

प्लूटो

पुनर्वसु नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक बौद्धिक कार्य करता है, कलाकुशल एवं गायक रहता है। प्लूटो के साथ बुध, शुक्र, बृहस्पति, चंद्र अच्छा फल देते हैं।

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष पुष्य, आश्लेषा, शतभिषा एवं कृतिका नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों से विशेष संबंध न रखें। साझेदारी या विवाह न करें।

पुनर्वसु नक्षत्र के व्यक्तियों के जीवन में जब कभी संवेदनशील समय आता है तब मंगल, केतु या चंद्र का विशेष प्रभाव दिखाई देता है।

□□

पुष्य (8) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक कर्मठ रहता है। वह सरकारी विभाग में उच्च पद पर नियुक्त रहता है या उत्पादक व्यवसाय का प्रबंधक या आयात-निर्यात करनेवाले प्रतिष्ठान का संचालक अथवा जल विषयक कार्य में पारंगत रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो धनवान किंतु रिश्तेदारों से परेशान रहता है। बुध की दृष्टि हो तो उच्च शिक्षित, सरकारी सेवा में नियुक्त, शासक वर्ग में प्रिय रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो शैक्षणिक संस्था, राजनैतिक संगठन या सुरक्षा विभाग का प्रमुख रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जनसेवा में लगा रहता है और महिला उपयोगी वस्तुओं का व्यापार करके धन कमाता है। शनि की दृष्टि हो तो उसकी पत्नी अल्पायु रहती है। वह स्वयं चालाक, महाधूर्त एवं वात रोग से ग्रस्त रहता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक प्रभावशाली, आकर्षक एवं नीरोगी रहता है। किंतु अधिक मात्रा में मदिरा सेवन के कारण उसे शारीरिक कष्ट रहता है। जन्मकुंडली का लग्न मघा नक्षत्र में हो तो जातक जन्म से गरीब रहता है किंतु उसके पिता की स्थिति में धीरे-धीरे बदलाव आता है। वे लाभान्वित होते हैं और उनके सुख-संपत्ति का लाभ जातक को प्राप्त होता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक अस्थिर बुद्धिवाला एवं अपने कामों में व्यस्त रहता है। वह हवाई यातायात कंपनी का संचालक, इंजीनियर, वैज्ञानिक या अंतरिक्ष विभाग के कार्यों में संलग्न रहता है। जीवन के उत्तरार्ध में उसे सरकार से सम्मान प्राप्त होता है।

तृतीय चरण में सूर्य होने पर धनी स्वभाव का रहता है। कद ऊंचा परंतु आंखें कमजोर होती हैं। वह काना भी हो सकता है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक के दुखमय वैवाहिक जीवन के कारण उसकी प्रगति रुक जाती है। उसकी समस्याओं का प्रमुख कारण उसकी पत्नी ही होती है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सरकार में सुरक्षा सेवा या कोर्ट-कचहरी

में प्रभावशाली अधिकारी रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक को अपने क्षेत्र के विषय की उत्तम जानकारी रहती है। उसकी माता को अरिष्ट रहता है। स्वयं विकलांग अवस्था में घूमता-फिरता है। बुध की दृष्टि हो तो राजनीति में प्रसिद्धि हासिल होती है। उसे धन-संपत्ति, पुत्र एवं वैवाहिक जीवन में उत्तम सुख प्राप्त होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो वह उच्च शिक्षित एवं किसी शिक्षण संस्था का प्रमुख आचार्य बनकर धन-सम्मान प्राप्त करता है। मां का पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होता। शुक्र की दृष्टि हो तो भोग-विलास में धन का अपव्यय करता है। वह रिश्वत के माध्यम से या व्यापार करके प्रचुर मात्रा में धन इकट्ठा करता है किंतु हमेशा अनुचित कामों में ही धन खर्च करता है। शनि की दृष्टि हो तो जासूसों द्वारा पीड़ित रहता है। जातक धूर्त एवं अविश्वासी होता है। चोरी-हेराफेरी करके जीवन बसर करता है। उसे उदर रोग, फेफड़ों के रोग या क्षय की बीमारी होती है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक आकर्षक चेहरे का, महिलाओं के विषय में संवेदनशील, दो-तीन मकानों से युक्त रहता है। उसके चेहरे या छाती पर बड़ा तिल पाया जाता है। खांसी-हृदय रोग या अकस्मात मृत्यु होती है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक के अनेक मित्र होते हैं। वह जमीन-जायदाद का मालिक, ज्योतिषशास्त्र या कानून का जानकार, महिलाओं एवं बड़े-बूढ़ों का आदर करनेवाला होता है।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक अच्छे कार्य करनेवालों के संपर्क में रहता है। वह जलाशय या बाग-बगीचों के समीप निवास करता है। विदेश प्रवास के दौरान काफी श्रम करता है। महिला जातकों के विषय में यह योग संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करता है। पुरुष जातक को रोगी पत्नी के लिए काफी खर्च करना पड़ता है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक दूसरों के पैसों से मौज करता है। बेईमानी या छोटी-मोटी चोरी के आरोप में उसे जेल में भी रहना पड़ता है। वह महापापी एवं दुष्ट लोगों का सलाहकार रहता है। उसकी अचानक मृत्यु होती है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक कानून एवं न्याय का ज्ञाता, कचहरी या न्यायालय में नौकरी करता है। फोड़े-फुंसियां एवं रक्त विकार से पीड़ित रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो मां की देखभाल का सुख प्राप्त नहीं होता। रोगग्रस्त होने के कारण निष्क्रिय जीवन बिताता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक अपराध प्रवृत्ति का, वैवाहिक जीवन में दुखी एवं माता के लिए कष्टदायी रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक धर्मात्मा, उच्च श्रेणी का विद्वान, राजनीति में पद प्राप्त करनेवाला परंतु वैयक्तिक जीवन में दुखी रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो स्त्रियों के कारण परेशानियों में अटक जाता है। काफी धन संग्रह करने के बावजूद भी अपनी प्रतिष्ठा को बचाने के लिए सर्वस्व खो देता है। शनि की दृष्टि हो तो सार्वजनिक प्रतिष्ठा एवं व्यापार उद्योग के क्षेत्र में ऊंचे पद पर कार्यरत रहता है। भ्रष्टाचार के आरोप

लगते हैं। आंखें कमजोर रहती हैं। दुर्घटना या हृदय विकार के झटके के कारण मृत्यु होती है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक विद्वान रहता है। पर्यटन या वाहन के कारोबार में धन प्राप्त करता है। ऐसा जातक संस्कारी, वाद-विवाद या चर्चा में पारंगत, दूसरों को अपना महत्त्व मानने को मजबूर करनेवाला तथा विशेष प्रकार की पौरुष शक्ति से युक्त रहता है। जन्मकुंडली का लग्न इसी नक्षत्र-चरण में हो तो जातक कैंसर रोग से ग्रस्त रहता है।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक को मेहनत के अनुसार आमदनी नहीं होती। वह अपनी पैतृक संपत्ति को खो बैठता है। सट्टे-जुए में पैसा बरबाद होता है। यदा-कदा अपराध के लिए सजा होती है। वह बहरेपन से त्रस्त रहता है। विवाह विलंब से होता है। महिला जातक का विवाह अधिक आयुवाले पुरुष से होता है या वयस्क व्यक्ति के साथ अनैतिक संबंध रहता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक तत्त्वशास्त्र का विद्वान रहता है। वह भूगोल, खननशास्त्र एवं भौतिकशास्त्र की ऊंची उपाधि हासिल करता है। शासकीय सेवा में अविलंब पदोन्नति प्राप्त होती है। विदेश यात्रा एवं तीर्थयात्रा भी होती है।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक को असाध्य कष्ट सहना पड़ता है। शिक्षा अधूरी रहती है। 25वें वर्ष तक विवाह या वैवाहिक जीवन में विघ्न उत्पन्न होते हैं। 27 या 28वें वर्ष में जातक स्वेच्छा से विवाह करता है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक मिला-जुला व्यवसाय करता है। वह मानसिक रोग, दांत, कान, आंखों के रोगों का विशेषज्ञ बनता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक आर्थिक दृष्टि से कमजोर एवं आमदनी से अधिक खर्च करनेवाला और अनेक रोगों से ग्रस्त रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो कम पढ़ा-लिखा, अनावश्यक कामों में अगुवा रहनेवाला, शासन से सजा भोगनेवाला रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो अनेक शास्त्रों का जानकार एवं विद्वान होता है। राजा का सलाहकार या शोध कार्य में संलग्न, उच्च उपाधि प्राप्त भी रहता है। व्यक्तित्व आकर्षक रहता है। अध्यापन करके निर्वाह करता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक में नैतिक गुणों का अभाव रहता है। जीवन के मध्य में पत्नी एवं बच्चे साथ छोड़कर अलग हो जाते हैं।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक धनवान एवं जायदाद का मालिक रहता है। उच्च श्रेणी के वाहन का सुख भोगता है। वह जमीन-जायदाद, मकान से युक्त रहता है। महिलाओं को प्रजनन का कष्ट रहता है।

द्वितीय चरण में बुध होने पर जातक निजी सचिव या विश्वासपात्र जगह पर सुरक्षा एवं गुप्तचर विभागाधिकारी की हैसियत से कार्य करता है। शनि की दृष्टि हो तो जलविभाग का अभियंता बनता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक नृत्य-संगीत आदि का शौकीन रहता है।

धनवान एवं उच्च पदस्थों से मित्रता रहती है। इस नक्षत्र-चरण में जन्मी महिलाएं नृत्य-गायनादि के माध्यम से धन कमाती हैं। पुरुषों के साथ घूमनेवाली ऐसी स्त्रियों का चरित्र संदेहास्पद रहता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक कम पढ़ा-लिखा किंतु बुद्धिमान रहता है। चरित्र संदेहास्पद रहता है। व्यापार या व्यवस्थापन के माध्यम से उसे धन प्राप्त होता है। ऐसे कई जातक टी.वी. या घड़ियों को ठीक करने के कार्य में संलग्न रहते हैं।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक उच्च श्रेणी का विद्वान रहता है। किसी संस्था के विभाग का अध्यक्ष बनता है। कुंडली में शुक्र नीचस्थ हो तो पहली पत्नी मर जाती है, जातक दूसरा विवाह करता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक धनवान, अच्छी पत्नी के साथ जीवन जीनेवाला, सुयोग्य संतान, मकान, वाहन एवं नौकर-चाकरों से युक्त रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक का विवाह कम आयु में होता है। बौद्धिक कार्यों से धन कमाता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक परिवार में प्रिय, सबको संभालनेवाला, राजनीतिक क्षेत्र में प्रसिद्ध होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो काफी धन प्राप्त होता है। एक से अधिक पत्नियां होती हैं। भोग-विलास के कारण शरीर क्षीण होता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक गांव का प्रमुख, जमीन एवं कृषि विषयक कार्यों से धन कमाता है। किसी धार्मिक संस्था का प्रमुख बनता है। व्यक्तिगत जीवन दुखी रहता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक धनवान, विद्वान, वेदशास्त्रादिकों का जानकार, मदिरा सेवन एवं धूम्रपान करनेवाला, पैसों के बलबूते पर जीवन के सभी सुख प्राप्त करता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक सर्वसुखसंपन्न, नौकरी में उच्च पदस्थ, आयात-निर्यात एवं पेट्रोल के व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक किसी ट्रस्ट या संस्था का सर्वेसर्वा होता है। कुछ जातक कृषि विषयक कार्यों से या मशीनरी का काम करके पैसे जोड़ते हैं। ऐसे जातक को गुर्दे, फेफड़ों के रोग, कैन्सर या तपेदिक की बीमारी रहती है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति होने पर जातक मेकेनिकल कार्यों में विशेषज्ञ बनता है। चीनी या कपड़े की मिल में इंजीनियर रहता है। अग्निरोधक पदार्थों का ज्ञान रखता है। कानून का बारीकी से पालन करता है। पथरी या अल्सर रोग से पीड़ित रहता है।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक उद्योगपति, धनवान एवं सुंदर पत्नी का पति होता है। ससुराल से काफी धन प्राप्त होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक

आकर्षक, प्रसन्न एवं चाचा-चाची के स्नेह से युक्त रहता है। संतान भी अच्छी निकलती है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक कई कलाओं में प्रवीण एवं कलाओं के माध्यम से ही धन अर्जित करनेवाला होता है। परिवार के अलावा और भी आप्तजनों (दीन-दुखियों) का पालन करता है। बुध की दृष्टि हो तो पत्नी नौकरी-व्यवसाय करनेवाली होती है। जातक विद्वान एवं वाणिज्यशास्त्र का जानकार और धनवान रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक भाग्यवान एवं सर्वसुख संपन्न रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक बदसूरत, क्रोधी, वातरोगी एवं लकवाग्रस्त रहता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक अंतरराष्ट्रीय व्यापार करता है। एकाध देश के प्रतिष्ठान का प्रतिनिधि होता है। महिला जातक नर्स, एयर होस्टेस या कलाकार बन सकती हैं। पुरुष जातक के दो विवाह होते हैं। मूर्च्छा, हिस्टीरिया, चक्कर आना, अल्सर या पेट की अन्य बीमारियां रहती हैं।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक भोगविलास में मग्न, रोगों से ग्रस्त रहता है। ऐसे पुरुषों में स्त्रियों को आकर्षित करने की बड़ी शक्ति होती है किंतु बुद्धिमत्ता एवं सद्गुणों का अभाव रहता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक दुर्भाग्यशाली, झगड़ालू किंतु वैवाहिक जीवन में सफल रहता है। अनेक व्यवधानों के बाद शिक्षा पूर्ण होती है। पशुपालन, मुर्गीपालन के व्यवसाय में भारी नुकसान होता है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक तत्त्वज्ञ, योगशास्त्र एवं भौतिक शास्त्र का ज्ञाता रहता है। शिक्षा कम होती है। कलात्मक आभूषण बनाने की कला एवं शिल्पकला में माहिर होता है। व्यक्तिगत जीवन में काफी उतार-चढ़ाव आते हैं। पत्नी रोगी एवं चिड़चिड़े स्वभाव की होने से जातक जीवन के उत्तरार्ध में दूसरा विवाह करता है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक का बचपन दुखद रहता है। उसे अपने पिता का संरक्षण प्राप्त नहीं होता और लालन-पालन ननिहाल में होता है। कम पढ़ने-लिखने के कारण आर्थिक स्थिति साधारण रहती है। चंद्र की दृष्टि हो तो कम शिक्षित, मातृ विरोधी एवं भाई-बहनों से बहिष्कृत रहता है। मंगल की दृष्टि होने पर निरोगी, धनवान एवं सुखी रहता है। बुध की दृष्टि होने पर समाज उत्थान के कामों में सहयोग देता है। रंग-रूप से सामान्य होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक मकान, जमीन-जायदाद, वाहन सुख, पतिव्रता पत्नी एवं आज्ञाकारी संतान से युक्त रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो बदसूरत, सद्व्यवहारी, माता के लिए अरिष्टकारक लेकिन अपने जीवन में संतुष्ट रहनेवाला होता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक बचपन से अशिक्षित, गंवार परंतु चालाक, खुदगर्ज, भूरी आंखोंवाला एवं व्यसनी रहता है किंतु परिवार कर्मठ एवं सत्यवादी रहता है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक अनेक रोगों से ग्रस्त, अशक्तता के कारण दुर्बल, आचरणहीन, बाहर से शेर और अंदर से बकरी जैसा बर्ताव करता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक पिचके गालोंवाला तथा कमजोर दांतोंवाला रहता है। आमतौर पर उच्च शिक्षित सरकारी कर्मचारी या यशस्वी व्यापारी होता है। कुछ जातक ठेकेदार, भवन निर्माण के कार्य में संलग्न रहते हैं। सीमेंट, लोहा, पत्थर आदि के व्यापार से लाभान्वित रहते हैं। ऐसे जातक धूर्त एवं चालाक होते हैं।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक का पालन-पोषण दूसरों के घर में होता है। अनाथ होते हुए भी अच्छी शिक्षा प्राप्त करके जीवन के उत्तरार्ध में धनवान बनता है। दंत रोग से पीड़ित रहता है।

राहु

राहु पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में हो तो जातक शेरो-शायरी, कविता एवं लेखन में सिद्धहस्त रहता है। शिक्षा अधिक नहीं हो पाती। साहित्यिक-अभिरुचि के कारण बचपन में कष्ट सहन करता है। चारों तरफ से निराश होने के बाद वैराग्य उत्पन्न होता है। जीवन के उत्तरार्ध में सुखी एवं शांत जीवन जीता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक दुग्ध व्यवसाय, पशुपालन एवं जमीन-जायदाद के किराये से प्राप्त धन से अपना जीवन निर्वाह करता है। मंगल की दृष्टि हो तो दो विवाह होते हैं। व्यापार से नौकरी में अधिक आमदनी होती है। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहती है। अपने काम निकालने में चतुर एवं स्वार्थी रहता है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक अल्पशिक्षित, शारीरिक विषमता एवं अपंगता से युक्त रहता है। लेखन-प्रकाशन या कागज के व्यापार से धन प्राप्त करता है। रक्त एवं पानी से उत्पन्न रोग, पसीने के कारण दुर्गंधयुक्त रोग, बवासीर रक्तस्राव से पीड़ित रहता है या सफेद कोढ़ निकलता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक को प्रसिद्धि हासिल होती है। धन संचय नहीं हो पाता। वैवाहिक जीवन में दुख रहता है। माता-पिता अल्पायु रहते हैं। जातक श्वास की तकलीफ एवं आंखों की बीमारी (मोतियाबिंद) या क्षय रोग से पीड़ित रहता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो जातक बचपन से धूर्त एवं घुमक्कड़ रहता है। जीवन में चारों तरफ से दुख-ही-दुख हाथ लगता है। वह घरेलू नौकर, रसोइया या ठग बनता है। बढ़ती आयु के साथ स्वभाव में अच्छाई पैदा होती है एवं वह सम्मानित व्यापारी बनता है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक बुरी संगत में फंसकर पैतृक संपत्ति नष्ट कर देता है। पिता की अल्पायु होती है। मां दूसरों पर आश्रित रहती है। जातक के दो विवाह होते हैं। कुटुंब के कल्याण के लिए वह प्रयत्नशील रहता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक असाध्य रोगों से पीड़ित रहता है। वह तंत्र-मंत्र के ज्ञान के बलबूते पर प्रसिद्धि पाने की कोशिश करता है लेकिन कर्ज में डूबा रहता है। 50 साल के बाद शाही जीवन जीता है। दूसरों के द्वारा उसकी संपत्ति का हरण होता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक तंत्र-मंत्र या मशीनरी का जानकार रहता है और व्यवसाय के माध्यम से धन अर्जित करता है। इसका पैसा चरित्रहीन स्त्री खा जाती है। इसी कारण उसकी पत्नी आर्थिक दृष्टि से पीड़ित रहती है और अपने बच्चों की देखभाल दूसरों के यहां करती है। 40 साल के बाद स्थिति सुधरती है।

हर्षल-नेपच्यून

पुष्य नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हों तो जातक ईश्वरभक्त, सात्विक, समाज के लिए उपयुक्त एवं धनसंग्रह करनेवाला रहता है।

प्लूटो

पुष्य नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक परोपकारी, नीतिवान, ईश्वरभक्त, श्रद्धावान, ऐश्वर्यवान, धनसंग्रही एवं कानून का ज्ञाता बनता है। दशम स्थान में ऐसा प्लूटो बहुत बलवान होता है।

पुष्य नक्षत्र में जन्मे स्त्री पुरुष मघा, मूल, अश्विनी, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, कृतिका, चित्रा, धनिष्ठा एवं मृगशिरा नक्षत्रों में जन्मे स्त्री-पुरुषों के साथ लेन-देन, व्यापार में साझेदारी, मित्रता या विवाह न करें।

□□

आश्लेषा (9) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक दूसरों के काम करने में कुशल रहता है परंतु स्वकीयों से लताड़ा जाता है। कभी-कभी शारीरिक दोषों के कारण भी कष्ट पहुंचता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक अपने निकटस्थ मित्रों का तिरस्कार करता है। पानी से संबंधित रोग उत्पन्न होते हैं। बुध की दृष्टि हो तो जातक शैक्षणिक संस्था में व्याख्याता या प्राध्यापक रहता है। उच्चाधिकारियों के बच्चे उसके शिष्य रहते हैं। बृहस्पति की दृष्टि हो तो पारिवारिक प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और सरकार से लाभान्वित होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो स्त्रियों से पैसे, कपड़े एवं अन्य सुख-सुविधाएं प्राप्त होती हैं। शनि की दृष्टि हो तो जातक गरीब, अनेक रोगों से ग्रस्त या लकवा मारे जाने से अपंग बनता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो एवं कुंडली का लग्न अनुराधा या ज्येष्ठा नक्षत्र में हो तो जातक देशभर में भ्रमण करता है। सज्जन दिखता है। गरीबों की सहायता करते हुए अकेले ही तीर्थयात्रा करता है। उसे पैर फटने या घुटने कमजोर होने का रोग होता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो पिता की असमय मृत्यु होती है। पत्नी की वजह से उसका कारोबार ठप्प हो जाता है। धीरे-धीरे वह सबके परिहास का पात्र बनता है।

तृतीय चरण में सूर्य होने पर जातक उत्तम पत्नी एवं श्रेष्ठ संतान सुख से युक्त रहता है। परंतु पत्नी को बार-बार कष्ट होते हैं और उसका ऑपरेशन कराना पड़ता है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक को संतान सुख से वंचित रहना पड़ता है। उसका एक भाई विशेष प्रसिद्धि एवं सम्मान प्राप्त करता है। इससे जातक को भी धन, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। कुंडली का लग्न भी इसी नक्षत्र-चरण में हो तो जीवन में अच्छी बातें कम एवं बुरी बातें अधिक घटती हैं।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक वास्तुकार या भवन निर्माता बनता है। सरकार में छोटे पद पर कार्य करता है। दूसरों की सहायता करना इसे पसंद नहीं

होता। मंगल की दृष्टि हो तो जातक क्रूर एवं जघन्य अपराध करके अपने कुल को बदनाम करता है। माता के लिए अरिष्टकारक रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक धन, पद, पत्नी, पुत्र आदि से सुखी रहता है। सेना या सरकारी क्षेत्र में उसे रुचि रहती है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक व्यवहारकुशल, कुशल वक्ता एवं सुखी जीवन जीनेवाला होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो संसर्गजन्य रोगों से पीड़ित रहता है। कैंसर, तपेदिक जैसे रोग भी उत्पन्न हो सकते हैं। शनि की दृष्टि हो तो जातक लफंगा, धोखेबाज, पत्नी से मिलकर अपनी मां के खिलाफ षडयंत्र करनेवाला, गरीब एवं घुमक्कड़ होता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक धनवान, दयालु एवं बुद्धिमान रहता है, वाहनों की खरीद-फरोख्त से अपना पेट भरता है। चारों तरफ उसका बोलबाला रहता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक की मृत्यु महामारी या भयानक असाध्य रोगों के कारण होती है। कुछ जातक कोढ़, कैंसर जैसे रोगों से भी पीड़ित तथा दुर्भाग्यशाली एवं माता-पिता के प्यार से वंचित रहते हैं। दुकानदारी करके या दूसरों के अधीन रहकर अपना पेट पालते हैं।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक मां-बाप के सुख से वंचित रहता है। परिवार से अलग रहने की संभावना रहती है। निकटस्थ रिश्तेदारों से कष्ट प्राप्त होते हैं। किसी दुर्घटना में मृत्यु हो सकती है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक दूसरों के धन का हरण करता है या अनैतिक कार्यों से धन कमाता है। थोड़े लाभ से संतुष्ट नहीं होता। बैंक में या कोषागार में कैशियर की हैसियत से नौकरी करता है। किसी संस्था में वसूली-अधिकारी के पद पर भी काम कर सकता है। शराब बेचने के धंधे से भी जुड़ा रहता है। विदेश में जाकर पैसा कमाता है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक धैर्यशील रहता है। वह किसी शिक्षण संस्था का अध्यक्ष बनता है। उसे पीलिया रोग रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो नित्य धननाश होता रहता है। बुध की दृष्टि हो तो परिवार से उपेक्षित रिश्तेदारों को आश्रय देता है। बुद्धिमत्ता एवं परिश्रम से धन कमाता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो शासन या राजनीति में बड़ा पद प्राप्त करता है। व्यवहारकुशल एवं प्रसिद्ध रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो धनी परिवार में जन्म लेकर भी दुर्भाग्यशाली रहता है। व्यापार में नुकसान होने के कारण गरीबी आती है। शनि की दृष्टि हो तो जातक के पास कई मकान एवं अन्य जायदाद रहती है। सरकार एवं शासन व्यवस्था की ओर से धन लाभ प्राप्त होता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक चाकू, तलवार से जख्मी होता है। जानवरों एवं क्रूर व्यक्तियों द्वारा कई बार प्रताड़ित होता है। फिर भी अपने कर्त्तव्यों से विमुख नहीं होता।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक अपने नौकर-चाकरों के साथ अभद्र व्यवहार करता है। इससे पीड़ित लोग उससे बदला लेते हैं। व्यवसाय मध्यम किंतु आर्थिक स्थिति अच्छी होती है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक निराशा ग्रस्त, वैवाहिक जीवन में दुखी रहता है। परिवार के सदस्यों के साथ हिंसक बर्ताव करता है। कुछ जातक पत्नी की जान लेने के कारण जेल भोगते हैं।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक मध्यम श्रेणी का धनी रहता है। तिलहन एवं दालों का व्यापार कर आजीविका चलाता है। पत्नी हमेशा बीमार किंतु दीर्घायु होती है। संतान सुख में बाधा रहती है। शनि की दृष्टि हो तो पुरुष एक से अधिक विवाह करता है या फिर वेश्यागामी बनता है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक को अपनी पत्नी से दुख भोगना पड़ता है। जातक दुबला-पतला एवं खर्चीला रहता है। चंद्र की दृष्टि होने पर वह स्वयं दर्जी, रेडीमेड कपड़ों का व्यापारी या ठेकेदार बनता है। मंगल की दृष्टि हो तो कुछ हद तक शास्त्रों का जानकार रहता है। धन से बड़ा प्यार करता है। कठोर स्वभावी एवं घातक हथियारों का निर्माता रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक कला पारखी, विद्वान, धनी व मृदुभाषी होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो अनर्गल बोलनेवाला, चंचल, नृत्य-गायनादि क्षेत्र से जुड़ा हुआ रहता है। उसे भड़कीले रंग के कपड़े अच्छे लगते हैं। शनि की दृष्टि हो तो पराधीन, परिवार से अलग रहनेवाला होता है। अपने अधीनस्थ काम करनेवालों का दुश्मन रहता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करता है। वह विद्वान होता है और उसके दो संतानें होती हैं। उसे फेफड़ों के रोग हो सकते हैं।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक पत्रकार या टूरिंग एजेंट रहता है। कुछ जातक सिल्क मिल, रेशम या जलोत्पन्न वस्तुओं का व्यापार करते हैं। फेफड़ों में अधिक पानी होने, वायु विकार या वाहन दुर्घटना से मृत्यु होती है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक मद्यपी, पेट एवं छाती के विकारों से ग्रस्त, कारोबार में सामान्य लाभ कमानेवाला, घर के बाहर और कहीं रहनेवाला रहता है। 40 साल तक पत्नी के साथ वैमनस्यता रहती है, उसके बाद सुधार होता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक विज्ञान जैसे गंभीर विषय में उत्तम शिक्षा प्राप्त करता है। वह इंजीनियर, डॉक्टर या कृषि एवं सिंचाई विशेषज्ञ रहता है। उसे अस्थमा, न्यूमोनिया, बवासीर जैसे रोगों से पीड़ा रहती है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक उच्च पदस्थ अधिकारी या राजनीतिक नेता अथवा किसी विभाग का प्रमुख रहता है और मंत्री जैसा मान-सम्मान पाता है।

चंद्र की दृष्टि हो तो उस व्यक्ति का परिवार अचानक नष्ट हो जाता है। इस विनाश के बाद क्षतिपूर्ति के तौर पर बीमा इत्यादि से उसे भरपूर मुआवजा मिलता है। आचरण अच्छा रहता है। शरीर पर जख्म के चिह्न रहते हैं। बुध की दृष्टि हो तो नजदीकी रिश्तेदार से आर्थिक लाभ होता है। राजनैतिक पद पर नियुक्ति होती है। शुक्र की दृष्टि हो तो उसके आश्रय में बहुत-सी स्त्रियां रहती हैं। अनैतिक पदों से अर्थ प्राप्ति होती है। शनि की दृष्टि हो तो किसी संस्था का अध्यक्ष या सेना, पुलिस विभाग में उच्च पद पाता है। उसके पास अधिकार एवं धन अधिक रहता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक के पास काफी धन-संपत्ति रहती है। उसकी संतान एवं पत्नी मधुरभाषी होती है। जातक सुखी जीवन बिताता है। कुंडली में शुक्र नीच का हो तो प्रथम पत्नी से तलाक होकर दूसरा विवाह होता है। दूसरे विवाह से एक या दो कन्याएं होती हैं।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक शोध-विद्यार्थी या पी.एचडी. करने में कामयाब होता है। वह सनकी किंतु सच्चा और दानपुण्य करनेवाला होता है। उसकी संतान दीर्घायु एवं कर्त्तव्यनिष्ठ रहती है। हमेशा प्रशंसा प्राप्त होती है। बृहस्पति के साथ मंगल हो तो राजकीय पुरस्कार प्राप्त होता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक, उसकी पत्नी एवं संतान तीनों मिलकर काफी धन कमाते हैं। ससुराल से चल-अचल संपत्ति प्राप्त होती है। जन्म लग्न भी इसी नक्षत्र-चरण में हो तो जातक पिछले जन्म के पुण्य प्रभाव भोगता है। वसीयत या लाटरी-सट्टे से बड़ा धनलाभ होता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक शासकीय सेवा में उच्च पद पर कार्यरत रहता है। शुक्र कमजोर हो तो दूसरा विवाह होता है। दूसरे विवाह के बाद एक-दो बच्चे होते हैं।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक स्वयं क्रोधी होता है और स्त्रियों का कोपभाजन बनता है। इससे काफी परेशान होना पड़ता है। उसके अनेक गुप्त शत्रु होते हैं। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक अपनी मां के लिए अनिष्टकारक रहता है। संतान सद्‌गुणी होती है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक की शिल्पशास्त्र एवं ललित कला में अच्छी रुचि रहती है। बुध की दृष्टि हो तो जातक अपने से बड़ों का आदर करनेवाला, उनकी आज्ञा में रहनेवाला होता है। पुत्र एवं पत्नी के कारण मानसिक परेशानी होती है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक चालाक रहता है। वह सुखी वैवाहिक जीवन जीता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक गरीब, दुखी और अनैतिक काम करनेवाला रहता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक का वैवाहिक जीवन कष्टकारी रहता है। तलाक या विवाह-विच्छेद होना संभव रहता है। मानसिक संतुलन बिगड़ा हुआ रहता है।

द्वितीय चरण में हो तो जातक की दो पत्नियां होती हैं। अंत में कामवासना के कारण ही उसका सर्वनाश होता है। उसे हृदयरोग, संधिवात, पक्षाघात होता है लेकिन उसकी देखभाल करनेवाला कोई नहीं रहता।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक का चाल-चलन बचपन से ही खराब रहता है। बड़ा बनकर वह ठग या जेबकतरा बनता है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक सरकारी क्षेत्र में उच्च पद पर कार्यरत रहता है। राजनैतिक क्षेत्र में वह महत्त्वपूर्ण होता है। अधिकारों का आनंद लूटता है। अन्य स्त्रियों से संबंध रहने से वैवाहिक जीवन दुखी रहता है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक अच्छे परिवार एवं पैतृक सुख से वंचित रहता है। उसे ठीक से खाना-पीना भी नहीं मिलता। पत्नी भी मनोनुकूल न मिलने से वैवाहिक जीवन दुखभरा रहता है। वह मां को कष्ट पहुंचाता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक स्वयं अपने परिवार के सर्वनाश के लिए जिम्मेदार रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो सरकार से पैसा प्राप्त होता है किंतु शारीरिक दृष्टि से कमजोर रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक कुकर्मी, अहंकारी, अपशब्द बोलनेवाला होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो बागवानी एवं पशु संबंधी काम करने से धन प्राप्त होता है। उसके बच्चे एवं पत्नी गुणसंपन्न रहती है। शुक्र की दृष्टि हो तो व्यक्तित्व आकर्षक रहता है। तरल पदार्थों के व्यापार से धन मिलता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक माता-पिता एवं संतान सुख से वंचित रहता है। उसकी मां कोई व्यवसाय या नौकरी करके धनार्जन करती है। जातक का चरित्र अच्छा नहीं होता। वह व्यभिचारी रहता है। कालांतर से कामशक्ति क्षीण होती है। इसी कारण उसकी पत्नी भी उससे असंतुष्ट रहती है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक उच्च शिक्षित रहता है। देश-विदेश में भ्रमण करता है। वैज्ञानिक कार्यों से संबंध रखकर अपने बुद्धिबल पर घर, मोटर, नौकर-चाकरों से युक्त सुखी जीवन जीता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक का चरित्र संदेहास्पद रहता है। वह अहंकारी, घमंडी, दलाल, एजेंट एवं सूदखोर रहता है। स्त्री जातक के बुरे चाल-चलन के कारण मां-बाप उसका त्याग करते हैं। बाद में वह मां के साथ रहकर दरिद्रता में जीवन बिताती है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक संपत्ति बेचकर खा जाता है। पिता के साथ संबंध स्नेहपूर्ण नहीं रहते। पिता दुश्चरित्र एवं शराबी रहता है। वह जातक की मां को शारीरिक कष्ट देता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक का सर्वारिष्ट दूर होकर उसे दीर्घायु प्राप्त होती है लेकिन जीवन दुखमय रहता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक अल्पायु रहता है। बचपन में काफी कष्ट सहता है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक डॉक्टर या दवाइयों का व्यापारी रहता है। हकीम या वैद्य भी बन सकता है। वह काफी तनावग्रस्त रहता है। 40वें वर्ष के बाद व्यवसाय में सफल होता है। खेती या साग-सब्जी बेचकर काफी मुनाफा कमाता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक को पारिवारिक विरोध सहना पड़ता है। लाभदायक व्यापार से काफी संपत्ति कमाता है। आर्थिक स्थिति अच्छी होने पर सभी रिश्तेदार नजदीक आ जाते है। उसके पास पैसा न रहने पर उसकी पत्नी भी उसका त्याग कर देती है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक नर्स या उपचार करनेवाला सेवक रहता है। कुछ जातक सुरक्षा सेवा में या गुप्तचर संगठन में कार्य करते हैं।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक धैर्यशील, धर्म परायण परंतु पिता के कारण दुखी एवं मां को सहयोग देनेवाला होता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक की स्थिति अच्छी रहती है। उच्च शिक्षित होकर अनुसंधान कार्य के माध्यम से धन कमाता है। दूर देशों में भ्रमण भी करता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक के मित्र धनी होते हैं। मित्रों से वह लाभान्वित होता है। वह बीमा एजेंट, शेयर दलाल या सूदखोर रहता है। जमीन-जायदाद के कामों से भी लाभ पाता है।

हर्षल-नेपच्यून

आश्लेषा नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हों तो जातक गुप्त बातें किसी पर प्रकट नहीं करता। वह घातपाती, ढाढसी, विक्षिप्त, धूर्त, सब पर अपना प्रभुत्व रखनेवाला और शत्रु को धोखा देनेवाला होता है।

प्लूटो

आश्लेषा नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक क्रोधी, कृतघ्न, धूर्त, घातपाती, धैर्यवान, निष्ठुर, नीतिभ्रष्ट, कुविचारी, दुर्गुणी रहता है।

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे स्त्री पुरुष पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, भरणी, हस्त, श्रवण, रोहिणी, स्वाति, शतभिषा, आर्द्रा नक्षत्रों में जन्मे जातकों के साथ लेनदेन, मित्रता, व्यापार में साझेदारी या विवाह न करें।

□□

मघा (10) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक खर्चीले स्वभाव का, उच्चाधिकार संपन्न एवं ख्याति प्राप्त रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक महिला उपयोगी चीजों का व्यवसाय करता है। आमदनी से अधिक खर्च करनेवाला, पीलिया एवं अन्य उष्णताजन्य विकारों से ग्रस्त, क्रूर किंतु मेहनती रहता है। बुध की दृष्टि हो तो सुंदर व्यक्तित्व से युक्त, कायदे-कानून की अवहेलना करनेवाला, समाज एवं शासन से अपेक्षा रखनेवाला, स्वाभिमानी, लेखक, साहित्यकार रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंदिर-मस्जिद एवं अन्य भवन निर्माण के कार्य में प्रवीण, इंजीनियर, डॉक्टर, चिकित्सक, बाग-बगीचों का शौकीन रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो विफल एवं गुस्सैल रहता है। उसका बर्ताव असभ्य एवं अशोभनीय रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक ईर्ष्या-द्वेष करनेवाला, दूसरों के कार्यों में रोड़े अटकानेवाला होता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक गरीब होता है। नौकरी करके अपनी आजीविका चलाता है। कुंडली का लग्न मघा नक्षत्र में हो तो उसे रतौंधी होती है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो प्रवास से थकान महसूस करनेवाला, गरीब, अधिक भोजन करनेवाला एवं आंखों की बीमारी से ग्रस्त रहता है। शनि की दृष्टि हो तो माता-पिता से दुश्मनी करके उनसे अलग रहता है।

तृतीय चरण में सूर्य हो एवं उस पर शनि की दृष्टि हो या शनि-सूर्य पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक मध्यायु होता है। उसे प्लूरिसी जैसे रोग होते हैं।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो और उस पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक अल्पायु रहता है। मघा नक्षत्र पर अन्य किसी नक्षत्र की दृष्टि हो तो मध्यायु तक जीवन सुख से बिताता है। मध्यायु के बाद बेरोजगारी एवं आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक धनवान एवं ठाट-बाट से रहनेवाला होता है किंतु बुढ़ापे में संतान से दुख प्राप्त होता है। मंगल की दृष्टि हो तो राजनीति में

उच्च पद प्राप्त करता है। इस पद के कारण वह अपने गांव, शहर और क्षेत्र का विकास करवाता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक धनवान, सुखी एवं मदिरापान करनेवाला होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो कलाकार, विद्वान एवं महिला उपयोगी कार्यों में संलग्न रहता है। शनि की दृष्टि हो तो खेती, सुरक्षा-सेवा में नौकरी करके अपना निर्वाह करता है। पत्नी गरीब किंतु झगड़ालू रहने से विवाह के बाद तलाक हो सकता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक की आंखें काली होती हैं। वह संतानहीन रहता है। समाजसेवा में अपना समय गुजारता है। छोटी-मोटी दुकानदारी से होनेवाली आमदनी से जीविका चलाता है। नौकरी में रहे तो उसके अधीन कई लोग काम करते हैं।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक स्त्री जाति से द्वेष करनेवाला, बुढ़ापे में आर्थिक तंगी का सामना करनेवाला होता है। अकस्मात रूप से आर्थिक स्थिति में सुधार आता है परंतु कंजूसी एवं शारीरिक अस्वस्थता के कारण परिवार के सहयोग से वह वंचित रहता है।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक के 35-36वें वर्ष में तनाव रहता है, बाद में धीरे-धीरे उसका वैवाहिक जीवन सुखी होता है। कुंडली का लग्न इसी नक्षत्र-चरण में हो तो तपेदिक, मधुमेह, कैंसर जैसे दीर्घकालीन रोग होते हैं।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक को 32वें वर्ष तक मृत्युसम यातनाएं भोगनी पड़ती हैं। यदि आगे भी जीवन रहा तो राजनीति एवं समाजसेवा के लिए विशेष पद प्राप्त होता है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक शास्त्रनिपुण, पुलिस या सेनाधिकारी की हैसियत से कार्यरत रहता है। जंगल या पहाड़ी बस्ती में उसका कार्यक्षेत्र रहता है। वह शत्रुओं का नाश करनेवाला होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो वह हृष्ट-पुष्ट व दिखने में क्रूर रहता है। मातृभक्त रहता है। बुध की दृष्टि हो तो सुंदर, चरित्रवान रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो फैशन करनेवाला एवं अनैतिक कार्यों में हिस्सा लेनेवाला रहता है। उसे असाध्य रोग होते हैं किंतु जीवन में श्रेष्ठ पद पर विराजमान होकर समाज की आशा-आकांक्षाएं पूर्ण करता है। शनि की दृष्टि हो तो परिवार से अलग रहकर गरीबी में जीवन बिताना पड़ता है।

प्रथम चरण में मंगल हो एवं कुंडली का लग्न भी इसी नक्षत्र-चरण में हो तो जातक को कैंसर होने का भय रहता है। शनि भ्रमण जब इस नक्षत्र से होगा तब दुर्घटना से मृत्यु होने की संभावना रहती है। आमतौर पर ऐसे जातक सरकारी नौकरी करते हुए संतोष के साथ उदर निर्वाह करते हैं। फिर भी पारिवारिक जीवन दुखपूर्ण रहता है।

द्वितीय चरण में जातक का वैवाहिक जीवन दुखी रहता है। बृहस्पति भी मघा नक्षत्र के इसी चरण में स्थित हो तो वह बचपन से बुद्धिमान होता है। उच्च शिक्षा पाकर उच्च पदस्थ रहता है। उसके पेट पर काला चिह्न या अन्य कोई निशान पाया जाता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक जिम्मेदारियों के बोझ से दबा रहता है। परिवार बड़ा रहता है। नजदीकी रिश्तेदार काफी रहते हैं। वह हमेशा अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में तत्पर रहता है। इससे कर्ज का बोझ बढ़ता है। किसी भी काम के लिए वह मना नहीं करता किंतु इसके बदले में कृतज्ञता के दो शब्द भी उसे प्राप्त नहीं होते। उसकी सारी संपत्ति अनावश्यक खर्च होती है।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक में आमतौर पर उपरोक्त गुण-अवगुण निहित रहते हैं। उसका स्वास्थ्य एवं आर्थिक स्थिति चढ़ाव-उतरावों से भरी रहती है। बचपन से ही पीलिया, अस्थमा जैसे रोगों से वह पीड़ित रहता है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक क्रूर, दूसरों के लिए उपद्रवकारी एवं दूसरों की तरक्की देखकर जलनेवाला होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक का व्यक्तित्व आकर्षक रहता है, संगीत कला में रुचि रहती है। मंगल की दृष्टि होने पर जातक व्यसनी एवं भोगविलासी रहता है। उसके शरीर पर शस्त्रादि के कारण जख्म होने की संभावना रहती है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक स्वयं सुंदर, दार्शनिक एवं अपने परिवार में सुधार करनेवाला रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो बड़े नेताओं या सरकार के अधीन रहता है और धीरे-धीरे काफी धन इकट्ठा कर लेता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक मलीन व उग्र चेहरेवाला होता है।

प्रथम चरण में बुध हो एवं उसके साथ सूर्य-बृहस्पति हो तो जातक उद्योग समूह में या फैक्टरी में प्रबंधक या समकक्ष पद पर कार्यरत रहता है। उसकी संतान भी बुद्धिमान रहती है। शनि-मंगल का दृष्टि योग हो तो उस व्यक्ति को अचानक नुकसान सहन करना पड़ता है। परिणामस्वरूप वह पागलों जैसा व्यवहार करता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक का वैवाहिक जीवन शांतिपूर्ण रहता है। बृहस्पति भी इस चरण में हो तो जातक लेखक, अध्यापक या ज्योतिषी बनता है। उसे मानसिक संतुलन या नाड़ी कंपन जैसे विकार होते हैं।

तृतीय चरण में बुध हो और उस पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक के पास थोड़ा बहुत धन रहता है। वह शिल्पकार, सुनार, वैद्य आदि कार्यों से धन कमाता है। उसे उसके सहयोगी या साझेदार धोखा देते हैं। महिला वर्ग से विशेष रूप से लाभान्वित रहता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक साधारण जीवन जीता है। फल, साग-तरकारी, फूल, कपड़े, घी-तेल के व्यापार से धन कमाता है। खोमचा लगाकर भी धनार्जन कर सकता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक अच्छे विचारों का, प्रतिष्ठित परिवार में जन्मा होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो पत्नी से धन मिलता है। जातक सुंदर चेहरे का किंतु बुरी आदतोंवाला रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो सामाजिक कार्यों में सफल होता है। वह बिल्डिंग कॉन्ट्रेक्टर, इंजीनियर या ठेकेदारी का काम करता है। बुध की दृष्टि हो तो अनेक शास्त्रों का जानकार, मृदुभाषी, ज्ञान-विज्ञान से युक्त रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो महिला वर्ग में आदरणीय, सरकारी नौकरी में संलग्न या डॉक्टर बनता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक स्पष्ट वक्ता किंतु बड़े परिवार के कारण अभावग्रस्त जीवन जीता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक धनवान, विद्वान एवं परिवार प्रेमी रहता है। किसी संस्था का अध्यक्ष या संगठन अथवा सेना का नेतृत्व करता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक उच्च शिक्षित, विदेश में ज्ञान प्राप्त करनेवाला, राजसेवा से लाभान्वित रहता है। उसकी जन्मकुंडली में षष्ठ स्थान में चंद्र हो तो उसे नौकरी में कष्ट रहता है। वह व्यापार क्षेत्र में प्रविष्ट होता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक हट्टा-कट्टा, विद्वान, धनवान, राज्याधिकारियों से संबद्ध व राज्यसेवा में कार्यरत रहता है। शत्रुहन्ता भी होता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक में नेतृत्व करने की असामान्य शक्ति रहती है। जातक को सामाजिक सेवाओं के कारण राज्याधिकार प्राप्त होता है। बचपन से ही नेतागिरी के गुण उसमें दृष्टिगोचर होते हैं और वह यशस्वी बनता है।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक द्वेष करनेवाला होता है। वह महिला उपयोगी वस्त्रों का व्यापार करता है। चंद्र की दृष्टि होने पर वह जन्मजात धनवान रहता है किंतु दुराचारी स्त्री के कारण धन बरबाद होता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक धनवान परंतु कंजूस रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो नौकर-चाकरों से युक्त सुखी वैवाहिक जीवन जीता है। शनि की दृष्टि हो तो उसकी पत्नी तलाकशुदा या विधवा होती है। वह उत्तम प्रशासक होता है, जिलाधिकारी भी बन सकता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक अत्यंत हीन आचरण का, क्रोधी एवं प्रतिष्ठा को नष्ट करनेवाला रहता है। शुक्र के साथ मंगल का दृष्टियोग हो तो जातक अनैतिक संबंधों के कारण विवादों में फंसता है और पत्नी का त्याग करता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक धनवान एवं प्रसन्नचित्त परंतु अल्पायु रहता है। कोई विशेष समस्या न रहते हुए भी वह अंधविश्वासी रहता है। इस कारण उसे यहां-वहां धन खर्च करना पड़ता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक अपनी मां या सौतेली मां के स्वास्थ्य के लिए चिंतित रहता है। वह शास्त्रों का ज्ञाता, गणितज्ञ एवं ज्योतिषी बनता है। उसकी एक आंख खराब रहती है। पिता से मतभेद होने के कारण उसके भाई-बहन भी

उस पर निर्भर रहते हैं।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक प्रतिभासंपन्न एवं सरकार से लाभान्वित रहता है। उसके कान के पास तिल या कोई चिह्न पाया जाता है, पत्नी के साथ मतभेद होने से वैवाहिक जीवन दुखपूर्ण रहता है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक गरीब, चोर, लफंगा एवं व्यसनी रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो वह काफी धनवान, भाग्यवान एवं आदर्श पत्नी का पति होता है। मंगल की दृष्टि हो तो सुंदर प्रदेशों में घूमनेवाला, एकांत जगह में रहनेवाला एवं पारिवारिक सुख से वंचित रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक आलसी, अकर्मण्य एवं दरिद्र अवस्था में जीनेवाला रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो अपने गांव, शहर का प्रमुख या अपने क्षेत्र में धनवान की हैसियत से जाना जाता है। उसकी पत्नी एवं बच्चे सद्गुणी होते हैं। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक को वसीयतनामे से काफी संपत्ति प्राप्त होती है किंतु वह अल्पायु होता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक छोटे कद का परंतु हृष्ट-पुष्ट होता है। उसके बच्चे होनहार रहते हैं परंतु उसका वैवाहिक जीवन दुखी रहता है। वह मध्यमावस्था में अपंग, मूक-बधिर या लकवाग्रस्त होता है। उसके मित्र भी उससे बदला लेते हैं।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक का दो बार विवाह होता है। फिर भी वैवाहिक जीवन में कई बार उसे कष्ट सहन करना पड़ता है। आर्थिक स्थिति डांवाडोल रहती है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक का वैवाहिक जीवन कष्टमय रहता है। उसकी पत्नी क्रूर एवं दुर्भाग्युक्त रहती है। उसका वह त्याग करता है। चंद्र की दृष्टि इस शनि पर हो तो जातक के पास पुराने वाहन रहते हैं। वह भंगार (टूटे-फूटे सामान) का व्यापारी रहता है। उसकी आर्थिक स्थिति मजबूत रहती है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक हृष्ट-पुष्ट शरीरवाला, मेहनत-मजदूरी करके पेट पालनेवाला होता है, ईमानदार किंतु अभद्र बोलनेवाला, घोड़ा या रिक्शा चलाकर पेट पालनेवाला होता है। वह स्वामिभक्त रहता है। उसे अचानक धन प्राप्त होता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक के दो विवाह होते हैं। वह धनवान परिवार में जन्म लेता है और उसे सभी सुख प्राप्त होते हैं।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक संतान सुख से वंचित रहता है। अनुचित कार्यों से धन कमाता है।

तृतीय चरण में राहु हो एवं मंगल की उस पर दृष्टि हो तो जातक के शरीर पर जख्म होते हैं एवं फोड़े-फुंसियां निकलती हैं। वह मारामारी करने में प्रवीण रहता

है तथा भय एवं आतंक फैलाता है। मृत्यु के समय भयंकर व्याधियों से ग्रस्त रहता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक श्रेष्ठ जीवन जीता है। वह स्कूल, कॉलेज या किसी संस्था का प्रमुख रहता है। एक ही समय में अनेक काम करने से भूलने की आदत हो जाती है। खांसी, अनिद्रा का रोग रहता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक सट्टे व अन्य अनुचित कामों में पैसा खर्च करता है। समाज विरोधी गतिविधियों में निपुण एवं छिपकर आपराधिक गतिविधियों से धन कमाता है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक उपेक्षित एवं तनावपूर्ण जीवन बसर करता है। बुरी आदतों के कारण प्रियजन दूर चले जाते हैं। वह अपने परिवार के लोगों को छोड़कर अन्य सभी का भला करता है। जन्मकुंडली का लग्न भी इसी नक्षत्र-चरण में हो तो पति या पत्नी एक दूसरे की मृत्यु के लिए कारण बनते हैं। पति अचानक लापता हो जाता है और फिर साधु के वेष में घर लौटता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक काम करते समय व्यर्थ की चिंता करता रहता है। लग्न में राहु हो तो पति या पत्नी का वियोग 26-27 साल की आयु में होता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक बारूद बनाकर या तंत्र-मंत्र के माध्यम से धन कमाता है। उसके ऊपर बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक सरकारी नौकरी, सेना, पुलिस या गुप्तचर विभाग में काम करता है। उसका वैवाहिक जीवन सुखी रहता है। बुढ़ापे में अच्छा धनसंग्रह होता है।

हर्षल-नेपच्यून

मघा नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हों तो जातक कुछ-न-कुछ उलटा-सीधा करनेवाला होता है। वह उच्चाकांक्षा रखनेवाला, अधिकारी, प्रसिद्ध व्यक्ति, बुद्धिमान, धैर्यवान एवं क्रूर रहता है।

प्लूटो

मघा नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक दूसरों पर शासन करनेवाला, उच्च पद का अभिलाषी, राजनीति में सक्रिय, स्वावलंबी, प्रतिष्ठित एवं कर्त्तव्यशील रहता है।

मघा नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, उत्तराभाद्रपद, एवं रोहिणी नक्षत्रों में जन्मे स्त्री-पुरुषों के साथ मित्रता, साझेदारी, लेनदेन एवं विवाह न करें।

□□

पूर्वाफाल्गुनी (11) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक को रिश्तेदारों एवं शत्रुओं से कष्ट रहता है। धन कमाने के लिए देश के बाहर जाना पड़ता है। इस सूर्य पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक मूर्च्छा, मस्तिष्क ज्वर जैसे रोगों से ग्रस्त रहता है। वह आलसी एवं शत्रुओं से डरनेवाला होता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक अधिकारसंपन्न एवं उच्च कोटि का संतान सुख पाता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंत्रशास्त्र में पारंगत, स्वतंत्र आजीविका कमानेवाला रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो विदेश में रहनेवाला, शस्त्र, अग्नि या विष से कष्ट सहनेवाला रहता है। शनि की दृष्टि हो तो अनुचित कामों से पैसा कमानेवाला, नौकर-चाकरों से युक्त, खर्चीले स्वभाव का होता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो एवं उस पर शनि या मंगल की दृष्टि हो तो जातक को मस्तिष्क ज्वर, मूर्च्छा जैसे रोग होते हैं। वह सरकारी कर्मचारी या डॉक्टर की हैसियत से अपनी आजीविका चलाता है और अपने अधीन काम करनेवालों के साथ सख्ती से पेश आता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो एवं शनि या मंगल की दृष्टि उस पर हो तो जातक जोड़तोड़ कर उच्च अधिकारी बनता है। उसकी पहली पत्नी या ज्येष्ठ पुत्र की दुर्घटना में मृत्यु होती है। पत्नी की मृत्यु के बाद वह विधुरावस्था में जीवन व्यतीत करता है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक सरकारी नौकरी या दवाइयों की बिक्री करके अपना जीवनयापन करना है। वह हृदयरोग एवं मानसिक तनाव से ग्रस्त रहता है। बचपन में आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहती। लेकिन मध्यायु में आर्थिक दृष्टि से जीवन स्थिर बनता है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक तरल पदार्थों की बिक्री या उत्पादन से धन कमाता है। अस्पताल में सेवाकार्य से जुड़ा रहता है। राहु या केतु के साथ सूर्य हो तो जातक मिस्त्री या ऑटोमोबाइल इंजीनियर की हैसियत से धन कमाता है। उसे त्वचा या नेत्ररोग होता है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक दूसरों से काम करवाने में कुशल रहता है।

वह दूसरों की मदद करता है, पर उसकी मदद कोई नहीं करता। आर्थिक स्थिति संतोषपूर्ण रहती है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक चालाक, धूर्त एवं धनवान रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक धैर्यशील, श्रेष्ठ आचरण से युक्त, दूसरों की मदद करनेवाला, सत्ताधीशों के संपर्क में रहनेवाला होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक प्राचीन विद्याओं का जानकार एवं भाषा-ज्ञान के माध्यम से आजीविका चलाता है। शुक्र की दृष्टि हो तो भौतिक सुख भोगनेवाला एवं धनवान होता है। आकस्मिक रूप से कुछ समस्याएं खड़ी होती हैं। शनि की दृष्टि हो तो धन साधन रहित एवं भूखा-प्यासा रहता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक धैर्यशील, महिलाओं से द्वेष करनेवाला किंतु अपनी माता को सर्वोपरि माननेवाला होता है। समय पर भोजन न मिलने से रोगग्रस्त रहता है। स्त्री एवं संतान आज्ञाकारी रहती है। वह प्रयोगशाला में सहायक की हैसियत से काम करके अपनी आजीविका चलाता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक गुस्सैल रहता है किंतु प्रौढ़ावस्था में शांत एवं स्थिर रहता है। बुढ़ापे में दीनहीन स्थिति रहती है। दंतरोग, उदरविकार से ग्रस्त रहता है।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक पर उसके परिवार की जिम्मेदारी रहती है। बचपन से दंतरोग होता है। वह शीघ्र आक्रामक एवं बेपरवाह होता है। उसका धन चोरी हो जाता है किंतु कानून की सहायता से उसके नुकसान की क्षतिपूर्ति हो जाती है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक अनेक उपकरणों एवं शास्त्रों की जानकारी रखता है। जनता की सेवा में विशेष रुचि रखता है। कई अच्छे कार्य उसके द्वारा संपन्न होते हैं। वह सामाजिक प्रतिष्ठा का उपयोग धन एवं यश प्राप्ति के लिए करता है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक चिकित्सा सेवा से आजीविका चलाता है किंतु पारिवारिक सुख से वंचित रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो फोड़े-फुंसियां एवं जलोदर रोग होने की संभावना रहती है। ऐसा जातक कम पढ़ा-लिखा एवं धर्मशाला की देखभाल या सुरक्षा सेना में कार्यरत रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक झूठा, काव्य एवं गणित में रुचि रखनेवाला होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो प्रारंभिक जीवन दुखी किंतु मध्यावस्था सुखकर रहती है। जातक विदेश में रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो धनभोगी, अनैतिक कार्यों में संलग्न, यदाकदा धन, भोजन एवं वस्त्र के लिए भी वंचित रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक चोर, धैर्यवान एवं बुरी आदतोंवाला होता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक चिकित्सा व्यवसाय, अस्पताल या सेनोपयोगी उपकरण, मशीनरी, औजार आदि की बिक्री क़रके पेट पालता है। उसे गलत

दवाइयों के प्रयोग से उत्पन्न रोग, महामारी, हैजा, अल्सर आदि रोगों की पीड़ा रहती है। ऑपरेशन होने की भी संभावना रहती है। वह जीवन में कई बार कानूनी शिकंजों में फंसता है।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक सुरक्षा सेना या पुलिस में प्रगति करता है। उस पर जादू-टोने का असर होता है और ठीक न होनेवाले रोग उत्पन्न होते हैं।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक इंजीनियर या विद्युत मशीनरी का मैकेनिक बनता है। उसका वैवाहिक जीवन सुखी होता है। बृहस्पति भी मंगल के साथ हो तो जातक धनवान, बोलने में माहिर या उच्चाधिकारी बनता है। कुछ ऐसे जातक वकील या आर्थिक सलाहकार के रूप में काम करते पाए जाते हैं।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक दूसरों की धन-संपत्ति हड़पता है। असामाजिक तत्त्वों से जुड़ा रहता है और पत्नी एवं संतान के प्रेम से वंचित रहता है। वह अपने कामों एवं धन कमाने में चतुर होता है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सत्यवादी एवं ललित कला में रुचि रखनेवाला होता है। राज्य सरकार से सम्मान प्राप्त करता है। चंद्र की दृष्टि हो तो कुतर्क करनेवाला, तेज स्वभाव का रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो तत्पर, दिखने में सुंदर एवं कुटिल रहता है। किसी बड़े आदमी की सुरक्षा के लिए नियुक्त रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो धन एवं सुख का भोगी रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो सरकार से सम्मानित, शत्रुहंता एवं राजकीय सम्मान प्राप्त करनेवाला होता है। शनि की दृष्टि हो तो सहज रूप से यश प्राप्त करनेवाला, सम्मानित, बहुमूल्य वस्त्र धारण करने का शौकीन होता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक धनवान एवं प्रख्यात रहता है परंतु उसकी देह एवं स्मरणशक्ति कमजोर रहती है। वह संकीर्ण आचरणवाला एवं पत्नी तथा संतान के सुख से वंचित रहता है। उसके द्वारा अन्य लोग लाभान्वित होते हैं लेकिन परिवार एवं पत्नी को लाभ नहीं मिलता।

द्वितीय चरण में बुध हो तो संतान आज्ञाकारी रहती है किंतु वह अपनी पत्नी से विरक्त रहता है। जातक श्रेष्ठ वकील, गणितज्ञ एवं लेखाकार रहता है। मंगल-बुध का संयोग हो तो रक्तदोष रहता है एवं कैंसर जैसे असाध्य रोग से पीड़ित रहता है। हृदय रोग भी उत्पन्न होता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक गलतफहमियों के कारण समाज एवं अपनी जाति से अलग रहता है। उसके मित्र एवं भाई-बहन भी उसके शत्रु रहते हैं। पत्नी एवं संतान का असहयोगी रहता है। स्मरणशक्ति कमजोर रहने से अप्रिय घटनाएं घटती हैं।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक धनवान किंतु शीघ्रकोपी रहता है। किसी को सहयोग नहीं देता। अपने कर्मों का फल भोगता है। अनुचित एवं अनैतिक कृत्यों के कारण शरीर रोगग्रस्त रहता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक अपने गांव या शहर का प्रमुख बनता है। उसकी आर्थिक हालत मध्यम रहती है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक भाग्यवान एवं मां का लाड़ला रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो व्यापार में बेतहाशा प्रगति करता है एवं प्राप्त धन से जमीन-जायदाद खरीदता है। बुध की दृष्टि हो तो वह मधुरभाषी, ज्योतिष विद्या का ज्ञाता, दूसरों को आकर्षित करनेवाला रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो निर्माण कार्य में कुशल एवं अच्छी प्रगति करनेवाला होता है। शनि की दृष्टि हो तो जाति का मुखिया एवं धनवान रहता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक दृढ़निश्चयी एवं धैर्यशील रहता है। अपने मित्रों का त्याग करके अपने परिश्रम से विज्ञान एवं अन्य शास्त्रों में विशेषता प्राप्त करता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक कानून या लेन-देन का व्यवसाय करता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक सरकारी अधिकारी या पुलिस प्रशासन में उच्चाधिकारी रहता है। कई बार उसका सम्मान किया जाता है। वह मधुरभाषी एवं लोकप्रिय प्रशासक रहता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक नाम-ग्राम, पद-प्रतिष्ठा से युक्त रहता है। शुक्र भी साथ में हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, संतानयुक्त एवं धनवान रहता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक धन, ख्याति एवं स्वास्थ्य का धनी होता है। उसकी नाभि के पास तिल पाया जाता है। अध्यात्म से लगाव रहता है और अपने एवं अन्य धर्मियों में उसकी प्रशंसा होती है। वह विश्वविख्यात बनता है।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक अधिकारी बनकर सरकारी नौकरी करता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक आकर्षक व्यक्तित्व का नेता या अभिनेता रहता है, आर्थिक दृष्टि से संपन्न एवं सुखी रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो पैतृक संपत्ति की हानि होती है। जातक वेश्यागामी एवं आचरणहीन रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक नाना प्रकार के वाहन, धन-दौलत एवं प्रतिष्ठा का धनी होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक धैर्यशील एवं भाग्यवान रहता है। शनि की दृष्टि हो तो दुर्भाग्ययुक्त एवं दुखी रहता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक धनसंपन्न एवं सुखी रहता है, अपने मित्र एवं रिश्तेदारों से घिरा रहता है। वह दूसरों की मदद करनेवाला, समृद्ध परिवार का सदस्य एवं गरीबों और अनाथों की सेवा में संलग्न रहता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक क्लर्क, फिल्म, रेडियो, टी.वी कलाकार रहता है। बुधयुक्त शुक्र हो तो जातक कोर्ट-कचहरी में कार्यरत वकील या मजिस्ट्रेट होता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक महिला वर्ग से विशेष रूप से लाभान्वित

रहता है। वह सुंदर पत्नी एवं होनहार संतान से युक्त रहता है। उसे सांसर्गिक, गुप्त, नेत्र रोग होते हैं।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक कलाकार, गायक या संगीतकार रहता है। वह सुखी परिवार, सुखी वैवाहिक जीवन एवं पैसों से धनवान रहता है। व्यर्थ के खर्चों के कारण युवावस्था में आर्थिक कष्ट सहता है और व्यापार में भी घाटा होता है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक अपनी बुरी आदतों के कारण जीवन में कभी सुखी नहीं बन पाता। उसे जी-तोड़ परिश्रम करना पड़ता है। क्रोधी स्वभाव के कारण उसे सर्वत्र विरोध सहन करना पड़ता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक हंसमुख, सरकारी नौकरी, राजनीति या आर्थिक लेनदेन के व्यापार से संबंधित रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो वह ज्ञान-विज्ञान का ज्ञाता बनता है। बुध की दृष्टि हो तो युद्धकला में पारंगत, शोध करके धन प्राप्त करनेवाला होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो सज्जन, दीर्घायु एवं प्रसिद्ध बनता है। वह सरकारी नौकरी के कारण जरूरतमंद लोगों की सहायता करता है। शुक्र की दृष्टि हो तो सोने-चांदी के आभूषणों का व्यापार करता है और धार्मिक विचारों का, परिश्रमी पुरुष रहता है। वैवाहिक सुख में न्यूनता रहती है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक बचपन में दुखी रहता है, अनाथ जीवन बिताता है। वह शारीरिक दृष्टि से विकलांग एवं अनेक रोगों से ग्रस्त रहता है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक उदार, लंपट, क्रोधी, दूसरों की हूबहू नकल करनेवाला रहता है। उसकी लेखन शैली उत्तम होती है। 50 साल के बाद वैवाहिक जीवन सुखमय रहता है। उसे एक लड़का एवं एक लड़की होती है। सूर्य या मंगल की दृष्टि हो तो जातक अंधा भी हो सकता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक हमेशा संकटग्रस्त, बड़े परिवारवाला, दूसरों की सहायता के लिए अपना जीवन समर्पित करनेवाला होता है। सरकारी नौकरी में हो तो लोगों पर अच्छा प्रभाव रखता है। सर्वसम्मति से राजकीय पद पर कार्यरत रहता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक अधिक आयु होने पर विवाह करता है, कठोर परिश्रमी एवं निष्ठावान अधिकारी होता है। यश प्राप्ति में उसे कठिनाइयां रहती हैं।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक किसी संस्था का प्रमुख बनता है। कई उद्योगों से धन कमाता है। दयालु एवं अपने अधीनस्थ लोगों का कल्याण करनेवाला होने से सर्वत्र उसका सम्मान होता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक स्वपुरुषार्थ से प्रगति करता है। छोटे परिवार में जन्म लेकर अपने परिश्रम से प्रगति के ऊंचे शिखर पर पहुंचता है। उसके बच्चे एवं पत्नी भाग्यवान होते हैं।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक कार्यकुशल रहता है। कठिन-से-कठिन कार्य आसानी से संपन्न करता है। कई बार विदेश यात्रा करके अपार धन जोड़ता है।

चतुर्थ चरण में राहु होने पर जातक कार्यकुशल एवं विद्वान रहता है। उसे संतान विलंब से प्राप्त होती है। सरकार से सम्मान प्राप्त होता है। बाह्य स्त्री संबंधों के कारण ब्लैकमेल होने की संभावना रहती है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक धन-संपत्ति एवं यश से परिपूर्ण रहता है। वैवाहिक जीवन सुखी रहता है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक सर्वगुण संपन्न रहता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक ईश्वर पर अपार आस्था रखनेवाला होता है और ईश्वर कृपा उस पर रहती है। पत्नी का स्वास्थ्य हमेशा बिगड़ा हुआ रहता है। सरल स्वभावी एवं त्रिकाल ज्ञान से पूर्ण रहता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक को 35 या 36 वर्ष की आयु के बाद प्रगति होती है। बृहस्पति एवं मंगल भी केतु के साथ हो तो जातक छोटे कद का, व्यवहारकुशल एवं विद्वान होता है।

हर्षल-नेपच्यून

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हो तो जातक व्यापारी, सम्मानित, समभाव से बर्ताव रखनेवाला, गरीबों की सहायता करनेवाला एवं धनवान होता है।

प्लूटो

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक हट्टा-कट्टा, धनवान, पैसों से प्यार करनेवाला, बुद्धिमान, सार्वजनिक कार्यों में हिस्सा लेनेवाला, शोहरत प्राप्त करनेवाला एवं श्रद्धालु रहता है।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष आश्लेषा, स्वाति, हस्त, मृगशिरा नक्षत्रों में जन्मे स्त्री-पुरुषों के साथ मित्रता, लेन-देन, व्यवसाय में साझेदारी एवं विवाह न करें।

□□

उत्तराफाल्गुनी (12) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक अपने ही लोगों से धोखा खाता है। उदर निर्वाह के लिए जन्म स्थान से दूर जाना पड़ता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक आलसी रहता है। उसके शत्रु उसे कहीं भी टिकने नहीं देते। बुध की दृष्टि हो तो जातक अनाज के दाने-दाने के लिए तरसता है किंतु उसकी संतान बुद्धिमान एवं धन कमानेवाली होती है। इस कारण सभी उससे ईर्ष्या करते हैं। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक घुमक्कड़, मंत्र-तंत्र शास्त्र का ज्ञाता, परिवार से कलह करनेवाला, कृतघ्न किंतु दूसरों से प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाला होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो परदेस में धन कमानेवाला रहता है। किंतु जब शनि या बृहस्पति की महादशा, अंतर्दशा आती है तब वह कंगाल बन जाता है। जातक चालाक, स्त्रियों से शर्म करनेवाला होने से हंसी का पात्र बनता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक मध्यम शिक्षित, धनवान, उत्तम ज्योतिषी बनता है। वाणिज्य या गणित विषय से संबंधित कार्यों से धन जुटाकर आजीविका चलाता है। सूर्य पर बुध की दृष्टि या अन्य संयोग बनता हो तो उसे जुड़वां बच्चे होते हैं। शुक्र का योग इस सूर्य से बनता हो तो जातक पुलिस या सेना में नौकरी करता है। बुढ़ापे में आंखें कमजोर होती हैं।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक मधुरभाषी, स्नेहशील एवं लोकप्रिय रहता है। वह शोध कार्य से जुड़ा विद्यार्थी, अपने परिवार का चहेता एवं राजनीति में हिस्सा लेनेवाला होता है। इस सूर्य पर शनि की दृष्टि हो तो जातक दूसरों में मध्यस्थता करानेवाला या कमीशन एजेंट होता है। उसकी पत्नी एवं संतान का जीवन कष्टमय रहता है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक ज्ञानी, ज्योतिषी, आर्थिक सलाहकार, लेखाकार रहता है। उसे अस्थमा या फेफड़ों के रोग होते हैं।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक विशेष गुणों से युक्त, चालबाज, शास्त्र एवं पुराणों का अध्ययन करनेवाला, ज्योतिषशास्त्र या मनोविज्ञान का ज्ञाता रहता है। वह आकर्षक एवं धनवान रहता है किंतु उसका विवाह विलंब से होता है। स्त्री जातकों का विवाह 22वें वर्ष के बाद होता है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक भौतिक विज्ञान में उच्च शिक्षा प्राप्त किंतु धन कमाने में असफल होता है। बुध की दृष्टि हो तो सरकारी अनुदान से अपना व्यापार शुरू करता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक ऊंचे कद का दुर्बल और विद्वान रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो झूठा किंतु सभी सुख भोगनेवाला होता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक गरीब रहता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक साहसी, घमंडी किंतु माता-पिता का आज्ञाकारी रहता है। उसका चेहरा चौड़ा और गाल की हड्डियां उभरी हुई रहती हैं। कुंडली के लग्न में शनि हो तो बचपन में ही भाई-बहनों की मृत्यु हो जाती है। वह खूब कमाता है और खर्च भी काफी करता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक का स्वभाव मिश्रित, दिखने में सुंदर एवं निष्कपट रहता है। व्यापार में काफी घाटा उठाना पड़ता है। कन्या संतान बहुत रहती है किंतु पुत्र एक ही होता है। आर्थिक स्थिति अच्छी होने पर दान-धर्म करता है, जादू-टोना और तंत्र में रुचि रहती है। जीवन में कई बार स्थान परिवर्तन होते हैं। रक्तविकार एवं उदर रोग से पीड़ित रहता है।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक आकर्षक व्यक्तित्व का रहता है। कन्या संतान अधिक रहती है। परिवार एवं सहोदरों के साथ संबंध स्नेहपूर्ण नहीं रहते। वह कामकाज में चतुर एवं व्यवहार में लोभी और प्रसिद्ध रहता है। चालीसवें वर्ष के बाद धन प्राप्त करता है एवं वेदशास्त्रों में रुचि रखता है।

चतुर्थ चरण में चंद्र स्थित हो तो जातक सुविचारी, धनवान एवं ठिगना होता है। छोटा-सा काम शुरू करके बड़ा कार्यक्षेत्र बना लेता है। मंगल या शुक्र इस चरण में हों तो पानी में डूबने का या समुद्र के पास दुर्घटना होने का डर बना रहता है। उसके चेहरे पर काला दाग या तिल रहता है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक साहसी, जन्मजात धनवान एवं ठेकेदार रहता है। लकड़ी या प्लास्टिक से संबंधित व्यवसाय में संलग्न रहता है। पुलिस या सेना विभाग का सप्लायर रहता है। मंगल पर चंद्र की दृष्टि हो तो पुलिस या सेना में नौकरी करता है। गैरकानूनी कामों एवं भ्रष्टाचार तथा वेश्यावृत्ति के कारण उस पर आक्षेप लगकर उसे सजा होती है। बुध की दृष्टि हो तो वैद्य, ज्योतिषी, पुजारी या अध्यापक बनता है। जातक अच्छे परिवार में जन्म लेता है तथा पत्नी एवं संतान का उत्तम सुख प्राप्त करता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो लेखन, प्रकाशन या पत्रकारिता में जातक का भाग्योदय होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो पत्नी कमाऊ रहती है। शनि की दृष्टि हो तो नीच प्रवृत्ति एवं विध्वंसक वृत्ति का रहता है। शारीरिक श्रम के द्वारा धन कमाता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक सुशिक्षित एवं कवि हृदय का होता है।

कविताओं के प्रचार के लिए गांव-गांव घूमता है। लग्न कृतिका या रोहिणी नक्षत्र का हो तो पत्नी रोगी एवं संतान अल्पायु होती है। उसे न्यूमोनिया रोग होता है।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक ज्ञान-संपत्तियुक्त एवं एकांतप्रिय होता है। साहसी, काष्ठकला का ज्ञाता या वन विभाग का अधिकारी, लकड़ी का ठेकेदार या फर्नीचर बेचनेवाला रहता है। जख्म होने का भय रहता है।

तृतीय चरण में मंगल स्थित हो तो जातक गणित एवं काव्यशास्त्र में पारंगत रहता है। सरकारी माध्यम से विदेश यात्रा करता है। बुढ़ापे में दुखी एवं चेचक, हैजा या फेफड़ों के रोगों से ग्रस्त होता है।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक कानून या रसायन शास्त्रज्ञ की उच्च उपाधि से विभूषित रहता है। ज्योतिष विज्ञान में भी उसकी रुचि रहती है। अग्नि या शस्त्र के कारण हानि उठानी पड़ती है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक को सरकार द्वारा या अपने मालिक से शीघ्र उन्नति प्राप्त होती है। चंद्र की दृष्टि हो तो गांव या शहर का प्रमुख, प्रशासन में नियुक्त, मेयर या नगराध्यक्ष अथवा मुखिया बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो धनवान रहता है। मुनीम या लेखाकार बनकर धन कमाता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक चित्रकार, गायक, संगीतकार, केमिकल इंजीनियर बनता है। पत्नी द्वारा परेशान रहता है। शनि की दृष्टि हो तो गरीब होकर भी मान-सम्मान पाता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक आर्थिक सलाहकार या सरकारी प्रतिष्ठान में ऑडिटर के पद पर कार्य करता है। उसे खगोलशास्त्र एवं ज्योतिषशास्त्र का ज्ञान रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो केमिकल इंजीनियर बनता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक व्यापार, हिसाब-किताब या विक्रय विभाग में कार्यरत रहता है। अध्यापन, लेखन, पत्रकारिता के क्षेत्र में संलग्न रहकर भी वह धन कमाता है। शनि या बृहस्पति के संयोग में बुध रहने पर सिविल इंजीनियर या भवन निर्माण का व्यवसाय करता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो ऐसे जातक में विशेष प्रतिभा पाई जाती है। वह विद्वान एवं उदार हृदय का रहता है। पर्यटन विभाग या होटल-रेस्तरां के कारोबार से धन प्राप्त होता है। चंद्र या मंगल की दृष्टि हो तो इंजीनियर या संशोधक बनता है।

चतुर्थ चरण में बुध स्थित हो तो जातक प्रारंभ में छोटा कारोबार शुरू करके बाद में बड़ा उद्योगपति बनता है। उसका भाग्योदय मध्यम अवस्था में होता है। ज्योतिषशास्त्र एवं आर्थिक विषयों में पर्याप्त रुचि एवं ज्ञान रहता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक धन, पुत्र व आदर्श पत्नी से युक्त, सबसे मान-सम्मान प्राप्त करनेवाला होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक गांव या

शहर का प्रमुख होता है, सरकारी प्रतिष्ठान में बड़ा पद प्राप्त करता है। मंगल की दृष्टि होने पर आटोमोबाइल्स, प्रवासी सेवा या हवाई सेवा के माध्यम से धन प्राप्त होता है। बुध की दृष्टि हो तो ज्योतिषी एवं गणितज्ञ बनता है। शुक्र की दृष्टि हो तो कलात्मक कार्यकलापों से धन प्राप्त होता है किंतु प्राप्त धन का उपयोग वह स्वयं नहीं कर पाता। शनि की दृष्टि हो तो जातक लाखों में एक होता है। आदर्श पत्नी एवं ख्यातिप्राप्त पुत्र से युक्त रहता है किंतु इसके पास धन नहीं होता।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक हस्तकला में पारंगत रहता है। सहोदरों से बैर रहता है। व्यापार या सट्टेबाजी से धन प्राप्त करता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक का दायां हाथ कमजोर रहता है, अध्यापन, साहित्य सेवा, लेखन आदि से जीविका चलाता है और सट्टे या जुए में हार होती है। चेचक या फोड़े-फुंसियां होती हैं।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो और उस पर शनि, राहु या मंगल की दृष्टि हो तो जातक के पुत्रों की उसके रहते मृत्यु हो जाती है। महिला जातक का जन्म भले ही गरीब घर में हुआ हो लेकिन उसका विवाह धनी पुरुष के साथ होता है किंतु बुढ़ापे में संतान साथ नहीं देती।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति होने पर जातक राजनीति में बड़े ओहदे पर आसीन होता है। उसके पास जीने के लिए आवश्यक सभी सुख-साधन मौजूद रहते हैं। योग्य संतान एवं हितैषी मित्रों के कारण उसकी कीर्ति में निरंतर बढ़ोतरी होती रहती है। महामारी या अचानक हृदय गति रुक जाने से मृत्यु होती है।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक वैद्य या शल्य चिकित्सक बनता है। उसके दो विवाह होते हैं। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक शर्मीला होता है, अपने विचार गुप्त रखता है, गलतफहमियों का शिकार बनता है और महिला समाज में हंसी का पात्र रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक भाग्यवान रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो उच्च शिक्षा विभूषित विद्वान रहता है। उसके यहां अनेक प्रकार के वाहन एवं नौकर-चाकर बड़ी संख्या में होते हैं। शनि की दृष्टि हो तो जातक आचरणहीन, लंपट, पारिवारिक सुख से वंचित रहता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो वह महिला जातक के लिए फायदेमंद होता है। वे अनुचित मार्गों से धन कमाती हैं। पुरुष जातक की शिक्षा सामान्य स्तर की होती है। वह मंझले कद एवं आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। सामान्य विज्ञान, चित्रकारी एवं संगीत में रुचि रहती है, पत्नी सुंदर रहती है और संतान कम रहती है। महिला उपयोगी वस्तुओं के व्यापार से धन प्राप्त होता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक हमेशा रुपये-पैसे की तंगी में रहता है। पत्नी की मूर्खता के कारण वैवाहिक जीवन में सुख प्राप्त नहीं होता। जातक कृषि उत्पाद, दवाइयां एवं रसायन बेचकर पैसा कमाता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक के वैवाहिक जीवन में अस्थिरता पैदा होती है। शुक्र पर मंगल की दृष्टि हो तो पत्नी की मृत्यु असमय होती है और कन्या संतान अधिक रहती है। विधुरावस्था में दूसरा विवाह नहीं करता किंतु अन्य स्त्रियों से अनैतिक संबंध रहते हैं।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक को उसका मिश्रित फल एवं उच्चाधिकार प्राप्त हाता है। वैवाहिक जीवन सफल एवं सुखद रहता है। अच्छी आमदनी होने पर भी पत्नी द्वारा परेशान किया जाता है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सीधे मुंह बात नहीं करता और अपने पिता का दुश्मन रहता है। यही कारण है कि उसे पैतृक संपत्ति प्राप्त नहीं होती। चंद्र की दृष्टि हो तो छोटी बहन विधवा हो जाती है। उसकी जिम्मेदारी जातक पर आती है। मंगल की दृष्टि हो तो सहोदर जीवित नहीं रहते। बुध की दृष्टि हो तो उच्च शिक्षा प्राप्त करता है, वैवाहिक जीवन असंतुलित रहता है। बृहस्पति की दृष्टि होने पर शासन से लाभान्वित होता है। सभी से मान-सम्मान प्राप्त होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो दो विवाह होते हैं। सोने-चांदी के व्यवसाय से धन प्राप्ति होती है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक को मां का सुख प्राप्त नहीं होता। शनि के साथ राहु या केतु हो एवं उस पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक की आयु के सातवें वर्ष में मां की मृत्यु होती है। जातक के एक ही भाई रहता है, वह भी परदेश में। उससे जातक को खासा आर्थिक लाभ मिलता है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो ऐसी महिला जातक सुंदर होती है। असमय बाल सफेद हो जाते हैं और चेहरे में भी बदलाव आता है। ऐसी कन्याओं का विवाह बाईसवें वर्ष के पूर्व ही कर देना चाहिए अन्यथा विवाह में कई अड़चनें उपस्थित होती हैं।

तृतीय चरण में जन्मी महिला का पति हमेशा बीमार रहता है। ऐसा जातक रहस्यमयी शास्त्रों (जादू-टोना, तंत्र इत्यादि) में रुचि रखता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक संतानहीन, गरीब, महामूर्ख होता है। गोदाम का चौकीदार या बदमाशों का अगुवा रहता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक के गले पर काला तिल या काला दाग पाया जाता है। जातक दरिद्री एवं बेईमान रहता है। दूसरों का पैसा एवं संपत्ति हड़पने की आदत उसमें रहती है। उसे भयानक दुर्घटना होती है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक महत्त्वाकांक्षी होता है। अपना कार्य योजनाबद्ध ढंग से करता है। उसे सट्टे, रेस, लॉटरी के माध्यम से काफी धन प्राप्त होता है। वैवाहिक जीवन दुखी रहता है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक का विवाह काफी विलंब से होता है। व्यापार में बड़ा नुकसान उठाना पड़ता है। युवावस्था में अतिकामुकता के कारण गुप्त रोगों का शिकार बनता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक बेईमान एवं हमेशा के लिए दरिद्री रहता है। अपने मामा या चाचा के लिए घातक सिद्ध होता है। दुर्घटना के कारण अपंग बनता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, धनवान एवं वैवाहिक जीवन में सुखी रहता है। उसके एक ही कन्या संतान होती है। वह अस्थमा एवं उदर रोग से पीड़ित रहता है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक में बदला लेने की भावना होती है। अपनी पत्नी के माध्यम से काफी धन कमाता है। उसे पत्नी का साथ लंबे समय तक नहीं मिलता।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक मध्यम शिक्षित एवं मंत्र-तंत्र व जादू-टोना में रुचि रखता है। अपनी आजीविका मामूली क्लर्क की नौकरी करके चलाता है लेकिन केतु के साथ अन्य ग्रह हो तो जातक नौकरी छोड़कर अपना व्यवसाय करता है और उसमें भारी नुकसान उठाना पड़ता है।

चौथे चरण में केतु के उपरोक्तानुसार मिले-जुले फल प्राप्त होते हैं।

हर्षल-नेपच्यून

हर्षल नेपच्यून उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में स्थित हों तो जातक साधारण श्रेणी का जीवन जीता है। आजीविका के लिए धंधा करके अपना पेट पालता है।

प्लूटो

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में प्लूटो हो तो ऐसे जातक को अपने जीवन में विलंब से यश प्राप्त होता है।

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष चित्रा, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद एवं पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुषों के साथ विवाह, साझेदारी या मैत्री न करें।

□□

हस्त (13) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक धन कमाने के लिए जन्म स्थान को छोड़कर अन्यत्र रहता है। वह जहां भी रहे, उसके रिश्तेदार उसे चैन की नींद नहीं लेने देते। मंगल की दृष्टि हो तो जातक आलसी एवं निष्क्रिय रहता है। उसके शत्रु उसे परेशान करते हैं। बुध की दृष्टि हो तो उसे धन प्राप्त नहीं होता। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक की तंत्र-मंत्र में विशेष रुचि रहती है। वह स्वतंत्रता प्रेमी रहता है किंतु संतान एवं पत्नी को कड़े अनुशासन में रखता है। शुक्र की दृष्टि हो तो परदेश में जाकर धन कमाता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक अनैतिक कार्यों से धन प्राप्त करता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो ऐसी कन्या का विवाह 35वें वर्ष तक नहीं हो पाता। ऐसे जातक इंजीनियर, कांट्रेक्टर या सलाहकार की हैसियत से कार्यरत रहते हैं। आंतों एवं पेट संबंधी रोगों से परेशान रहते हैं।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक क्लर्क या लेखाकार के रूप में काम करके पेट भरता है। उसे टाइफाइड, मलेरिया या कफ विकारों की शिकायत रहती है। सूर्य के साथ शुक्र हो तो पत्नी के कारण स्नायु रोग होते हैं।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो ऐसी कन्या का विवाह 35-40 वर्ष की आयु में होता है। सूर्य के साथ शुक्र होने पर जातक पादरी, अध्यापक या उपदेशक बनता है और उसे गुप्त रोगों की शिकायत रहती है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक दुभाषिया, अनुवादक या लेखक बनता है। ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक क्लर्क, मुनीम या पोस्टमैन बनता है। उसे मुंह, गले, पेट के अल्सर आदि रोगों की शिकायत रहती है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक विद्वान किंतु कंगाल रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक चतुर, पैसा कमाने में होशियार रहता है। औजार या लेखन साहित्य का व्यवसाय करके धन कमाता है। बुध की दृष्टि हो तो मालिक एवं शासन की ओर से उसे फायदा होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक पारिवारिक सुख से वंचित रहता है। चोरी करके पशु के द्वारा माल ढोकर धन कमाता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो स्त्री जातक परिवार संपन्न होती है किंतु पुरुष जातक कड़ी मेहनत करके भी कम धन कमा पाता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक मदिरा सेवन एवं अन्य व्यसनों के अधीन रहता है। व्यसन मुक्ति न होने की हालत में कैंसर जैसे असाध्य रोगों का शिकार बनता है। स्त्री जातक की कुंडली में हस्त नक्षत्र का चंद्र हो और उस पर शनि, राहु या मंगल की दृष्टि हो तो जातक को अप्रासंगिक जीवन बिताना पड़ता है और कई प्रकार के कष्ट भोगने होते हैं।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक पानी से संबंधित व्यवसाय या नौकरी से धन कमाता है। दलाली के व्यापार में भी उसे धन प्राप्त होता है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक लेखन या प्रकाशन व्यवसाय से धन कमाता है। स्याही, रसायन जैसे तरल पदार्थों के व्यवसाय से भी धन प्राप्त होता है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक साहस करके धन जुटाता है। उसे भटकने की आदत होती है। मंगल की दृष्टि हो तो उसे सुरक्षा सेवा या पुलिस में नौकरी करनी पड़ती है। धनी स्त्रियों के सुरक्षा कार्य द्वारा भी धन कमा सकता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक की गणित विज्ञान में रुचि रहती है। वह कविता या शायरी करता है, मौके-बेमौके झूठ बोलता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो दूसरे देशों में जाकर अपनी बुद्धि के बलबूते पर धन कमाता है। 40 वर्ष के बाद उसे सुख-समृद्धि प्राप्त होती है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक महिला वर्ग की सेवा करके धन कमाता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक कामचोर एवं आलसी रहता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक को छोटी-मोटी नौकरी करके जीवन निर्वाह करना पड़ता है। 35 साल के बाद उन्नति होती है। पेट का ऑपरेशन करना पड़ता है।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक नौसेना, जलविभाग में कार्यरत होकर धन कमाता है। स्त्री जातक अच्छी शल्य चिकित्सक बनकर या नर्सिंग व्यवसाय में धन कमाती है। कुछ महिलाएं निजी सचिव या स्वतंत्र व्यवसाय करके धन कमाती हैं। जातक को बवासीर, अल्सर, पथरी एवं रक्त विकारों से कष्ट सहना होता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक छापाखाना, टंकण, लेखन आदि व्यवसायों से धन कमाता है। कुछ जातक कपड़ों पर छपाई करके भी धन कमाते हैं। खांसी, अस्थमा, लकवा आदि रोगों से जातक त्रस्त रहता है।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक भय एवं शंका को लेकर सतर्क रहता है। मंगल का संबंध बृहस्पति से हो तो जातक पुस्तक प्रकाशन, वितरण, हिसाब-किताब एवं आर्थिक लेनदेन द्वारा धन कमाता है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक प्रतियोगिता परीक्षा उत्तीर्ण करके सरकारी नौकरी में प्रवेश करता है और ऊंचे पद पर पहुंचता है। वह ईमानदार रहता है। चंद्र

की दृष्टि हो तो जातक मृदुभाषी, वाचाल एवं सरकारी नौकरी करनेवाला होता है। मंगल की दृष्टि हो तो अच्छे कपड़े पहननेवाला एवं नाच-गाने तथा अभिनय में कुशल रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक उच्च श्रेणी का विद्वान, साहसी एवं चरित्रसंपन्न रहता है। उसका जीवन स्तर राजसी रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो उद्योग या प्रतिष्ठान का प्रतिनिधि बनता है। शनि की दृष्टि हो तो वह मेहनती एवं शीघ्र मुनाफा कमानेवाला होता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक मध्यम स्तर का धनवान होता है। अन्य ग्रहों का संयोग होने पर जातक राज्यमंत्री या उच्च राजकर्मचारियों का चहेता रहता है। किसी संस्था का अध्यक्ष भी बनता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक एक से अधिक विवाह करता है। धर्म-कर्म में रुचि रखता है। दान करनेवाला एवं दिव्य आत्मा रहता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक व्यापार-व्यवसाय में चतुर रहता है। बीमा या आर्थिक लेनदेन में कार्यरत रहता है। सूर्य की दृष्टि हो तो गणित एवं ज्योतिष का ज्ञाता रहता है। लेखन व्यवसाय से धन कमाता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक खानपान में किसी पथ्य का पालन नहीं करता। अनेक प्रकार के रोगों से ग्रस्त रहता है। सरकारी विभाग में क्लर्क या औद्योगिक संगठन में अर्थ विषयक कार्य करता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक अच्छी संतान एवं पत्नी से युक्त, धनवान एवं सम्मानित रहता है। चंद्र की दृष्टि इस बृहस्पति पर हो तो जातक गांव का मुखिया, जिला प्रमुख या किसी क्षेत्र में प्रसिद्ध होता है। मंगल की दृष्टि हो तो पुलिस या अर्धसैनिक संगठन में मध्यम श्रेणी का कर्मचारी रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक मृदुभाषी, अध्यापक, पंडित या उपदेशक रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो कपड़े का व्यापार करनेवाला और स्त्रियों से ठगा जानेवाला होता है। शनि की दृष्टि हो तो सरकारी अधिकारियों से लाभान्वित ठेकेदार या राजनीतिक दलाल रहता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो ऐसी स्त्री जातक भाग्यवान, धार्मिक एवं घरबार की देखभाल में कुशल होती है। पुरुष जातक राजपत्रित अधिकारी या बैंक में कर्मचारी रहता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक शिपिंग उद्योग या कपड़े का व्यवसाय करनेवाला होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो चित्रकला या रंग-रोगन का व्यापार करता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक धन, आरोग्य, परिवार की दृष्टि से सुखी रहता है। वह वैज्ञानिक, प्राध्यापक या वास्तुकार रहता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक डॉक्टर, इंजीनियर ऑफिसर, पुस्तक प्रकाशक रहता है।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सेना या पुलिस में बड़ा अधिकारी रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक होटल या खानपान के व्यवसाय से धन कमाता है। मंगल की दृष्टि हो तो भाग्य के सहारे हमेशा विजय प्राप्त करता है। बुध की दृष्टि हो तो विद्वान एवं संपन्न होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो उच्च शिक्षित, स्कूल कॉलेज में काम करनेवाला होता है। परंतु पारिवारिक जीवन असंतुलित रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक कई बार दुस्साहस करता है किंतु अपनी हठवादिता के कारण दुखद स्थिति उत्पन्न होती है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक काफी उत्साही एवं साफ-सुथरे कपड़े पहननेवाला होता है। स्वास्थ्य अच्छा रहता है। लेकिन अधिक मीठा खाने के कारण मधुमेह की बीमारी लग जाती है। कोर्ट-कचहरी या सिनेमा में कार्य करता है। दवाओं एवं रसायन के व्यापार में लाभ होता है। वैवाहिक जीवन दुखभरा रहता है।

द्वितीय चरण में शुक्र होने पर जातक के दो विवाह होते हैं। अपने परिवार की अपेक्षा दूसरों की चिंता अधिक रहती है। शनि की दृष्टि होने पर मध्यायु में तलाक लेना पड़ सकता है या जातक विधुर बन जाता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक कपड़ों पर डिजाइन बनानेवाला, कपड़े की मिल में बुनकर, पेंटर या दरजी की हैसियत से काम करता है। अधिक खानेवाला मधुमेही रहता है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक त्वचारोगी, मांस-मदिरा सेवन करनेवाला, संसर्गजन्य रोगों से ग्रस्त और ऑपरेशन के कारण परेशान रहनेवाला होता है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक जीवन में कभी सुख नहीं पाता और हमेशा नीच संगत में खुश रहता है। शनि पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक रिश्वतखोर, अस्पताल या सफाई के कामों पर निगरानी रखनेवाला होता है। जातक स्थूल एवं कुरूप रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो चोर, झगड़ालू, बदमाश, लोगों से हानि उठानेवाला रहता है। बुध की दृष्टि हो तो औजारों की बिक्री या निर्माण से धन कमानेवाला और चालाक रहता है। बृहस्पति की दृष्टि होने पर सरकारी नौकरी करता है और सज्जन एवं संपन्न होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो घड़ी, सुनार एवं धातुओं का व्यापार करनेवाला होता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो ऐसा जातक अपचन, डकारें आना आदि की शिकायतों से त्रस्त रहता है। रेलवे या अन्य यातायात के माध्यम से धन कमाता है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो वैवाहिक जीवन दुखी रहता है। उसके पति या पत्नी को बार-बार अस्पताल में भर्ती कराना पड़ता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक को कीड़े-मकोड़े, सांप, बिच्छू आदि से भय रहता है। चमड़ा, प्लास्टिक, रद्दी कागज एवं किताबों के क्रय-विक्रय से धन प्राप्त होता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक खुदगर्ज, धोखेबाज, चोर, संग्रह करनेवाला, व्यापार से लाभ प्राप्त करनेवाला होता है। इसे गुप्त शत्रुओं के हमलों का डर बना रहता है। कुछ जातक गणित एवं हिसाब-किताब में कुशल रहते हैं परंतु लोभी वृत्ति एवं अधिक धन लालसा के कारण योग्यता का उपयोग नहीं पाता।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक उच्च तकनीकी शिक्षा प्राप्त करता है। 30-35 वर्षों के बाद अपने व्यवसाय में स्थिर होता है किंतु जीवन में मुश्किल से ही पदोन्नति प्राप्त होती है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक यातायात विभाग में या छुटकर यांत्रिक पुर्जों के व्यवसाय में नौकरी करता है। सरकारी नौकरी करते समय अनेक बार रिश्वत लेने के आरोप में सजा मिलती है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक दुश्चरित्र एवं अपने खानदान को बदनाम करनेवाला होता है। वह चमड़ा, लोहा या फोटोग्राफी का व्यवसाय करता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक धोखेबाज एवं झूठ बोलनेवाला होता है और कड़ी मेहनत से पेट पालता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक को हैजा, प्लेग या गलत खानपान के कारण रोग होते हैं। वह चुंगी विभाग में क्लर्क या हेडक्लर्क की हैसियत से काम करता है या फिर घरेलू नौकर रहता है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक की याददाश्त अच्छी नहीं रहती। स्नायुविकार, तपेदिक, बवासीर या कैंसर से ग्रस्त रहता है। इन्हीं रोगों से मृत्यु होती है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक उच्च शिक्षा प्राप्त कर सरकारी सेवा में बड़ा पद प्राप्त करता है। पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन सुखद होने पर भी उसे संतान का अभाव रहता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक साहित्यकार, लेखक, प्रशासक, सरकारी व गैर सरकारी प्रतिष्ठान में क्लर्क रहता है।

हर्षल-नेपच्यून

हस्त नक्षत्र में हर्षल-नेपच्यून हों तो जातक कला-कुशल, कल्पनाशील बुद्धि का, अच्छी विचार शक्ति से युक्त, ऐश्वर्यवान, सुखी एवं दूरद्रष्टा होता है।

प्लूटो

हस्त नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक कवि, ग्रंथकार, ईश्वरभक्त, नीतिवान, गुणवान, सुंदर, सन्मार्गी, धार्मिक, कानून का ज्ञाता, ऐश्वर्यवान एवं लोकप्रिय होता है।

हस्त नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष स्वाति, अनुराधा, मूल, भरणी एवं आर्द्रा नक्षत्रों में जन्मे व्यक्तियों के साथ विवाह, मैत्री, प्रेम या साझीदारी न करें।

□□

चित्रा (14) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक पानी से संबंधित व्यवसाय से धन कमाता है। उसके परिवार की अधिकांश स्त्रियां उस पर निर्भर रहती हैं। मंगल की दृष्टि हो तो शक्तिशाली होता है और अपनी ताकत के बलबूते पर धन कमाता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक सुंदर, बुद्धिमान, लेखक या पत्रकार बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो शासन और सत्ता के करीब रहता है एवं उनसे आर्थिक दृष्टि से लाभान्वित रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो कमानेवाली पत्नी प्राप्त होती है। जातक राजनीति में सक्रिय रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक महाकंजूस, अपने से अधिक आयु की स्त्री से विवाह करनेवाला, अल्प संतान से युक्त रहता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक अच्छा मैकेनिक रहता है। पत्नी का रुआब उस पर रहता है। जातक धनवान एवं संपन्न रहता है। लग्न स्वाति, मघा या आश्लेषा नक्षत्र में हो तो जातक अपनी पैतृक संपत्ति का दुरुपयोग करता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक नशीली चीजों के व्यापार से धन कमाता है। केमिकल्स, शराब, गांजा, चरस आदि का सेवन है एवं इन्हीं चीजों का व्यापार भी करता है। लग्न चित्रा नक्षत्र में हो तो आयु कम रहती है। उसे कैंसर, श्वास की बीमारी, हृदय रोग आदि से परेशानी रहती है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक का स्वभाव स्त्रियों जैसा होता है। ऐसा जातक उच्च विद्या प्राप्त, दूसरों को उपदेश देनेवाला एवं पूजापाठ करनेवाला होता है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक मोटर या अन्य वाहनों का चालक, मिस्त्री या इंजीनियर बनता है। अपनी मेहनत से पैसा कमानेवाला, चतुर, परिश्रमी एवं क्रूर रहता है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक गांव में रहनेवाला जमींदार, धनवान एवं सूदखोर होता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक रखैल के लिए पत्नी का त्याग करता है। मां के साथ कटु व्यवहार रखता है। बुध की दृष्टि हो तो अच्छे खानदान की कन्या से विवाह होता है। जातक धन-पुत्र से युक्त व प्रसिद्ध रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो ननिहाल से धन प्राप्त होता है। जातक जीवन का पर्याप्त सुख पाता है। शनि की दृष्टि

हो तो माता को अनिष्टकारक, दरिद्री किंतु आज्ञाकारी संतान से युक्त रहता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक के कंधे झुके हुए रहते हैं। जातक मृदुभाषी और मीठा खानेवाला तथा कामातुर रहता है। उसके कन्याएं अधिक रहती हैं। जातक साज- श्रृंगारप्रिय, चित्रकार एवं अभिनय कुशल रहता है। भाई के साथ निरंतर वाद-विवाद चलता रहता है। चौपाये जानवर से मृत्यु होती है। शरीर पर आघात या जख्म होता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक के दो कन्याएं होती हैं। जातक ईमानदार एवं धार्मिक कार्यों में रुचि रखनेवाला रहता है। विदेश में निवास करता है। पिता एवं फोड़े-फुन्सियों के कारण दुखी रहता है। बचपन में आयु के चौथे-पांचवें वर्ष तक कई एक प्रकार के कष्ट सहने होते हैं।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक शास्त्रों का ज्ञाता, न्यायप्रिय, बुद्धिमान एवं शांत स्वभावी किंतु कुटिल बुद्धि का रहता है। शरीर में जलन, गरमी, सूजन जैसे रोग रहते हैं। थोड़े में संतोष मानता है। जातक क्रोधी, वायु एवं कफ रोगी रहता है। गले या जीभ में पीड़ा रहती है। पुरुष जातक पिता के लिए एवं स्त्री जातक माता के लिए कष्टकारक रहती है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक दान-पुण्य करनेवाला, भ्रमणशील, चालू व्यवसाय करनेवाला, माता-पिता व गुरु भक्त होता है। उसे अनेक कष्ट सहने पड़ते हैं।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक साहसी एवं वन्य प्रदेशों में रहनेवाला होता है। स्त्रियों से वह नफरत करता है किंतु वेश्यागामी रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो अपनी माता का अनादर करता है। कई मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं। बुध की दृष्टि हो तो अल्पधन एवं अल्प संतान रहती है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो मित्रप्रेमी, गाने-बजाने में रस लेनेवाला रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक राजनीति में पद प्राप्त करता है। सेना या पुलिस में बड़ा अधिकारी होता है। शनि की दृष्टि होने पर जातक गुंडा, बदमाश एवं सजा भोगनेवाला होता है।

प्रथम चरण में मंगल हो एवं उस पर सूर्य, चंद्र, बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक को पांचवें साल में भय रहता है। उसे अपचन, गैस, हर्निया एवं मियादी बुखार का कष्ट सहना पड़ता है।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक तीखा बोलनेवाला होता है। उसे दस्त, हैजा, हर्निया, फोड़े-फुंसियों से पीड़ा रहती है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो मध्यम श्रेणी की जायदाद जातक के पास रहती है। बदचलन स्त्री के पीछे लगकर वह अपना सर्वस्व गंवा बैठता है। उसे गुर्दे, हर्निया, लकवा जैसे रोगों की शिकायत रहती है।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक मध्यम शिक्षित होता है। आजीविका के लिए टाइपिस्ट या सेल्समैन की नौकरी करनी पड़ती है। परिश्रम से व्यवसाय में प्रगति करता है। जीवन का उत्तरार्ध अच्छा बीतता है। उसे ज्वर, रक्तचाप, मधुमेह, हर्निया जैसे रोग त्रस्त करते हैं।

बुध

बुध पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक स्वस्थ, संपन्न, दानी, प्रतिष्ठित एवं अपने परिवार का पोषण करनेवाला होता है। सूर्य की दृष्टि हो तो उच्च शिक्षित, अध्ययन-अध्यापन करनेवाला, सरकारी नौकरी में संलग्न रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो झगड़ालू एवं क्रोधी रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो प्रतिज्ञाबद्ध, निष्ठावान, विद्वानों का नेतृत्व करनेवाला होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो व्यवसायकुशल, धनी एवं भाग्यवान रहता है। सभी प्रकार के सुख उसे प्राप्त होते हैं। शनि की दृष्टि हो तो जातक गरीब, आर्थिक दृष्टि से दुर्बल, मुसीबतों का सामना करनेवाला होता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक संकट समय में अविचलित रहनेवाला, पवित्र आचरणवाला, हर मुसीबत से रास्ता निकालनेवाला रहता है। उसे गैस, अल्सर एवं कफ विकार होते हैं।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक अपनी उच्च शिक्षा एवं ज्ञान की बदौलत धनी बनता है। वह धर्मात्मा एवं चरित्रसंपन्न होता है। उसकी पत्नी अच्छी एवं उच्च पदस्थ होती है। वैवाहिक जीवन सुखी रहता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक इंजीनियरिंग या तकनीकी व्यवसाय में काफी धन कमाता है। फेफड़ों के रोग, सिरदर्द, रक्त विकार उसे त्रस्त करते हैं।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक को अपने रिश्तेदारों से परेशान होना पड़ता है। फेफड़ों एवं छाती के रोग तथा कैंसर होता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक धन-संपत्ति, पद-प्रतिष्ठा, नौकर-चाकरों से युक्त रहता है। वह उच्चाधिकारी होकर सत्ता के करीब रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो करोड़पति, आचरणहीन, भोगविलास में धन का अपव्यय करनेवाला होता है। मंगल की दृष्टि हो तो विद्वान, साहसी, भाग्यवान किंतु पारिवारिक अड़चनों में फंसा हुआ रहता है। बुध की दृष्टि हो तो साहसी, चरित्रसंपन्न, विद्वान, उच्च शिक्षित एवं धनवान रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो प्रतिष्ठित अच्छे लोगों में बैठनेवाला, महिला उपयोगी वस्तुओं का व्यापारी रहता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो और उसके साथ शनि, मंगल, चंद्र हो तो जातक को अपनी आयु के पांचवें वर्ष तक मृत्युभय रहता है। अकेला बृहस्पति हो तो रक्त एवं स्नायु विकार, उदर रोग, आंतों का अल्सर, पीलिया इत्यादि रोग होते हैं। उचित आहार-विहार से वह रोगमुक्त होकर कई वर्ष जीवित रहता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक स्वस्थ, धन एवं संतान से युक्त रहता है। उसे अच्छी ख्याति प्राप्त होती है। किसी वैज्ञानिक या शैक्षणिक संस्था में कार्यान्वित रहकर उदर निर्वाह करता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक दीर्घायु, उच्च श्रेणी के ज्ञान-विज्ञान एवं धन से संपन्न रहता है। त्वचा रोग का शिकार बनता है।

चौथे चरण में उपरोक्तानुसार मिले-जुले फल प्राप्त होते हैं।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सुंदर एवं भाग्यवान रहता है। उसकी पत्नी अच्छी एवं सुंदर रहती है। उसके कारण उसे धन-दौलत प्राप्त होती है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक की माता उच्च पदासीन रहती है। उसके कारण जातक भी ख्याति अर्जित करता है। मंगल की दृष्टि हो तो विवाह के समय दगाबाजी होती है। इससे क्षुब्ध होकर जातक निम्न स्तर की स्त्री की संगत में फंसकर धन का दुरुपयोग करता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक सदा प्रसन्न, सुखी एवं भाग्यवान रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो धनवान स्त्री एवं संतान सुख से युक्त रहता है। शनि की दृष्टि हो तो अपनी पत्नी एवं परिवार से दुखी रहता है। ससुराल के लोगों से भी दुख उठाता है। सुख-आराम से वंचित जीवन बिताता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक समाज के नियमानुकूल चलता है। शिक्षा सामान्य रहती है। 35वें वर्ष तक उसकी शिक्षा का उपयोग उसके लिए नहीं होता।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक आकर्षक एवं मनोहर होता है। उसकी पत्नी एवं संतान गुणवान रहती है। जातक स्वयं उच्च विद्या प्राप्त विद्वान होता है। उसे वमन, पेचिस, हैजा जैसी बीमारियों से कष्ट सहना पड़ता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक कुलश्रेष्ठ, सरकार से मान-सम्मान पानेवाला, उच्च बौद्धिक स्तरीय विद्वान, धनवान एवं साधन संपन्न रहता है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक स्वपुरुषार्थ से धनसंपदा प्राप्त करता है। विख्यात, साहसी, उच्च पदस्थ लोगों का भक्त रहता है। अपने राजनीतिक प्रभाव से उसकी अपनी सभी समस्याएं हल हो जाती हैं।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक महाविद्वान, वेदशास्त्र में पारंगत किंतु दूसरों पर निर्भर रहनेवाला होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक उच्च पदस्थ, राजनीतिक या सहकारी संस्था का प्रमुख रहता है। उसका परिवार भी आदर्श रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो सेना या पुलिस विभाग में कर्मचारी होता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक महिला वर्ग में कार्यरत रहता है। अपने कुकृत्यों के कारण निंदा का पात्र बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो सुख-दुख में समान साझेदार रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक जमींदार, राज्याधिकारियों का मित्र एवं मांस-मदिरा का शौकीन रहता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक की आर्थिक स्थिति साधारण तथा संतान अल्प रहती है। मंगल की दृष्टि हो तो त्वचा रोग, दुर्घटना या अग्निदाह के कारण परेशान रहता है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक को मुख व नेत्ररोग रहता है। आर्थिक तंगी रहती है। इसी कारण यहां-वहां भटकना पड़ता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक राजा के समान सुखी रहता है। बिन मांगे सम्मान मिलता है। अपार धन-दौलत उसके पास रहती है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक श्रेष्ठ एवं सुखी जीवन जीनेवाला होता है। धनवान, समाज एवं जाति में सम्मान पानेवाला, अपने कार्य एवं व्यापार में यशलाभ प्राप्त करनेवाला होता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु होने पर जातक कठोर, क्रूर एवं कर्णरोगी रहता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक धनवान एवं कलाप्रेमी होता है लेकिन वैवाहिक जीवन दुखी रहता है। प्रारंभिक जीवन में किया हुआ दुराचरण तथा अन्य स्त्रियों के साथ रहे अनैतिक संबंधों के कारण ऐसा होता है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक की पत्नी एवं संतान अच्छी रहती है। उसे पथरी, गुर्दे, अल्सर जैसे रोगों का कष्ट रहता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक के अनेक स्त्रियों से अनैतिक संबंध रहते हैं। इस कारण उसका वैवाहिक जीवन दुख से भरा रहता है। स्त्रियों का आर्थिक एवं शारीरिक शोषण करने में जातक अगुवा रहता है। ऐसा होने पर भी किसी बड़े पद पर प्रतिष्ठित होता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन एवं हमेशा रुग्णावस्था में रहता है। उसका जीवन अंधविश्वास में बीतता है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक का बचपन ठाठ-बाट से गुजरता है। अन्य ग्रह अनुकूल हों तो आगे चलकर वह बड़ा उद्योगपति या व्यापारी बनता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक बीमारी के कारण अपंग बनता है। उसे किसी भी कार्य में यश प्राप्त नहीं होता। उसकी शिक्षा पूर्ण नहीं होती। वह फैक्टरी में नौकरी या स्वतंत्र व्यवसाय करके अपनी आजीविका चलाता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक धनी एवं प्रभावशाली रहता है। अच्छे परिवार, पत्नी एवं संतान से युक्त होता है। 30वें वर्ष से पूर्व विवाह हुआ हो तो तलाक होता है।

हर्षल-नेपच्यून

चित्रा नक्षत्र में हर्षल-नेपच्यून स्थित हों तो जातक क्रोधी, चंचल, स्वभाव का एवं दुर्गुणी रहता है। स्त्रियों के विवादों में उलझता है।

प्लूटो

चित्रा नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक दुर्गुणी, तामसी, परस्त्रीरत, निर्लज्ज, कम विद्या-बुद्धिवाला एवं अस्थिर स्वभाव का होता है।

चित्रा नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ एवं कृतिका नक्षत्रों में जन्मे व्यक्तियों से मैत्री, विवाह या साझेदारी न करें।

□□

स्वाति (15) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक स्त्रियों की सेवा करने में चतुर रहता है। इस सेवा कार्य से ही धन कमाने के अलावा पानी से संबंधित व्यवसाय करके धन कमाता है। मंगल की दृष्टि हो तो युद्धकला में प्रवीण, धन-प्रतिष्ठा से युक्त रहता है। बुध की दृष्टि हो तो ललित कलाओं के माध्यम से धन प्राप्त करता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो समाज का नेता होता है। जनसामान्य से यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। राज्यसत्ता से भी विशेष लाभ प्राप्त होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक आकर्षक व्यक्तित्व का एवं सुंदर आंखोंवाला, मधुरभाषी एवं योग्य पुरुष रहता है। मित्र-शत्रुओं की संख्या समान होती है। शनि की दृष्टि हो तो शरीर कमजोर, धनहीन, गरीब एवं पत्नी से द्वेष करनेवाला होता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो नाड़ी कंपन, लकवे जैसे रोग उत्पन्न होकर कष्ट देते हैं। विशेष ग्रहों की दृष्टि सूर्य पर न हो तो जातक तम्बाखू या अन्य मादक पदार्थों का व्यापार करता है। स्वयं भी इन चीजों का सेवन करता है। शुभ ग्रहों की दृष्टि होने पर जातक उच्चशिक्षा प्राप्त, बुद्धिमान एवं संपन्न रहता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक, धातुओं का व्यापारी या दवाइयों तथा मादक पदार्थों का व्यापारी बनता है। जन्मकुंडली में लग्न शतभिषा नक्षत्र में हो तो दाहिनी आंख में कष्ट रहता है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक बचपन में भयंकर रोगों से बीमार रहता है। शनि के साथ शनि का योग हो तो बचपन में 2 से 6 महीनों तक अरिष्ट रहता है। उसको नेत्ररोग या अंधापन आ सकता है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। उसे सर्वत्र आदर और मित्रतापूर्ण बर्ताव प्राप्त होता है और गुप्तचर सेवा या पुलिस में उच्च पद पर कार्यरत रहता है। महिला जातक हो तो अपने भ्रष्ट आचरण के कारण पति के घर बहुत समय तक नहीं टिकती।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य, मंगल या शनि की दृष्टि हो तो जातक नपुंसक होता है। बुध की

दृष्टि हो तो राजसी प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक टकसाल में काम करता है। शुक्र की दृष्टि होने पर जातक व्यापारी एवं धनवान होता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक बुद्धिमान, ईश्वरभक्त, पूजा-पाठ करनेवाला एवं कफजनित विकारों से ग्रस्त रहता है। उसकी गरदन छोटी तथा पीछे निकली हुई रहती है। जातक माता-पिता एवं गुरु की खूब सेवा करता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक ऊंचे कद, लंबी नाकवाला, कमजोर रहता है। अपने परिवार में उसका महत्त्वपूर्ण स्थान रहता है। फिर भी स्वकीय उसे धोखा देते हैं। इसी कारण उसका सर्वनाश होता है। स्त्री जातक की कुंडली में ऐसा चंद्र हो, उस पर शुक्र की दृष्टि हो और अन्य शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो अल्प समय में ही वह विधवा बन जाती है या उसका पति उसे छोड़कर चला जाता है।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक चालाक व्यापारी बनता है। अल्प समय में प्रयास करके किए हुए व्यापार से काफी धन कमाता है। अपने जन्म स्थान से उसे दूर रहना पड़ता है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक का शरीर रोगग्रस्त रहता है। वह अपने रिश्तेदारों की सहायता करता है पर कोई भी उसका एहसान नहीं मानता। उसकी मृत्यु का कारक कोई नेता, रिश्तेदार या सांप होता है। लग्न भी इसी नक्षत्र-चरण में हो तो जातक कला, शिल्प, संगीत आदि के माध्यम से धन संग्रह करता है। धीरे-धीरे महत्त्वाकांक्षी, धनवान एवं शत्रुओं को परास्त करनेवाला होता है। शासन का प्रिय एवं अधिकार सुख से युक्त रहता है। ऐसा जातक एक-एक करके अपने शत्रुओं का अंत करता है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक साहसी, एकांतप्रिय, स्त्रीद्वेष्टा होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो वेश्यागामी बनता है और माता का अनादर करता है। इस कारण वह काफी कष्ट झेलता है। बुध की दृष्टि होने पर जातक अल्पधनी एवं अल्प संतान से युक्त रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो गाने-बजाने में कुशल एवं मित्रों का प्यारा रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो उच्च राजनीतिक पद पर आसीन होता है। शनि की दृष्टि हो तो गुंडा, बदमाश एवं सजा भुगतनेवाला होता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक अत्यधिक कामुक होता है। शिक्षा अधूरी होने से बेरोजगार रहता है। उसका मन बेचैन रहता है। आखिरकार कोई छोटा-मोटा कार्य करके पेट पालता है।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक विविध रोगों से ग्रस्त रहता है। शनि भी इसी नक्षत्र-चरण में हो तो वैवाहिक जीवन में व्यवधान आता है। जातक स्वयं नपुंसक होता है और उसे कैंसर होता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक इधर-उधर भटकनेवाला, बुरे आचरणवाला एवं साधारण योग्यता का और रोगग्रस्त रहता है।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक किसी-न-किसी सरकारी पद पर कार्यरत रहता है। अच्छाई के बावजूद सजा भुगतनी पड़ती है। गुप्त शत्रु बहुत होते हैं। लोहा, स्टील, सीमेंट या गृहनिर्माण की वस्तुओं का व्यापार करके धन कमाता है। जायदाद की खरीद-फरोख्त से भी धन प्राप्त होता है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक कमजोर शरीरवाला, धनहीन होने पर भी दूसरों की मदद करनेवाला, पतली कमर से युक्त रहता है। चंद्र की दृष्टि होने पर जातक कठोर परिश्रमी, धनी एवं राजसत्ता के संपर्क में रहकर लाभ पानेवाला रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो धनवानों से पैसा प्राप्त करता है किंतु शनि की दशा-अंतर्दशा में उसके फल भोगने पड़ते हैं। बृहस्पति की दृष्टि हो तो महाविद्वान, ऐश्वर्यवान एवं गांव या शहर का प्रमुख रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो अच्छे कपड़े पहनने का शौकीन होता है। जातक दिखावटी बातें करनेवाला एवं स्त्रियों को मोहित करनेवाला रहता है। शनि की दृष्टि हो तो मानसिक अशांति से युक्त, परिवार, पत्नी एवं बाहर के लोगों से अपमानित रहता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक उच्चकोटि का विद्वान होता है किंतु कमाए धन का आनंद स्वयं उसे प्राप्त नहीं होता। उसका अधिकतम धन स्वास्थ्य की रक्षा करने में खर्च होता है। उसे तपेदिक एवं अन्य प्रकार के रोग होते हैं।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक अच्छी पत्नी एवं आज्ञाकारी संतान से युक्त रहता है। बड़े-बूढ़ों का आदर करनेवाला, नौकरी में अनायास उन्नति प्राप्त करनेवाला होता है। व्यापार में हो तो नौकर-चाकरों को प्रिय होता है। उनकी हर अड़चन में सहयोग देता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक अपनी आजीविका कमाने में सफल होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो डॉक्टर, थोक व्यापारी या कपड़ा विक्रय का व्यवसाय करता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक हवाई सेवा में इंजीनियर या खगोल वैज्ञानिक बनता है। शुभ ग्रहों का प्रभाव हो तो उच्च पद पर कार्यरत रहता है अन्यथा साधारण प्राध्यापक बनता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सुरक्षा सेना या नौसेना में सेनापति जैसे पद पर कार्यरत रहता है। वह सरकार द्वारा सम्मानित किंतु दुश्मनों द्वारा शारीरिक नुकसान उठाता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक सत्यवादी, सम्माननीय, समय पर दूसरों की सहायता करनेवाला एवं भाग्यवान रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो उत्तम संतान एवं पत्नी से युक्त रहता है और शासन से लाभान्वित, सरकार में उच्च पदस्थ होता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक सक्रिय राजनीतिज्ञ होता है और

उसी के माध्यम से धन जोड़ता है। कला एवं संस्कृति के विकास में सहायक जातक आकर्षक रंग-रूप का होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जन्म से ही धनवान, ख्यातिप्राप्त, सुखी, मंत्री या राजनेता, संगठन प्रमुख रहता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक को सभी प्रकार के शुभ फल प्राप्त होते हैं। ऐसा जातक स्वस्थ, भरपूर संपत्ति जोड़नेवाला, प्रसिद्ध एवं यशकीर्ति प्राप्त करनेवाला होता है। उसकी संतान उत्तम रहती है। जातक निरंतर कलह एवं पारिवारिक विघटन का शिकार होता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक उच्च शिक्षा प्राप्त, स्वस्थ शरीर एवं अच्छे परिवार से युक्त रहता है। वह किसी-न-किसी का सलाहकार रहता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक उच्च शिक्षा, विपुल धन-संपत्ति एवं मान-मर्यादा से युक्त रहता है। वह उद्योग समूह का मालिक या प्रमुख रहता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक व्यवसायकुशल, बौद्धिक कार्यों के माध्यम से धन जुटानेवाला, लेखक, पत्रकार, प्रोफेसर, डॉक्टर, केमिस्ट या वैद्य बनता है।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक महिला उपयोगी वस्तुओं का व्यापार करके धन कमानेवाला, जमीन-जायदाद का धनी, वाहन, नौकर-चाकरों से युक्त रहता है परंतु उसका वैवाहिक जीवन दुखद रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो रत्नाभूषणों का क्रय-विक्रय करनेवाला, भोग-विलास में निमग्न, परिवार का उद्धारकर्त्ता होता है। मंगल की दृष्टि हो तो कठोर, दुखी, गैरकानूनी कामों से धन कमानेवाला, शांत स्वभावी, विशिष्ट व्यवसाय के ज्ञान से परिपूर्ण रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो वाहन सुख तथा जायदाद भोगनेवाला एवं दो विवाह करनेवाला, जिम्मेदार संतान से युक्त, कुशल प्रशासक रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक गरीब, रोगग्रस्त एवं मान-प्रतिष्ठा खोनेवाला होता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक अपने कार्यों से धन-संपत्ति, जमीन-जायदाद कमाता है, ख्याति प्राप्त एवं साहसी रहता है। उसे अस्थमा, हैजा, प्लेग एवं रक्त विकार की बीमारियां परेशान करती हैं।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक के इर्द-गिर्द सुंदर स्त्रियों का जमघट लगा रहता है। अपनी अधिकांश संपत्ति अपने परिवार की बहनों, कन्याओं, माता एवं पत्नी के लिए खर्च करता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक क्लर्क, टाइपिस्ट और बाद में ज्योतिषी बनता है। शुक्र के साथ शनि हो तो आंखों की पीड़ा रहती है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो सेना या पुलिस में अथवा गुप्तचर विभाग में उच्च पद पर कार्यरत रहता है। मध्यमायु में दुर्घटना के कारण उसे कष्ट सहने होते हैं।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक दूसरों से प्राप्त धन पर अपना निर्वाह चलाता है। चंद्र की दृष्टि हो तो सरकारी नौकरी में सामान्य पद पर कार्यरत रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो हमेशा हंसमुख, अनर्गल बोलनेवाला, अल्प धनवान रहता है। बुध की दृष्टि हो तो कामातुर, लंपट एवं गंदे लोगों की संगत में रहनेवाला होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो दयालु, समाजसेवा में मग्न, बीमारों की सेवा करनेवाला, कठोर परिश्रमी एवं उच्चाधिकारी होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो शराबी, सोने-चांदी एवं रत्नों के कारोबार में संलग्न रहता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक प्रसिद्ध, जाति-बिरादरी से सम्मानित, गांव, तहसील या जिला प्रमुख रहता है। जातक मूर्च्छा एवं अंगघात से बीमार रहता है। नाक काफी तीक्ष्ण रहती है।

द्वितीय चरण में शनि हो एवं उसके साथ सूर्य-मंगल भी हो तो जातक अल्पायु होता है। अकेला शनि हो तो जातक परिश्रमी एवं अल्प धनवान रहता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक सामान्य स्थिति से उच्च पद पर पहुंचता है। शनि के साथ चंद्र-सूर्य का योग हो तो जातक की 29वें वर्ष में मृत्यु होती है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक जाति-बिरादरी का नेता बनता है। वह किसी गांव का सरपंच या नगराध्यक्ष बन सकता है। शनि के साथ शुक्र होने पर जातक निश्चित रूप से मंत्री, शासक या राजनेता बनता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक कठोर, दया-धर्म रहित, अनैतिक आचरण करनेवाला एवं कई रोगों से ग्रस्त रहता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक कमजोर किंतु निर्भय रहता है। खाने-पीने में परहेज नहीं रखने के कारण अपच, गैस एवं जलन का कष्ट सहता है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक छरहरा एवं चालाक रहता है। धीरे-धीरे कंगाल बनता है। कोई भी भला-बुरा काम करने के लिए तैयार नहीं होता।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक दूध-घी के व्यवसाय से धन कमाता है। दूसरों की सहायता करने की वृत्ति उसमें निहित रहती है। कुछ जातक जन्म के बाद विकलांग बनते हैं।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक दीर्घायु रहता है। वह अनेक शास्त्रों का जानकार, ज्ञान एवं नृत्य-संगीत का विशेषज्ञ रहता है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक जनसंपर्क कार्य में असफल होता है। उसे स्त्रियों से बड़ा लगाव रहता है। छोटा-मोटा काम करता है। धन-सम्पत्तिहीन रहता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक हमेशा निम्न स्तरीय लोगों की संगत में रहता है। उसे कन्या संतान अधिक रहती है या फिर संतान जिंदा नहीं बचती। तपेदिक की बीमारी या हृदयरोग से ग्रस्त रहता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक उच्च स्तरीय अधिकारी रहता है। फिर भी धनाभाव हमेशा रहता है। पारिवारिक जीवन में सुख-आराम मिलता है।

हर्षल-नेपच्यून

स्वाति नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हों तो जातक बहुगुणी, न्यायप्रिय, समन्वयी रहता है। साथ ही वह बुद्धिमान, विद्वान, चपल, चंचल, सतत आराम का अभिलाषी रहता है।

प्लूटो

स्वाति नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक सुखी, विद्वान, सत्वगुणी, न्यायप्रिय, क्षमाशील, सदाचारी, लेखक एवं सत्यप्रिय तथा सबको प्रिय रहता है।

स्वाति नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष अनुराधा, मूल, उत्तराषाढ़, रोहिणी, मृगशिरा नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुषों से विवाह, साझेदारी तथा मित्रता न करें।

□□

विशाखा (16) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक के अनेक रखैल स्त्रियां होती हैं। वह जहाज, जल-व्यवसाय के माध्यम से धन कमाता है। तरल पदार्थों के व्यवसाय से भी वह जुड़ा रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक टैक्स या राजस्व के कानून में प्रवीण रहता है। बुध की दृष्टि हो तो कलादक्ष होता है एवं कला के माध्यम से ही धन जुटाता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो राजनीतिज्ञों से संपर्क रखकर उनसे अपने स्वार्थ के लिए पैसा वसूल करता है। शुक्र की दृष्टि हो तो स्वयं बड़ा राजनीतिज्ञ बनता है। वैवाहिक जीवन सुखद रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक धोखेबाज, पापी एवं शासन से सजा पाया हुआ होता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक अविवाहित रहता है या विवाह विलंब से होता है। महिला जातक के कई लोगों से अनैतिक संबंध पाए जाते हैं। पुरुष जातक का विवाह विलंब से होने पर भी अल्पावधि में तलाक हो जाता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक के बहुत कम संतान रहती है। एकाध पुत्र रहता है। जीवन आराम से बिताता है। स्वभाव से क्रूर, अधिक भोजन करनेवाला, दूसरों को कष्ट पहुंचानेवाला, कमजोर आंखोंवाला, झगड़ालू, गैरकानूनी काम करनेवाला एवं सजा भुगतनेवाला होता है। किसी भी शुभ ग्रह की दृष्टि इस सूर्य पर न हो तो जातक घरेलू नौकर बनकर गुजारा करता है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक विविध कलाओं से जुड़ा रहता है। आंखें खराब हो जाती हैं। अंधापन भी आ सकता है। तर्कशक्ति गजब की रहती है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो जातक शरीर से नाजुक रहता है। उसे छाती, पेट एवं हृदय की बीमारी कष्ट पहुंचाती है। अकेला सूर्य ही इस नक्षत्र-चरण में हो तो जातक दूसरों को कष्ट पहुंचानेवाला एवं गुनहगार होता है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक कृषि कार्य, बागवानी या जंगलों से लाभान्वित होता है। उसका सूदखोरी का भी कार्य रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो स्त्रियों का जमघट उसके इर्द-गिर्द रहता है। उनसे उसके अनैतिक संबंध भी रहते

हैं। बुध की दृष्टि हो तो जातक बुद्धिमान एवं गणित विषय से जुड़ा रहकर ज्योतिषशास्त्र या इंजिनियरिंग में नाम कमाता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक अपने अभिभावकों की आज्ञा में रहता है परंतु पत्नी के लिए कष्टकारक रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो स्वास्थ्य, धन-संपदा एवं सुखी वैवाहिक जीवन से युक्त रहता है। शनि की दृष्टि हो तो बचपन में ही मां गुजर जाती है। उसका दिमाग हमेशा बदला लेने की भावना से घिरा रहता है। वह स्त्रीद्वेष्टा भी होता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक खांसी एवं कफ विकारों से पीड़ित रहता है। कुंडली का लग्न भी इस नक्षत्र-चरण में हो एवं उस पर शनि की दृष्टि हो तो जातक को माता का सुख नहीं मिलता। जातक पशु पालन, डेयरी उद्योग के माध्यम से धन जुटाता है। धर्म कार्य में उसकी रुचि रहती है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक के मातृसुख में बाधा उत्पन्न होती है। पाप ग्रह पीड़ित चंद्र इस नक्षत्र-चरण में हो तो जातक परिवारहीन रहता है। अकेला चंद्र हो तो जातक कामातुर होता है।

तृतीय चरण में चंद्र हो एवं लग्न भी इसी नक्षत्र-चरण में हो तो जातक गंगा-बहरा होता है। ऐसा जातक घरेलू नौकर या कुली का काम करके अपना पेट पालता है। लग्न भी इसी नक्षत्र-चरण में हो तो उसे अपने काम का अभिमान रहता है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। आस्थावान होता है। तीर्थाटन भी करता है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो और लग्न भी इसी नक्षत्र चरण में हो तो जातक दीर्घायु, सदाचारी, महाविद्वान रहता है। बीसवें साल तक उसे संघर्ष करना पड़ता है। बाद में अध्यापक, व्याख्याता या प्रोफेसर बनकर देश-विदेश में भ्रमण करता है। उसे सरकार की ओर से मान-सम्मान प्राप्त होता है। बहन के लिए वह कष्टकारक रहता है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक विदेश में निवास करता है। वह अपनी पत्नी का तिरस्कार करता है। चंद्र की दृष्टि हो तो मातृभक्त रहता है। बुध की दृष्टि हो तो उसकी संतान उससे भी अधिक बुद्धिमान रहती है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो अपने रिश्तेदारों का आश्रित बनकर उनकी सेवा करता है। शुक्र की दृष्टि हो तो सरकारी सेवा में उच्चाधिकारी रहता है एवं ख्यातिप्राप्त करता है। शनि की दृष्टि हो तो सर्वगुणसम्पन्न किंतु कंजूस रहता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक का खर्च आमदनी से अधिक रहता है। इससे जीवन कष्टप्रद रहता है। किसी के प्रति उसके मन में आदर की भावना नहीं रहती। अपने परिवार की महिलाओं से उसे कष्ट भोगने पड़ते हैं। कुल मिलाकर उसका जीवन व्यर्थ ही होता है।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक झूठ बोलनेवाला एवं पापकर्म करनेवाला होता है। सूर्य या चंद्र इस मंगल के साथ हो तो जातक को मानसिक असंतुलन के

कारण कष्ट सहने पड़ते हैं। जातक बावड़ी खोदनेवाला, सिंचाई करनेवाला या एयरलाइंस में कर्मचारी या चौकीदार का काम करता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक कुम्हार या चीनी मिट्टी के बरतन, पॉटरी बनानेवाला या उनका व्यापार करनेवाला होता है। वह अंगरक्षक, चौकीदार, माली, धोबी की हैसियत से भी काम करता है। बड़े लोग उसकी शक्ति का उपयोग करते हैं और बुढ़ापे में उसे छोड़ देते हैं।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक की शिक्षा में व्यवधान आते हैं। मंगल के साथ शनि भी हो तो 30 से 38 वर्ष की आयु में ऑपरेशन होता है। शुक्र भी इस नक्षत्र-चरण में हो तो जातक अपने परिवार का प्रमुख रहता है और ज्योतिषशास्त्र का विशेषज्ञ रहता है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सुख से गृहस्थी चलाता है। वह बड़े उद्योग समूह का मालिक या संचालक बनता है। चंद्र की दृष्टि हो तो कठोर परिश्रमी, धनी एवं सरकारी अधिकारी या शासनाधिकारियों के निकट संपर्क में रहकर फायदा लेनेवाला होता है। मंगल की दृष्टि हो तो शासन से लाभान्वित, मुख्य अभियंता, आर्किटेक्ट बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो बुद्धिमान एवं धनवान रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जीवन के हर क्षेत्र में संपन्न, भाग्यवान और धनसंग्रह करनेवाला होता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक परिस्थिति में जकड़ा हुआ, नैसर्गिक विपत्ति का शिकार एवं गरीबी में जीवन जीनेवाला होता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक तकनीकी विषयों का प्राध्यापक रहता है। किसी शैक्षणिक संस्था या कोचिंग क्लास का संचालक बनता है। विवाह योग 35 से 40 वर्ष में बनता है। 30वें वर्ष से सरकारी नौकरी या स्वायत्त संस्था में नौकरी करता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक तपेदिक एवं कैंसर रोग से पीड़ित रहता है। शिक्षा सामान्य रहती है। पत्नी अच्छी नहीं मिलती। विवाह के बाद दुर्भाग्य का प्रारंभ होता है। उसे चांदी, स्वर्णाभूषण एवं मूल्यवान धातु के कारण धन लाभ होता है। जातक वास्तुशिल्प का जानकार, इंजीनियर, कलाकार या मूर्तिकार बनता है। विधवा स्त्री के साथ यौन संबंध रखता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक लोहे या किराने का व्यापार करता है। उसे बीमारी, अपने परिवार एवं स्वयं के लिए खर्च करना पड़ता है। इसी कारण वह गैरकानूनी मार्गों से धन जुटाता है। सार्वजनिक क्षेत्र में उसके द्वारा आर्थिक चोरी होती है और उसे सजा भुगतनी पड़ती है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक झूठ बोलनेवाला, अनैतिक कार्यों में रुचि रखनेवाला, समलिंगी या दुश्चरित्र स्त्रियों से संबंध रखनेवाला, धनवान, विद्वान व सदाचारी होता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सुख-संपत्ति से युक्त जीवन बिताता है। चंद्र की दृष्टि होने पर जन्म से ही धनी रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो विद्वान एवं साहसी होता है। बुध की दृष्टि हो तो पवित्र आचरणवाला एवं संपत्तिवान रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो व्यक्तित्व सुंदर होता है और वह नवयुवकों के लिए आदर्श बनता है। शनि की दृष्टि हो तो श्रेष्ठ विचारक रहता है और अनेक विषयों में उसका हस्तक्षेप रहता है लेकिन वैवाहिक जीवन दुखपूर्ण रहता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक के एक भाई और एक बहन होती है, शिक्षा मध्यम स्तर की रहती है और जातक पैतृक संपत्ति से युक्त, शास्त्रों में पारंगत किंतु कानूनी उलझनों में ग्रस्त रहता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक धार्मिक कार्यों में श्रद्धा रखनेवाला, कर्म संस्कारयुक्त, वेद-मंत्रों का जानकार, दयालु एवं दूसरों की सहायता करनेवाला होता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक धार्मिक कार्यों के माध्यम से धन जुटानेवाला, धर्म-युक्त कार्यों में संलग्न रहता है। ब्राह्मण एवं साधु-संतों की पूजा करनेवाला, गृहस्थी के कार्यों से विरक्त रहता है। पवित्र जीवन जीने की प्रेरणा लोगों को इससे प्राप्त होती है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक गरीब या किसान परिवार में जन्मा हुआ रहता है। सहोदरों को काफी कष्ट सहने पड़ते हैं। व्यापार करने से समृद्ध बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक महत्त्वाकांक्षी एवं कभी-कभी बीमार रहनेवाला, 30 या 35वें वर्ष में प्रगति करनेवाला रहता है। उसे जीवन के 19, 23 एवं 37वें वर्ष में गंभीर कष्ट सहने पड़ते हैं।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सुख-शांति से परिपूर्ण परिवारवाला, सुंदर पत्नी, जमीन-जायदाद का धनी रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो कुलदीपक, मृदुभाषी, अधिक खाने-पीनेवाला एवं भोग-विलास में मग्न रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक क्रूर, गैरकानूनी साधनों से धन जुटानेवाला रहता है। उसके काम भी गैरकानूनी होते हैं। बुध की दृष्टि हो तो शिक्षा के क्षेत्र में रुचि एवं रुझान रहता है। स्वभाव से शांत एवं कार्य तत्पर रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक वाहन, मकान एवं सुखी पारिवारिक जीवन से युक्त रहता है। उसकी संतान भी विद्वान एवं बुद्धिमान रहती है। शनि की दृष्टि हो तो जातक क्रूर, बेईमान, भयंकर षडयंत्र में फंसा हुआ रहता है। उसे सजा होने का डर रहता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक शासनाधिकारी, दो बार विवाह करके भी वैवाहिक जीवन से असंतुष्ट रहनेवाला रहता है। 24 से 28 वर्षों के बाद काफी प्रगति होती है। 47 से 57 वर्षों में कई चढ़ाव-उतार जातक को देखने पड़ते हैं। चंद्र

की दृष्टि शुक्र पर हो तो जातक सूदखोरी से धन जुटाता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक उच्च शिक्षित, तत्त्व चिंतक, सरकारी क्षेत्र में उच्च पदस्थ अधिकारी रहता है। ऐसा जातक शिक्षा क्षेत्र में उच्च पद पर विभूषित रहता है। जातक का पिता साधारण व्यापारी या साहूकार रहता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक शास्त्रों का ज्ञाता, दंतरोगी एवं अपने माता-पिता का शत्रु होता है। विवाह विलंब से होता है। बुढ़ापा सुख से बीतता है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक दूर देशों में प्रवास करता है। साहित्य में उसकी रुचि रहती है। लेखन-प्रकाशन के माध्यम से धन जुटाता है। धार्मिक ग्रंथों की देखभाल का काम भी वह करता है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक गरीब एवं पिता से मतभिन्नता रखनेवाला होता है। पैतृक संपत्ति से वंचित रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो सफल व्यापारी एवं राजनीति में बड़ा पद प्राप्त करता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक बड़बोला एवं अपने मालिक को नुकसान पहुंचानेवाला होता है। बुध की दृष्टि होने पर भी सुख-साधनों से युक्त रहता है। स्त्रियों के कारण दुखी एवं प्रत्येक कार्य में असफल होता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक सरकारी नौकरी में आर्थिक कार्यों से संबंधित क्लर्क या लेखाकार बनता है। उसे अपच, गैस एवं वातरोग का कष्ट रहता है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक माता-पिता एवं स्वयं की बीमारी से परेशान और रक्तदोष या त्वचा विकार से ग्रस्त रहता है। उसे कदम-कदम पर मुसीबतों से सामना करना होता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक किसी मंत्री या राजनीतिक नेता का चाटुकार रहता है। जीवन लंबा एवं विचार भी सुंदर रहते हैं।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक अकस्मात धनी बनता है। उसके चेहरे पर सफेद दाग या और कोई चिह्न रहता है। उसका परिवार बड़ा होता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक बुरे आचरणवाला, गैरकानूनी ढंग से धन जुटाकर धनी बननेवाला किंतु गरीबों की मदद करनेवाला होता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक झगड़ालू, अल्पायु में विधुर बनता है। राहु पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो पत्नी दीर्घायु रहती है किंतु वह ऋतुचक्र (मासिक धर्म) की बीमारी से ग्रस्त रहती है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक विख्यात एवं धनवान रहता है। अपने परिवार से अलग रहनेवाला और पिता का विरोधी रहता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक की पाचन शक्ति कमजोर रहती है, अपनी मर्जी से विवाह करता है। फलस्वरूप उसे अनेक प्रकार के मानसिक एवं आर्थिक कष्ट सहने पड़ते हैं।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक में आत्मविश्वास की कमी रहती है। अपना कार्य मानसिक दबाव में करता है। किसी कारखाने में मजदूर या मैकेनिक की हैसियत से काम करता है। 35 से 40 वर्ष में उसकी स्थिति में कुछ सुधार होता है। उसे उदर रोग रहता है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक उल्टे दिमाग का, चरित्रहीन, अपने बाप-दादा की संपत्ति का नाश करनेवाला रहता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक क्रोधी, ईर्ष्यालु, दूसरों को उपदेश देनेवाला, माता-पिता का विरोधी एवं उनसे बहिष्कृत रहता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो असंतुलित बर्ताव करता है। निम्न स्तरीय लोगों की संगत में रहता है। जिद्दी एवं दूसरों का धन न लौटानेवाला होता है।

हर्षल-नेपच्यून

हर्षल-नेपच्यून विशाखा नक्षत्र में हों तो जातक दूसरों का एवं स्वयं का अहित करनेवाला, कटुभाषी, घातकी, मन का काला, शत्रुओं को परास्त करनेवाला, उद्योगी, गुप्तचर पुलिस के नाते सफल रहता है।

प्लूटो

विशाखा नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक दुष्ट, भड़कीले भाषण करनेवाला, घातकी, बदला लेनेवाला, कपटी, शिक्षा एवं बुद्धि की कमी से युक्त, दुर्गुणी, अविश्वासी, शारीरिक पीड़ा से युक्त रहता है।

विशाखा नक्षत्र में जन्मे स्त्री पुरुष रोहिणी, मघा, पूर्वाषाढ़ एवं श्रवण नक्षत्रों में जन्मे स्त्री-पुरुषों से विवाह, मैत्री तथा साझेदारी न करें।

□□

अनुराधा (17) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो अनेक स्त्रियों जातक से प्रेम-संबंध रहते हैं। अधिकांश महिलाओं के लिए वह आदर्श पुरुष रहता है। ऐसा जातक समुद्री व्यापार से धन जुटाता है। मंगल की दृष्टि हो तो पराक्रमी रहता है। बुध की दृष्टि हो तो ललित कला में उसकी रुचि रहती है। कलात्मक चीजों के व्यवसाय से वह धन प्राप्त करता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो राजकाजी लोगों के संपर्क में रहकर उन्हीं के माध्यम से धन जुटाता है। शुक्र की दृष्टि हो तो स्वयं विधायक, मंत्री या राजनेता बनता है। वैवाहिक जीवन सुखी रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक धोखेबाज, चालाक, पापकर्मी, शासन की ओर से दंड या सजा भुगतनेवाला रहता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक निर्भय, बड़बोला, शत्रु को परास्त करनेवाला, स्त्रियों के पीछे लगनेवाला होता है। प्रवास की तीव्र इच्छा रहती है। अपने गांव या घर से दूर रहता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक मूर्खतापूर्ण बातें करता है। पढ़ा-लिखा परंतु बुद्धिहीन होता है। कंजूसी बरतकर धन जोड़ता है, रिश्वतखोर अधिकारी होता है। अहंकारी वृत्ति के कारण उसके शत्रुओं की संख्या में वृद्धि होती है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक नीच लोगों की सोहबत में रहनेवाला होता है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक अनेक कलाओं व कायदे-कानून का जानकार, पेशे से वकील या डॉक्टर रहता है। जीवन के हर क्षेत्र में निष्ठावान, कर्मठ एवं कर्त्तव्यपरायण रहता है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक के दो माताएं या दो पिता होते हैं। मंगल की दृष्टि हो तो शासनाधिकारियों का चहेता होता है। बुध की दृष्टि हो तो चुगलखोर एवं निम्न श्रेणी का रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक की बीमारी कई उपायों के बावजूद भी ठीक नहीं होती। शुक्र की दृष्टि हो तो जीवनभर गरीब रहता है। शनि की दृष्टि हो तो अपनी योग्यता एवं जनसंपर्क से मंत्री, राजनेता या महात्मा बनता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक कुशल वक्ता, धीमी गति से काम करनेवाला, आदरणीय, प्रसिद्ध एवं अधिकारसंपन्न रहता है। राहु का इस चंद्र से योग बनता हो तो जातक को गुप्त रोग होता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक उच्च पदस्थ सरकारी नौकर रहता है। जमीन-जायदाद, वाहन एवं नौकर-चाकरों से युक्त रहता है।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक को माता-पिता का सुख कम प्राप्त होता है। मां जल्द स्वर्ग सिधारती है एवं जातक स्वयं रोगग्रस्त रहता है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक सदैव अस्वस्थ, उपेक्षित, हाथगाड़ी पर व्यवसाय करके अपनी जीविका चलाता है। कबाड़ी या बरतन मांजने का कार्य करना पड़ सकता है। अधिकांश जातकों के विवाह विलंब से होते हैं या नहीं भी होते। यदि विवाह हो गया तो पत्नी उसे छोड़कर पराये पुरुष के साथ चली जाती है। परिवार, पत्नी तथा संतान का सुख उसे नहीं मिलता।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक जन्म स्थान से दूर रहता है। वह अपनी पत्नी का तिरस्कार करता है। चंद्र की दृष्टि हो तो माता-पिता से (विशेषतः पिता से) वैर रहता है। बुध की दृष्टि हो तो उसकी संतान अच्छी रहती है और उससे अधिक विद्वान एवं धनवान रहती है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो परिवार एवं रिश्तेदारों को प्रिय रहता है, सबका हित देखनेवाला होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक उच्च पदाधिकारी होता है और अपने विशेष ज्ञान के कारण विख्यात होता है। शनि की दृष्टि हो तो सबकुछ अच्छा रहता है, पर जातक अति कंजूस रहता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक स्वेच्छाचारी रहता है। इस नक्षत्र-चरण की महिला जातक पैसे के लिए अपना शील, चरित्र एवं प्रतिष्ठा गंवा बैठती है। पुरुष जातक कठोर हृदयी एवं विश्वास रखने लायक रहता है। ऐसा जातक दुर्जन एवं दूसरों के लिए कष्टकारक रहता है।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक अल्पायु रहता है और सूर्य या चंद्र भी इसी नक्षत्र-चरण में हो तो 9 वर्ष से अधिक जीवित नहीं रहता।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक कामातुर रहता है। वह अपने मित्रों को साथ लेकर अनैतिक कार्य करता है। बृहस्पति की दृष्टि मंगल पर हो तो जातक आकर्षक, प्रभावी, माता-पिता को प्रिय एवं जमीन-जायदाद तथा अन्य जीवनोपयोगी सुख-सुविधाएं मौजूद रहती हैं।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक लम्बे-चौड़े कृषि फार्म का स्वामी रहता है। उसके पास विपुल संपत्ति एवं जमीन-जायदाद एवं जीवनोपयोगी अनेक सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहती हैं। नौकरी या छोटा-मोटा व्यवसाय करना उसे अपमानजनक लगता है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक का वैवाहिक जीवन सुख से परिपूर्ण रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक कठोर परिश्रमी, धनवान एवं शासक वर्ग के निकट संपर्क में रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो शासन द्वारा लाभान्वित इंजीनियर रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो बुद्धिमान एवं धनवान रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक जीवन के हर क्षेत्र में अग्रणी रहता है। शनि की दृष्टि हो तो दुर्भाग्य एवं दैवी प्रकोप सहना पड़ता है और सदैव उसे दरिद्रावस्था में जीवन बिताना पड़ता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक व्यवहारकुशल रहता है। अपने पैसों की चिंता न करने से रिश्तेदार उसे लूटते हैं। कालांतर से यह गलती उसके ध्यान में आती है, पर समय निकल जाने से उसका कोई लाभ जातक को नहीं मिलता। ग्रहों की अनुकूलता होने पर कुछ अंश में गया पैसा हाथ लगता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो संतान कम रहती है। छोटा-मोटा व्यापार करके वह बड़ा अर्थलाभ प्राप्त करता है। पत्नी के दबाव के कारण उसकी उचित-अनुचित मांगें पूरी करनी पड़ती हैं।

तृतीय चरण में बुध हो तो स्त्री जातक भाग्यवान होती है। उसका पति धनवान एवं सभी सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण रहता है किंतु पति-पत्नी में परस्पर कलह होता रहता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक का शरीर सुदृढ़ रहता है। महिला जातक का भाग्योदय उसके विवाह के बाद होता है। जातक अध्यापक, होस्टल या किसी संस्था का संचालक होता है। पीड़ित बुध होने पर जातक बदनाम लोगों का नेतृत्व करता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक धनवान, स्वस्थ एवं पारिवारिक जीवन में सुखी रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जन्मजात धनवान होता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक साहसी एवं उच्च शिक्षित रहता है। बुध की दृष्टि हो तो पवित्र आचरण का धनी होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो गौरवशाली एवं स्त्री वर्ग में लोकप्रिय रहता है। शनि की दृष्टि हो तो उच्च विचारों का धनी एवं अनेक विषयों का जानकार रहता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक मध्यमायु होता है। सूर्य, राहु एवं शनि का संयोग इस बृहस्पति से होता हो तो जातक को 27 या 32वें वर्ष में मृत्यु समान पीड़ा होती है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक सुरक्षा या पुलिस विभाग में कार्यरत रहता है। वह पवित्र विचारों से ओत-प्रोत एवं कर्त्तव्यपरायण अधिकारी रहता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक धर्मशास्त्री एवं गणित विद्या में प्रवीण रहता है। बृहस्पति मंगल द्वारा पीड़ित हो तो जातक ग्रंथि विकारों से ग्रस्त रहता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक साहसी, विनम्र, बड़े-बुजुर्गों का आदर करनेवाला किंतु आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ नहीं होता।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक की पत्नी भाग्यवान रहती है। जातक व्यापार में धन कमाकर जायदाद का धनी बनता है। चंद्र की दृष्टि हो तो परिवार में श्रेष्ठ, विनम्र, खाने-पीने में रुचि रखनेवाला रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक शांत स्वभावी, उत्कृष्ट व्यक्तित्ववाला एवं कला व साहित्य सेवा में संलग्न रहकर धन जुटानेवाला रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक बुद्धिमान, नौकर-चाकर एवं वैवाहिक सुख से पूर्ण रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक क्रूर, पापी एवं बेईमान होता है व सजा भुगतता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक सुखी, कामातुर एवं कामचोर रहता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक बार-बार आर्थिक संकट में फंसनेवाला, निम्न श्रेणी के लोगों में रहनेवाला, संक्रामक रोगों से ग्रस्त रहता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक उदर रोगी, आंतों एवं आमाशय के विकारों से त्रस्त रहकर किसी तरह अपना जीवन व्यतीत करता है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक रसायनशास्त्र में पारंगत, प्रयोगशाला में नौकरी करनेवाला, कपड़े अथवा बहुमूल्य धातुओं का व्यापार करनेवाला या संगमरमरी पत्थरों का व्यापार करनेवाला रहता है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक गरीब, पिता एवं दादा से मतभेद रखनेवाला, पैतृक संपत्ति के उपभोग से वंचित रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक सत्ता एवं राजनीति में उच्च पद प्राप्त करता है। उद्योग समूह का प्रमुख रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो शंकाग्रस्त एवं अपने मालिक का नुकसान करनेवाला होता है। बुध की दृष्टि हो तो मध्यम आयु के बाद धनवान बननेवाला, अनेक शास्त्रों एवं ज्ञान-विज्ञान का जानकार रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो उसे जीवन के सभी सुख प्राप्त होते हैं। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक रिश्वतखोर, धोखेबाज एवं अविश्वसनीय रहता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक गैरकानूनी काम करनेवाला, चोर, हत्यारा रहता है। कद मध्यम रहता है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक बेवकूफ, चौड़े कंधोंवाला, गंजा, झगड़ालू, हर अच्छे कार्य में विघ्न पैदा करने की प्रवृत्तिवाला रहता है। जातक दूसरों का धन हड़पनेवाला, कोर्ट-कचहरी द्वारा दंडित रहता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक मूर्ख, कठोर ह्रदयी, गरीब, तंगी में जीवन व्यतीत करनेवाला होता है। बुढ़ापे में स्थिति में सुधार आता है। वह अन्दर से दुखी किंतु बाहर से सुखी प्रतीत होनेवाला एवं सरकार से लाभान्वित रहता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक को अग्नि एवं शस्त्र भय रहता है और उसे अत्याचार सहने पड़ते हैं। दीर्घ अवधि तक वह बीमार रहता है। आमदनी से अधिक खर्च करनेवाला, शराबी, जुआरी एवं सट्टेबाज रहता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक कमजोर, पारिवारिक समस्याओं से घिरा हुआ, छोटी-मोटी नौकरी करनेवाला रहता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक स्वार्थी, दूसरों के धन पर नजर रखनेवाला, बुढ़ापे में अनैतिक कार्यों से धन जुटानेवाला, संतान सुख से वंचित, पत्नी की बीमारी के कारण इधर-उधर भटकनेवाला होता है। वह युवावस्था में ही विधुर हो जाता है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक संतान की मृत्यु से दुखी, मध्यम श्रेणी का धनी, असंतुष्ट वैवाहिक जीवन भोगनेवाला रहता है।

चतुर्थ चरण में राहु होने पर जातक अल्पायु, माता-पिता रहित, स्वयं कम आयु में मृत्यु पानेवाला रहता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक उच्च पदस्थ, धार्मिक, उपदेशक एवं धनवान रहता है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक जायदाद के विवाद में फंसा, कोर्ट में पराजित होनेवाला, बदनाम आचरण का एवं शत्रुओं से पीड़ित रहता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक तंत्र-मंत्र का जानकार एवं इंजीनियर होता है। वह अस्थायी नौकरी करता है। 30 वर्ष के बाद आर्थिक हालत अच्छी होती है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक को बार-बार अपना मकान बदलना पड़ता है। पैतृक जमीन बेचनी पड़ती है। स्त्रियों द्वारा पीड़ित रहता है। परदेश में जाकर रहने की तमन्ना रहती है।

हर्षल-नेपच्यून

अनुराधा नक्षत्र में हर्षल नेपच्यून हों तो जातक अस्थिर स्वभाव का, प्रेम-प्रसंग में विफल, पत्नी का त्याग करनेवाला, विवाह के बाद भी सुख में न्यूनता महसूस करनेवाला, स्वच्छंद, चंचल परंतु साहसी रहता है।

प्लूटो

अनुराधा नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक कामातुर, सज्जन, धनवान, लोक प्रसिद्ध, प्रेमी, परोपकारी रहता है।

अनुराधा नक्षत्र में जन्मे स्त्री पुरुष मूल, उत्तराषाढ़, आर्द्रा, पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुषों से मित्रता, विवाह या साझेदारी न करें।

□□

ज्येष्ठा (18) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक क्रूर एवं लाल आंखोंवाला होता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक सुखी रहता है। शरीर सुदृढ़ रहता है। जेबें खाली रहती हैं। बृहस्पति की दृष्टि हो तो अध्यापन करनेवाला, गरीब एवं पिछड़े वर्ग की सेवा करनेवाला होता है। राजनीति में भी उसका हस्तक्षेप रहता है। सरकारी एवं सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाओं में उच्च पदस्थ रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक अनैनिक कार्यों से जुड़ा और धनहीन रहता है। उसके अनेक शत्रु होते हैं। शनि की दृष्टि हो तो जातक गरीब, आलसी तथा बीमार रहता है। बड़े-बड़े कार्य पूरे करने में माहिर होता है। धनी एवं गरीबों को भी आर्थिक कष्ट देनेवाला होता है। वह अनुचित तरीकों से धन जुटाता है। कुछ ऐसे जातक सरकारी नौकरी करते हैं और अपने पिता के कट्टर शत्रु होते हैं।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक को अग्नि, शस्त्र, अग्निजन्य पदार्थ, इंजन, मशीनरी, जहरीले पदार्थ, ड्रग्स आदि से भय रहता है। शनि-चंद्र दोनों इस नक्षत्र-चरण में हों तो जातक की आयु मात्र 9 वर्ष होती है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक गंजा रहता है। उसे खुजली, आंखों के रोग होते हैं। वह किसी से भी सहानुभूति नहीं रखता।

तृतीय चरण में सूर्य हो और उसका मंगल से योग हो या शनि की उस पर दृष्टि हो तो जातक के जन्म के बाद जल्द ही उसके पिता की मृत्यु हो जाती है। महिला जातक के संदर्भ में ऐसा नहीं होता। बच्चे को दीर्घकाल तक पिता का वियोग सहन करना पड़ता है। जातक पिता का घर छोड़कर चला जाता है। नौकरी के लिए देश-विदेश में जाना या जेल जाना भी संभव रहता है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो एवं उस पर पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो जातक के पिता की अल्पायु होती है। शुभ ग्रह से युक्त सूर्य हो तो पिता दीर्घायु होता है। कुछ प्रसंगों में जातक के जन्म के बाद पिता को अकस्मात आघात होता है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक स्वयं के लिए आर्थिक सहयोग मांगता

रहता है। वह अधिकार प्राप्त सरकारी नौकर रहता है, फिर भी मांगना उसका स्थायी भाव रहता है। क्रूर एवं भ्रष्ट आचरण का जातक काफी धनवान रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो उसे कर्ण एवं दंत रोग होते हैं। वह किसी ज्ञानी या संप्रदाय के नाम पर पैसा जुटाता रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक गायक या कलाकार के रूप में काफी नाम एवं धन कमाता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक उच्च शिक्षा प्राप्त, उपदेशक, सलाहकार या शिक्षक बनता है। उसका व्यवसाय अच्छा रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो वह स्त्रियों का समर्थक, उनमें कार्य करनेवाला, धनी-मानी होता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक शिल्पकार, कारीगर, कठोर परिश्रमी, छोटे-बड़े काम करके निर्वाह करनेवाला होता है। उसके क्रूर, हमेशा बीमार रहनेवाली एवं शैतान प्रवृत्ति की संतान होती है।

प्रथम चरण में चंद्र हो और उस पर पापग्रहों की दृष्टि हो तो जातक की अग्नि या शास्त्राघात से मृत्यु होती है। रास्ते में दुर्घटना, अग्निकांड, विस्फोट का भय जातक को रहता है। ऐसे जातक के लिए 1 से 7 वर्ष अरिष्टसूचक होते हैं।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक स्वार्थी, बड़े भाई का दुश्मन, अड़ियल, अपनी मनमानी करनेवाला, क्रोधी स्वभाव एवं अत्यधिक भोगविलास के कारण कलंकित रहता है।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक कई प्रकार के अनैतिक कार्यों से जुड़ा रहता है। उसकी पत्नी झगड़ालू रहती है, जातक स्वयं भी गाली-गलौज करनेवाला रहता है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक को अपनी पत्नी या पति का वियोग अल्पावधि में ही सहना पड़ता है। जातक व्यवसाय में चतुर, धनवान, विज्ञान या चिकित्सा क्षेत्र में अधिकारसंपन्न रहता है। वैवाहिक जीवन सुखद नहीं रहता। संतान के कारण भी वह तनावग्रस्त रहता है। वियोग के कारण भी दुखी रहता है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक बुद्धिमान, साहसी, कृतज्ञ, अधिकार प्राप्त उच्चाधिकारी या धनवानों का सर्वेसर्वा रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो दूसरों के वैवाहिक जीवन में हस्तक्षेप करनेवाला, निष्ठुर एवं क्रूर रहता है। पुलिस या कोर्ट-कचहरी में नियुक्त रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक चालबाज, धोखेबाज, दिखावा करनेवाला, दूसरों का धन हड़पनेवाला, गैरकानूनी कार्यों से धन जुटानेवालों में से एक रहता है। चोरी का माल बेचकर या दलाली करके धन जुटाता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक अपने परिवार का प्रिय पात्र रहता है। परिवार का पूरा आर्थिक कारोबार उसके मार्गदर्शन में चलता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक मूल्यवान वस्त्राभूषण धारण करनेवाला, व्यापारी, पैसे के बलबूते पर अनैतिक कृत्य करनेवाला रहता है। उत्तम भोजन का शौकीन होता है। सामाजिक-धार्मिक एवं पारिवारिक कामों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक

निर्धन एवं परिवार से तिरस्कृत रहता है। माता-पिता का स्नेह नहीं मिलता। जातक दुर्बल होता है और कालांतर से अपने परिवार को हानि पहुंचानेवाले काम कर बैठता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक अग्निजन्य पदार्थ, शस्त्र, विष आदि से भयभीत रहता है। सर्प, बिच्छू या जहरीले कीड़ों से उसे कष्ट होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक धनवान, सज्जन एवं आकर्षक व्यक्तित्व का तथा माता-पिता को प्रिय रहता है।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक सरकारी नौकर होता है। उसे जमीन-जायदाद से धन प्राप्त होता है। दूसरों की सहायता करने के बहाने एवं अपने संपर्क माध्यम से वह धन संग्रह करता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक कुबेर के समान धनवान होता है। जमीन-जायदाद का संरक्षक होने एवं सोने-चांदी के व्यापार से धन कमाता है। आर्थिक लेन-देन भी करता है। सट्टे, लॉटरी, रेस के माध्यम से भी पैसा कमाता है। कुछ जातक इंजीनियर, सुरक्षाधिकारी या अंगरक्षक की हैसियत से भी कार्य करते पाए जाते हैं।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक अपने परिवार एवं बाल-बच्चों के साथ क्रूर व्यवहार करता है। पत्नी के असामयिक निधन से दुखी रहता है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक लोकप्रिय, मृदुभाषी एवं शासन से लाभान्वित रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक गायक, कलाकार, शिल्पकार या समीक्षक रहता है। उसे धन, वाहन एवं परिवार की विशेष उपलब्धि प्राप्त रहती है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक उच्चाधिकारी एवं प्रभावशाली व्यक्तियों का कृपापात्र रहता है। मध्यस्थता या संपर्क से भी वह धन प्राप्त करता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक सभ्य, सज्जन एवं आदर्श रहता है। उसका परिवार भी सज्जन एवं व्यवहारकुशल रहता है। शुक्र की दृष्टि होने पर जातक उदार, दानपुण्य करनेवाला, लोकप्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाला होता है। शनि की दृष्टि हो तो सशक्त, मारपीट करनेवाला एवं गरीबों की मदद करनेवाला होता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक गणित या संगीत का जानकार, कलाप्रेमी होता है और कलात्मक कार्यों से पैसा प्राप्त करता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक सदाचारी, आर्थिक चढ़ाव-उतार देखनेवाला, सरकारी विभाग में उच्च पदस्थ रहता है। पत्नी खर्चीली एवं जातक के लिए दुर्भाग्यपूर्ण सिद्ध होती है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक बदनाम, क्रूर, बेशर्म, धन-संपत्ति, पत्नी एवं संतानविहीन व सजा का पात्र होता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक धनी, आढ़त का व्यापार करनेवाला,

आयात-निर्यात करनेवाला, ठेकेदार या जमीन लेन-देन के व्यवहार करनेवाला व सूदखोर और नेत्ररोगी होता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक गैर कानूनी कामों से डरनेवाला, धर्मभीरू एवं सत्कर्मी रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक धन, मान-प्रतिष्ठा एवं यश प्राप्त करनेवाला रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक क्रूर, दूसरों का घमंड चूर करनेवाला, शासनाधिकारी, मजिस्ट्रेट या कोतवाल रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक नीच आचरणवाला, वाद-विवाद करने में कुशल, झगड़ा शुरू करवाकर कलह उत्पन्न करानेवाला होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो सौंदर्य प्रसाधनों की बिक्री द्वारा धन जोड़नेवाला, कपड़े या साज-सज्जा के साधनों का व्यापारी, कमीशन एजेंट होता है। शनि की दृष्टि हो तो कुटुंब सुख से विमुख, क्रूर एवं आलसी रहता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक की अल्पकाल में ही मृत्यु हो जाती है। शुभग्रह देखते हों तो वह मध्यमायु तक जीवित रहता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक विद्वान, धनवान, वकील, नेता या मंत्री बनता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक धनी, स्त्रियों का प्रिय, लेखन एवं पत्रकारिता के माध्यम से धन प्राप्त करनेवाला होता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो एवं उस पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक जीवन के पांच साल तक कष्ट सहन करता है। अन्यथा शस्त्राघात, जख्म होने या गोली लगने उसकी मृत्यु होती है। मरणोपरांत वह सरकार से लाभान्वित होता है।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक अपनी योग्यता के बल पर सरकारी अधिकारी बनता है किंतु पत्नी के कारण हमेशा दुखी रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो उसे सामाजिक कार्यों में विशेष धन तथा यश प्राप्त होता है। दुराचार एवं हीन आचरण के कारण उस पर अनैतिक कार्य का आक्षेप लगता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक कुरूप होता है। बुध की दृष्टि हो तो जीवन समस्याओं से घिरा रहता है। सक्षम एवं योग्य होते हुए भी उसे अपेक्षित यश नहीं मिलता। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक हट्टा-कट्टा, सुंदर पत्नी एवं योग्य संतान से युक्त भाग्यशाली जीवन जीता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक दुष्ट, दूसरों की सहायता से धन का गबन करनेवाला, काले धन से अमीर बनता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक प्रख्यात ज्योतिषी एवं गणितज्ञ बनता है। उसे सट्टे-जुए का व्यसन लगता है। वह जाति-बिरादरी का प्रमुख बनता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक अत्यधिक भोगविलासी, दुराचारी, बदनाम तथा रसायन उद्योग के माध्यम से धन जुटानेवाला होता है। प्रचार माध्यमों से जुड़ा रहकर स्त्री शक्ति का दुरुपयोग करता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक डॉक्टर, चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक या इंजीनियर बनता है। धातु या सोने-चांदी के व्यापार से वह लाभ प्राप्त करता है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक पैतृक संपत्ति का दुरुपयोग करनेवाला, पारिवारिक द्वेष एवं कलह में उलझा हुआ, 43 साल के बाद गई प्रतिष्ठा एवं धन पुन: प्राप्त करनेवाला रहता है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक गधे, घोड़े, सूअर या अन्य पशुओं के व्यापार से या दूध, घी या अन्य डेयरी उत्पादों से धन जुटाता है। चंद्र की दृष्टि हो तो गैरकानूनी ढंग से आजीविका चलाता है। वह स्वार्थी एवं कड़े परिश्रम के बावजूद भी गरीब ही रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो बड़बोला, दूसरों के कामों में रोड़े अटकानेवाला होता है। बुध की दृष्टि हो तो निम्न श्रेणी के कार्य करके गैरकानूनी ढंग से धन जुटाता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो अपनी योग्यता से सत्ता में उच्च स्थान प्राप्त करता है। पत्नी सुशील एवं संतान आज्ञाकारी रहती है। शुक्र की दृष्टि हो तो वाहन, यातायात, पर्यटन या होटल के व्यवसाय से वह धन जुटाता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक को ट्यूमर, दिमागी ज्वर, शिरोरोग जैसी शारीरिक पीड़ा रहती है। वह अतिसाहसी, क्रोधी एवं झगड़ालू रहता है। कुकर्मों के कारण कोर्ट-कचहरी से सजा मिलती है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक सांवला, बदसूरत, धोखेबाज होता है। काली करतूतों से सत्ता एवं अधिकार भोगता है किंतु उसे पर्याप्त सुख नहीं मिलता। रहस्यमय ढंग से जीवन का अंत होता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक दो विवाह करता है। फिर भी उसे वैवाहिक जीवन का सुख प्राप्त नहीं होता। उसकी दूसरी पत्नी भी उसके मिजाज एवं आचरण से तंग आकर उसे छोड़ देती है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक कर्मठ एवं धनवान बनता है। रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार से धन जुटाता है, किंतु इस धन का उपभोग नहीं कर पाता। अकस्मात रूप से किसी बीमारी या आघात के कारण उसके जीवन का अंत होता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक दो विवाह करता है। उसकी प्रथम संतान अल्पायु होती है। बाद की संतानें जीवित रहती हैं।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक चालबाज, धोखेबाज एवं हिंसाचारी रहता है। अपने मां-बाप या भाई-बहनों पर भी दयाभाव नहीं रखता। कमजोर शरीर का

होते हुए भी अनेक स्त्रियों से अनैतिक संबंध रखता है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक अपने विचारों को प्रकट करने में चतुर होता है। मध्यमायु के बाद उसे बुरी हालत में जीना पड़ता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक अपने परिवार से तिरस्कृत रहता है। शरीर दुर्बल रहता है किंतु जातक चालाक, धोखेबाज एवं साहसी रहता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक शासन में उच्च पदस्थ रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो उन्नति के शिखर पर पहुंचता है। शिक्षा के लिए परदेस जाता है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक सभी प्रकार के सुखों का उपभोग करता है। शुक्र की दृष्टि हो तो ऑटोमोबाइल्स के व्यापार में उसे काफी धन प्राप्त होता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक को अच्छे मित्रों का साथ मिलता है। मनोरंजन के अनेक खेलों की जिम्मेदारी वह कुशलता से निभाता है और काफी धन इकट्ठा करता है।

चौथे चरण में केतु के उपरोक्तानुसार मिले-जुले फल प्राप्त होते हैं।

हर्षल-नेपच्यून

ज्येष्ठा नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हों तो जातक जिद्दी, बदला लेने की भावना से ओत-प्रोत, दीर्घकालीन रोग भोगनेवाला, मेहनती, कष्ट सहनेवाला, विद्या-बुद्धि में मंद, बेशर्म, दुखमय जीनेवाला होता है।

प्लूटो

ज्येष्ठा नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक जिद्दी, ईर्ष्यालु, बदले की भावना रखनेवाला, व्यभिचारी, लंपट, षडयंत्र रचनेवाला रहता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष पूर्वाषाढ़, श्रवण, शतभिषा, आर्द्रा, पुनर्वसु एवं उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रों में जन्मे स्त्री-पुरुषों से मैत्री, विवाह या साझेदारी न करें।

□□

मूल (19) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक की संतान आकर्षक होती है। मंगल की दृष्टि हो तो वह पुलिस या सुरक्षा विभाग में नौकरी करता है और उच्च पद पाता है। मां-बाप एवं परिवार से त्यागा जाता है। बुध की दृष्टि हो तो उच्च शिक्षित, ज्ञानी, तंत्र-मंत्र का ज्ञाता, सोने-चांदी, रत्नाभूषणों का संग्रह करनेवाला, बृहस्पति की दृष्टि हो तो औद्योगिक संस्था का अध्यक्ष, उच्चाधिकारी या राज्य-मंत्री बनता है। शुक्र की दृष्टि हो तो शौकीन, दुराचारी, धन का अपव्यय करनेवाला रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक बदनाम, हीन आचरण से युक्त, पशुओं के चमड़े या पशुओं क्रय-विक्रय से धन कमानेवाला होता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक का पिता विद्वान एवं ख्याति प्राप्त होता है। जातक स्वयं दान आदि करने एवं लोकहितों के कार्य करनेवाला रहता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक बड़ा व्यापारी बनता है। रेशम या किराना माल के व्यापार से धन जुटाता है। सूर्य पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो भंगार (टूट-फूट या कबाड़) का व्यापार करता है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक की वाणी में कटुता रहती है। फिर भी वह हंसमुख एवं गजब की कल्पनाशक्ति का धनी होता है। वह घासलेट का व्यापार करता है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक हमेशा अस्वस्थ रहता है। उसे मूर्च्छा, अपस्मार, दिमागी ज्वर, सिरदर्द आदि बीमारियों से कष्ट रहता है। शुक्र-मंगल भी इस सूर्य के साथ हों तो जातक डॉक्टर या सर्जन बनता है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक ऐश्वर्यशाली सुख भोगता है। मंगल की दृष्टि होने पर पुलिस एवं सुरक्षा सेना में गुप्त पद पर कार्यरत रहता है। बुध की दृष्टि हो तो नौकर-चाकरों से युक्त, ज्योतिषी, इंजीनियर, वास्तुकार या शिल्पी बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक व्यवसायकुशल, बड़ा उद्योगपति या फैक्टरी का मालिक बनता है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक होता है। शुक्र की दृष्टि होने पर राज्य

मंत्री, धार्मिक एवं धनवान बनता है। उसकी संतान अच्छी रहती है। शनि की दृष्टि हो तो जातक क्रूर या उच्च शिक्षित ज्ञानी एवं कट्टर धार्मिक बनता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक हीन आचरण का एवं वेश्यागामी रहता है, निम्न स्तर का व्यवसाय करता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक बेईमान, धन का गबन करनेवाला, पारिवारिक जीवन में दुखी रहता है। पत्नी एवं बच्चे इसे छोड़कर अन्यत्र चले जाते हैं।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक वकील, कोर्ट-कचहरी के कामों में सिद्धहस्त रहता है और मदिरापान का शौकीन रहता है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो आयु के चार वर्षों तक जातक के जीवन को भय रहता है। उसके बाद जीवित रहता है तो भाग्यवान बनता है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक प्रतिभासंपन्न, अभिनेता या विश्वविख्यात खिलाड़ी तथा व्यवहार में कठोर एवं झगड़ालू रहता है। चंद्र की दृष्टि होने पर शरीर से विकलांग एवं दुर्बल रहता है। उच्चशिक्षित कानून एवं अपराध विज्ञान का ज्ञाता या फौजदारी वकील बनता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक कलाविद, मैकेनिक या घड़ीसाज बनता है। उच्चस्तरीय वैज्ञानिक, अनुवादक, लेखक भी बन सकता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो वैवाहिक जीवन दुखी परंतु जातक संपन्न रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो दान-पुण्य करनेवाला, लालची, दुराचारी रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक शारीरिक दृष्टि से दुर्बल, अस्थिर व्यवसाय करनेवाला, घुमक्कड़ रहता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक अपने शत्रु के लिए घातक रहता है। अपने बाहुबल से सभी सुख प्राप्त करता है और सुखमय जीवन व्यतीत करता है। वैवाहिक जीवन में प्रारंभ के 10-15 साल कलहकारक रहते हैं।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक कई बार जख्मी होनेवाला, क्रोधी स्वभाव का, कटु बोलनेवाला किंतु किसी प्रभावी व्यक्ति के अधीन काम करनेवाला होता है। काफी संघर्ष करने पर 40 वर्ष पश्चात सुखी एवं दूसरों की कृपा पर निर्भर रहता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक कटुभाषी होता है। शरीर पर शस्त्राघात या जख्म का निशान रहता है। दूसरों के धन का रक्षण करनेवाला एवं बुढ़ापे में कुछ सुख पानेवाला होता है।

चतुर्थ चरण में मंगल होने पर जातक झगड़ालू होता है। उस पर अनेक मुकदमे चलते हैं। पुलिस या सुरक्षा विभाग में कार्यरत रहता है। तंत्र-मंत्र एवं जादू-टोना के माध्यम से लोगों का बुरा करता है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक शांत स्वभावी, मूत्र रोग या मधुमेह अथवा खाज-खुजली से पीड़ित रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक भरोसेमंद, ईमानदार, सच्चरित्र, प्रसिद्ध लेखक या पत्रकार रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो एकाउंटेंसी एवं स्टेशनरी के व्यवसाय से धन कमाता है। वह सामाजिक कार्यकर्त्ता रहता है लेकिन कार्य समाज विरोधी करता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो वह विद्वान एवं आकर्षक तथा उच्चाधिकार प्राप्त होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो धीमे बोलनेवाला, अध्यापक या गायक, संगीतकार बनता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक अस्तित्वहीन, क्रूर एवं दुखी रहता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक राजनीतिक संगठन का पदाधिकारी बनता है। नए नेताओं को प्रिय एवं अस्थायी राजयोग भोगनेवाला होता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक अभियंता, शिल्पकला का जानकार होता है। उद्योग-धंधे या फैक्टरी में काम करके उदर निर्वाह करता है या छोटी-सी सरकारी नौकरी के माध्यम से अपनी आजीविका चलाता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक किसी के उत्तराधिकारी के रूप में उदर निर्वाह करता है। अपने ज्ञान एवं शक्ति के बलबूते पर उन्नति करता है। व्यापार, लेखन या अध्यापन में उसकी रुचि रहती है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक धनवान, अकस्मात धन प्राप्त करनेवाला, कला, संग्रहालय या प्राचीन वस्तुओं से धन प्राप्त करता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक निर्धन एवं सभी से तिरस्कृत रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक भाग्यवान, भरे-पूरे परिवार से संबंधित रहता है। व्यवसाय में काफी प्रगति करता है। मंगल की दृष्टि होने पर शत्रु द्वारा पीड़ित, कठोर एवं दूसरों को कष्ट पहुंचानेवाला रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक मंत्री, सलाहकार या पर्सनल सेक्रेटरी होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक दीर्घायु, भाग्यवान एवं सुखी रहता है। शनि की दृष्टि हो तो चोर, गंवार, ठग एवं धोखेबाज रहता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक निष्ठावान एवं ईमानदार रहता है। शिक्षण संस्थान का अध्यक्ष, प्रधानाचार्य या प्राध्यापक बनता है। जीवन स्तर सामान्य परन्तु विचार ऊंचे रहते हैं।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक उच्चाधिकारी, धनवान एवं संपन्न रहता है। स्त्रीवर्ग से उसे कष्ट प्राप्त होते हैं।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक दीर्घायु, संपन्न एवं सुखी रहता है। उच्च कोटि का सुधारक, लेखक, साहित्यकार बनता है। विशाल समुदाय पर अपनी छाप छोड़ता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक वैज्ञानिक, धार्मिक संस्था का अध्यक्ष, व्यवसाय से धन जुटानेवाला होता है।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक उच्च शिक्षित, संपन्न किंतु क्रोधी रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक उच्चाधिकारी होता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक धनवान, व्यापार के माध्यम से धनसंग्रह करनेवाला, व्यवसाय-चतुर होता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक भाग्यवान, योगविद्या एवं चालाकी से धन जुटाता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक विद्वान, उच्च पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त सज्जन होता है। उसके अधीन मंत्री या मुख्यमंत्री के अधिकार रहते हैं। एक आंख में पीड़ा रहती है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक नेता, शिक्षण संस्था यां ट्रेनिंग संस्था का अध्यक्ष बनता है। अनाथ स्त्रियों के कल्याणार्थ कार्य करता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक की पत्नी बहुत ही गरीब एवं दयनीय रहती है। जातक पत्नी एवं संतान पक्ष की ओर से दुखी रहता है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक उच्च शिक्षित किंतु साधारण श्रेणी की आजीविका चलाता है। दूसरों से ले-देकर अपनी घर-गृहस्थी चलाता है, फिर भी उसे संतुष्ट एवं प्रसन्न परिवार प्राप्त होता है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक को अच्छी पद-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। अपनी शक्ति के अनुसार परमात्मा की कृपा से यश, धन एवं ख्याति प्राप्त करता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक अल्प सुखी रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो उसका परिवार आदर्श एवं सुखी होता है। सबका कृपापात्र, दंड भोगनेवाला एवं क्रूर होता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक को उच्च स्तरीय पद प्राप्त होता है। वह विधायक, सांसद, जिला प्रमुख बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो मां के अतिरिक्त अन्य स्त्री द्वारा जातक का भरण-पोषण होता है। जातक बाद में उस पालनहार स्त्री के परिवार की जिम्मेवारी संभालता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक उच्चाधिकारी, सम्मानित, धनसंपदा एवं परिवार से युक्त रहता है। अपने परिवार में वह सबसे अधिक उदार एवं परोपकारी रहता है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक विविध शास्त्र एवं भाषाओं का जानकार रहता है। अपनी बौद्धिक क्षमता के कारण उसे ख्याति प्राप्त होती है। मित्रों से लाभान्वित व बलिष्ठ शरीर का होता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक गुप्त या संरक्षक सेना में प्रबंधक होता है। असामान्य पराक्रम दिखानेवाला, समाज एवं देश का गौरव बढ़ानेवाला होता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक अपने गांव या जिले में नाम कमाता है, अनेक शिक्षण संस्थाओं का अध्यक्ष बनता है। संतान से सुखी एवं कमानेवाली स्त्री का पति होता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक मानसिक तनाव से ग्रस्त, अपनी संतान एवं पत्नी के कारण भयंकर मानसिक आघात सहन करनेवाला होता है। स्त्री जातक उदररोगी या ऑपरेशन के कारण कष्ट सहन करनेवाली होती है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक अपने परिवार को संकटग्रस्त करनेवाला, जीवनभर दुखी रहता है। स्त्री जातक अपने खानदान को कलंकित करनेवाली होती है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक वेदों का अध्ययन करनेवाला, कृषि या अन्य व्यवसाय अथवा जमीन-जायदाद से आजीविका चलानेवाला रहता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक दुश्चरित्र, देश-विदेश में भ्रमण करनेवाला एवं व्यापारिक संस्थान का प्रतिनिधि रहता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक के कई मकान होते हैं। किसी के वसीयतनामे के फलस्वरूप वह धनवान बनता है। अपने व्यवसाय से उसे भारी नुकसान उठाना पड़ता है किंतु 35वें वर्ष में गई दौलत पुन: हाथ आती है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक संपत्ति एवं ऐश्वर्य से परिपूर्ण रहता है। वह राज्यमंत्री या उसके समकक्ष कोई पद हासिल करता है।

तृतीय चरण में केतु होने पर जातक धन-ऐश्वर्य से युक्त किंतु भयंकर रोग से पीड़ित रहता है। बड़े ऑपरेशन के बाद भी वह जीवित रहता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक भाग्यवान रहता है। छोटे पद से बड़े पद पर पहुंचता है किंतु पारिवारिक समस्याओं से त्रस्त होता है। दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं का भी सामना करना पड़ता है।

हर्षल-नेपच्यून

मूल नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून होने पर जातक अपने पिता के लिए घातक सिद्ध होता है। असंभव को संभव बनानेवाला, साहसी, अपनी योग्यता में बढ़ोतरी करनेवाला, सर्वत्र प्रभावशाली पुरुष, दूसरों के लिए स्वयं दुख भोगनेवाला एवं निर्भीक होता है।

प्लूटो

मूल नक्षत्र में प्लूटो होने पर जातक क्रोधी, साहसी, तेजस्वी, महत्त्वाकांक्षी, पराक्रमी योद्धा, अपने परिश्रम से आगे बढ़नेवाला, कार्यकुशल, समयपालक, हर कार्य में दक्ष, जान जोखिम में डालनेवाला रहता है।

□□

पूर्वाषाढ़ (20) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक आकर्षक व्यक्तित्व एवं संतान युक्त रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक पुलिस या सुरक्षा सेना में उच्च पद पर कार्यरत रहता है। वह अपने माता-पिता एवं परिवार का त्याग करता है। बुध की दृष्टि होने पर जातक उच्च शिक्षित, ज्ञानी, तंत्र-मंत्र जाननेवाला होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो औद्योगिक प्रतिष्ठान का अध्यक्ष या उच्च अधिकारी बनता है और मंत्री के समान प्रभावशाली रहता है। शुक्र की दृष्टि होने पर बहुत धनवान, मौज-शौक करनेवाला, दुराचारी, व्यर्थ धन खर्च करनेवाला और शनि की दृष्टि हो तो बदनाम, आचरणहीन लोगों में उठने-बैठनेवाला, पशुओं के चमड़े या पशुओं का व्यापार करनेवाला होता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक का पिता विद्वान एवं ख्यातिप्राप्त होता है। जातक स्वयं भी दान-पुण्य करनेवाला एवं लोककल्याण की बातें करनेवाला होता है। 21वें साल से कमाई शुरू करता है। पैतृक व्यापार को आगे बढ़ाता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक धनवान परंतु क्रोधी रहता है। इसी कारण सहज ही कोई भी उसका शत्रु बन जाता है। वह अपरिचित लोगों से समझौता करने में चतुर एवं सावधान रहता है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक धैर्यवान रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो औद्योगिक क्षेत्र में अग्रणी होता है। व्यवसाय के माध्यम से आजीविका चलाता है। 35 से 44 वर्ष के दौरान उसकी प्रगति होती है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक की व्यापार में रुचि रहती है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो उसका व्यवसाय फैला हुआ रहता है। कई मकान एवं जायदादों का वह मालिक बनता है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक राजसी वैभव प्राप्त करता है। पुलिस या सुरक्षा सेना में नौकरी करता है और सुख-शांति से अपना जीवन बिताता है। बुध की दृष्टि हो तो कई नौकर-चाकर उसकी सेवा में रहते हैं। वह ज्योतिषी, इंजीनियर

या वास्तुशिल्पी बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो बड़ा व्यापारी या फैक्टरी का मालिक होता है। व्यक्तित्व आकर्षक रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक धार्मिक, धनवान, मंत्री व अच्छी संतान से युक्त रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक क्रूर, कट्टर धार्मिक एवं उच्च शिक्षा प्राप्त रहता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक दुश्चरित्र, वेश्यागामी एवं निम्न स्तर का व्यापारी होता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक दूसरों का धन हड़पनेवाला, वैवाहिक जीवन में दुखी, अपने परिवार में ही चोरी करनेवाला, बेईमान रहता है। उसकी पत्नी एवं संतान उसे छोड़कर अन्यत्र चले जाते हैं।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक योग्य वकील, कानून व कोर्ट-कचहरी से जुड़ा होता है। शराब की लत रहती है।

चौथे चरण में चंद्र हो तो जातक को बचपन में चौथे वर्ष तक गंडातर रहता है। इस गंडातर से बच निकले तो जातक बहुत ही भाग्यवान रहता है लेकिन भूत-प्रेतादि की बाधा से ग्रस्त रहता है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक प्रतिभासंपन्न अभिनेता या विख्यात खिलाड़ी होता है। व्यवहार में झगड़ालू एवं कठोर रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक दुर्बल, विकलांग रहता है। उच्च शिक्षित, कानून एवं अपराध विज्ञान का जानकार, फौजदारी वकील बनता है। बुध की दृष्टि हो तो कलाकार, मैकेनिक बनता है। उच्चस्तरीय वैज्ञानिक, लेखक, अनुवादक भी बन सकता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो सर्वसुख संपन्न, धनवान किंतु वैवाहिक जीवन में दुखी रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो दान-पुण्य करनेवाला अपनी स्तुति आप करनेवाला, दुराचारी एवं लंपट रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक शारीरिक दृष्टि से कमजोर, व्यवसाय में अस्थिर रहता है। भ्रमण करके पैसा प्राप्त करता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक शत्रु के लिए भारी रहता है। अपनी ताकत के बलबूते पर सुख के साधन जुटाता है। वैवाहिक जीवन के प्रारंभिक कुछ वर्ष कष्टकारक रहते हैं।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक गर्म स्वभाव का होता है, कई बार उसके शरीर पर आघात होते हैं। वह कटुभाषी होता है। किसी बड़े आदमी पर निर्भर रहकर अपनी आजीविका चलाता है। काफी संघर्ष के बाद यश प्राप्त होता है। 40वें वर्ष के बाद वह सुखी होता है, पर दूसरों के अधीन रहता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक कटुभाषी रहता है। शस्त्राघात या जख्म के निशान शरीर पर रहते हैं। दूसरों का रक्षक या घरेलू मजदूर बनकर निर्वाह करता है। बुढ़ापे में थोड़ा बहुत सुख प्राप्त होता है।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक झगड़ालू, मारपीट करनेवाला, पुलिस या

संरक्षक दल में नौकरी करनेवाला होता है। मारपीट के अनेक मुकदमे कोर्ट में चलते रहते हैं। तंत्र-मंत्र एवं जादू-टोना करके लोगों को सताता है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि होने पर जातक शांत स्वभावी, मूत्ररोग तथा मधुमेह से पीड़ित रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक भरोसेमंद, प्रामाणिक, सच्चरित्र, प्रख्यात लेखक या पत्रकार बनता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक बहीखाते लिखकर या स्टेशनरी की चीजें बेचकर पेट पालता है। जातक सामाजिक कार्यकर्ता होते हुए भी समाज विरोधी कार्यों में लगा रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक अत्यंत प्रतिभावान, विद्वान एवं आकर्षक व्यक्तित्व का होता है और कम बोलता है। शुक्र की दृष्टि हो तो अध्यापक, गायक या वक्ता बनता है। शनि की दृष्टि हो तो क्रूर, हिंसाचारी, दुखी एवं अस्तित्वहीन रहता है।

प्रथम चरण में बुध हो और उस पर शनि की दृष्टि हो तो जातक व्यवसाय करता है। 21वें वर्ष के बाद अच्छे दिन आते हैं। शुक्र की दृष्टि हो तो देश-विदेश में धन कमाता है। चंद्र से इस बुध का संयोग हो तो जातक विदेश में ही रहता है। स्वदेश में लौटकर नहीं आता।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक सरकारी नौकरी करता है, मंत्री का प्रमुख सलाहकार रहता है। स्वतंत्र व्यवसाय में सफल होता है। कानून का जानकार या लेखाकार, अनेक संस्थाओं का सहयोगी बनता है, चार्टर्ड एकाउंटेंट भी बन सकता है।

तृतीय चरण में बुध हो एवं उस पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक सरकारी अधिकारी बनता है। सरकारी कामकाज के कारण देश-विदेश में प्रवास करता है। 45वें एवं 52वें वर्ष में कोई अप्रिय घटना घटती है। उसे अध्यापन एवं व्यापार भाता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक पैतृक संपत्ति से धनवान बनता है, अकस्मात धन प्राप्ति होती है और प्राचीन वस्तुओं के व्यापार से धन जुटाता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक निर्धन एवं तिरस्कृत रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो भाग्यवान, खाते-पीते परिवार का एवं व्यापार से उन्नति करनेवाला होता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक कठोर, दूसरों को कष्ट पहुंचानेवाला, शत्रुओं द्वारा परास्त होनेवाला होता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक मंत्री, मंत्री का सलाहकार या निजी सचिव रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक ठग होता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो एवं सूर्य-मंगल-शनि का योग हो तो जातक के पिता की असमय मृत्यु होती है। उसके भाई अधिक और बहनें दो ही रहती हैं। उनमें से एक बहन की असामयिक मृत्यु होती है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो एवं रोहिणी नक्षत्र का उससे कोई योग हो तो जातक की मृत्यु तीर्थ स्थान में होती है। चंद्र की दृष्टि हो तो नदी में डूबने से मृत्यु होती है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक धनवान, अच्छी संतान, सुंदर व आज्ञाकारी पत्नी से युक्त रहता है। 25 से 45 वर्ष में प्रगति होती है। जातक काफी धन जुटाता है। मंगल की दृष्टि होने पर संतान को कष्ट होता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक वेदाध्ययन करनेवाला, वैज्ञानिक शोध में रुचि रखनेवाला रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो संरक्षण विभाग में काम करनेवाला या शस्त्रास्त्रों का परीक्षण करनेवाला वैज्ञानिक रहता है।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक उच्च शिक्षा प्राप्त, धनवान एवं क्रोधी रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो राजातुल्य श्रेष्ठ पद पर आसीन होकर जनता पर शासन करता है। मंगल की दृष्टि हो तो धनवान, व्यापार के माध्यम से धन कमानेवाला रहता है। बुध की दृष्टि हो तो धन संग्रह करनेवाला, बड़े परिवार का रहता है। शनि की दृष्टि हो तो भाग्यवान, चालाकी से धन कमानेवाला, भोग-विलास में रमनेवाला होता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो एवं उससे राहु का संयोग बनता हो तो जातक का विवाह कम आयु में होता है। स्त्री जातक का विवाह 18 वर्ष के अंदर होता है, किंतु वैवाहिक सुख अल्प समय तक रहता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो एवं शनि-मंगल की दृष्टि उस पर हो तो जातक अपने पिता को देख नहीं सकता। उसके भाई-बहन भी नहीं होते।

तृतीय चरण में शुक्र हो एवं उस पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक डॉक्टर बनता है, कदकाठी मध्यम रहती है। महिला जातक पढ़ी-लिखी होती है किंतु नौकरी नहीं करती।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक स्वतंत्र एवं खुले विचारों का सज्जन गृहस्थ रहता है। वह दानपुण्य एवं जरूरतमंदों की सहायता करता है किंतु धन जुटाने में असफल होता है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक को जीवन में उचित पद-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। वह भगवान की कृपा पर निर्भर रहता है किंतु अपने परिश्रम से यश-संपत्ति एवं ख्याति प्राप्त करता है। चंद्र की दृष्टि हो तो वह मां के लिए घातक सिद्ध होता है, मां के सुख में न्यूनता रहती है, उसका परिवार आदर्श एवं सुखी रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक सबसे तिरस्कृत एवं सजा भोगनेवाला, क्रूर एवं हिंसाचारी रहता है। बुध की दृष्टि हो तो वह उच्च पद प्राप्त होता है अथवा विधायक, संसद

सदस्य या जिले का प्रमुख बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक प्राध्यापक, लेखक, शिक्षक बनता है। शुक्र की दृष्टि हो तो मां के अतिरिक्त अन्य स्त्री द्वारा मातृसुख मिलता है। जातक आगे चलकर उस स्त्री के परिवार को उपकृत करता है।

प्रथम चरण में शनि हो और उसके साथ बृहस्पति का संयोग हो तो जातक धार्मिक चिंतक, दूसरों के साथ समझौता करने में कुशल रहता है। किसी संस्था का अध्यक्ष बनता है या सरकारी नौकरी करता है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक मध्यम शिक्षित, भाई-बहनों से युक्त किंतु बगैर किसी के सहयोग के अपनी उन्नति करनेवाला और अपने रिश्तेदारों का संबल रहता है। लग्न भी इसी नक्षत्र-चरण का हो तो 10 वर्ष की आयु तक स्वास्थ्य की चिंता बनी रहती है।

तृतीय चरण में शनि हो और उस पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक को जुकाम एवं खांसी का कष्ट रहता है। बुध की दृष्टि हो तो संचार विभाग में नौकरी करके सुखी जीवन बिताता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो एवं उस पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक की शिक्षा एवं आजीविका में अड़चनें आती हैं। व्यापार में अस्थिरता उत्पन्न होती है। 45वें वर्ष के बाद वह स्थिर हो जाता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो एवं शनि, मंगल व शुक्र पुष्य नक्षत्र में हों तो जातक को अपने जीवनकाल में कई उतार-चढ़ाव देखने को मिलते हैं। विधवा बहन, पागल भाई एवं बीमार मां की जिम्मेवारी उस पर रहती है।

द्वितीय चरण में राहु हो और मंगल व शनि का योग बनता हो तो जातक को मूत्र रोगों से कष्ट होता है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक दूसरों के कार्यों में बाधक बनता है। बाद में स्वनिर्मित समस्याओं का निराकरण भी उसी को करना पड़ता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक प्रभावी एवं आकर्षक रहता है। वह सभ्य, सज्जन, भरोसेमंद रहता है। शरीर से बलिष्ठ परंतु अंदर से दुर्बल रहता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो एवं लग्न भी इसी नक्षत्र-चरण में हो तो जातक काफी धन कमाता है। उसका परिवार बड़ा रहता है। सर्दी-जुकाम एवं खांसी का कष्ट सहना होता है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक बुद्धिमान, दूसरों की इज्जत करनेवाला, पांच भाई एवं तीन बहनों से युक्त रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो लोहे-इस्पात के कारखाने में नौकरी करके अपना पेट पालता है।

तृतीय चरण में केतु हो एवं शुक्र शतभिषा नक्षत्र में हो तो जातक डॉक्टर बनता

है। पत्नी से पैसा मिलता है। 55 वर्ष के बाद विदेशगमन करता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो राजनीतिज्ञों के संपर्क से उसका सर्वत्र दबदबा रहता है किंतु पैसा नहीं मिलता।

हर्षल-नेपच्यून

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में हर्षल-नेपच्यून हों तो जातक बुद्धिमान, धनवान एवं बलवान रहता है। सबको सुख देने की भावना उसमें निहित रहती है। बुद्धि अच्छी होती है। वह परिवार का नाम रोशन करता है।

प्लूटो

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक हर हाल में सुख माननेवाला, विद्या एवं बुद्धि से युक्त, समाज में मान-सम्मान पानेवाला, धन संग्रह करनेवाला, चंचल एवं जान-बूझकर गलतियां करनेवाला होता है।

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष श्रवण, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद, पुष्य, आश्लेषा एवं चित्रा नक्षत्रों में जन्मे स्त्री-पुरुषों के साथ मैत्री, विवाह या साझेदारी न करें।

□□

उत्तराषाढ़ (21) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक की संतान सुंदर रहती है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक पुलिस या संरक्षण विभाग में बड़े ओहदे पर नौकरी करता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक उच्च शिक्षित, शास्त्रों का ज्ञाता, तंत्र-मंत्र का जानकार, सोने-चांदी के आभूषण एवं रत्नों का संग्रह करने का शौकीन, बृहस्पति की दृष्टि हो तो औद्योगिक संस्था का अध्यक्ष, उच्चाधिकारी या राज्यमंत्री बनता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक बहुत धनवान, ऐय्याश और दुराचारी रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक बदनाम एवं आचरणहीन रहता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक के पैरों में कष्ट होता है या वह लंगड़ा रहता है। स्वभाव क्रोधी, अनुचित भाषा का प्रयोग करनेवाला, धार्मिकता का ढोंग रचनेवाला, धनवान किंतु कंजूस रहता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक नपातुला बोलनेवाला, भेदभाव न माननेवाला, मेहनती किंतु रहस्यमय चरित्र का होता है। जातक कला या संगीत के क्षेत्र से धन जुटाता है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक व्यायाम एवं योगाभ्यास करनेवाला, अस्थमा एवं उदररोग से पीड़ित रहता है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक व्यापार के माध्यम से धन कमाता है। राजनीति में भी हस्तक्षेप करता है। जातक अपने सिद्धांतों के साथ कोई समझौता नहीं करता।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक राजातुल्य वैभवशाली एवं सुखपूर्ण जीवन व्यतीत करनेवाला होता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक पुलिस या सुरक्षा विभाग में नौकरी करता है। बुध की दृष्टि हो तो अनेक नौकर-चाकरों से युक्त, ज्योतिषी, इंजीनियर या आर्किटेक्ट होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक बड़ा व्यापारी या फैक्टरी का मालिक होता है। व्यक्तित्व आकर्षक रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो संतान उत्तम होती है। जातक धार्मिक, धनवान एवं राज्यमंत्री होता है। शनि की

दृष्टि हो तो जातक उच्च शिक्षित किंतु स्वभाव से विनम्र, शांत एवं ज्ञानी रहता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक संगीतप्रेमी, स्त्रियों को प्रिय, बड़े दांतोंवाला, पैतृक सम्पत्ति से धनवान बना हुआ किंतु नजदीकी संबंधियों में कलह उत्पन्न करनेवाला होता है। आयु के पांचवें या छठे वर्ष में अरिष्ट होना संभव रहता है। पानी से धोखा रहता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक सुशिक्षित, संपन्न, घर-बार को समर्पित रहता है। दान-धर्म करने में भी कंजूस रहता है। 10वें या 12वें वर्ष में पेड़ से गिरने की संभावना रहती है।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक के शरीर का ऊपरी हिस्सा बड़ा और नीचे का हिस्सा छोटा होता है। जातक ठंडे पानी से डरता है और सर्दी-जुकाम से ग्रस्त रहता है। अग्नि के कारण जीवन में दो-तीन बार कष्ट होते हैं।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक की स्मरणशक्ति उत्तम एवं स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक प्रतिभासम्पन्न अभिनेता एवं प्रसिद्ध खिलाड़ी रहता है। व्यवहारकुशल एवं झगड़ालू रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक शारीरिक दृष्टि से दुर्बल तथा अपंग, काफी पढ़ा-लिखा, कायदे-कानून एवं अपराध अन्वेषण विज्ञान का ज्ञाता रहता है। फौजदारी वकील भी बन सकता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक कलाकार, मैकेनिक, घड़ीसाज, उच्चस्तरीय वैज्ञानिक, लेखक या अनुवादक बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक वैवाहिक जीवन में दुखी रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो दानपुण्य करनेवाला, आत्मप्रशंसक, लोभी, दुराचारी रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक शारीरिक दृष्टि से कमजोर रहता है। उसका व्यवसाय अस्थिर रहता है। भ्रमण करके धन जुटाता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक शत्रु को परास्त करनेवाला, अपने परिश्रम से प्रगति पथ पर अग्रसर होता हुआ सुखी जीवन जीता है। वैवाहिक जीवन के कुछ वर्ष कलहकारक होते हैं।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, क्रोधी, बड़े आदमी के अधीन काम करनेवाला होता है। काफी संघर्ष के बाद 40वें वर्ष के बाद सुखी होता है परंतु दूसरों की कृपा पर अवलंबित रहना पड़ता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, शरीर पर शस्त्राघात के चिह्न से युक्त, घर का नौकर या दूसरों की संपत्ति की रक्षा करनेवाला होता है। बुढ़ापे में कुछ सुख प्राप्त करता है।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक मार-पीट करनेवाला, पुलिस या सुरक्षा विभाग में नौकरी करके उदरपूर्ति करनेवाला रहता है। कोर्ट में उस पर मारपीट के मुकदमे चलते हैं।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक को मूत्ररोग, त्वचा रोग एवं मधुमेह की तकलीफ होती है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक भरोसेमंद, चरित्रवान, प्रख्यात लेखक एवं पत्रकार बनता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक लेखक या लेखाकार अथवा स्टेशनरी विक्रय करनेवाला होता है। सामाजिक कार्यकर्ता होते हुए भी समाज विरोधी कामों में लगा रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो वह गंभीर, विद्वान एवं आकर्षक व्यक्तित्व का होता है। उसे उच्च राज्याधिकार प्राप्त होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक धीमे बोलनेवाला, अध्यापक या शिक्षक बनता है। संगीतकार भी बन सकता है। शनि की दृष्टि हो तो हिंसक, क्रूर, दुखी एवं आस्तित्वहीन रहता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक का दृष्टिकोण वैज्ञानिक रहता है। जातक ऊंचे कद का एवं बलिष्ठ रहता है। वह उच्च शिक्षा प्राप्त कर 25वें वर्ष में सरकारी नौकरी करता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक उत्साही, उत्तेजक, हिंसाचारी एवं धोखेबाज होता है। अच्छे परिवार का होते हुए भी सर्वत्र शत्रु खड़े करता है। जातक बदनाम होने पर नौकरी छोड़कर स्वतंत्र व्यवसाय करने का असफल प्रयत्न करता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक छोटी-सी नौकरी से अपना जीवनयापन आरंभ करता है। 30 साल की आयु में उसका भाग्योदय होता है और वह विदेश चला जाता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक प्राचीन वस्तुओं का व्यापार करनेवाला, पैतृक संपत्ति से धनवान बनता है। आकस्मिक लाभ भी होता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा एवं तिरस्कृत रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो काफी भाग्यवान और खाते-पीते परिवार से होता है। व्यवसाय के माध्यम से धन जुटाता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक कठोर, दूसरों को कष्ट पहुंचानेवाला, शत्रु से हानि पानेवाला होता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक स्वयं मंत्री, सलाहकार या मंत्री का निजी सचिव होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो भाग्यवान, दीर्घायु एवं सुखी होता है। शनि की दृष्टि हो तो चोर, गंवार लोगों से पैसा वसूल करनेवाला होता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो एवं शनि-मंगल से उसका योग बनता हो तो जातक का पिता अल्पजीवी होता है। उसके भाई अधिक एवं बहनें दो ही रहती हैं। उनमें से एक बहन की मृत्यु हो जाती है।

द्वितीय चरण में रोहिणी एवं मृगशिरा नक्षत्रों का प्रभाव शुभ ग्रहों पर हो तो जातक की मृत्यु तीर्थ स्थान में होती है। चंद्र की दृष्टि हो तो नदी में डूबकर मृत्यु होती है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक अच्छी पत्नी, उत्तम संतान एवं आर्थिक दृष्टि से सुखी रहता है। 25 से 45 वर्ष का कार्यकाल प्रगतिवर्धक रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक की संतान को कष्ट होता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक वेदशास्त्रों का जानकार या विज्ञान में रुचि रखनेवाला, वैज्ञानिक शोध से जुड़ा रहता है। मंगल तथा बुध की दृष्टि हो तो जातक शस्त्र-अस्त्र बनाने के कार्य का कार्य करता है।

शुक्र

शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक उच्च शिक्षित, विद्वान, धनवान एवं क्रोधी स्वभाव का होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक को राजातुल्य वैभव की प्राप्ति होती है। वह सत्ता का सहभागी होता है। मंगल की दृष्टि हो तो व्यापारादि से धन संग्रह करता है। धनवान एवं व्यवहारकुशल रहता है। बुध की दृष्टि हो तो धनसंग्रह करता है। उसका परिवार बड़ा रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक चालाकी से धन जुटानेवाला एवं भोगविलासी रहता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक के कन्या संतान अधिक रहती है। विवाह जल्द होता है। स्त्री जातक का विवाह अठारह वर्ष से पूर्व ही हो जाता है किंतु स्थायी नहीं रहता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो और वह शनि-मंगल सूर्य से दृष्ट हो तो जातक के जन्म के पूर्व ही उसके पिता का देहांत हो जाता है। उसके कोई भाई-बहन नहीं होते। वह इकलौता होता है। उसका विवाह जल्द हो जाता है। बृहस्पति-शुक्र का संयोग हो तो वैवाहिक जीवन सुखी एवं स्थिर होता है।

तृतीय चरण में शुक्र चंद्र दृष्ट हो तो जातक अच्छा डॉक्टर बनता है। कदकाठी मध्यम रहती है। स्त्री जातक सुशिक्षित रहती है, पर कोई नौकरी या व्यवसाय वह नहीं करती।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक स्वतंत्र विचारों का सभ्य गृहस्थ रहता है। वह दानधर्म एवं पीड़ितों की सेवा करता है। तत्त्वज्ञानी होता है। धन कमाने की लगन उसमें गजब की होती है।

शनि

शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक स्वपुरुषार्थ एवं ईश्वरीय कृपा से धन-संपदा एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक माता के लिए घातक रहता है एवं मातृसुख में न्यूनता रहती है। मंगल की दृष्टि हो तो सबके तिरस्कार का पात्र बनता है। वह हिंसाचारी तथा क्रूर रहता है। बुध की दृष्टि हो तो सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में उच्च स्थान प्राप्त होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक लेखक, सुधारक या अध्यापक बनता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक का भरण-पोषण मां के अतिरिक्त अन्य किसी स्त्री द्वारा होता है। जातक उस स्त्री का कृतज्ञ रहता है।

प्रथम चरण में शनि बृहस्पति से दृष्ट हो तो जातक किसी संस्था का अध्यक्ष बनता है और सरकारी कार्यालयों में महत्त्वपूर्ण ओहदे पर कार्यरत रहता है। वह धार्मिक विचारों का एवं सामंजस्य वृत्ति का होता है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक की शिक्षा मध्यम श्रेणी की होती है। वह भाई-बहनों से युक्त रहता है। किसी की भी मदद नहीं करता। रिश्तेदारों का दबाव उस पर होता है। लग्न भी इसी नक्षत्र-चरण में हो तो 10वें वर्ष तक मानसिक एवं शारीरिक अस्वस्थता रहती है। सिर पर गहरे जख्म का निशान रहता है।

तृतीय चरण में शनि-मंगल हो तो जातक के 45वें वर्ष तक उसके व्यवसाय में अस्थिरता रहती है। उसके बाद व्यवसाय स्थिर होता है। मूत्राशय, खांसी आदि रोगों से जातक ग्रस्त रहता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक काले वर्ण का, पतले शरीर का एवं उच्चपदस्थ रहता है। वह बहुत कम बोलता है और दूसरों की बातें भी कम सुनता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु होने पर जातक के दांत बड़े और ऊबड़-खाबड़ रहते हैं। वह घमंडी एवं नीच वृत्ति का होता है। उसका जीवन दिशाहीन रहता है। सभी द्वारा सर्वदा उपेक्षित रहता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक काला, अनुदार, एकांतप्रिय, व्यसनी, मशीनरी को दुरुस्त करने का काम करनेवाला, पत्नी से अर्थ सहयोग पानेवाला रहता है। उसकी पत्नी उच्च शिक्षित, उत्तम श्रेणी की आजीविका प्राप्त करनेवाली होती है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक दुश्चरित्र, वेश्यागामी एवं धोखेबाज रहता है। वह पैसे के लिए अपना सर्वस्व भी बेचने को तैयार रहता है। पत्नी तथा संतान सुख से वंचित रहता है। बुढ़ापे में घर से निकाल दिया जाता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक चरित्रहीन, देश-विदेश में भ्रमण करनेवाला, किसी व्यापारिक प्रतिष्ठान का प्रतिनिधि होता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक कभी आसमान में तो कभी जमीन पर रेंगता है। उसकी आजीविका अस्थिर रहती है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक अपने पिता का वैरी रहता है। उसका पिता सरकारी अफसर एवं सम्मानित रहता है। जातक को अपने पिता से कभी भी कोई लाभ नहीं मिलता। वह गुप्त रोगों से पीड़ित रहता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक वकील या राजनीतिज्ञ रहता है। 50वें वर्ष के बाद राजनीति में उच्च पद या मंत्रीपद प्राप्त होता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक उच्च शिक्षित, राज्यसेवा में पदाधिकारी

बनता है। वह जादू-टोना, तंत्र-मंत्र जैसी चमत्कारिक विद्या का जानकार रहता है।

हर्षल-नेपच्यून

उत्तराषाढ़ नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून स्थित हों तो जातक अल्प बुद्धिमान, मेहनती किंतु हर कार्य में असफल होनेवाला होता है। वह सुख भय एवं दुख अधिक भोगता है।

प्लूटो

उत्तराषाढ़ नक्षत्र में प्लूटो होने पर जातक रंगीनमिजाज, यशकीर्ति प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्नरत, समाज में उचित स्थान पानेवाला होता है।

उत्तराषाढ़ नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, रेवती, मघा एवं स्वाति नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों के साथ मैत्री, विवाह या साझेदारी नहीं करें।

□□

श्रवण (22) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

सूर्य पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक बदनाम स्त्रियों के संपर्क में रहकर अपना धन-ऐश्वर्य गंवा बैठता है, वह जीवनभर चिंताग्रस्त रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक दूसरों में झगड़ा करवाकर धन-इकट्ठा करता है। अपनी बीमारी पर भी काफी खर्च करता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक नपुंसक की तरह बर्ताव करता है। वह दूसरों के लिए उपद्रवकारक रहता है। अच्छे लोग उसका तिरस्कार करते हैं। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक अच्छा सामाजिक कार्य करता है। लोगों से भी उसे सहयोग प्राप्त होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो उसके पास सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं रहती हैं और वह स्त्रियों द्वारा लाभान्वित रहता है। शनि की दृष्टि हो जातक अक्खड़, जिद्दी एवं दुराग्रही रहता है। वह शत्रु द्वारा वंदनीय व शासन के निकट रहता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक को माता-पिता का सुख बहुत ही कम मिलता है। उसके माता-पिता भी अल्पजीवी होते हैं। सूर्य के साथ अन्य पापग्रहों का संयोग बने हो तो बचपन में ही जातक के माता-पिता एवं दादा की मृत्यु हो जाती है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक के एक पुत्र होता है, संतान एवं पत्नी से सुख प्राप्त होता है। जातक के पिता का असामयिक देहांत होता है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक को बचपन से ही कड़ा परिश्रम करना पड़ता है और जन्म से एक वर्ष तक मृत्युसम पीड़ा सहन करनी पड़ती है।

चतुर्थ चरण में सूर्य होने पर जातक लोभी, चंचल बुद्धि का और वेश्यागामी रहता है। माता-पिता की संपत्ति के लिए कोर्ट-कचहरी में जानेवाला, गुप्त शत्रुओं से घिरा हुआ, दुखी एवं अशांत रहता है। शुभ ग्रहों की दृष्टि या संयोग हो तो दुष्प्रभाव कम होता है।

चंद्र

सूर्य दृष्ट चंद्र हो तो जातक राजातुल्य एवं ऐश्वर्य-सुख भोगता है, मंगल की दृष्टि होने पर विद्वान रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक धनवान एवं प्रख्यात

रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो राजसी जीवन व्यतीत करता है। शुक्र की दृष्टि हो तो कंगाल और शनि की दृष्टि हो तो खेतिहर या जमींदार रहता है। वह पशुपालक होता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक व्यसनी, मदिरासेवी एवं क्रोधी होता है। उसके पेट की शल्य क्रिया होती है। विवाह बड़ी मुश्किल से होता है परंतु जीवन स्थिर रहता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक की मां आदर्श महिला रहती है। चंद्र पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक की मां एवं पत्नी पैसे के लिए अनैतिक काम करती हैं।

तृतीय चरण में चंद्र होने पर जातक ज्ञान-विज्ञान का जानकार, शास्त्रों का ज्ञाता रहता है। उसके कई पुत्र होते हैं। जिनमें ज्येष्ठ पुत्र कथावाचक, लेखक या साहित्यप्रेमी होता है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक ईश्वर भक्ति में लीन रहता है। उसका व्यक्तित्व प्रभावी रहता है। वह विद्वानों का गुरु होता है और संतान कम रहती है। युवा पुत्र-पुत्री का वियोग सहन करना पड़ता है।

मंगल

सूर्य दृष्ट मंगल हो तो जातक काले रंग का, कठोर स्वभाव का, सुंदर पत्नी एवं अच्छी संतान से युक्त रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक के कोई मित्र नहीं रहता। बुध की दृष्टि हो तो जातक मृदुभाषी, झूठ बोलने में माहिर एवं सामाजिक कार्यों से धन जुटानेवाला होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक गुणवान एवं दीर्घायु होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो कामक्रीड़ा के अनेक मौके मिलते हैं, कामातुर स्त्रियों से सहवास करता है। वाद-विवाद भी करता है, किंतु भाग्यवान रहता है। शनि की दृष्टि हो तो स्त्रियों से नफरत करनेवाला, सरकार से आर्थिक दृष्टि से लाभान्वित, प्रसिद्ध एवं विद्वान होता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक लोभी एवं चोर होता है। उसकी जान को खतरा रहता है।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक को नेत्र कष्ट होता है। 36 से 40वें वर्ष में उसकी आकस्मिक मृत्यु हो सकती है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक अपने सहोदरों का शत्रु होता है। उसे छोटे भाइयों से हमले की संभावना रहती है।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक के जीवन में हमेशा विवादास्पद प्रसंग आते रहते हैं। जातक अपने बुद्धि-कौशल से सभी कामों में सफलता प्राप्त करता है। चिकित्सा, शल्य-चिकित्सा अथवा इंजीनियरिंग के कामों में संलग्न रहकर धन जुटाता है। सरकार में उच्च पद भी प्राप्त हो सकता है।

बुध

सूर्य दृष्ट बुध हो तो जातक कृषि विशेषज्ञ बनता है। वह झगड़ालू, चालबाज

एवं बलिष्ठ रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो दूध-पानी इत्यादि से धन प्राप्त होता है। वह डरपोक तथा मध्यम धनवान रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो धन कमाने के लिए कड़ा परिश्रम करता है। वह कठोर हृदयी एवं बलिष्ठ शरीर का होता है। सरकारी उद्योग या कारखाने में वह काम करके आजीविका चलाता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक बदसूरत, विद्वान संतान से युक्त परंतु स्वयं बुरे लोगों का साथ देनेवाला होता है। शनि की दृष्टि हो तो परिश्रमी, सुख-शांतिहीन एवं कंगाल रहता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक अपनी पैतृक संपत्ति का दुरुपयोग करता है। वह व्यापार में नुकसान उठानेवाला, हर क्षेत्र में असफल होता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक को दीर्घ रोग होते हैं। उसे काली खांसी, अस्थमा, एग्जीमा जैसे रोगों से कष्ट रहता है। 40वें वर्ष के बाद उसे पत्नी सुख प्राप्त होता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक आर्थिक एवं वाणिज्य विषयों का जानकार रहता है। हमेशा कार्यमग्न, निस्वार्थी एवं हितकारी रहता है। वह व्यापार-उद्योग के जरिए धन इकट्ठा करता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक ढाबा, भोजनालय, होटल, रेस्त्रां चलाने में दक्ष रहता है। खाद्य पदार्थों का व्यापार, टूरिंग एजेंसी या दलाली में अच्छा धन प्राप्त करता है।

बृहस्पति

सूर्य दृष्ट बृहस्पति हो तो जातक सुंदर, चमकदार आंखों से युक्त, दूसरों की सहायता करनेवाला होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो अपने गांव का सरपंच, मंत्री बनता है। मंगल की दृष्टि हो तो उच्च पदस्थों का विश्वासपात्र बन संस्थाओं के कार्यों द्वारा धन जुटाता है। बुध की दृष्टि हो तो स्त्री वर्ग में लोकप्रिय, शांत स्वभाव का एवं धार्मिक होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक उच्च शिक्षित, सद्गुणी, मंत्री या उच्च पदस्थों के साथ रहकर कार्य करनेवाला होता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो एवं वह सूर्य-चंद्र-मंगल से दृष्ट हो तो जातक की मृत्यु बचपन में पांच वर्ष की आयु में हो जाती है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति पापग्रहों से युक्त हो और जन्मलग्न आर्द्रा नक्षत्र में हो तो जातक की जन्म से ग्यारह दिनों में मृत्यु हो जाती है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो और उस पर सूर्य-बुध-चंद्र की दृष्टि हो तो जातक 5 वर्ष से अधिक समय तक जीवित नहीं रहता।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक मध्यम बुद्धि का होकर भी व्यवहारकुशल परंतु क्रोधी रहता है। 32वें वर्ष तक वह दुख भोगता है। 17वें वर्ष में जीवन स्थिर होने लगता है।

शुक्र

सूर्य दृष्ट शुक्र हो तो जातक व्यवहारकुशल, सम्पन्न, साहसी होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो आकर्षक व्यक्तित्व एवं स्वभाव से मनमौजी रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक वेदशास्त्र का ज्ञाता होता है। अपने इसी ज्ञान के आधार पर वह प्रसिद्धि प्राप्त करता है। शनि की दृष्टि हो तो व्यक्तित्व आकर्षक एवं शरीर सुंदर रहता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक आकर्षक व्यक्तित्व का एवं किसी भी परिस्थिति से सहज ही समरस होनेवाला होता है। उसकी आशा-आकांक्षाएं बड़ी होती हैं। वह उच्च पद और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक आधुनिक एवं नए विचारों का, भगवान से डरनेवाला और विनम्र होता है। 32वें वर्ष में अचानक पैसा हाथ लग जाता है किंतु 44वें वर्ष में आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

तीसरे चरण में शुक्र हो एवं शनि-सूर्य का योग हो तो नवजात शिशु की मृत्यु होती है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो 9वें वर्ष में देहांत होता है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक बड़े-बड़े स्वप्न देखता है। स्वप्रशंसक, दुर्बल शरीरधारी किंतु उच्च शिक्षित रहता है।

शनि

सूर्य दृष्ट शनि हो तो जातक की पत्नी बदसूरत, गरीब एवं दूसरों की कृपा पर जीनेवाली होती है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक माता के सुख के लिए प्रयत्नशील, सिद्धांतवादी विचारक, अच्छी पत्नी एवं उत्तम संतान से युक्त धनीमानी होता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक लकवे से पीड़ित, लोगों को नापसंद काम करनेवाला, विदेश निवासी होता है। बुध की दृष्टि हो तो मेहनती, धनी, सरकार या समाज में सुप्रतिष्ठित लोगों से लाभान्वित रहता है। बृहस्पति की दृष्टि होने पर संरक्षक विभाग में मुख्य अधिकारी, मजबूत डील-डौलवाला एवं शांत स्वभावी होता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक दुबला-पतला, बुद्धिमान, ससुराल पक्ष से संपत्ति प्राप्त करनेवाला और बाद में असंतुष्ट होकर खुद कमाने के प्रयत्न में लगनेवाला, खुदगर्ज होता है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक मध्यम स्तर का जीवन जीनेवाला, बदले की भावना रखनेवाला, आरामदेह जीवन जीनेवाला, पत्नी की बीमारी के बावजूद वैवाहिक सुख भोगनेवाला होता है।

तृतीय चरण में शनि होने पर जातक उच्च शिक्षित, विद्वान किंतु शंकालु रहता है। दूसरों की बात दूर—अपने माता-पिता पर भी उसका विश्वास नहीं होता। ऐसे स्वभाव के कारण वह किसी का भी भरोसेमंद नहीं बन पाता।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक काला, इकहरे बदनवाला, हड्डियों के पिंजर जैसा प्रतीत होनेवाला, उच्च पदस्थ, कम बोलनेवाला और दूसरों की बात भी न सुननेवाला होता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो एवं जन्मकुंडली का लग्न आश्लेषा नक्षत्र में पाप ग्रहों से युक्त होने पर जातक की मृत्यु दस वर्ष की आयु में होती है। कई बार मृत्यु 16 बरस की अवधि में भी होती देखी गई है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक शांत स्वभावी, भरोसेमंद, सभ्य और व्यवहारकुशल होता है। अच्छी पत्नी का सुख उसके भाग्य में नहीं रहता। अधिक परिश्रम करके भी उचित परिणाम नहीं आता।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक उच्च शिक्षा प्राप्त विद्वान होता है। बदला लेने की भावना से ओत-प्रोत रहता है। इस कारण उसके शत्रु पैदा होते हैं। वह मध्यम स्तर का सुख युक्त जीवन बिताता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक चालाक, अपना काम निकालने में माहिर रहता है। लोगों को हंसाने एवं उनका मनोरंजन करने का काम वह अच्छी तरह करता है। स्वयं दुखी और असंतुष्ट रहता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु होने पर जातक के पास काफी धन-संपदा एवं सुख ऐश्वर्य रहता है।

द्वितीय चरण में केतु होने पर जातक को अपनी कन्या के कारण मानसिक कष्ट होता है। पाप ग्रहों की दृष्टि इस केतु पर हो तो जातक का जीवन दुख भरा रहता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक की पत्नी उसके दुख का कारण रहती है और वह उसकी सफलता में बाधक साबित होती है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक को खांसी, न्यूमोनिया, तपेदिक जैसी बीमारियां त्रस्त करती हैं। उसकी पत्नी और संतान उसके लिए मुसीबतें खड़ी करती हैं।

हर्षल-नेपच्यून

श्रवण नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हों तो जातक अविचारी, अस्थिर, समाज सुधारक, स्वार्थी, शास्त्री, निरीश्वरवादी, सुखी एवं धन-सम्पन्न रहता है।

प्लूटो

श्रवण नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक सदाचारी, सात्विक, ईश्वर भक्त, विचारवान, गुणवान, कीर्तिवान, सामाजिक कार्यकर्ता, परिवार प्रेमी, शुद्ध अंतःकरण से युक्त, दयालु रहता है।

श्रवण नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष शतभिषा, उत्तराभाद्रपद, आश्विनी, मघा एवं पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों के साथ मैत्री, विवाह या साझेदारी न करें।

□□

शतभिषा (23) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

चंद्र दृष्ट सूर्य हो तो जातक बदनाम स्त्रियों के पीछे लगकर अपनी संपत्ति बरबाद करता हुआ जीवनभर पछताता रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो लोगों में झगड़ा करके पैसे ऐंठता है। वकालत के जरिए भी वह धन कमाता है। अपने स्वास्थ्य के लिए उसे काफी पैसा खर्च करना पड़ता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक नपुंसक होता है। दूसरों के लिए वह उपद्रवकारी रहता है। अच्छे लोग उससे घृणा करते हैं। बृहस्पति की दृष्टि होने पर वह लोगों से सहयोग प्राप्त करके अच्छा सामाजिक कार्य करता है। शुक्र की दृष्टि हो तो सर्वसुख संपन्न तथा स्त्री वर्ग से लाभान्वित रहता है। शनि की दृष्टि हो तो वह जिद्दी एवं अकड़बाज बनता है। शत्रु उससे भयभीत रहते हैं। वह राजाश्रय प्राप्त करता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक को पितृदोष के कारण संतान सुख से वंचित रहना पड़ता है। उसकी संतान अल्पायु रहती है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक को अंधत्व एवं दृष्टि दोष से कष्ट सहना पड़ता है। मंगल दूषित हो तो बीमारी के कारण आंखें कमजोर होती हैं।

तृतीय चरण में सूर्य होने पर जातक को अग्निकांड या किसी अन्य हादसे के कारण काफी कष्ट उठाना पड़ता है। ऐसा उसकी तरुणावस्था में और परदेश में होता है।

चतुर्थ चरण में सूर्य होने पर जातक लंपट, धूर्त एवं कठोर स्वभावी होता है। निम्न एवं हलकी चीजों का व्यापार करता है। वह मदिरा सेवन और मांसाहार भक्षण का शौकीन रहता है। होटल या किसी के घर में नौकर की तरह काम करता है। वाहनचालक, दलाल या मध्यस्थ के रूप में भी वह काम करके अपना पेट भरता है। दूसरों के पैसों पर मौज करने की वृत्ति उसमें पाई जाती है। बृहस्पति शुभ होने पर वह बड़ा व्यापारी या अधिकारी बनता है।

चंद्र

सूर्य दृष्ट चंद्र हो तो जातक राज्याधिकार एवं वैभव भोगनेवाला, विज्ञान एवं चिकित्सा शास्त्र में प्रवीण होता है। मंगल की दृष्टि हो तो विद्वान, बुध की दृष्टि हो तो प्रख्यात एवं धनवान, बृहस्पति की दृष्टि हो तो राजयोगी, शुक्र की दृष्टि हो तो

दरिद्र और शनि की दृष्टि हो तो खेतिहर या जमींदार बनता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो वह डॉक्टर, प्रोफेसर या अभियंता बनता है। उसके दो पत्नियां होती हैं, बाएं हाथ पर कोई चिह्न मौजूद रहता है। पांचवां, बारहवां या अट्ठाइसवां वर्ष उसके लिए अनिष्टकारक सिद्ध होता है। वह लोगों को धोखा देकर उनका पैसा ऐंठनेवाला बदनाम व्यक्ति रहता है और वह अपनी मां के कहने में रहता है लेकिन दूसरों की परवाह नहीं करता।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक हस्तरेखा एवं ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता होता है। तंत्र-मंत्र से लोगों का कल्याण करता है। वह आदर्श पत्नी से युक्त रहता है। उसे केवल एक ही संतान होती है। 28 या 32वें वर्ष में दुर्घटना होती है। जिसके कारण उसके शरीर का कोई हिस्सा क्षतिग्रस्त होता है। मिले-जुले चरित्र का, परस्त्रीगामी, सट्टा-जुआ खेलनेवाला एवं जीवन के अंतिम छोर पर दुखी बनता है।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक दुबला-पतला किंतु आकर्षक होता है। बड़े व्यक्ति का सलाहकार, निर्देशक, प्रशासक के रूप में कार्य करता है। अपना धन वह मदिरा-मांस एवं मौज-शौक में खर्च करता है। 4, 11, 29वें वर्ष उसके लिए हादसों भरे होते हैं।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक को बचपन में काफी कष्ट सहन करने पड़ते हैं। शिक्षा में व्यवधान आता है, किंतु वह दीर्घायु और अपने प्रयासों से सर्वगुण-सम्पन्न बनता है।

मंगल

सूर्य दृष्ट मंगल हो तो जातक कृष्ण वर्णीय, कठोर, सुंदर पत्नी एवं अच्छी संतान से युक्त रहता है। वह धन-वैभव संपन्न होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो उसके मित्र नहीं रहते। वह मध्यम धनवान होता है। बुध की दृष्टि हो तो मृदुभाषी, प्रवासी सेवा के माध्यम से धन जुटानेवाला एवं झूठ बोलने में दक्ष रहता है। शरीर दुबला रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक सत्वगुणी एवं दीर्घायु बनता है। शुक्र की दृष्टि हो तो कामक्रीड़ा के अनेक मौके उसे मिलते हैं। शनि की दृष्टि हो तो सरकारी पक्ष से लाभान्वित होता है। स्त्रियों का द्वेष्टा, प्रख्यात एवं विद्वान रहता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक दुसंगति, संकटग्रस्त एवं उपेक्षित रहता है। कालांतर में उसके विषय में लोकमत बदलता है। जातक मिस्त्री या कारीगर होता है। वह अपने परिवार एवं संतान का हितैषी रहता है।

द्वितीय चरण में मंगल होने पर जातक मजदूर, बढ़ई, मिस्त्री, लुहार या गाड़ी हांकनेवाला होता है। उसे कदम-कदम पर धोखा मिलता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जन्म के तुरंत बाद मृत्यु होती है। भाग्यवश जीवित रह गया तो तीसवें वर्ष के बाद उसकी जीवन यात्रा समाप्त होती है। वह कृशकाय रहता है।

चतुर्थ चरण में मंगल होने पर जातक में जन्म से ही जोखिम उठाने की प्रवृत्ति होती है। गैरकानूनी व्यापार करके धन जुटाता है। परिवार के लोगों से व्यापार में

सहयोग प्राप्त होता है। संगठन मंत्री की हैसियत से उत्तम कार्य करता है। उसका जीवन धनधान्य से परिपूर्ण रहता है और अस्थमा, कैंसर, त्वचारोग से पीड़ित रहता है।

बुध

सूर्य दृष्ट बुध हो तो जातक मल्ल विद्या में पारंगत, झगड़ालू, चालबाज एवं शक्तिशाली रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो पानी से उत्पन्न वस्तुओं का व्यापार करता है। साधारण धनवान होता है। मंगल की दृष्टि हो तो धनवान होकर भी धन जुटाने के लिए सतत परिश्रम करता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो गांव का मुखिया बनता है और सरकारी नौकरी से लाभान्वित रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो बदसूरत, विद्वान संतान से युक्त, कुसंगति में रहनेवाला होता है। शनि की दृष्टि हो तो परिश्रमी, सुख-शांतिहीन, गरीब एवं फटेहाल रहता है।

प्रथम चरण में बुध होने पर जातक का एक भाई उच्चाधिकारी रहता है। उसके सहयोग से जातक व्यवसाय प्रारंभ करता है। 33वें वर्ष के बाद उसमें सफल होता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक प्रारब्धवान, परिवार में सुखी, भाइयों का प्रेमपात्र रहता है। 25वें वर्ष के बाद विवाह होकर उसका भाग्योदय होता है। अस्थायी व्यापार करनेवाला, दलाल या एजेंट रहता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक सरकारी नौकरी करता है। 30-31 वर्ष की आयु में आकस्मिक घटना घटती है। उसका जीवन स्थिर, संतान एवं वैवाहिक जीवन से परिपूर्ण रहता है। जातक गुप्त रूप से परस्त्रीगमन करता है।

चतुर्थ चरण में बुध होने पर जातक धूर्त एवं व्यसनी होता है। फालतू खर्च के कारण कर्ज में डूबता है। परिवार की धन-संपत्ति धीरे-धीरे कम होती जाती है।

बृहस्पति

सूर्य दृष्ट बृहस्पति हो तो जातक की आंख, नाक सुंदर एवं व्यक्तित्व चित्ताकर्षक रहता है। वह अपने गांव का सरपंच या प्रांत का मंत्री बनता है। मंगल की दृष्टि हो तो उच्च पदस्थों का भरोसेमंद एवं अनेक संस्थाओं का पदाधिकारी रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो उच्च शिक्षित, सद्‌गुणी एवं राजनीतिज्ञों के संपर्क में रहता है। शनि की दृष्टि हो तो सभी इच्छाएं पूरी होती हैं।

प्रथम चरण में शुभ ग्रहों से दृष्ट बृहस्पति हो तो जातक को बचपन में ही माता का वियोग सहन करना पड़ता है। उसका लालन-पालन पिता के अतिरिक्त दूसरे व्यक्ति द्वारा होता है। सरकारी नौकरी में वह स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत रहता है। 30 या 31वें वर्ष में कार दुर्घटना होने की संभावना रहती है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक प्रौढ़ महिला से विवाह करता है। उसे कमाऊ पत्नी मिलती है। 35वें वर्ष तक वैवाहिक जीवन अस्थिर रहता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक को जन्म से एक ही महीने में कष्ट शुरू हो जाते हैं। भाग्यवश यदि जीवित रहा तो वह श्रमिक या कारीगर बनता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति होने पर जातक मध्यमायु होता है। दरिद्री होने के बावजूद भी उसका जीवन सुख-शांति से पूर्ण रहता है।

शुक्र

सूर्य दृष्ट शुक्र हो तो जातक व्यवहारकुशल, सम्पन्न एवं साहसी होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो व्यक्तित्व आकर्षक रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो परिश्रमशील, मानसिक एवं आर्थिक दृष्टि से समस्याग्रस्त रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक वेदशास्त्रों का अध्ययन करता है। इसी ज्ञान के बल पर प्रसिद्ध होता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक आकर्षक व्यक्तित्व का होता है।

प्रथम चरण में शुक्र होने पर जातक का जीवन सुखपूर्ण होता है। उसका विवाह जल्द या उचित आयु में होता है। 15वें वर्ष से ही वह कामसुख का अभिलाषी रहता है। उसके अनेक अनैतिक संबंध रहते हैं।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक डॉक्टर, वैद्य या केमिस्ट बनता है। स्त्री जातक प्राइवेट सेक्रेटरी के नाते कार्यरत रहती है। उसका विवाह यौवनावस्था में होता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक आकर्षक, सुंदर, चालाक एवं व्यवहारकुशल रहता है। 26वें वर्ष तक वह अविवाहित रहता है। स्त्री जातक का विवाह 21वें वर्ष में होता है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक सरकारी नौकरी में तृतीय या चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी रहता है। काफी अर्से के बाद शिक्षा पूर्ण होती है। वर्कशाप में मिस्त्री के रूप में कार्यरत रहता है।

शनि

सूर्य दृष्ट शनि हो तो जातक की पत्नी बदसूरत, दरिद्र एवं दूसरों के अधीन बनकर जीवनयापन करती है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक माता के सुख का ध्यान रखता है। वह सिद्धांतवादी एवं सुंदर पत्नी एवं संतानयुक्त, धनी-मानी होता है। मंगल की दृष्टि हो तो अर्धांग वायु या लकवे की बीमारी से पीड़ित रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक परिश्रमी, धनवान, सरकार एवं समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त रहता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक मंत्री या मंत्री के समकक्ष, रक्षा विभाग में अधिकारी होता है। उसका शरीर सुदृढ़ एवं स्वभाव शांत रहता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक सुंदर पत्नी एवं उत्तम संतान से युक्त होता है। उसके मिलनसार स्वभाव एवं आगंतुकों के स्वागत में खर्च करने की प्रवृत्ति के कारण उसका जीवन सार्थक होता है। अपने बुद्धिबल के कारण वह सम्मानित एवं पुरस्कृत होता रहता है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक कामातुर एवं परस्त्रीगामी रहता है। उसकी वाणी कठोर एवं आवाज कर्कश रहती है। चेहरा भयानक होता है, स्वभाव भी क्रोधी रहता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक होनहार एवं बुद्धिमान रहता है। कठिन-से-कठिन कार्य में वह सहज रूप से सफल होता है। वह सेना, गुप्तचर या संरक्षण विभाग में नियुक्त रहता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक धन कमाने के लिए परदेश जाता है। बुढ़ापे में काफी धन के साथ स्वदेश लौटता है। उसकी पत्नी आदर्श एवं संतान गुणवान होती है। 51वें वर्ष में पत्नी मानसिक रोग से पीड़ित हो जाती है। जिसकी बीमारी पर काफी खर्च करना पड़ता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक स्वस्थ, नीरोगी, पहलवान या लड़ाकू रहता है। सूर्य की दृष्टि इस राहु पर हो तो उसे कैंसर जैसी असाध्य बीमारी हो जाती है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक अल्पायु होता है। जीवित रहे तो दीर्घजीवी एवं वैभवयुक्त बनता है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक स्मगलर या सूदखोर बनता है। वह गरीबों पर दया करनेवाला एवं दान-धर्म में खर्च करनेवाला होता है।

चौथे चरण में राहु के उपरोक्तानुसार मिले-जुले फल प्राप्त होते हैं।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक को जीवन में अनेक प्रकार के दुख भोगने पड़ते हैं। शुभग्रहों के योग में केतु होने पर जातक विद्वान, उच्च शिक्षा प्राप्त, इंजीनियर, डॉक्टर आदि बनता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। अचानक उसका भाग्योदय होता है। शीत, कफ एवं उदररोगों से पीड़ित रहता है।

तृतीय चरण में केतु होने पर जातक संपन्न एवं संभ्रात परिवार का सदस्य होता है। जीवन में एक बार उसके मकान पर डकैती पड़ती है या फिर वह सरकार से दंडित होता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक अपने दुष्कर्मों का फल भोगता है। आचरणहीन, अनुचित कार्यों से धन जुटानेवाला एवं देशद्रोही रहता है और अपने बुरे कामों के कारण उसे गांव या शहर छोड़कर अज्ञात स्थान में जीवन गुजारना पड़ता है।

हर्षल-नेपच्यून

शतभिषा नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हो तो जातक औसत बुद्धि, सामान्य शिक्षा प्राप्त, व्यर्थ समय गंवानेवाला, चंचल, सुख-दुखों से बेखबर रहता है।

प्लूटो

शतभिषा नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक साधारण बुद्धि, घरेलू या प्रपंचित कार्य अच्छी तरह संपन्न करनेवाला, अनुशासनप्रिय व मध्यम वर्गीय रहता है।

शतभिषा नक्षत्र में जन्मे स्त्री पुरुष उत्तरभाद्रपद अश्विनी, धनिष्ठा एवं कृतिका नक्षत्रों में जन्मे स्त्री-पुरुषों से मैत्री, विवाह या साझेदारी न करें।

□□

धनिष्ठा (24) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

चंद्र दृष्ट सूर्य हो तो जातक बदचलन स्त्रियों के संपर्क में रहकर अपना धन बरबाद करता है। जीवनभर इसके लिए उसे पछतावा होता है। मंगल की दृष्टि हो तो दूसरों में झगड़ा उत्पन्न करके पैसा ऐंठता है। वह वकालत करके भी धन कमाता है। अपने स्वास्थ्य के लिए काफी धन खर्च करना पड़ता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक के हाव-भाव नपुंसक समान होते हैं। दूसरों के लिए उपद्रवी रहता है। लोग उसका तिरस्कार करते हैं। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक अच्छा सामाजिक कार्य करता है और लोगों से भी उसे सहयोग प्राप्त होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो सभी सुख-सुविधाएं उसके लिए उपलब्ध होती हैं। स्त्री वर्ग से वह लाभान्वित रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक जिद्दी, दुराग्रही, अकड़बाज रहता है। शासन के निकटस्थ लोगों एवं शत्रुओं से भी मान-सम्मान पाता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक ठिगना, गौरवर्णीय, प्रतिभावान, आत्मप्रशंसक एवं स्वार्थी रहता है। स्त्रियों के विषय में विशेष आत्मीयता रखता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो और उसके साथ शनि एवं मंगल भी हो तो उसकी आयु केवल पांच वर्ष की होती है। जातक सच्चरित्र परंतु स्वार्थी रहता है। वह कंजूस एवं अधिक मित्रोंवाला होता है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक मजबूत शरीर का, चौड़े चेहरेवाला, छोटे व सुंदर दांतों से युक्त, विद्वान होता है। उसकी आयु 76 वर्ष से अधिक रहती है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक गौरवर्णीय, आकर्षक चेहरे से युक्त, नीरोगी एवं खुशहाल रहता है और संगीत कला एवं मनोरंजन में रमता है। 35वें वर्ष बाद पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाता है। परिवार को सुखी बनाता है। पिता के साथ शत्रुवत व्यवहार करता है।

चंद्र

प्रथम चरण में चंद्र हो तो स्त्री जातक को गर्भपात या अपत्यदोष रहता है। प्रसव समय में उसे मृत्युसम वेदनाएं सहनी पड़ती हैं। संतान के लिए पांच वर्ष का समय अरिष्टसूचक रहता है। दसवें वर्ष में कोई दुर्घटना होती है। शस्त्राघात के कारण मृत्यु होती है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक संपन्न परंतु कृतघ्न रहता है। मियादी बुखार, पीलिया या तीव्र ज्वर से पीड़ित रहता है। उसकी गरदन या जांघों में मस्सा रहता है। 25वें वर्ष में अकस्मात रोग का भय रहता है।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक सत्यनिष्ठ, साहसी, सबके साथ नम्रतापूर्ण व्यवहार करनेवाला, अच्छे खाने-पीने का शौकीन रहता है। उदररोग से कष्ट पाता है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक के दो पत्नियां होती हैं। अन्य स्त्रियों के साथ भी अनैतिक संबंध रहते हैं। वह असाध्य रोग से पीड़ित रहता है। शरीर के बाएं अंग पर तिल होता है। 5वें या 12वें वर्ष में अग्नि या विष भय रहता है। 28 से 30 वर्ष के मध्य चोर-डाकू या असामाजिक तत्त्वों से मुठभेड़ होती है।

मंगल

मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक कृष्ण वर्णीय, कठोर स्वभावी, सुंदर पत्नी एवं उत्तम संतान से युक्त और धन-वैभव से परिपूर्ण रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक के कोई मित्र नहीं होता। बुध की दृष्टि हो तो जातक मृदुभाषी, छरहरे बदन का एवं झूठा होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक कामातुर स्त्रियों की संगत में रहता है। वह वाद-विवाद करनेवाला किंतु भाग्यवान रहता है। शनि की दृष्टि हो तो विद्वान, स्त्री द्वेष्टा एवं सरकार से अर्थलाभ पानेवाला रहता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक धनवान, प्रसिद्ध एवं रोबीला तथा अपने क्षेत्र में सम्मानित होता है।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक चतुर्दिक ख्याति प्राप्त, प्रभावी एवं देश-विदेश में सम्मानित होता है। राजनैतिक बल पर लोगों पर हुकूमत चलाता है एवं शत्रुओं को भी सम्मान देने वाला होता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक चतुर तथा धूर्त होता है। उसके पास बड़ी जायदाद होती है। 80 वर्ष की आयु रहती है। जातक तकनीकी शिक्षा से युक्त, इंजीनियर, डॉक्टर या अध्यापक बनता है।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक भ्रांति रोग से पीड़ित रहता है। इस नक्षत्र-चरण में मंगल पर शनि की दृष्टि हो तो जातक का अंग भंग होता है। ऐसा जातक आमतौर पर फैक्टरी या कारखाने में मिस्त्री या मजदूर रहता है।

बुध

बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक मल्ल विद्या में दक्ष, झगड़ालू, चालबाज एवं शक्तिशाली रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो पानी से उत्पन्न वस्तुओं का व्यापार करता है। दूध-पानी से धन कमाता है। मंगल की दृष्टि हो तो धन कमाने के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है। वह कठोर हृदय एवं बलिष्ठ शरीरवाला रहता है। सरकारी नौकरी करके अपना पेट पालता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो अपने गांव

का प्रधान बनता है। शुक्र की दृष्टि हो तो बदसूरत किंतु विद्वान संतान से युक्त रहता है और बुरे लोगों की संगत में रहता है। शनि की दृष्टि हो तो परिश्रमी, सुख-शांति से वंचित रहता है। गरीब तथा दीनहीन रहता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक पैतृक संपत्ति का नाश करनेवाला, प्रत्येक क्षेत्र में अभागा रहता है। व्यापार में भी नुकसान उठाता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक स्थायी रूप से रोगी रहता है। उसे खांसी, अस्थमा जैसे रोग रहते हैं। 40 वर्ष की आयु के बाद उसे पत्नी सुख प्राप्त होता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक व्यवसाय के द्वारा काफी धन संग्रह करता है। वह आर्थिक एवं वाणिज्य विषयों का ज्ञाता होता है, हमेशा कार्यरत रहता है और लोकहितैषी रहता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक ढाबा, भोजनालय, होटल, रेस्त्रां, खाद्य पदार्थों का व्यापार, पर्यटन सेवा आदि व्यवसायों के माध्यम से काफी धन कमाता है। फिर भी वह कंजूस व हिंसाचारी होता है और असंतुलित जीवन बिताता है।

बृहस्पति

सूर्य दृष्ट बृहस्पति हो तो जातक का व्यक्तित्व निखरा हुआ, चेहरा एवं आंखें चमकदार होती हैं। लोगों की सहायता करने का स्वभाव होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो गांव, समाज का नेता बनता है। मंगल की दृष्टि हो तो अपने वरिष्ठों का भरोसेमंद रहता है, संस्थाओं से अर्थलाभ प्राप्त करता है। बुध की दृष्टि हो तो स्त्रीवर्ग में लोकप्रिय, धार्मिक एवं शांत स्वभाव का होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक सदाचारी, उच्च शिक्षा प्राप्त, मंत्री या उच्च पदस्थों के संपर्क में रहनेवाला होता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो और सूर्य, चंद्र, मंगल से दृष्ट हो तो जातक की आयु केवल पांच वर्ष की होती है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो एवं लग्न आर्द्रा नक्षत्र में हो तो जातक की आयु मात्र ग्यारह दिनों की रहती है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो एवं सूर्य, बुध, चंद्र से दृष्ट हो तो जातक पांच वर्ष तक जीवित रहता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक व्यवहारकुशल और क्रोधी रहता है। 32वें वर्ष तक दुखी रहता है लेकिन 37 वर्ष के बाद जीवन स्थिर होता है।

शुक्र

सूर्य दृष्ट शुक्र हो तो जातक व्यवहारकुशल, संपन्न एवं साहसी होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो आकर्षक व्यक्तित्व एवं प्रसन्न चेहरे का होता है। मंगल की दृष्टि हो तो साहसी, परिश्रमी लेकिन आर्थिक एवं मानसिक दृष्टि से त्रस्त रहता है। बुध की दृष्टि हो तो वेदशास्त्र संपन्न रहता है और इसी ज्ञान के आधार पर सम्मान प्राप्त

करता है। शनि की दृष्टि हो तो शरीर सुदृढ़ एवं सुंदर रहता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक दिखने में आकर्षक एवं परिस्थितियों के साथ तालमेल रखनेवाला, उच्चाभिलाषी एवं आकांक्षी रहता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक आधुनिक विचारों का, भगवान से डरनेवाला, नम्र स्वभावी रहता है। 32वें वर्ष में अचानक धन प्राप्त होता है एवं 42वें वर्ष में आर्थिक नुकसान होता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो एवं शनि-सूर्य का योग भी हो तो जातक जन्म के तुरंत बाद ही मर जाता है। यह योग बृहस्पति दृष्ट होने पर जातक की मृत्यु 90 वर्ष के बाद होती है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक उच्च शिक्षा प्राप्त, आत्मप्रशंसक, व्यर्थ में बड़े-बड़े सपने देखनेवाला होता है।

शनि

सूर्य दृष्ट शनि हो तो जातक की पत्नी बदसूरत, निर्धन एवं दूसरों की कृपा पर जीनेवाली होती है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक माता के सुख के लिए प्रयत्नशील, सिद्धांतवादी, उत्तम संतान, सुंदर पत्नी और धनधान्य से समृद्ध रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो पक्षाघात से पीड़ित होता है। दूसरों को न भानेवाले काम करने में रुचि रहती है। बुध की दृष्टि हो तो जातक परिश्रमी, धनवान और सरकार एवं समाज में सुप्रतिष्ठित होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंत्री या मंत्री जैसे ही पद पर कार्यरत रहता है। रक्षा विभाग में मुख्याधिकारी भी हो सकता है। शरीर सुंदर, मन एवं स्वभाव शांत होता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक लोहे का व्यापार या कृषि उद्योग से अपार संपत्ति प्राप्त करता है। सेना या पुलिस में अधिकारी भी हो सकता है। सहोदर एवं रिश्तेदारों के साथ मधुर संबंध नहीं रख पाता।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक की मुखाकृति भयंकर होती है किंतु बोलचाल में वह सज्जन रहता है। ऐसा जातक तंत्र का जानकार, धनवान एवं सुखी रहता है।

तृतीय चरण में शनि होने पर जातक गौरवर्णीय एवं ऊंचे कद का होता है। भुजाएं बलवान होती हैं। विशिष्ट मशीनरी का जानकार या अनुसंधानात्मक कार्यों से जुड़ा रहकर सम्पन्न बनता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक मध्यमावस्था के बाद स्थिर आजीविका प्राप्त करता है। वह प्रामाणिक, कर्मठ एवं सामाजिक कार्यकर्ता होता है। उचित शिक्षा प्राप्त हो तो शासकीय सेवा में उच्च शासनाधिकारी, जिलाधिकारी या मजिस्ट्रेट बनता है। श्वसुर पक्ष से जमीन-जायदाद का लाभ मिलता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक उच्च शिक्षित होकर धनवान बनता है। उसका

स्वभाव अति क्रूर एवं संशयी रहता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक विज्ञान एवं औद्योगिक विषयों का जानकार होता है। वह सिनेमा या टी.वी. से जुड़ा रहता है। कोढ़ या सफेद दाग के कारण दुखी रहता है।

तृतीय चरण में राहु होने पर जातक अश्लील बातें करनेवाला, आचरणहीन, कठोर, धोखेबाज रहता है। चोरी करने में भी कुशल रहता है। अपने कर्म के अनुसार जीवन में उतार-चढ़ाव देखता है।

चौथे चरण में उपरोक्तानुसार मिले-जुले फल प्राप्त होते हैं।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक धार्मिक, बंधु हितैषी, जमीन-जायदाद के झगड़ों से व्यथित किंतु धनवान होता है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक शल्य-चिकित्सक, दुर्घटनाग्रस्त, अपंग रहता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक अपने ही घर में चोरी करनेवाला होता है। स्त्री जातक को संतान विषयक समस्या रहती है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक सरकारी नौकरी करनेवाला एवं अपनी संतान से सुख पानेवाला होता है।

हर्षल-नेपच्यून

धनिष्ठा नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हों तो जातक अस्थिर वृत्ति का, व्यभिचारी, दुर्गुणी, धन का अपव्यय करनेवाला किंतु एवं मेहनती रहता है।

प्लूटो

धनिष्ठा नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक दुष्ट, निर्दयी, अविचारी, कामातुर, घमंडी, बड़े-बड़े काम करनेवाला, ईश्वर भक्त होता है।

धनिष्ठा नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष पूर्वाभाद्रपद, भरणी एवं अनुराधा नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों के साथ मैत्री, विवाह या साझेदारी न करें।

□□

पूर्वाभाद्रपद (25) नक्षत्र और बारह ग्रह

सूर्य

चंद्र दृष्ट सूर्य हो तो जातक बुरे चाल-चलन की स्त्रियों के संपर्क में रहकर अपना धन-बरबाद करनेवाला एवं जीवनभर उसके लिए पछतावा करता है। मंगल की दृष्टि हो तो दूसरों से झगड़ा करके अपना उल्लू साधता है। वकालत के जरिए भी धन जुटाता है। स्वयं की बीमारी पर काफी धन व्यय होता है। बुध की दृष्टि हो तो नपुंसक जैसा बर्ताव करता है। दूसरों को कष्ट देता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो वह अच्छे कार्य करता है। शुक्र की दृष्टि हो तो स्त्री वर्ग से लाभान्वित रहता है। सभी प्रकार के सुखोपभोगों का आनंद लूटता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक जिद्दी, मूर्ख एवं शत्रुओं को परास्त करनेवाला, सरकार में सम्मानित रहता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक को अपने परिवार एवं संतान से अलग रहकर जीवन बिताना पड़ता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक द्रव पदार्थों के व्यापार द्वारा धन कमाता है। उसे दूध, शरबत, तेल, घी, मदिरा या पेट्रोल इत्यादि के वितरण व्यवसाय से काफी धन प्राप्त होता है। ससुराल से भी आर्थिक सहयोग प्राप्त करता है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक अल्पजीवी, मध्यम श्रेणी का व्यापारी रहता है। उसे काफी मेहनत करनी पड़ती है।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक रहस्यमय, चंचल, तंत्र-मंत्र एवं जादू-टोने में अधिक विश्वास करनेवाला होता है। वह प्रेतात्माओं के संपर्क में रहता है और उसे पानी से संबंधित व्यवसाय व धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों से भी धन प्राप्त होता है।

चंद्र

चंद्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक राजयोगी होता है। अधिकार, ऐश्वर्य एवं सुख का आनंद लेता है। मंगल की दृष्टि हो तो विद्वान बनता है। बुध की दृष्टि होने पर ख्याति प्राप्त करता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो राज-वैभव प्राप्त करता है। शुक्र की दृष्टि हो तो दरिद्र रहता है। शनि की दृष्टि हो तो खेतिहर या जमींदार होता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक को बचपन में कई कष्ट सहने पड़ते हैं। वह

अरिष्टसूचक एवं अल्पजीवी रहता है। कुछ ज्योतिर्विदों के मतानुसार 21 से 31 वर्ष की आयु में मृत्युतुल्य कष्ट होते हैं।

द्वितीय चरण में चंद्र होने पर जातक छरहरे बदन का, बड़बोला, अशोभनीय कृत्य करनेवाला, स्वेच्छाचारी व उद्दंड होता है। अपना नुकसान वह आप ही करता है, सार्वजनिक दृष्टि से उसे अपमानित होना पड़ता है।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक झगड़ालू, शांत एवं गंभीर रहता है। दो बार विवाह होता है। स्त्री जातक का विवाह एक ही बार होता है किंतु पति वियोग या पति के साथ मतभेद होते हैं।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक संपन्न, सम्मानित एवं गंभीर प्रवृत्ति का होता है। उसके माता-पिता दीर्घजीवी होते हैं। बचपन से पानी का भय रहता है। जन्मस्थान से पूर्व-उत्तर दिशा में भाग्योदय होता है। जातक धार्मिक, दीर्घजीवी, सहज एवं सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

मंगल

सूर्य दृष्ट मंगल हो तो जातक कृष्णवर्णीय, कठोर स्वभावी, सुंदर पत्नी एवं उत्तम संतान से युक्त, धनदौलत से संपन्न लेकिन मित्रों से वंचित रहता है। बुध की दृष्टि हो तो मृदुभाषी, प्रवासी सेवा के माध्यम से धन कमानेवाला, छरहरे बदन से युक्त एवं झूठा होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो दीर्घजीवी, सद्‌गुण संपन्न होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक कामक्रीड़ा में मग्न रहनेवाला एवं कामातुर, बड़बोला परंतु भाग्यवान रहता है। शनि की दृष्टि हो तो स्त्री द्वेष्टा किंतु विद्वान एवं ख्यातिप्राप्त रहता है। सरकार से लाभ प्राप्त करता है।

प्रथम चरण में मंगल होने पर जातक उदरपूर्ति के लिए प्रतिदिन प्रवास करनेवाला, उत्तेजित स्वभाव का, अड़ियल एवं लोभी रहता है। 40 साल बाद उसका जीवन स्थिर हो पाता है।

द्वितीय चरण में मंगल होने पर जातक बचपन में काफी दुख पाता है, अरिष्टयोग भी रहता है। अग्निकांड या नैसर्गिक विपत्ति के कारण जातक को खतरा रहता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक जैसा दिखाई देता है, वास्तव में वैसा नहीं होता। वह साहसी, कर्मठ, कठोर रहता है। अपने इन गुणों के बलबूते पर वह जीवन में अग्रसर होता है। मध्यम आयु में श्रेष्ठ गुणों के कारण वह सम्माननीय बनता है।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक परिश्रमी, मिस्त्री, इंजीनियर या ठेकेदार रहता है। उसकी आजीविका धोखे से खाली नहीं रहती। अपने कारोबार से वह काफी धन जुटाता है और बुढ़ापे में सुखी जीवन व्यतीत करता है।

बुध

सूर्य दृष्ट बुध हो तो जातक मल्लविद्या में पारंगत, झगड़ालू, शक्तिशाली एवं चालबाज रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जलनिर्मित वस्तुओं के व्यापार से धन कमाता है, औसत धनवान होता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक अपने गांव का

मुखिया बनता है, सरकारी नौकरी करता है। शुक्र की दृष्टि हो तो बदसूरत, विद्वान संतान से युक्त रहता है। बुरे लोगों का साथ देता है। शनि की दृष्टि हो तो दीन-हीन होता है। उसका परिश्रम व्यर्थ जाता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो कायदे-कानून एवं कोर्ट-कचहरी के मामलों का जानकार और उनमें दक्ष होता है। दूसरों के वाद-विवादों का हल निकालकर धन संग्रह करनेवाला किंतु स्वयं समस्याग्रस्त होता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक साहित्यकार, प्रकाशक या टूरिंग एजेंट रहता है। उसे पेट एवं गुर्दे के रोग होते हैं। व्यापार या अन्य लेखन सामग्री के व्यवसाय द्वारा धन कमाता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक कुशल संगीतकार, इंजीनियर या ज्योतिषी होता है। उसकी पत्नी विद्वान, आदर्श गुण संपन्न एवं भावी जीवन की सहचारिणी रहती है। जातक स्वयं तपेदिक या गले के कैंसर से ग्रस्त रहता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक करामाती, अभद्र व्यवहार करनेवाला, अनैतिक एवं अनुचित साधनों से धन जुटाता है। निम्न श्रेणी के लोगों की संगत में रहता है।

बृहस्पति

बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक आकर्षक व्यक्तित्व का और धनी होता है। चेहरा सुंदर एवं आंखें चमकीली रहती हैं। वह दूसरों के काम आनेवाला होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो वह अपने गांव का सरपंच या प्रांत का मंत्री बनता है। मंगल की दृष्टि हो तो उच्च पदस्थ एवं उच्च लोगों का भरोसेमंद रहता है। बुध की दृष्टि हो तो शांत, विनम्र एवं उच्च शिक्षा प्राप्त रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो उच्च शिक्षित एवं सद्गुणी होता है। मंत्री या बड़े लोगों के संपर्क में रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक के सभी सपने सच और पूर्ण होते हैं।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक तत्त्वज्ञानी, अध्यापक, शल्य चिकित्सक, कमर दर्द के कारण झुककर चलनेवाला, साधारण परिवार में जन्म लेकर बड़ा आदमी बनता है। बड़े पद पर कार्य करता है। बुढ़ापे में दूसरों की सेवा-सुश्रुषा करके तथा दवाइयां बेचकर धन कमाता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक कोर्ट-कचहरी के कामों एवं कानूनी क्षेत्र में अग्रणी रहता है, सरकारी नौकरी करके पेट पालता है। पैरों पर सूजन रहती है। 45वें वर्ष के बाद राजनीति में सक्रिय होकर मंत्री पद तक पहुंचता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक अच्छे परिवार में जन्म लेकर आर्थिक दृष्टि से संपन्न रहता है। प्रारंभ में कुछ समय तक सरकारी नौकरी में रहता है। परंतु बाद में स्वयं का व्यवसाय करके धन कमाता है। किसी विषय विशेष में ज्ञान प्राप्त करता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक उच्चाधिकारी या प्रशासक बनता है, शोध एवं विकास कार्यों से संलग्न होकर धन कमाता है। आर्थिक व वाणिज्य विषयों में उनकी रुचि रहती है।

शुक्र

सूर्य दृष्ट शुक्र हो तो जातक व्यवहारकुशल, सम्मानित एवं धैर्यशील होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो आकर्षक व्यक्तित्व का, खुशहाल, मनमौजी रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो मेहनती, साहसी किंतु मानसिक एवं आर्थिक दृष्टि से ग्रस्त रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक वेदशास्त्र संपन्न होता है। इसी ज्ञान के आधार पर लोकप्रिय रहता है। शनि की दृष्टि हो तो वह आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक मातृ-पितृभक्त, उच्च शिक्षित, पदाधिकारी, देश-विदेश में घूमनेवाला, संपन्न एवं जन्म स्थान से दूर रहकर आजीविका चलानेवाला होता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक संगीत में विशेष रुचि रखता है। वह गायक, कवि, संगीतकार बनकर उदर निर्वाह करता है। उसे उदर, दंत एवं त्वचा रोग का कष्ट रहता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक आर्किटेक्ट, कलात्मक सामान की बिक्री का व्यवसाय करनेवाला तथा चमड़े या कपड़े की फैशनेबल वस्तु या आभूषणों का व्यापारी भी होता है। व्यवसाय में महिलाओं से विशेष लाभ प्राप्त होता है।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक लेखन, अध्यापन कार्य में जुटा रहता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। उसके समान ही शिक्षित पत्नी उसे मिलती है। चिकित्सा या आर्थिक नियोजन में रुचि रहती है। ऐसे कई जातक सोना-चांदी या लोहे का व्यापार करते पाए जाते हैं।

शनि

सूर्य दृष्ट शनि हो तो जातक की पत्नी बदसूरत, गरीब एवं दूसरों की कृपा पर अपनी दिनचर्या चलाती है। चंद्र की दृष्टि हो तो माता के सुख का ध्यान रखनेवाला, सिद्धांतवादी, होनहार संतान एवं अच्छी पत्नी से युक्त होता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक को सन्निपात की बीमारी होती है। दूसरों को नापसंद कार्यों को करने में रुचि रखता है। बुध की दृष्टि हो तो परिश्रमशील, सरकार एवं समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंत्री या उसके समान अन्य कोई पद प्राप्त करता है। शरीर का बलिष्ठ, स्वभाव से शांत रहता है। रक्षा विभाग में नौकरी करता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक किसी संस्था में प्राइवेट सेक्रेटरी की हैसियत से काम करता है और 35 वर्ष के बाद इंजीनियर या उच्चाधिकारी बनता है। अपने जुटाए धन से जायदाद बनाता है। जातक के दो संतान होती हैं।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक ऊंचे कद का, गंजे सिरवाला रहता है। उसकी पत्नी परिश्रमी एवं धन कमानेवाली होती है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक मध्यम शरीराकृति का, काला या सांवला, श्रेष्ठ बुद्धि, मांस-मदिरा का शौकीन, अनैतिक आचरण करनेवाला रहता है। भ्रष्ट एवं हीन आचरणी, कुटिल विचारों के आदमी का उसे साथ देना पड़ता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक ठेकेदार, इंजीनियर या आर्किटेक्ट बनता है। अपने कार्य के माध्यम से दूसरों को धोखा देकर भी धन जुटाता है। अपने अधीन रहकर काम करनेवालों की रकम भी हड़प जाता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक बालारिष्ट से पीड़ित रहता है। जीवित रहने पर तेल, बीज एवं चमड़े का व्यापार करता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक की मां का स्वर्गवास जातक के बचपन में ही हो जाता है। राजनीतिक हथकंडों का प्रयोग करके धन कमाने में वह सफल होता है। वैवाहिक सुख में न्यूनता रहती है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक को प्रारंभिक जीवन में सात वर्षों तक कष्ट रहता है। उसे बचपन में भीख मांगकर पेट पालना पड़ता है। 30 या 35 वर्षों तक काफी मेहनत करनी पड़ती है। धार्मिक अनुष्ठान करने के बहाने जनता का पैसा हड़प जाता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक ऊंचे कद का, खेलों का शौकीन एवं साहसपूर्ण कार्यों से धन कमानेवाला, जमीन-जायदाद, उद्योग-व्यवसाय का मालिक बनता है। सामाजिक प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक अपनी गली, गांव का प्रमुख होता है। उसकी दो शादियां होती हैं। उसके भाई-बहन व्यापारी होते हैं।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक अपनी बुद्धि एवं कार्यकुशलता से भरपूर धन कमाता है। पत्नी हमेशा बीमार रहती है जिससे वह दुखी रहता है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक के परिवार के लोग उसकी तरफ संदेह की दृष्टि से देखते हैं। उसे तपेदिक, मानसिक रोग एवं भूत-प्रेत बाधा के कारण कष्ट होता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक सट्टे में धन गंवाता है। गैरकानूनी कामों से धन कमाता है। व्यापार से भी धन जुटाता है।

हर्षल-नेपच्यून

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हों तो जातक समाज सुधारक, सामाजिक कार्यकर्ता, सुखी एवं प्रतिष्ठा प्राप्त रहता है।

प्लूटो

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक बुद्धिमान, सद्गुणी, गणितज्ञ, विद्या प्रवीण, बौद्धिक काम करनेवाला, चतुर एवं समय का पाबंद होता है।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष भरणी, रेवती, मूल नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों के साथ मैत्री, व्यापार, विवाह या साझेदारी न करें।

□□

उत्तराभाद्रपद (26) और बारह ग्रह

सूर्य

चंद्र दृष्ट सूर्य हो तो जातक की संतान सुंदर एवं आकर्षक होती है। मंगल की दृष्टि हो तो वह पुलिस या संरक्षण विभाग में उच्च पद पर नौकरी करता है। मां-बाप, परिवारजन उसका त्याग करते हैं। बुध की दृष्टि हो तो जातक उच्च शिक्षित, ज्ञानी, मंत्र-तंत्र का जानकार एवं सोने-चांदी, रत्न-आभूषणों का संग्रह करनेवाला होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक व्यापारिक संस्था का अध्यक्ष बनता है। शुक्र की दृष्टि हो तो ऐय्याश एवं सुखी पर दुराचारी रहता है। शनि की दृष्टि हो तो बदनाम एवं हीन वृत्ति के लोगों की संगत में रहता है। पशु के चमड़े एवं पशु बिक्री के व्यवसाय से धन कमाता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक हृदय रोगी, कैंसर या विषजन्य रोगों से पीड़ित रहता है। उसका परिवार कुलीन एवं समृद्ध होता है। वह उच्चाधिकारी तथा सुख वैभव से युक्त जीवनयापन करता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक कृषि उद्योग में विशेष योग्यता प्राप्त रहता है। भाई-बहनों के सुख में न्यूनता रहती है।

तृतीय चरण में सूर्य हो तो जातक उपाधि प्राप्त एवं सरकारी नौकर रहता है। बारंबार अपना कार्यक्षेत्र बदलता रहता है। धनी एवं प्रसिद्ध रहता है।

चतुर्थ चरण में सूर्य होने पर जातक संतान की ओर से समस्याग्रस्त रहता है। उसकी संतानों में से एक या दो ही जीवित रहती हैं।

चंद्र

सूर्य दृष्ट चंद्र हो तो जातक राजयोगी होता है। वह धन ऐश्वर्य से युक्त सुखी जीवन जीता है। मंगल की दृष्टि हो तो पुलिस या संरक्षण विभाग में गुप्त पद पर कार्यरत रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक नौकर-चाकरों से युक्त इंजीनियर, वास्तुकार, आर्किटेक्ट रहता है। वह ज्योतिषी भी बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो आकर्षक व्यक्तित्व से परिपूर्ण, बड़ा उद्योगपति या मिल मालिक होता है। शुक्र की दृष्टि हो तो धनवान, राज्यमंत्री रहता है और संतान अल्प रहती है। शनि की दृष्टि हो तो वह क्रूर किंतु उच्च शिक्षित, शास्त्रज्ञानी एवं कट्टर धार्मिक रहता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक दीर्घजीवी, यश, धन एवं प्रतिष्ठा प्राप्त जीवन जीनेवाला रहता है। बचपन में कष्ट सहन करता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक अनेक अरिष्टों से गुजरता है। वह इंजीनियर, मिस्त्री या कारीगर होता है। धन के कारण पत्नी एवं संतान से झगड़ा होता है।

तीसरे और चौथे चरण में उपरोक्तानुसार मिश्रित फल प्राप्त होते हैं।

बुध

सूर्य दृष्ट बुध हो तो जातक शांत स्वभावी, मूत्र एवं मधुमेह रोग से ग्रस्त रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक चरित्रवान, विख्यात लेखक या पत्रकार होता है। मंगल की दृष्टि हो तो लेखाकार या स्टेशनरी का व्यापारी होता है। स्वयं सामाजिक कार्यकर्ता होता है किंतु कार्य समाज विरोधी करता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो महाविद्वान, आकर्षक व्यक्तित्व से युक्त एवं राज्याधिकार प्राप्त रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो धीमी आवाज में बोलनेवाला, प्रभावी वक्ता, अध्यापक एवं संगीतकार रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक क्रूर, हिंसाचारी, दुखी एवं अस्तित्वहीन रहता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक सरकारी नौकरी करता है। उसके एक पुत्र एवं एक ही कन्या होती है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक व्यभिचारी होता है और व्यापार से धन कमाता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक अनेक तीर्थ यात्राएं करता है। जीवन की अंतिम बेला भी तीर्थ स्थान में व्यतीत होती है।

चतुर्थ चरण में बुध होने पर जातक बैंक या सुरक्षा विभाग में नौकरी करता है। वह राजनीति का खिलाड़ी और मौके से लाभ उठानेवाला होता है।

बृहस्पति

सूर्य दृष्ट बृहस्पति हो तो जातक सुंदर एवं आकर्षक रहता है। उसकी आंखें चमकीली एवं स्वभाव दयालु होता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक अपनी जाति, गांव या शहर का मुखिया रहता है या मंत्री बनता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक वरिष्ठों का भरोसेमंद होता है। बुध की दृष्टि हो तो शांत स्वभाव का, महिला वर्ग में अत्यधिक लोकप्रिय एवं धार्मिक रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो उच्च शिक्षित, सज्जन रहता है। मंत्री, उच्चाधिकारियों के संपर्क में रहकर कार्यरत रहता है। शनि की दृष्टि हो तो उसकी तमाम इच्छाआकांक्षाएं पूर्ण होती हैं।

प्रथम चरण में बृहस्पति हो तो जातक तत्त्वज्ञानी, अध्यापक या शल्य चिकित्सक रहता है। कमर दर्द के कारण लंगड़ाते हुए चलता है। साधारण परिवार में जन्म लेकर वह श्रेष्ठ पद पर विराजमान होता है। बुढ़ापे में सेवा-सुश्रुषा का कार्य एवं दवाइयां बेचकर धन जुटाता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति होने पर जातक कोर्ट-कचहरी एवं कानून के क्षेत्र में दक्ष रहता है। 45वें वर्ष में सक्रिय राजनीति में हिस्सा लेता है एवं मंत्री बनता है। पैरों में सूजन का कष्ट सहना होता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक सभ्य परिवार में जन्मा एवं आर्थिक दृष्टि से भाग्यवान रहता है। जीवन का आरंभ सरकारी नौकरी से करता है। अंततोगत्वा अपना खुद का व्यवसाय कर धन जुटाता है। किसी गहन विषय में प्रवीण बनता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति होने पर उच्च पदाधिकारी, कुशल प्रशासक या वैज्ञानिक बनता है। शोध एवं विकास कार्यों में कार्यरत रहता है। आर्थिक एवं वाणिज्य विषयों में भी उसकी रुचि रहती है।

शुक्र

सूर्य दृष्ट शुक्र हो तो जातक साहसी, व्यवहारकुशल एवं संपन्न रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक प्रसन्नचित्त रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक साहसी, कार्यकुशल, परिश्रमी लेकिन आर्थिक एवं मानसिक दृष्टि से असंतुलित रहता है। बुध की दृष्टि हो तो जातक वेदशास्त्र का ज्ञाता होता है। इसी ज्ञान के बल पर वह नाम एवं धन कमाता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक सुंदर रहता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक मातृ-पितृभक्त, उच्चशिक्षित, पदाधिकारी, देश-विदेश में प्रवास करनेवाला, धन ऐश्वर्य से युक्त रहता है। जन्म स्थान से दूर रहकर उदर निर्वाह करता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक की संगीत में विशेष रुचि रहती है। वह कवि, गायक, संगीतकार बनकर अपनी आजीविका चलाता है। उसे त्वचा एवं उदर रोग का कष्ट रहता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक आर्किटेक्ट, कला एवं सौंदर्यपूर्ण वस्तुओं का विक्रय करके धन कमाता है व सामाजिक कार्यकर्ता रहता है। आभूषण, फैशनेबल कपड़े या चमड़े की सुंदर वस्तुओं का व्यापार करता है। महिला वर्ग से विशेष सहयोग मिलता है।

चतुर्थ चरण में शुक्र होने पर जातक लेखन, अध्यापन का शौकीन रहता है, उच्च उपाधि प्राप्त करता है। समतुल्य योग्यता प्राप्त कन्या से उनका विवाह होता है। चिकित्सा या अर्थनियोजन विषयक कार्य में प्रगति करता है। सोने, चांदी या लोहे की वस्तुओं का भी व्यापार करता है।

शनि

सूर्य दृष्ट शनि हो तो जातक आमतौर पर पद-प्रतिष्ठा, संतोष आदि से युक्त जीवन जीता है। भगवान पर भरोसा रखते हुए अपने कार्य से यश, धन एवं ख्याति अर्जित करता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक माता के लिए घातक एवं अल्प सुखी

रहता है। उसका परिवार आदर्श रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक को उच्च पद प्राप्त होता है। वह विधायक, सांसद या जिला प्रमुख बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो लेखक, अध्यापक, रिसर्च स्कॉलर बनता है। शुक्र की दृष्टि हो तो माता के अतिरिक्त अन्य किसी स्त्री द्वारा उसका पालन होता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक उच्च श्रेणी का शासक या पदाधिकारी रहता है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक धनी, संपन्न परंतु वैवाहिक जीवन की दृष्टि से दुखी रहता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक वैज्ञानिक या इंजीनियरिंग क्षेत्र में उच्च शिक्षित रहता है। उसका मुद्रण व्यवसाय से भी संबंध रहता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक यातायात या प्रवास दुर्घटना में फंसता है। वह बड़ा व्यापारी या अधिकार प्राप्त शासनाधिकारी होता है।

राहु

प्रथम चरण में राहु होने पर जातक की आंखें कमजोर रहती हैं तथा वह सिद्धांतहीन, कपटपूर्ण आचरण करनेवाला रहता है, संतान कम रहती है। लोगों की आर्थिक सहायता करता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक काफी परिश्रम से अपनी शिक्षा पूरी करता है। उसकी मां का असामयिक देहांत होता है। वह अपनी कमाई से जमीन-जायदाद का निर्माण करता है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक का विवाह विधवा स्त्री से होता है। वह स्वयं लड़खड़ाकर बोलनेवाला, लेन-देन के व्यवहार में कुशल रहता है। अपने भाग्य से ही संपत्ति प्राप्त करता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक धनवान होता है किंतु तुच्छ और नीच व्यवहार के कारण वह किसी को प्रिय नहीं होता। अपने स्वार्थ के लिए लोग उससे संबंध रखते हैं। किसी हादसे में उसकी मृत्यु होती है।

केतु

प्रथम चरण में केतु हो तो जातक को बार-बार अपना निवास स्थान बदलना पड़ता है। 24वें वर्ष तक उसे अथक परिश्रम के बाद लाभदायक आजीविका प्राप्त होती है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक अपने कई कार्यों में असफल होता है और नुकसान उठाता है। जिस किसी व्यवसाय में वह पैसा लगाता है वह ठप्प हो जाता है। व्यापार उसके लिए लाभदायक नहीं होता। कर्जदार होने के कारण उसकी जायदाद जब्त हो जाती है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक खेती, बागवानी या साग-तरकारी के

व्यवसाय में अच्छे पैसे कमाता है। उसका अधिकांश धन लड़ाई-झगड़े तथा कोर्ट-कचहरी में खर्च होता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक घर-बार छोड़कर कहीं दूर रहता है। माता-पिता के लिए उसके मन में द्वेष रहता है। प्रारंभ में विद्याध्ययन में अड़चनें आती हैं किंतु बाद में शिक्षा पूर्ण होती है और वह उच्च अधिकारी बनता है।

हर्षल-नेपच्यून

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हों तो जातक सुखी, धन संग्रह में कुशल, उतावला, किसी भी बात का क्षणिक विचार करनेवाला होता है।

प्लूटो

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में प्लूटो स्थित हो तो जातक उतावला, चंचल, समय देखकर चलनेवाला, योग्य-अयोग्य का विचार न करनेवाला होता है।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में जन्मे स्त्री-पुरुष अश्विनी, कृतिका, मृगशिरा एवं पूर्वाषाढ़ नक्षत्रों में जन्मे व्यक्तियों के साथ मैत्री, विवाह या साझेदारी न करें।

□□

रेवती (27) और बारह ग्रह

सूर्य

चंद्र दृष्ट सूर्य हो तो जातक की संतान होनहार होती है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक पुलिस या सेना में नौकरी करता है। माता-पिता या अन्य रिश्तेदारों का त्याग करता है। बुध की दृष्टि हो तो उच्च शिक्षित, शास्त्रों का जानकार, तंत्र-मंत्र का अभ्यासी, सोने-चांदी और रत्नाभूषण संग्रह करनेवाला, बृहस्पति की दृष्टि हो तो किसी औद्योगिक संस्था का अध्यक्ष, उच्चाधिकारी या मंत्री बनता है। शुक्र की दृष्टि हो तो वह धनवान, सुखी, दुराचारी, अनावश्यक खर्च करनेवाला होता है। शनि की दृष्टि होने पर आचरणहीन एवं बदनाम होता है। पशु के चमड़े एवं पशु का विक्रय करके धन कमाता है।

प्रथम चरण में सूर्य हो तो जातक संपन्न, लोकप्रिय और अद्‌भुत शक्ति से युक्त, जन्म से ही मेधावी, युद्ध में कुशल, सदाचारी, प्रामाणिक, प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करनेवाला, अपनी जीवनधारा को अपने मन के अनुसार प्रवाहित करनेवाला, दूसरों का धन या साहित्य हड़प करने को महापाप समझनेवाला होता है।

द्वितीय चरण में सूर्य हो तो जातक बचपन में शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ रहता है।

तृतीय चरण में सूर्य होने पर जातक को बड़े पैमाने पर संघर्ष करना पड़ता है। उसके रिश्तेदार ही उसके शत्रु होते हैं।

चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक श्रेष्ठ, दयालु, बुद्धिमान, उच्च शासनाधिकारी, राज्यमंत्री बनता है। आयु के 45 वर्ष के बाद उसके जीवन का अच्छा समय प्रारंभ होता है।

चंद्र

सूर्य दृष्ट चंद्र हो तो जातक राजसी जीवन बिताता है। वह वैभव युक्त एवं अधिकार संपन्न रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो पुलिस या उसके समकक्ष विभाग में नौकरी करता है। बुध की दृष्टि हो तो कई नौकर-चाकरों से युक्त, व्यवसायकुशल, उद्योगपति, इंजीनियर, शिल्पकार या ज्योतिषी बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो

जातक सफल व्यापारी, धनवान, आकर्षक एवं सुंदर रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो जातक उत्तम संतान से युक्त, धार्मिक एवं संपन्न रहता है। वह राज्यमंत्री भी बन सकता है। शनि की दृष्टि हो तो निष्ठुर, क्रूर किंतु शास्त्रों का जानकार एवं धार्मिक रहता है।

प्रथम चरण में चंद्र हो तो जातक चौड़े चेहरे का और 14 वर्ष तक रोगी रहता है।

द्वितीय चरण में चंद्र हो तो जातक जोखिम अपने सिर लेनेवाला, अज्ञान के कारण धोखा खानेवाला एवं वाहनादि दुर्घटना में शीघ्र जख्मी होनेवाला होता है।

तृतीय चरण में चंद्र हो तो जातक जन्म से लेकर एक वर्ष तक कठोर जीवन जीता है। उसके बाद जीवित रहा तो होशियार एवं अक्लमंद होता है।

चतुर्थ चरण में चंद्र हो तो जातक के लिए माता-पिता का सान्निध्य अधिक समय तक नहीं रहता। बचपन में उसे काफी संघर्ष करना पड़ता है।

मंगल

सूर्य दृष्ट मंगल हो तो जातक असाधारण प्रतिभावान, अभिनेता, खिलाड़ी, कठोर स्वभावी एवं झगड़ालू रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो शारीरिक दृष्टि से दुर्बल, विकलांग या अंगहीन होता है। वह काफी पढ़ा-लिखा, कानून एवं अपराध विज्ञान का जानकार तथा फौजदारी वकील बनता है। बुध की दृष्टि हो तो कलाविद, लेखक मैकेनिक व घड़ीसाज होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो दुराचारी एवं भ्रष्ट आचरणशील रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक दुर्बल रहता है, उसका कारोबार अस्थिर रहता है। वह घुमक्कड़ बनकर धन कमाता है।

प्रथम चरण में मंगल हो तो जातक जमीन-जायदाद के क्रय-विक्रय से धन जुटाता है। वह चालाक, नीरोगी एवं कार्यकुशल और आधुनिक तंत्र से काम करने में सिद्धहस्त रहता है।

द्वितीय चरण में मंगल हो तो जातक उतावला एवं धोखा खानेवाला होता है।

तृतीय चरण में मंगल हो तो जातक मनोवांछित यश प्राप्त करनेवाला, रोजगार देनेवाली संस्था का अधिकारी होता है। अपने अधीन काम करनेवालों के साथ मधुर संबंध नहीं रख पाता।

चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक बड़ी संपत्ति एवं यश प्राप्त करता है। वैवाहिक जीवन दुखद रहता है। पत्नी से वैवाहिक संबंध विच्छेद होते हैं।

बुध

सूर्य दृष्ट बुध हो तो जातक शांत स्वभावी किंतु चर्म, मधुमेह एवं मूत्ररोग से पीड़ित रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो भरोसेमंद, प्रामाणिक प्रसिद्ध लेखक या पत्रकार रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो लेखाकार या स्टेशनरी बेचकर धन कमानेवाला होता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक विद्वान एवं आकर्षक रहता

है। शुक्र की दृष्टि हो तो संगीतकार बन सकता है। शनि की दृष्टि हो तो दुष्ट, क्रूर, दुखी एवं अस्तित्वहीन रहता है।

प्रथम चरण में बुध हो तो जातक फुर्तीला, चुस्त, काम को शीघ्र निपटानेवाला, अनेक भाषाओं का जानकार रहता है।

द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक स्पष्ट विचारों का, बुद्धिमान, तत्त्व चिंतक, अध्यापक, लेखक, पत्रकार या ऑडिटर होता है।

तृतीय चरण में बुध हो तो जातक कोर्ट-कचहरी के कामों में प्रवीण, चतुर, बुद्धिमान, दूसरों से पैसा ऐंठनेवाला परंतु वैवाहिक जीवन में दुखी रहता है।

चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक सरकारी नौकरी में संलग्न रहकर धन कमाता है। सुरक्षा सेवा या वैज्ञानिक विकास के विभाग में नौकरी करता है। राजनीति एवं प्रशासनिक कार्यों में प्रभुत्व प्राप्त करता है। देश-विदेश में काफी प्रवास करता है।

बृहस्पति

सूर्य दृष्ट बृहस्पति हो तो जातक गरीब एवं तिरस्कृत रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो भाग्यवान, भरे-पूरे परिवार का, व्यवसाय में पारंगत होता है। मंगल की दृष्टि हो तो जातक कठोर, उपद्रवी, शत्रुओं से परेशान रहनेवाला होता है। बुध की दृष्टि हो तो मंत्री, सलाहकार, वैयक्तिक सहायक की हैसियत से कार्यरत रहता है। शुक्र की दृष्टि हो तो वह दीर्घायु, भाग्यवान, सुखी जीवन व्यतीत करनेवाला होता है। शनि की दृष्टि हो तो चोर, गंवार या अज्ञानी लोगों को आर्थिक दृष्टि से धोखा देनेवाला और ठग होता है।

प्रथम चरण में बृहस्पति होने पर जातक के पुत्र संतान अधिक रहती है। वह मजबूत देह से युक्त, खान-पान का शौकीन रहता है। वह व्यापारी व सबकी सहायता करनेवाला होता है।

द्वितीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक बचपन में परेशान किंतु समय अनुकूल रहे तो दीर्घायु बनता है।

तृतीय चरण में बृहस्पति हो तो जातक धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में गणमान्य, देश-विदेश में घूमनेवाला, रहस्यमयी विज्ञान में रुचि रखनेवाला सफल व्यापारी या चिकित्सक रहता है।

चतुर्थ चरण में बृहस्पति हो तो जातक सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से पूर्ण रहता है। जनसमूह को अपनी ओर खींचने की आकर्षण शक्ति उसमें रहती है।

शुक्र

सूर्य दृष्ट शुक्र हो तो जातक उच्च विद्या प्राप्त, विद्वान, धनवान किंतु क्रोधी रहता है। चंद्र की दृष्टि हो तो वैभव युक्त, जनता पर शासन करनेवाला होता है। मंगल की दृष्टि हो तो संपन्न व्यापार से धन संग्रह करनेवाला, बड़े परिवार का सदस्य रहता है। शनि की दृष्टि हो तो जातक चालाकी से धन कमाता है। वह भाग्यवान एवं भोगविलासी होता है।

प्रथम चरण में शुक्र हो तो जातक आकर्षक, परिवार प्रेमी, अधिक बोलनेवाला, संगीत कला में प्रवीण रहता है।

द्वितीय चरण में शुक्र हो तो जातक प्रसिद्ध लेखक या पत्रकार होता है। अभिनय एवं नाट्य क्षेत्र में रुचि रखता है। अपने बौद्धिक बल पर वह धन कमाता है। बहुमूल्य रत्नाभूषण भी एकत्र करता है।

तृतीय चरण में शुक्र हो तो जातक की संतान भाग्यवान होती है। संतान के कारण वह विदेश प्रवास करता है। उसे सुख-समृद्धि के सभी साधन प्राप्त होते हैं।

चतुर्थ चरण में शुक्र हो तो जातक राजनीति में सर्वोच्च पद प्राप्त करता है। कीचड़ में खिले कमल के समान उसका विकास होता है। उसकी आयु सत्तर वर्ष की रहती है।

शनि

सूर्य-दृष्ट शनि हो तो जातक संतोषजनक पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। भगवान की उस पर कृपा रहती है। अपने पुरुषार्थ से वह यश-धन-ख्याति प्राप्त करता है। माता के लिए घातक सिद्ध होता है और माता के सुख में न्यूनता रहती है, परिवार आदर्श रहता है। मंगल की दृष्टि हो तो सबकी घृणा का पात्र बनता है। सजा भी भोगनी पड़ती है। जातक क्रूर एवं हिंसाचारी रहता है। बुध की दृष्टि हो तो उच्च पद प्राप्त होता है। सांसद विधायक या जिला प्रमुख बनता है। बृहस्पति की दृष्टि हो तो लेखक या अध्यापक बनता है। शुक्र की दृष्टि हो तो मां के अतिरिक्त अन्य स्त्री द्वारा जातक का भरण-पोषण होता है।

प्रथम चरण में शनि हो तो जातक का विवाह विलंब से होता है और घरेलू जीवन सुखी रहता है। वृद्धावस्था में वह दुखी रहता है।

द्वितीय चरण में शनि हो तो जातक व्यवसायी, शक्तिशाली एवं कार्यकुशल रहता है और सरकारी नौकरी करता है।

तृतीय चरण में शनि हो तो जातक जहाज, ट्रैवल एजेंसी या प्रवास साधनों के व्यापार, मनोरंजन के साधन, सिनेमा द्वारा धन संचय करता है।

चतुर्थ चरण में शनि हो तो जातक वाद्य यंत्र, भोगविलास के साधनों, रत्नाभूषणों आदि के विक्रय से धन कमाता है। शिक्षा अधूरी रहती है किंतु तीक्ष्ण बुद्धि के कारण विद्या का अभाव महसूस नहीं होता।

राहु

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक गुप्त रोगों से परेशान रहता है। वह इंजीनियरिंग या तकनीकी व्यवसाय करके धन जुटाता है। जल या सिंचाई विभाग में कार्यरत रहता है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक जीवनभर असाध्य रोगों से पीड़ित रहता है।

तृतीय चरण में राहु हो तो जातक औसत धनवान, प्रवासी सेवा या मादक पदार्थों की बिक्री से धन कमाता है।

चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक शोध से पैसा प्राप्त करता है। वह अनेक शास्त्रों का जानकार एवं रोगों का इलाज करने में माहिर रहता है।

केतु

प्रथम चरण में केतु होने पर जातक डॉक्टर, वैद्य या चिकित्सक बनता है। अपने व्यवसाय के कारण परिवार एवं समाज में उसे मान्यता प्राप्त होती है। वैवाहिक जीवन अशांत रहता है।

द्वितीय चरण में केतु हो तो जातक परिवार से दूर रहकर धन कमाता है। बहुतायत में धन कमाकर भी उसे सुख-शांति नसीब नहीं होती। वैवाहिक जीवन तनावपूर्ण रहता है। 35वें वर्ष के बाद जीवन में स्थिरता आती है।

तृतीय चरण में केतु हो तो जातक तीर्थयात्रा, धार्मिक कार्य तथा जड़ी-बूटी द्वारा धन कमाता है।

चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक दलाली या किसी के अधीन रहकर धन कमाता है। स्वेच्छाचारी होने से सब लोग उसे दुत्कारते हैं।

हर्षल-नेपच्यून

रेवती नक्षत्र में हर्षल या नेपच्यून हों तो जातक गुण संपन्न, गुण ग्राहक, विचारवान, सुखी एवं धन-ऐश्वर्य भोगनेवाला, विद्वान, चंचल, क्षणिक विचार करनेवाला, समयपालक, तीक्ष्ण बुद्धि का होता है।

प्लूटो

रेवती नक्षत्र में प्लूटो हो तो जातक धनवान, ऐश्वर्यवान, बुद्धिमान, चतुर सत्यवक्ता, कानून का मर्मज्ञ, सत्कर्मी, भगवान तथा साधु-संतों पर श्रद्धा रखनेवाला एवं समाजप्रिय होता है।

रेवती नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति भरणी, रोहिणी, श्रवण एवं पूर्वाषाढ़ में जन्मे स्त्री-पुरुष के साथ मैत्री, व्यापार या साझेदारी न करें।

□□□

संपूर्ण राशि-नक्षत्र और मुहूर्त विज्ञान

12 राशियों और 27 नक्षत्रों पर ही ज्योतिषशास्त्र की नींव टिकी है। इन राशि-नक्षत्रों की संपूर्ण जानकारी विद्वान ज्योतिर्विद प. किसनलाल शर्मा ने इस पुस्तक में समेटी है। साथ ही, किसी कार्य को प्रारंभ करने के लिए शुभाशुभ मुहूर्तों के विषय में यथासंभव प्रामाणिक सामग्री पाठकों के मार्गदर्शन हेतु पुस्तक में [illegible]। प्रत्येक राशि के व्यक्ति का जन्म से लेकर मृत्यु तक का भविष्यफल [illegible] पुस्तक की अपनी विशेषता है।